श्री

कुलजम सरूप

निजनाम श्री जी साहिबजी, अनादि अछरातीत ।
सो तो अब जाहेर भए, सब विध वतन सहीत ॥

प्रकास हिन्दुस्तानी–जंबूर

कछु इन विध कियो रास, खेल फिरे घर।
खेल देखन के कारने, आइयां उमेदां कर॥ १ ॥

इस तरह से रास खेलने के बाद श्री राजजी और हम सब परमधाम गए। इच्छा पूरी नहीं हुई थी, इसलिए दुबारा खेल देखने की इच्छा लेकर आए।

उमेदां न हुइयां पूरन, धाख मन में रही।
तब धनीजीऐं अंतरगत, हुकम कियो सही॥ २ ॥

हमारी चाहना पूरी नहीं हुई थी, इच्छा मन में रह गई थी। इसलिए धाम धनी ने हुकम करके यह ब्रह्माण्ड बनवाया।

तब तीसरो रचके खेल, स्यामाजी आए इत।
तब हम भी आइयां तित, स्यामाजी खेले जित॥ ३ ॥

अब यह तीसरा खेल रच करके (बनाकर) श्यामाजी यहां आईं। तब हम भी लीला करने के वास्ते साथ में आए।

स्यामाजी को धनिऐं, आवेस अपनो दियो।
सब केहे के हकीकत, हुकम ऐसो कियो॥ ४ ॥

श्यामाजी को श्री राजजी महाराज ने अपना आवेश दिया और श्यामजी के मन्दिर में श्री देवचन्द्रजी को (न्यामत दी) घर की, बृज की तथा रास की पूरी हकीकत विस्तार से समझाई। खेल में सुन्दरसाथ आया हुआ है, उनको जगाकर घर वापस लाना है ऐसा हुकम श्री राजजी ने दिया।

इंद्रावती लागे पाए, सुनो प्यारे साथ जी।
तुम चेतो इन अवसर, आयो है हाथ जी॥ ५ ॥

श्री इन्द्रावतीजी चरणों में प्रणाम कर कहती हैं कि मेरे प्यारे सुन्दरसाथ! सुनो, तुम जागो (अपने होश में आओ)। यह अवसर तुम्हारे हाथ आया है।

॥ प्रकरण ॥ १ ॥ चौपाई ॥ ५ ॥

साथ को सिखापन–राग धनाश्री

याद करो तुम साथ जी, हाथ आयो अवसर जी।
आप डार्‌या ज्यों पेहेले फेरे, भी डारियो निसंक फेर जी॥ १ ॥

हे सुन्दरसाथजी! तुम्हारे हाथ मौका आया है। अब तुम याद करो कि बृज में पहली बार हम आए थे और बृज को छोड़कर रास में बिना कोई देरी किए गए थे। इस बार भी वैसे ही माया को छोड़ देना।

Nijanand App

श्री कुलजम सरूप

निजनाम श्रीकृष्ण जी, अनादि अछरातीत।	
सो तो अब जाहेर भए, सब विध वतन सहीत।।	

प्रकास हिन्दुस्तानी–जंबूर

कछु इन विध कियो रास, खेल फिरे घर।
खेल देखन के कारने, आइयां उमेदां कर।। १ ।।

इस तरह से रास खेलने के बाद श्री राजजी और हम सब परमधाम गए। इच्छा पूरी नहीं हुई थी, इसलिए दुबारा खेल देखने की इच्छा लेकर आए।

उमेदां न हुइयां पूरन, धाख मन में रही।
तब धनीजीऐं अंतरगत, हुकम कियो सही।। २ ।।

हमारी चाहना पूरी नहीं हुई थी, इच्छा मन में रह गई थी। इसलिए धाम धनी ने हुकम करके यह ब्रह्माण्ड बनवाया।

तब तीसरो रचके खेल, स्यामाजी आए इत।
तब हम भी आइयां तित, स्यामाजी खेले जित।। ३ ।।

अब यह तीसरा खेल रच करके (बनाकर) श्यामाजी यहां आईं। तब हम भी लीला करने के वास्ते साथ में आए।

स्यामाजी को धनिऐं, आवेस अपनो दियो।
सब केहे के हकीकत, हुकम ऐसो कियो।। ४ ।।

श्यामाजी को श्री राजजी महाराज ने अपना आवेश दिया और श्यामजी के मन्दिर में श्री देवचन्द्रजी को (न्यामत दी) घर की, बृज की तथा रास की पूरी हकीकत विस्तार से समझाई। खेल में सुन्दरसाथ आया हुआ है, उनको जगाकर घर वापस लाना है ऐसा हुकम श्री राजजी ने दिया।

इंद्रावती लागे पाए, सुनो प्यारे साथ जी।
तुम चेतो इन अवसर, आयो है हाथ जी।। ५ ।।

श्री इन्द्रावतीजी चरणों में प्रणाम कर कहती हैं कि मेरे प्यारे सुन्दरसाथ! सुनो, तुम जागो (अपने होश में आओ)। यह अवसर तुम्हारे हाथ आया है।

।। प्रकरण ।। १ ।। चौपाई ।। ५ ।।

साथ को सिखापन–राग धनाश्री

याद करो तुम साथ जी, हाथ आयो अवसर जी।
आप डारया ज्यों पेहेले फेरे, भी डारियो निसंक फेर जी।। १ ।।

हे सुन्दरसाथजी! तुम्हारे हाथ मौका आया है। अब तुम याद करो कि बृज में पहली बार हम आए थे और बृज को छोड़कर रास में बिना कोई देरी किए गए थे। इस बार भी वैसे ही माया को छोड़ देना।

Nijanand App

सुंदरबाई इन फेरे, आए हैं साथ कारन जी।
भेजे धनिऐं आवेस देय के, अब न्यारे न होऐं एक खिन जी।। २ ।।

सुन्दरबाई (श्यामाजी) इस बार सुन्दरसाथ के वास्ते आई हैं। इनको धनी ने अपने आवेश की शक्ति देकर भेजा है। वह हम से एक क्षण के लिए भी अलग नहीं होंगी।

सुपने में भी खिन ना छोड़ें, तो क्यों छोड़ें साख्यात जी।
दया देखो पिउजी की हिरदे मांहें, विध विधकी विख्यात जी।। ३ ।।

सपने में भी (बृज में) हमको नहीं छोड़ा। यहां इस खेल (जागनी के ब्रह्माण्ड में) उजाले में साक्षात् आए हैं, तो कैसे छोड़ेंगे? अपने दिल में धनी की मेहर, जो समय-समय पर तरह-तरह से करते हैं, को देखो।

ऐसी बात करे रे पिउजी, पर ना कछू साथ को सुध जी।
नींद उड़ाए जो देखिए आपन, तो आए हैं आप ले निध जी।। ४ ।।

धनी ऐसी कृपा करते हैं पर सुन्दरसाथ को कुछ भी होश नहीं है। अज्ञानता का पर्दा उड़ा कर देखें, तो धनी अपने लिए जागृत बुद्धि का ज्ञान लेकर आए हैं।

सुपने में मनोरथ किए, तो तित भी पिउजी साथ जी।
सुन्दरबाई ले आवेस धनी को, न छोड़े अपना हाथ जी।। ५ ।।

बृज में पिया साथ थे और अपनी समस्त चाहना पूरी की। अब श्यामाजी धनी का आवेश लेकर आई हैं और वह हमारा हाथ नहीं छोड़ेंगी।

धनी न देवें दुख तिल जेता, जो देखिए वचन विचारी जी।
दुख आपनको तो जो होत है, जो माया करत हैं भारी जी।। ६ ।।

इन वचनों को विचार करके देखो तो धनी कभी भी एक तिल जितना दु:ख भी नहीं देते। दु:ख तो हमको तब होता है जब हम माया को पकड़ते हैं।

अंतरध्यान समें दुख दिए, ए आसंका उपजत जी।
तिन समें संसार न किया भारी, साथें दुख देखे क्यों तित जी।। ७ ।।

एक संशय मन में होता है कि रास में अन्तर्ध्यान हुए तो विरह का दु:ख हमको क्यों दिया? उस समय तो हमने संसार नहीं पकड़ा था, तो सुन्दरसाथ ने वहां दु:ख क्यों देखे?

दुख तो क्यों ए न देवे रे पिउजी, ए विचार के संसे खोइए जी।
ए याद वचन तो आवे रे सखियो, जो माया छोड़ते घनों रोइए जी।। ८ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, कि दु:ख तो पियाजी किसी तरह से देते ही नहीं हैं। तुम जरा सोचकर अपने संशय मिटाओ। यह वचन तो तब याद आते हैं जब हम माया छोड़ते समय बहुत दु:खी होते हैं।

खेल याद देने को मेरे पिउजी, दुख दिए अति घनेंजी।
साथें मनोरथ एह जो किए, धनिऐं राखे मन आपनें जी।। ९ ।।

हम सुन्दरसाथ ने परमधाम में चाहत की थी कि हमें दु:ख का खेल दिखाओ, तो श्री राजजी ने वह बात अपने मन में लेकर रास में अन्तर्ध्यान होकर हमको दु:ख देकर अपनी मांगी हुई बात को याद कराया।

Nijanand App

आपन माया की होंस जो करी, और माया तो दुख निधान जी।
सो याद देने को रे साथजी, पिउ भए अन्तरध्यानजी।। १० ।।

हमने परमधाम में माया की चाहना की थी। माया तो दुःख का घर है। उसी की चाहना की याद दिलाने के लिए पियाजी अन्तर्ध्यान हुए।

नातो ए अपना रे पिउजी, अधखिन बिछोहा न सहे जी।
एह विचार जो देखिए साथजी, तो तारतम प्रगट कहे जी।। ११ ।।

नहीं तो यह हमारे धनी हैं। यह आधे क्षण का हमारे से बिछुड़ना सहन नहीं कर सकते। विचार कर हम यह देखें तो तारतम से साफ-साफ पहचान होती है।

इन समे तारतम की समझन, क्योंकर कहिए सोए जी।
अनेक विध का तारतम इत, तब घर लीला प्रगट होए जी।। १२ ।।

इस समय तारतम को ही समझना है। मैं कैसे कहूं? क्योंकि संसार में अनेक प्रकार के ज्ञान हैं जो घर का ज्ञान तो देते हैं, पर सब संसार में ही घटा देते हैं, पर तारतम वाणी के बिना घर की पहचान होती नहीं है।

पेहेचानवेको पिउजी अपना, करूं तारतम विचार जी।
साथ सकल तुम लीजो दिल में, न रहे संसे लगार जी।। १३ ।।

अपने धनी की पहचान करने के लिए जागृत बुद्धि के ज्ञान तारतम को ही विचारना होगा। हे सुन्दरसाथजी! यह बात दिल में समझ लेना, ताकि तुम्हारा कोई संशय बाकी न रह जाए।

पेहेली बेर तहां ए निध न हुती, तारतम जोत रोसन जी।
तो ए फेरा हुआ रे साथ को, तुम देखो विचारी मन जी।। १४ ।।

पहली बार बृज में जब आए थे, तब वहां तारतम ज्ञान नहीं था। इसलिए हमें यहां दुबारा आना पड़ा, तुम विचार कर देखो।

आसंका न रहे किसी की, जो कीजे तारतम विचार जी।
सो रोसनाई ले तारतम की, आए आपन में आधार जी।। १५ ।।

यदि तारतम वाणी से विचार कर देखें तो किसी प्रकार का संशय बाकी नहीं रहेगा। उस जागृत बुद्धि के ज्ञान को लेकर खुद धनी हमारे बीच पधारे हैं।

अब इन उजाले जो न पेहेचानो, तो आपन बड़े गुन्हेगार जी।
चरने लाग कहे इंद्रावती, पिउजी के गुन अपार जी।। १६ ।।

इस उजाले में भी यदि हमने धनी को नहीं पहचाना तो फिर कसूर (दोष) हमारा है। श्री इन्द्रावतीजी चरणों में लगकर कहती हैं कि धनी की मेहर बेशुमार है।

।। प्रकरण ।। २ ।। चौपाई ।। २१ ।।

राग धनाश्री

साथ सकल तुम याद करो, जिन जाओ वचन विसर जी।
धनी मिले आपन कों माया में, जिन भूलो ए अवसर जी।। १ ।।

हे सुन्दरसाथजी! याद करो अपने वचनों को भूलो मत। धनी हमें माया में मिले हैं। अब इस मौके को हाथ से नहीं जाने देना।

Nijanand App

आपन माया की होंस जो करी, और माया तो दुख निधान जी।
सो याद देने को रे साथजी, पिउ भए अन्तरध्यानजी।। १० ।।

हमने परमधाम में माया की चाहना की थी। माया तो दुःख का घर है। उसी की चाहना की याद दिलाने के लिए पियाजी अन्तर्ध्यान हुए।

नातो ए अपना रे पिउजी, अधखिन बिछोहा न सहे जी।
एह विचार जो देखिए साथजी, तो तारतम प्रगट कहे जी।। ११ ।।

नहीं तो यह हमारे धनी हैं। यह आधे क्षण का हमारे से बिछुड़ना सहन नहीं कर सकते। विचार कर हम यह देखें तो तारतम से साफ-साफ पहचान होती है।

इन समे तारतम की समझन, क्योंकर कहिए सोए जी।
अनेक विध का तारतम इत, तब घर लीला प्रगट होए जी।। १२ ।।

इस समय तारतम को ही समझना है। मैं कैसे कहूं? क्योंकि संसार में अनेक प्रकार के ज्ञान हैं जो घर का ज्ञान तो देते हैं, पर सब संसार में ही घटा देते हैं, पर तारतम वाणी के बिना घर की पहचान होती नहीं है।

पेहेचानवेको पिउजी अपना, करूं तारतम विचार जी।
साथ सकल तुम लीजो दिल में, न रहे संसे लगार जी।। १३ ।।

अपने धनी की पहचान करने के लिए जागृत बुद्धि के ज्ञान तारतम को ही विचारना होगा। हे सुन्दरसाथजी! यह बात दिल में समझ लेना, ताकि तुम्हारा कोई संशय बाकी न रह जाए।

पेहेली बेर तहां ए निध न हुती, तारतम जोत रोसन जी।
तो ए फेरा हुआ रे साथ को, तुम देखो विचारी मन जी।। १४ ।।

पहली बार बृज में जब आए थे, तब वहां तारतम ज्ञान नहीं था। इसलिए हमें यहां दुबारा आना पड़ा, तुम विचार कर देखो।

आसंका न रहे किसी की, जो कीजे तारतम विचार जी।
सो रोसनाई ले तारतम की, आए आपन में आधार जी।। १५ ।।

यदि तारतम वाणी से विचार कर देखें तो किसी प्रकार का संशय बाकी नहीं रहेगा। उस जागृत बुद्धि के ज्ञान को लेकर खुद धनी हमारे बीच पधारे हैं।

अब इन उजाले जो न पेहेचानो, तो आपन बड़े गुन्हेगार जी।
चरने लाग कहे इंद्रावती, पिउजी के गुन अपार जी।। १६ ।।

इस उजाले में भी यदि हमने धनी को नहीं पहचाना तो फिर कसूर (दोष) हमारा है। श्री इन्द्रावतीजी चरणों में लगकर कहती हैं कि धनी की मेहर बेशुमार है।

|| प्रकरण || २ || चौपाई || २१ ||

राग धनाश्री

साथ सकल तुम याद करो, जिन जाओ वचन विसर जी।
धनी मिले आपन कों माया में, जिन भूलो ए अवसर जी।। १ ।।

हे सुन्दरसाथजी! याद करो अपने वचनों को भूलो मत। धनी हमें माया में मिले हैं। अब इस मौके को हाथ से नहीं जाने देना।

Nijanand App

सुन्दरबाई अन्तरगत कहे, प्रकास वचन अति भारी जी।
साथ वचन ए चित्त दे सुनियो, देखियो तारतम विचारी जी।। २ ।।

सुन्दरबाई (श्यामाजी) अन्दर बैठकर कह रही हैं कि ज्ञान के वचन बहुत भारी हैं। हे सुन्दरसाथजी! इनको चित्त देकर सुनना और मिलकर विचार करना।

एही चाल तुम चलियो साथजी, एही पांउ परवान जी।
प्रगट मैं तुमको पेहेले कह्या, भी कहूं निरवान जी।। ३ ।।

हे साथजी! तुम इसी रास्ते पर चलना। यही रास्ता ठीक है। मैंने तो पहले भी साफ-साफ कहा है। और भी निश्चय करके कहती हूं।

अब जिन माया मन धरो, तुम देखी अनेक जुगत जी।
कई कई विध कह्या मैं तुमको, अजहूं ना हुए त्रपत जी।। ४ ।।

तुमने सब कुछ देख लिया है, इसलिए अब माया में मन न लगाओ। मैंने तुम्हें कई तरह से समझाया है। अभी तक तुम्हारी तसल्ली नहीं हुई है (सन्तुष्ट नहीं हुए)।

जब लग तुम रहो माया में, जिन खिन छोड़ो रास जी।
पचीस पख लीजो धाम के, ज्यों होए धनी को प्रकास जी।। ५ ।।

अब जितने दिन तक माया में रहना पड़े, एक पल के लिए भी रास को नहीं छोड़ो। परमधाम के पच्चीस पक्षों में चित्त लगाओ, तब आपको धनी की पहचान हो जाएगी।

अनेक विध कही मैं तुमको, ढील करो अब जिन जी।
पांउ भरो ए वचन देखके, पेहेले बृज रास चलन जी।। ६ ।।

मैंने तुमको अनेक तरह से समझाया है कि अब देरी करने का समय नहीं है। इस वाणी को देखकर जैसे पहली बार बृज से रास में गए थे, उसी तरह से अब चलो, संसार छोड़ो।

रास प्रकास छोड़ो जिन खिन, जो बीतक अपनी परवान जी।
ए छल तुमसे क्योंए न छूटे, पर मैं ना छोडूं तुमें निरवान जी।। ७ ।।

रास के ज्ञान को एक पल के लिए भी मत छोड़ो। इसमें अपनी लीला है। यह संसार तुमसे किसी तरह से छूटेगा नहीं, पर मैं तुमको निश्चित रूप से नहीं छोडूंगी।

कहे इंद्रावती वचन पिउके, जिन देखाया धाम वतन जी।
अब कोटक छल करे जो माया, तो भी ना छूटे धनी के चरन जी।। ८ ।।

श्री इन्द्रावतीजी धनी के वचन कह रही हैं, जिन वचनों से परमधाम की पहचान होती है। अब करोड़ छल भी माया करे तो भी श्री राजजी के चरण नहीं छूटेंगे।

।। प्रकरण ।। ३ ।। चौपाई ।। २९ ।।

लीला को प्रकास होना—आत्मा को प्रकास उपज्यो

ना कछू मन में ना कछू चित, ना कछू मेरे हिरदे एती मत।
एक वचन सीधा कह्या न जाए, ए तो आयो जैसे पूर दरियाए।। १ ।।

न मेरे मन में और न चित्त में कोई विचार था और न मेरे हृदय में ही कोई इतना ज्ञान था। मेरी एक शब्द कहने की शक्ति नहीं थी, पर धनी की मेहर (कृपा) ऐसी हुई कि मानो नदी के पूर (प्रवाह) के समान ज्ञान अन्दर आ गया है।

Nijanand App

सुन्दरबाई अन्तरगत कहे, प्रकास वचन अति भारी जी।
साथ वचन ए चित्त दे सुनियो, देखियो तारतम विचारी जी।। २ ।।

सुन्दरबाई (श्यामाजी) अन्दर बैठकर कह रही हैं कि ज्ञान के वचन बहुत भारी हैं। हे सुन्दरसाथजी! इनको चित्त देकर सुनना और मिलकर विचार करना।

एही चाल तुम चलियो साथजी, एही पांउ परवान जी।
प्रगट मैं तुमको पेहेले कह्या, भी कहूं निरवान जी।। ३ ।।

हे साथजी! तुम इसी रास्ते पर चलना। यही रास्ता ठीक है। मैंने तो पहले भी साफ-साफ कहा है। और भी निश्चय करके कहती हूं।

अब जिन माया मन धरो, तुम देखी अनेक जुगत जी।
कई कई विध कह्या मैं तुमको, अजहूं ना हुए त्रपत जी।। ४ ।।

तुमने सब कुछ देख लिया है, इसलिए अब माया में मन न लगाओ। मैंने तुम्हें कई तरह से समझाया है। अभी तक तुम्हारी तसल्ली नहीं हुई है (सन्तुष्ट नहीं हुए)।

जब लग तुम रहो माया में, जिन खिन छोड़ो रास जी।
पचीस पख लीजो धाम के, ज्यों होए धनी को प्रकास जी।। ५ ।।

अब जितने दिन तक माया में रहना पड़े, एक पल के लिए भी रास को नहीं छोड़ो। परमधाम के पच्चीस पक्षों में चित्त लगाओ, तब आपको धनी की पहचान हो जाएगी।

अनेक विध कही मैं तुमको, ढील करो अब जिन जी।
पांउ भरो ए वचन देखके, पेहेले बृज रास चलन जी।। ६ ।।

मैंने तुमको अनेक तरह से समझाया है कि अब देरी करने का समय नहीं है। इस वाणी को देखकर जैसे पहली बार बृज से रास में गए थे, उसी तरह से अब चलो, संसार छोड़ो।

रास प्रकास छोड़ो जिन खिन, जो बीतक अपनी परवान जी।
ए छल तुमसे क्योंए न छूटे, पर मैं ना छोडूं तुमें निरवान जी।। ७ ।।

रास के ज्ञान को एक पल के लिए भी मत छोड़ो। इसमें अपनी लीला है। यह संसार तुमसे किसी तरह से छूटेगा नहीं, पर मैं तुमको निश्चित रूप से नहीं छोडूंगी।

कहे इंद्रावती वचन पिउके, जिन देखाया धाम वतन जी।
अब कोटक छल करे जो माया, तो भी ना छूटे धनी के चरन जी।। ८ ।।

श्री इन्द्रावतीजी धनी के वचन कह रही हैं, जिन वचनों से परमधाम की पहचान होती है। अब करोड़ छल भी माया करे तो भी श्री राजजी के चरण नहीं छूटेंगे।

।। प्रकरण ।। ३ ।। चौपाई ।। २९ ।।

लीला को प्रकास होना–आत्मा को प्रकास उपज्यो

ना कछू मन में ना कछू चित, ना कछू मेरे हिरदे एती मत।
एक वचन सीधा कह्या न जाए, ए तो आयो जैसे पूर दरियाए।। १ ।।

न मेरे मन में और न चित्त में कोई विचार था और न मेरे हृदय में ही कोई इतना ज्ञान था। मेरी एक शब्द कहने की शक्ति नहीं थी, पर धनी की मेहर (कृपा) ऐसी हुई कि मानो नदी के पूर (प्रवाह) के समान ज्ञान अन्दर आ गया है।

Nijanand App

श्री सुंदरबाई धनी धाम दुलहिन, इंद्रावती पर दया पूरन।
हिरदे बैठ कहे वचन एह, कारन साथ किए सनेह।। २ ।।

सुन्दरबाई (श्यामा महारानी) श्री धाम-धनी की दुलहिन है। श्री इन्द्रावतीजी पर इनकी पूरी कृपा है। श्री इन्द्रावतीजी के अन्दर बैठकर यह वाणी सुन्दरसाथ के प्रेम के नाते कहलवाई है।

वचन एक केहेते इन पर, हम घरों जाए के लेसी खबर।
अद्रष्ट होए के कहे वचन, साथजी द्रढ करी लीजो मन।। ३ ।।

श्री श्यामाजी (देवचन्द्रजी) कहते थे कि हम घर में (श्री इन्द्रावतीजी के अन्दर बैठकर) जाकर सुन्दरसाथ की खबर लेंगे। यह वचन शरीर छोड़ते समय कहे थे। इसलिए, हे साथजी! इन वचनों को दृढ़ता से मन में ग्रहण करो।

आपन करी जो पेहेले चाल, प्रेम मगन बीते ज्यों हाल।
ए सब किया अपने कारन, एही पैंडा अपना चलन।। ४ ।।

हम पहली बार वृज में आए थे और जिस प्रेम में मग्न होकर खेले थे, वही रास्ता अपना बताया है और इसी पर चलना है।

दिखलाया सब प्रगट कर, साथ सकल लीजो चित धर।
ए जिन करो तुम हलकी बान, धनी कहावत अपनी जान।। ५ ।।

धनी अन्दर बैठकर सुन्दरसाथ को अपना समझकर यह सब कहला रहे हैं। सब प्रत्यक्ष दिखा रहे हैं। इसको सुन्दरसाथजी मन में धर लेना और इन वचनों को हलका न समझना (छोटा न समझना)।

कहियत सदा प्रबोध वचन, पर कबूं न बानी ए उतपन।
तिन कारन तुम सुनियो साथ, आपन में आए प्राणनाथ।। ६ ।।

संसार में बहुत से ज्ञानी ज्ञान देने वाले हैं, परन्तु यह वाणी कभी किसी के पास नहीं थी। इसलिए, हे सुन्दरसाथजी! सुनो, अपने बीच अपने प्राणनाथ आ गए हैं।

बोहोत सिखापन विध विध कही, पर नींद आड़े कछु हिरदे न रही।
नींद उड़ाओ देख नेहेचल रास, ज्यों हिरदे होए पिउ को प्रकास।। ७ ।।

हमको तरह-तरह से समझाया है, परन्तु माया के परदे के कारण हम उनके वचनों को हृदय में नहीं ले सके। अब नींद उड़ाकर अखण्ड रास को देखो, जिससे तुम्हें धनी की पहचान हो जाए।

अब नींद किएकी नाहीं ए बेर, पिउ आए बुलावन उड़ाए अंधेर।
पेहेले कह्या पिउ प्रगट पुकार, अंतर रहे केहेलाया आधार।। ८ ।।

यह समय सोने का नहीं है। धनी अन्धकार को उड़ाकर (अज्ञान हटाकर) बुलाने आए हैं। पहले भी पियाजी ने (देवचन्द्रजी के अन्दर बैठकर) पुकार-पुकार कर कहा।

मोहे एक वचन न आवे अस्तुत, पर सोभा दई ज्यों कालबुत।
अस्तुत की इत कैसी बात, प्रगट होने करी विख्यात।। ९ ।।

मुझे तो उनकी वन्दना (स्तुति) करने का शहूर (समझ) नहीं था। कहने वाले स्वयं धाम-धनी हैं। जैसे पत्थर की मूर्ति को भगवान की शोभा मिलती है, उसी प्रकार से मेरे तन को शोभा मिली है। कहने वाले श्री राजजी महाराज हैं, जिन्हें संसार में सुन्दरसाथ के लिए वाणी से जाहिर होना है।

Nijanand App

फल वस्त जो भारी वचन, जीव भी न कहे आगे मन।
सो प्रगट किए अपार, जो हुता अखंड घर सार।। १० ।।

श्री राजजी महाराज को पहचान कराने वाले भारी वचनों को जीव भी मन के आगे नहीं कहता। उन्होंने मेरे द्वारा सार वस्तु अपने घर श्री परमधाम की सब बातें जाहिर कर दीं।

प्रगट करी मूल सगाई, कई दिन आपन राखी छिपाई।
वचन बड़ा एक ए निरधार, श्री सुन्दरबाई केहेते जो सार।। ११ ।।

श्री श्यामाजी (देवचन्द्रजी महाराज) कहते थे कि हमारा नाता परमधाम का है जिसे अब तक हमने जाहिर नहीं किया था।

ए लीला होसी विस्तार, सूरज ढांप्या न रहे लगार।
ए लीला क्यों ढांपी रहे, जाकी रास धनी एती अस्तुत कहे।। १२ ।।

इस लीला का आगे चलकर बहुत विस्तार होगा। ज्ञान के सूर्य को ढांपा नहीं जा सकेगा। यह लीला कैसे छिप सकती है, जिसको धाम के धनी स्वयं इतना महत्व देते हैं?

ता कारन तुम सुनियो साथ, प्रगट लीला करी प्राणनाथ।
कोई मन में ना धरियो रोष, जिन कोई देओ महामती को दोष।। १३ ।।

इसलिए, प्यारे साथजी! सुनो श्री राजजी महाराजजी ने जाहिर होने के लिए ही यह लीला की है। यह बात सुनकर कोई दुःखी नहीं होना और श्री महामति को दोष नहीं देना।

ए तुम नेहेचे करो सोए, ए वचन महामती से प्रगट न होए।
अपने घर की नहीं ए बात, जो किव कर लिखिए विख्यात।। १४ ।।

यह बात निश्चित रूप से जानो कि यह वाणी श्री महामति से जाहिर नहीं हो सकती, क्योंकि परमधाम की यह रीति नहीं है कि अपने घर की बात कविता की तरह रचना करके कही जाए।

ए बोहोत विध मैं जानूं घना, जो किव नहीं ए काम अपना।
पर ए तो नहीं कछू किव की बात, केहेलाया बैठ हिरदे साख्यात।। १५ ।।

यह बात मैं अच्छी तरह मन में जानती हूं कि अपना काम कविता करना नहीं है। यहां तो कविता का कोई काम ही नहीं है। यह तो सब श्री राजजी महाराज की ही वाणी है जो हृदय में बैठकर स्वयं कहला रहे हैं।

ए वचन सबे आवेस में कहे, उत्तमबाईऐं भली विध ग्रहे।
यों कर कह्या आवेस दे, प्रगट लीला सबमें होसी ए।। १६ ।।

यह सब वाणी आवेश द्वारा कहलाई है, जिसे उत्तमबाई (ऊधो ठाकुर) ने अच्छी तरह ग्रहण किया (हवसा में साथ थे)। इस प्रकार अपने आवेश द्वारा कहलाया कि अब यह लीला सब में जाहिर हो जाएगी।

मैं मन मांहें जान्या यों, जो किव होसी तो खेलसी क्यों।
किव भी हुई वचन विचार, खेली इंद्रावती अनेक प्रकार।। १७ ।।

मैंने मन में ऐसा जाना कि यदि यह मेरी बनाई कविता होगी, तो सत का वर्णन कैसे होगा, किन्तु यदि देखा जाए तो एक तरह से कविता का रूप भी बन गया तथा सत को भी प्रगट किया। यह कहने की खूबी केवल श्री इन्द्रावतीजी में ही है।

Nijanand App

कारज यों सब हुए पूरन, श्री सुन्दरबाई की सिखापन।
हिरदे बैठ केहेलाया रास, पेहेले फेरे के दोऊ किए प्रकास।। १८ ।।

श्री श्यामाजी (सुन्दरबाई) ने हृदय में बैठकर बृज और रास का वर्णन कराया है और उसका सिखापन (शिक्षा) देकर हमारे सभी काम इस तरह पूर्ण कर दिए। (रास की लीलाओं से हमने वालाजी को अपने से अलग न करने की लीला और अभिमान करने पर दुःख मिलता है—अतः अभिमान कभी न करना, यह सीखो)।

सुनियो साथ तुम एह कारन, धनी ल्याए धाम से आनंद अति घन।
ज्यों ना रहे माया को लेस, त्यों धनिऐं कियो उपदेस।। १९ ।।

इसलिए, सुन्दरसाथजी! सुनो, यह कारण था कि धनी धाम से अत्यन्त आनन्द लेकर आए। तुम्हारे अन्दर माया तिल भर भी न रह जाए, इसलिए राजजी महाराज ने यह उपदेश किया है, सिखापन दी है।

ज्यों तुम पेहेले भरे पांउ, योंही चलो जिन भूलो दाउ।
भी देखो ए पेहेले वचन, प्रेम सेवा यों राखो मन।। २० ।।

जिस तरह से तुमने पहले बृज से रास में जाते समय माया छोड़ी थी, उसी रास्ते अब भी चलो। मौका हाथ से न जाने दो। पहले भी धनी ने यही वचन कहे हैं कि सुन्दरसाथ की सेवा बड़े प्रेम से करो।

अब कहूंगी तारतम रोसन कर, ए लीजो साथ नेहेचे चित धर।
कहे इंद्रावती अब ऐसा होए, साथ को संसे न रहेवे कोए।। २१ ।।

अब हे साथजी! तारतम ज्ञान की जागृत बुद्धि से कहती हूं, जिसको अपने चित्त में रखना। श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि अब इस तारतम ज्ञान के जाहिर होने से तुम्हारा कोई संशय बाकी नहीं रह जाएगा।

बृज रास तुमको लीला कही, तारतम सों रोसनाई कर दई।
अब इन फेरे के कहूं प्रकार, सब साथ ढूंढ काढों निरधार।। २२ ।।

बृज और रास की लीला की पहचान तारतम ज्ञान से करा दी। अब इस जागनी ब्रह्माण्ड की हकीकत कहती हूं। जिससे सब साथ को निश्चित ही ढूंढ़ निकालूंगी।

।। प्रकरण ।। ४ ।। चौपाई ।। ५१ ।।

श्री सुन्दरबाई के अंतरध्यान की बीतक

नोट—श्री श्यामा महारानीजी का ही नाम इस खेल में राजजी ने सुन्दरबाई रखा—"धरयो नाम बाई सुन्दर, निजवतन दिखाया घर।"

श्री सुंदरबाई स्यामाजी अवतार, पूरन आवेस दियो आधार।
ब्रह्मसृष्ट मिने सिरदार, श्री धाम धनीजी की अंगना नार।। १ ।।

श्री सुन्दरबाई श्यामाजी की अवतार हैं, (जिनकी लीला श्री देवचन्द्रजी के तन से हुई)। जिनको श्री राजजी महाराज ने अपना पूर्ण आवेश दिया। यह ब्रह्मसृष्टियों की सिरदार (प्रधान) हैं तथा धाम धनी की अंगना नार हैं।

Nijanand App

कारज यों सब हुए पूरन, श्री सुन्दरबाई की सिखापन।
हिरदे बैठ केहेलाया रास, पेहेले फेरे के दोऊ किए प्रकास।। १८ ।।

श्री श्यामाजी (सुन्दरबाई) ने हृदय में बैठकर बृज और रास का वर्णन कराया है और उसका सिखापन (शिक्षा) देकर हमारे सभी काम इस तरह पूर्ण कर दिए। (रास की लीलाओं से हमने वालाजी को अपने से अलग न करने की लीला और अभिमान करने पर दुःख मिलता है—अतः अभिमान कभी न करना, यह सीखो)।

सुनियो साथ तुम एह कारन, धनी ल्याए धाम से आनंद अति घन।
ज्यों ना रहे माया को लेस, त्यों धनिऐं कियो उपदेस।। १९ ।।

इसलिए, सुन्दरसाथजी! सुनो, यह कारण था कि धनी धाम से अत्यन्त आनन्द लेकर आए। तुम्हारे अन्दर माया तिल भर भी न रह जाए, इसलिए राजजी महाराज ने यह उपदेश किया है, सिखापन दी है।

ज्यों तुम पेहेले भरे पांउ, योंही चलो जिन भूलो दाउ।
भी देखो ए पेहेले वचन, प्रेम सेवा यों राखो मन।। २० ।।

जिस तरह से तुमने पहले बृज से रास में जाते समय माया छोड़ी थी, उसी रास्ते अब भी चलो। मौका हाथ से न जाने दो। पहले भी धनी ने यही वचन कहे हैं कि सुन्दरसाथ की सेवा बड़े प्रेम से करो।

अब कहूंगी तारतम रोसन कर, ए लीजो साथ नेहेचे चित धर।
कहे इंद्रावती अब ऐसा होए, साथ को संसे न रहेवे कोए।। २१ ।।

अब हे साथजी! तारतम ज्ञान की जागृत बुद्धि से कहती हूं, जिसको अपने चित्त में रखना। श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि अब इस तारतम ज्ञान के जाहिर होने से तुम्हारा कोई संशय बाकी नहीं रह जाएगा।

बृज रास तुमको लीला कही, तारतम सों रोसनाई कर दई।
अब इन फेरे के कहूं प्रकार, सब साथ ढूंढ काढों निरधार।। २२ ।।

बृज और रास की लीला की पहचान तारतम ज्ञान से करा दी। अब इस जागनी ब्रह्माण्ड की हकीकत कहती हूं। जिससे सब साथ को निश्चित ही ढूंढ़ निकालूंगी।

|| प्रकरण || ४ || चौपाई || ५१ ||

श्री सुन्दरबाई के अंतरध्यान की बीतक

नोट—श्री श्यामा महारानीजी का ही नाम इस खेल में राजजी ने सुन्दरबाई रखा—''धरयो नाम बाई सुन्दर, निजवतन दिखाया घर।''

श्री सुंदरबाई स्यामाजी अवतार, पूरन आवेस दियो आधार।
ब्रह्मसृष्ट मिने सिरदार, श्री धाम धनीजी की अंगना नार।। १ ।।

श्री सुन्दरबाई श्यामाजी की अवतार हैं, (जिनकी लीला श्री देवचन्द्रजी के तन से हुई)। जिनको श्री राजजी महाराज ने अपना पूर्ण आवेश दिया। यह ब्रह्मसृष्टियों की सिरदार (प्रधान) हैं तथा धाम धनी की अंगना नार हैं।

Nijanand App

कई खेल किए ब्रह्मसृष्ट कारन, धनी दया पूरन अति घन।
अनेक वचन सैयन को कहे, पर नींद आड़े कछू हिरदे ना रहे।। २ ।।

इन्होंने ब्रह्मसृष्टियों के लिए कई आड़िका (चमत्कारिक) लीलाएं भी कीं। इनके ऊपर श्री राजजी महाराज की पूर्ण कृपा है, जिससे उन्होंने ब्रह्मसृष्टियों को तरह-तरह का ज्ञान समझाया, परन्तु अज्ञानता होने के कारण किसी के हृदय में वह वचन नहीं रहे।

तब भी अनेक विध कही, पर नींद पेड़ की आड़ी भई।
भी फेर अनेक दिए द्रष्टांत, पर साथ पकड़ के बैठा स्वांत।। ३ ।।

फिर भी उन्होंने अनेक तरह से कहा, परन्तु माया के परदे के होने से साथ को समझ में नहीं आया। फिर अनेक दृष्टान्त भी दिए, परन्तु सुन्दरसाथ मौन होकर बैठ गए।

तब अनेक धनिऐं किए उपाए, पर सुभाव हमारा क्योंए न जाए।
तब अनेक विध कह्या तारतम, पर तो भी अपना न गया भरम।। ४ ।।

तब धनी ने अनेक प्रयत्न किए, परन्तु हमारा स्वभाव (माया की चाह) नहीं बदला। तब अनेक तरह से तारतम ज्ञान की बातें कहीं फिर भी साथ के संशय नहीं मिटे।

तब अनेक आपन को कहे विचार, कई विध कृपा करी आधार।
तब अनेक पखें समझाए सही, तो भी कछू टांकी लागी नहीं।। ५ ।।

फिर साथ को अनेक तरह के विचारों से समझाया और कई प्रकार की कृपाकर तरह-तरह से समझाया, परन्तु वचनों की चोट नहीं लगी।

तब विध विध कह्या अनेक प्रकार, तो भी भई सुध न सार।
अनेक सनंधें केहे केहे रहे, पख पचीस आपन को कहे।। ६ ।।

तब और भी कई तरीकों से कहते रहे तो भी सुन्दरसाथ को कोई खबर नहीं पड़ी। अनेक तरह से पच्चीस पक्षों की भी बातें कीं तो भी सुन्दरसाथ को होश नहीं आया।

सो भी सेहे कर रहे आपन, नींद ना गई मांहें जागे सुपन।
तो भी धनी की बोहोतक दया, अखंड बृज का सुख सब कह्या।। ७ ।।

हम सुन्दरसाथ पच्चीस पक्षों के ज्ञान को भी अनसुना कर गए। सपने में जागे तो, पर नींद की खुमारी नहीं गई। फिर भी धनी की बहुत दया है कि जो उन्होंने अखण्ड बृज के सुखों का वर्णन किया।

भी वरन्यो सुख नेहेचल रास, पहेले फेरे के दोऊ किए प्रकास।
रास अखंड रात रोसन, बृज लीला अखंड रात दिन।। ८ ।।

इसके बाद अखण्ड रास का वर्णन किया और बृज और रास के ज्ञान की बातें बताईं। रास की रात्रि की लीला अखण्ड है और बृज की लीला दिन और रात की अखण्ड है।

दोऊ जुदी लीला कही अखंड, तीसरी अखंड लीला ए ब्रह्मांड।
किए तारतमें मन वांछित काम, भी देखाया सुख अखंड धाम।। ९ ।।

बृज की और रास की दोनों लीलाएं अलग-अलग अखण्ड हैं। तीसरी इस ब्रह्माण्ड की लीला अखण्ड होनी है। सुन्दरसाथ की मन की चाही इच्छा पूरी की तथा परमधाम के अखण्ड सुख भी दिखाए।

Nijanand App

दया धनी की है अति घन, कई विध सुख लिए सैयन।
सेवा करी धनबाईऐं पेहेचान के धनी, सोभा साथ में लई अति घनी।। १० ।।

श्री राजजी महाराज की दया बहुत ज्यादा (घनी) है, जिसका सुन्दरसाथ ने बहुत सुख लिया, परन्तु धनबाई की आत्मा (गांगजी भाई) ने धाम का धनी पहचानकर सेवा की। सुन्दरसाथ में उनकी बड़ी शोभा हुई।

साथ सों हेत कियो अपार, धंन धंन धनबाई को अवतार।
कछुक लेहेर लागी संसार, ना दई गिरने खड़ी राखी आधार।। ११ ।।

सुन्दरसाथ की गांगजी भाई ने बड़े प्यार से सेवा की, इसलिए धन्य-धन्य हो गए। उन्हें संसार की लहर ने गिराना चाहा। धनी ने मेहर (कृपा) कर उनको गिरने नहीं दिया और ईमान को पक्का रखा।

बेहेवट पूर सह्यो न जाए, कर पकर के दई पोहोंचाए।
तो भी सुध न भई आपन, क्योंए न छूटे मोह जल गुन।। १२ ।।

माया का विकट प्रवाह आया था जो सहन नहीं किया जाने वाला था (भानबाई का त्याग), फिर भी धनी ने हाथ पकड़कर माया से बचा लिया। यह सब देखकर भी हम सुन्दरसाथ को चेतना नहीं आई। इस भवसागर के बन्धन नहीं छूटे।

तब लरे हमसों अपनायत करी, तो भी नींद हम ना परहरी।
कई विध कह्या आप आंझू आन, पर या समें हमको सुध न सान।। १३ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि तब धनी देवचन्द्रजी ने मुझे अपनेपन से डांटा (मेहराज ठाकुर ने अपने हठ से परमधाम देखने के लिए इतनी कसनी कर डाली कि मरने तक की नौबत आ गई, तब डांटा और पूछा कि मेरे स्वरूप को तुमने क्या पहचाना? जो तुम मेरे कहने पर विश्वास नहीं करते। मेहराज ठाकुर कहते हैं आपको परमधाम नजर आता है, मुझको क्यों नहीं आता? तब देवचन्द्रजी ने कहा, मुझे उठाओ तुम बैठो) तो भी हमने माया नहीं छोड़ी। तब धनी ने रो-रोकर कहा, पर इस पर भी हम सुन्दरसाथ को सुध नहीं आई।

तब फेर धनिऐं कियो विचार, साथ घरों ले जाना निरधार।
तब संवत सत्रे बारोतरा बरख, भादों मास उजाला पख।। १४ ।।

तब धनी देवचन्द्रजी ने विचार किया कि सुन्दरसाथ को घर ले जाना जरूरी है। (पर इन पर बातों का कोई असर नहीं हो रहा है, तो इस तन को बदलना चाहिए) तब सम्वत् सत्रह सौ बारह के वर्ष, भाद्रपद (भादों) के महीना उजाला पक्ष में।

चतुरदसी बुधवारी भई, सनंध सर्वे श्री बिहारीजीसों कही।
मध्यरात पीछे किया परियान, बिहारीजी को सुध भई कछु जान।। १५ ।।

चतुर्दशी (चौदस) बुधवार के दिन बिहारीजी को बुलाकर शरीर छोड़ने की सब बात बताई। तब आधी रात के बाद तन छोड़ दिया, तब बिहारीजी को कुछ होश आया।

इन अवसर मैं भई अजान, मोहे फजीत करी गिनान।
न तो मोहे बुलाए के दई निध, पर या समें न गई मोहजल बुध।। १६ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि धाम चलने की खबर मुझको नहीं हुई। मेरी बुद्धि जान न पाई कि आज रात धनी धाम चले जाएंगे, इस कारण मैं शर्मिंदा हुई। मुझे धरौल से बुलाकर बाईस दिन पास रखकर कुल ज्ञान दिया था, किन्तु ठीक समय मेरी माया की बुद्धि काम नहीं आई।

Nijanand App

इन समें हुती माया की लेहेर, तो न आया आतम को वेहेर।
तब मेरी निध गई मेरे हाथ, श्री धाम तरफ मुख कियो प्राणनाथ।। १७ ।।

उस समय मेरा ध्यान माया में था, इसलिए मेरी आत्मा को दुःख नहीं हुआ। तब मेरी न्यामत श्री देवचन्द्रजी मुझे छोड़ गए और धाम पधार गए। (इन्द्रावती का दिल ही धाम है)।

तब हमसों इसारत करी, कह्या धाम आड़े इंद्रावती खड़ी।
मैं पैठ न सकों वह करे विलाप, तब मोहे बुलाए के कियो मिलाप।। १८ ।।

धनी ने यह बात इशारे से बताई थी कि धाम के दरवाजे में श्री इन्द्रावतीजी की आत्मा खड़ी रो रही है, इसलिए मैं धाम के अन्दर नहीं जा सकता। (क्योंकि नौ वर्ष का वियोग था) तब मुझे बुलाकर मिले।

ए केहके साथ को सुनाई, ए इसारत तब हम न पाई।
आप भी इत विरह कियो, पर मैं हिरदे में कछू न लियो।। १९ ।।

इस इशारे को उस समय सुन्दरसाथ समझ नहीं पाया। खुद देवचन्द्रजी ने रोकर कहा, पर मेरे हृदय में कुछ नहीं आया।

तब अद्रष्ट भए हममें से इत, हम सारे साजे बैठे तित।
जो कछू जीव को उपजे भाउ, तो क्यों छोड़े हम पिउ के पाउं।। २० ।।

तब हमारे बीच में से अदृश्य हो गए और हम सब बैठे देखते रहे। हमारे जीव को यदि कुछ सुध होती तो हम उनके चरण नहीं छोड़ते (अकेले न जाने देते, साथ में तन छोड़ते)।

सो तो सब मैं देख्या द्रष्ट, पर बैठा जीव होए कोई दुष्ट।
न तो क्यों सहिए धनी को बिछोह, जो जीव कछू जाग्रत होए।। २१ ।।

वह सब नजारा मैंने आंखों से देखा। यह दुष्ट जीव बैठा ही रहा नहीं तो जीव को थोड़ी भी सुध होती तो धनी का वियोग सहन नहीं करता।

एक वचन का न किया विचार, न कछू पेहेचान भई आधार।
सुनो हो रतनबाई ए कैसा फेर, कौन बुध ऐसी हिरदे अंधेर।। २२ ।।

उनके कहे एक वचन का भी विचार नहीं किया और न पहचान हुई कि इनके अन्दर प्रीतम हैं। रतनबाई (बिहारीजी) को श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि हे रतनबाई! उस समय मेरी मति क्यों मारी गई? मैं बेसुध क्यों हो गई?

ए बेसुधी कैसी आई, कछू पाई न सुध मूल सगाई।
देखो रे सई ऐसी क्यों भई, ए सुख छोड़ मैं अकेली रही।। २३ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि उस समय मुझ में ऐसी बेहोशी कैसे आई कि मैं मूल सम्बन्ध को नहीं पहचान सकी। हे मेरी सखी! देखो तो सही ऐसे सुख को छोड़कर मैं अकेली रह गई।

ए दुख की बातें हैं जो घनी, पर रह्यो जीव कछू अग्या धनी।
इन समें जो निध न जाए, तो क्यों आवेस सरूप सहे अंतराए।। २४ ।।

यह दुःख की बातें बहुत हैं, पर यह जीव धनी के हुकम से ही रह गया। यदि उस समय जब मैं घर गई थी तब धनी धाम न जाते, अर्थात् मेरे सामने जाते तो मैं धाम-धनी का जुदा होना सहन न कर पाती (मैं अपना शरीर छोड़ देती)।

Nijanand App

फिट फिट रे भूंडी तूं बुध, तें क्यों ना करी अखंड घर सुध।
महादुष्ट तूं अभागनी, ना सुध दई जीव को जाते धनी।। २५ ।।

हे मेरी बुद्धि ! तुझे धिक्कार है। तूने मुझे अखण्ड घर की सुध क्यों नहीं दी? तू महादुष्टा अभागिनी है। धनी के 'धाम' जाते समय तूने मेरे जीव को खबर नहीं दी।

ए बातें तें क्योंकर सही, के या समें घर छोड़ के गई।
के तूं विकल भई पापनी, बिना खबर निध गई आपनी।। २६ ।।

हे मेरी बुद्धि ! इस बात को तूने कैसे सहन कर लिया? क्या तू उस समय घर छोड़कर कहीं गई थी? (घास चरने गई थी) हे पापिनी! क्या तू विचलित हो गई थी? तुझे होश भी नहीं आया और धनी चले गए।

होए आवेस सरूप पेहेचान, पेहेचान पीछे न सहिए हान।
तिन कारन जो यों न होए, तो प्रगट लीला क्यों करे कोए।। २७ ।।

जब श्री राजजी महाराज के आवेश के स्वरूप की पहचान हो जाए तो पीछे वियोग सहन नहीं होता। यदि ऐसा न होता तो लीला प्रगट कैसे होती?

अब तोको कहा देऊं रे गाल, तूं भूली अवसर अपनो इन हाल।
फिट फिट रे भूंडें तूं मन, तें अधरम कियो अति घन।। २८ ।।

हे बुद्धि ! तुझे अब क्या गाली दूं? तू ऐसी हालत में अपना मौका खो बैठी। हे पापी मन ! तुझे धिक्कार है। तूने बहुत ही अधर्म किया है।

जीव बराबर बैठा होए, क्यों बैठा तूं ए निध खोए।
एती बड़ाई तुझ पर भई, तुझ देखते ए निध गई।। २९ ।।

तू तो शरीर में जीव के बराबर अधिकार लेकर बैठा है। फिर तूने यह न्यामत कैसे खो दी? तुझे इतनी शोभा मिली थी, फिर भी तेरे देखते हुए धनी चले गए।

तें ना दई जीव को खबर, नेठ झूठा सो झूठा आखिर।
ए क्रोध है बड़ा समरथ, पर आया न मेरे समें अरथ।। ३० ।।

तूने जीव को खबर नहीं दी, आखिर झूठे का झूठा ही रहा। हे क्रोध ! तू बड़ा समर्थ है, परन्तु मेरे काम नहीं आया।

गुन अंग इंद्री सबे घारन, कोई न जाग्या जीव के कारन।
इन सूरमों किनहूं न खोल्या द्वार, जीव बैठा पकड़ आकार।। ३१ ।।

हे मेरे गुण, अंग, इन्द्रियो ! तुम सब सो गए और तुम जीव के लिए जागृत नहीं हुए। इन सूरमाओं (शूरवीरों) में से किसी ने दरवाजा नहीं खोला अर्थात् जीव को सूचना नहीं दी, इसलिए जीव शरीर को पकड़कर बैठा रहा।

धिक धिक रे भूंडा जीव अजान, तेरी सगाई हुती निरवान।
रे मूरख तोको कहा भयो, धनी जाते कछू पीछे ना रह्यो।। ३२ ।।

धिक्कार है, हे पापी जीव ! तुझको जो अनजाना बन रहा है, तेरा तो निश्चित ही धनी से सम्बन्ध था (पहचान थी)। मूर्ख! तुझे क्या हो गया कि धनी चले गए। अब बता पीछे तेरा क्या रहा?

Nijanand App

एती अगनी तें क्योंकर सही, अनेक विध तोको धनिऐं कही।
निपट जीव तूं हुआ निठोर, झूठी प्रीत न सक्या तोर।। ३३ ।।

हे जीव ! तू इतना जुल्म कैसे सहन कर गया? तुझे तो धनी ने इतना समझाया था। हे जीव ! तू निश्चय ही कठोर हो गया है (काला पत्थर हो गया है)। तू इस तन से झूठी प्रीति नहीं तोड़ सका?

ऐसा अबूझ अकरमी हुआ इन बेर, कछू न विचास्था न छोड़ी अंधेर।
ऐसी आपसे ना करे कोए, खोया अपना परवस होए।। ३४ ।।

तू इस समय ऐसा नासमझ बदनसीब हो गया कि तूने कुछ नहीं सोचा और शरीर में पड़ा रहा (शरीर छोड़ा नहीं)। अपने आप से ऐसा कोई नहीं करता कि दूसरे के वश में होकर अपनी न्यामत खो दे।

ऐसा होए खांगडू जुदा पड़्या, एती अगनिऐं अजू न चुड़या।
पांच बरस का होए जो बाल, सो भी कछुक करे संभाल।। ३५ ।।

तू ऐसा खागडू (न गलने वाली मूंग का दाना) निकला कि इतना कहर बरसा फिर भी तू गला नहीं। पांच वर्ष का बालक भी अपने को सम्भाल कर रखता है।

धनिऐं तोको बोहोतक कह्या, गए अवसर पीछे कछू ना रह्या।
तेरी दोरी क्यों न टूटी तिन ताल, फिट फिट रे भूंडा कहां था काल।। ३६ ।।

धनी ने तुझे बहुत कुछ कहा, परन्तु अवसर हाथ से निकल गया। अब पछताने से क्या होगा? हे पापी काल ! तू उस समय कहां था? तेरा बन्धन उस समय क्यों नहीं टूटा?

ए तो केहेर बड़ा हुआ जुलम, जान्या विरह क्यों सहे खसम।
सो मैं अपनी नजरों देख्या, धरम हमारा कछू न रह्या।। ३७ ।।

यह तो बड़ा भारी जुल्म हुआ है। न जाने अपने खाविन्द का विरह कैसे सहन हुआ? मैंने यह सब कुछ देखा तो पता चला कि हम बेईमान हो गए।

।। प्रकरण ।। ५ ।। चौपाई ।। ८८ ।।

विलाप–राग रामश्री

ओहि ओहि करती फिरों, और करों हाए हाए रे।
पिउजी बिछोहा क्यों सहूं, जीवरा टूक टूक होए न जाए रे।। १ ।।

मैं ओही-ओही और हाय-हाय करती फिरती हूं, मेरे प्रीतम चले गए। वियोग कैसे सहन करूं? यह जीव टुकड़े-टुकड़े क्यों नहीं हो जाता?

फिट फिट रे भूंडा तूं सब्द, क्यों आई मुख बान रे।
वाओ ना लगी तिन दिसकी, निकस ना गए क्यों प्रान रे।। २ ।।

धिक्कार है पापी शब्द तुझे, मुख से तूने यह कैसे कहा कि धनी चले गए? उनके जाने की खबर तुझे नहीं मिली? हे प्राण! तुम निकल क्यों नहीं गए।

Nijanand App

एती अगनी तें क्योंकर सही, अनेक विध तोको धनिऐं कही।
निपट जीव तूं हुआ निठोर, झूठी प्रीत न सक्या तोर।। ३३ ।।

हे जीव ! तू इतना जुल्म कैसे सहन कर गया? तुझे तो धनी ने इतना समझाया था। हे जीव ! तू निश्चय ही कठोर हो गया है (काला पत्थर हो गया है)। तू इस तन से झूठी प्रीति नहीं तोड़ सका?

ऐसा अबूझ अकरमी हुआ इन बेर, कछू न विचारया न छोड़ी अंधेर।
ऐसी आपसे ना करे कोए, खोया अपना परवस होए।। ३४ ।।

तू इस समय ऐसा नासमझ बदनसीब हो गया कि तूने कुछ नहीं सोचा और शरीर में पड़ा रहा (शरीर छोड़ा नहीं)। अपने आप से ऐसा कोई नहीं करता कि दूसरे के वश में होकर अपनी न्यामत खो दे।

ऐसा होए खांगडू जुदा पड्या, एती अगनिऐं अजू न चुड़या।
पांच बरस का होए जो बाल, सो भी कछुक करे संभाल।। ३५ ।।

तू ऐसा खागडू (न गलने वाली मूंग का दाना) निकला कि इतना कहर बरसा फिर भी तू गला नहीं। पांच वर्ष का बालक भी अपने को सम्भाल कर रखता है।

धनिऐं तोको बोहोतक कह्या, गए अवसर पीछे कछू ना रह्या।
तेरी दोरी क्यों न टूटी तिन ताल, फिट फिट रे भूंडा कहां था काल।। ३६ ।।

धनी ने तुझे बहुत कुछ कहा, परन्तु अवसर हाथ से निकल गया। अब पछताने से क्या होगा? हे पापी काल ! तू उस समय कहां था? तेरा बन्धन उस समय क्यों नहीं टूटा?

ए तो केहेर बड़ा हुआ जुलम, जान्या विरह क्यों सहे खसम।
सो मैं अपनी नजरों देख्या, धरम हमारा कछू न रह्या।। ३७ ।।

यह तो बड़ा भारी जुल्म हुआ है। न जाने अपने खाविन्द का विरह कैसे सहन हुआ? मैंने यह सब कुछ देखा तो पता चला कि हम बेईमान हो गए।

।। प्रकरण ।। ५ ।। चौपाई ।। ८८ ।।

विलाप–राग रामश्री

ओहि ओहि करती फिरों, और करों हाए हाए रे।
पिउजी बिछोहा क्यों सहूं, जीवरा टूक टूक होए न जाए रे।। १ ।।

मैं ओही-ओही और हाय-हाय करती फिरती हूं, मेरे प्रीतम चले गए। वियोग कैसे सहन करूं? यह जीव टुकड़े-टुकड़े क्यों नहीं हो जाता?

फिट फिट रे भूंडा तूं सब्द, क्यों आई मुख बान रे।
वाओ ना लगी तिन दिसकी, निकस ना गए क्यों प्रान रे।। २ ।।

धिक्कार है पापी शब्द तुझे, मुख से तूने यह कैसे कहा कि धनी चले गए? उनके जाने की खबर तुझे नहीं मिली? हे प्राण! तुम निकल क्यों नहीं गए।

Nijanand App

तूं रे जुबां ऐसी क्यों वली, कहेते एह वचन रे।
खैंच निकालूं तोको मूल थें, जहां से तूं उतपन रे।। ३ ।।

हे जबान ! तूने ऐसे वचन कैसे कह दिए? (कि धनी 'धाम' चले गए हैं) दिल करता है जहां से तू निकली है वहीं से तुझे खींच निकालूं।

ए रे पिउजी सिधावते, वाचा क्यों रही तूं अंग।
उजड़ ना पड़े दंतड़े, घन घाय मुख भंग रे।। ४ ।।

पिउजी के जाते समय, हे मेरी आवाज ! तू अंग में कैसे रही? मुंह पर इतनी हथौड़े की चोटें पड़ीं फिर भी तुम दांत! टूट कर नीचे क्यों नहीं गिरे?

तें क्या सुने नहीं श्रवना, प्यारे पिउ के वचन रे।
ए रे लवा तुझे सुनते, क्यों ना लगी कानों अगिन रे।। ५ ।।

हे कानो ! तुमने पिया की मीठी वाणी क्या नहीं सुनी थी? ऐसी बुरी खबर सुनते ही तुम्हें आग क्यों नहीं लग गई?

चलना पिउ का सुनते, तोहे सब अंगों अगिन ना आई।
सुनते आग झाला मिने, दौड़ के क्यों न झंपाई।। ६ ।।

पियाजी का चलना सुनकर मेरे शरीर में आग क्यों नहीं लग गई? सुनते ही आग की लपटों में दौड़कर क्यों नहीं कूद गया?

नीच नैंन ए तुझ देखते, आया न आंखों लोहू।
पिउ लौकिक जिनों बिछुरे, ऐसे भी रोवे सोऊ।। ७ ।।

हे नीच आंखो ! तुम्हारे देखते हुए यह न्यामत (धनी) चली गई। तुमने खून के आंसू क्यों नहीं बहाए? संसारी लोगों के भी खाविंद मरते हैं तो वह भी रोते हैं।

रोवे लोहू आंखों आंझू चले, सो कहा भयो रोवनहारे।
देखत ही पिउ चलना, निकस न पड़े तारे रे।। ८ ।।

हे आंखो ! खाली रोने से क्या होगा? तुमसे तो खून की धारा बहनी चाहिए थी। धनी का चलना देखकर, पुतलियो ! तुम्हें टूटकर नीचे गिर जाना चाहिए था।

क्यों न आई बास नासिका, पेहेचान के प्रेमल।
पिउ संग जीवरा न चल्या, अंदर लेता था सुगंध सकल।। ९ ।।

हे नासिका ! तुझे पिउजी के चलने की सुगन्ध नहीं आई? पिया के संग हमारा जीव नहीं जा सका जो सारे सुख अन्दर ही अन्दर लेता था।

गुन अंग इन्द्रियों की, पिउ बांधते गोली प्रेम काम।
पेहेचान करते पोहोंचावने, सनमंध देख धनी धाम।। १० ।।

धाम का सम्बन्धी जानकर धाम पहुचने के लिए हमारे गुण, अंग, इन्द्रियों को प्रेम के बन्धन में बांधते थे।

Nijanand App

गुन अंग इन्द्री आकार के, आग पड़ो तुम पर रे।
प्रेम न उपज्या तुमको, चलते धामधनी घर रे।। ११ ।।

मेरे शरीर के सब गुण, अंग, इन्द्रियो ! तुम्हें आग लग जाए। धाम-धनी के घर चलते समय तुम्हें प्रेम नहीं आया।

एती जोगवाई ले तूं आकार, धनी चलते पीछे क्यों रह्या रे।
अब जलो रे उड़ो खाखड़े, इन समें गल पिघल न गया रे।। १२ ।।

हे मेरे शरीर ! तू इतना सामान (शक्ति) लेकर धनी के चलते समय पीछे क्यों रह गया? अब सूखे पत्ते के समान जलो, उड़ते फिरो। उस समय तू गलकर पिघल क्यों नहीं गया?

अंग तोहे विरह अगिन की, न लगी कलेजे झाल रे।
ए विरहा ले अंग खड़ा रह्या, फिट फिट करम चंडाल रे।। १३ ।।

हे कलेजे ! तेरे अन्दर विरह की अग्नि की ज्वाला नहीं जली। हे चाण्डाल शरीर ! तुझे धिक्कार है जो इतना विरह लेकर भी खड़ा है।

हाथ पांव सब अंग के, सब उजड़ न पड़े संधान।
अंग रोम रोम जुदे न हुए, अस्त होते तेज भान।। १४ ।।

मेरे हाथ, पांव और शरीर के सब जोड़ ! तुम टूट क्यों नहीं गए? अस्त होते सूर्य के समान धनी के जाते समय अंग के रोम-रोम अलग क्यों नहीं हो गए?

ए रे निमूना भान का, मेरे पिउजी को दिया न जाए रे।
ए जोत धनी इन भांत की, कोट ब्रह्मांड में न समाए रे।। १५ ।।

सूर्य के प्रकाश की उपमा मेरे धनी को देना ठीक नहीं। हमारे धनी के ज्ञान की जोत तो करोड़ों ब्रह्माण्डों में नहीं समाती (सूर्य तो केवल एक ब्रह्माण्ड का है)।

ए जोत पकड़ी ना रहे, चली इंड फोड सुन्य निराकार।
सदासिव महाविष्णु निरंजन, सब प्रकृत को कियो निरवार।। १६ ।।

मेरे धनी के ज्ञान की ज्योति चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड को फोड़कर शून्य, निराकार, सदाशिव, महाविष्णु और निरंजन, पूरी प्रकृति की हकीकत बताते हुए घर तक जाती है।

सब्दातीत हुते जो ब्रह्मांड, जाए तिनमें करी रोसन रे।
अछर प्रकास करके, जाए पोहोंची धाम के बन रे।। १७ ।।

जागृत बुद्ध के ज्ञान ने जो ब्रह्माण्ड शब्दातीत है, वहां जाकर हमारे धनी के ज्ञान ने प्रकाश किया और अक्षर ब्रह्म का भी ज्ञान देकर परमधाम के वनों में पहुंचा।

सब गिरदवाए बन देखाए के, किए धाम मन्दिर प्रकास।
ब्रह्मानंद ब्रह्मसृष्ट में, प्रगट कियो विलास।। १८ ।।

रंगमहल के चारों तरफ के वनों की शोभा दिखाकर रंगमहल के अन्दर का भी ज्ञान दिया और ब्रह्मानन्द तथा ब्रह्मसृष्टि की वाहेदत और खिलवत का वर्णन किया।

Nijanand App

हांरे ए सुख सैयां लेवहीं, मेरे पिउजी की विरहिन।
पीछे तो जाहेर होएसी, देसी अखंड सुख सबन।। १९ ।।

मेरे धनी की विरहिणी आत्माएं यह सब सुख लेती हैं। फिर पीछे तो सब में जाहिर होकर सबको अखण्ड बहिश्तों का सुख देंगे।

ए रे धनी मेरे चलते, ना टूटी रगां क्यों रही खाल रे।
रूप रंग रस लेयके, क्यों ना पड़ी आग झाल रे।। २० ।।

मेरे धनी के चलते समय मेरी नसें टूट क्यों नहीं गईं? चमड़ी, रूप, रंग और रस लेकर साबुत कैसे खड़ी रहीं? क्यों नहीं आग में झांप खा गईं।

हड्डी मांस रगां भेली क्यों रही, ए पकड़ के अंग अंधेर रे।
धनी का बिछोहा क्यों सह्या, लोहू ना सूक्या तिन बेर रे।। २१ ।।

हड्डी, मांस, नसें इकट्ठे कैसे रहे और इस झूठे अंग को कैसे पकड़े रहे? धनी का विछोहा कैसे सहन कर लिया? उस समय खून सूख क्यों नहीं गया?

अंग मेरे आकार के, सातों धात ना गई क्यों सूक रे।
एहेरन घन के बीच में, क्यों ना हुई भूक भूक रे।। २२ ।।

मेरे शरीर की सातों धातुएं क्यों नहीं सूख गईं? एहेरन (निहाई) पर घन की चोट में बुरादा क्यों नहीं बन गई?

नैंन नासिका मुख श्रवना, भूंडी खोपड़ी पकड़ तूं क्यों रही रे।
तोड़ इनों को जुदे जुदे, तूं क्यों उजड़ ना गई रे।। २३ ।।

हे पापी खोपड़ी ! ऐसे समय में तू आंखें, नाक, मुख और कान को पकड़कर कैसे खड़ी रही? इन्हें अलग-अलग तोड़कर तू नष्ट क्यों नहीं हुई?

ए रे पिउजी सिधावते, क्यों ना लग्या कलेजे घाय।
काल मेरा कहां चल गया, क्यों न काढी खैंच अरवाय।। २४ ।।

धनी के धाम चलते समय कलेजे में चोट क्यों नहीं लगी? हे काल ! तू कहां चला गया था? तूने जीव को खींचकर बाहर क्यों नहीं निकाल दिया?

नेहेचल निध रे बिछुड़ते, कहां गई वह बुध।
धिक धिक रे चंडालनी, तें क्यों भई ऐसी असुध।। २५ ।।

अखण्ड धनी के बिछुड़ते समय, हे बुद्धि ! तू कहां गई थी? हे चाण्डाल ! तुझे भी धिक्कार है। तू ऐसी बेसुध क्यों हो गई?

ग्यान मेरा तिन समें, क्यों ना किया वतन उजास।
तिन समें दगा दिया मुझको, मैं रही तेरे विस्वास।। २६ ।।

हे मेरे ज्ञान ! तूने उस समय परमधाम के सम्बन्ध का ज्ञान क्यों नहीं दिया? तूने उस समय मुझे धोखा दिया। मैं तेरे विश्वास में रही।

Nijanand App

गुन अंग इंद्री मेरे मुझसों, उलटे क्यों हुए दुस्मन रे।
जिन समें हुआ रे बिछोहा, मेरे क्यों न हुए सजन रे।। २७ ।।

हे मेरे गुण, अंग, इन्द्री ! तुम उलटे मेरे ही दुश्मन क्यों बन गए? जिस समय धनी का वियोग हुआ था, तुम्हें मेरा साथ देना था।

साहेब मेरा चलते, मेरी सकल सैन्या अंग मांहें।
सो काम न आए आतम के, अवसर ऐसो न क्यांहें।। २८ ।।

मेरे साहब (स्वामी) के धाम चलते समय मेरे शरीर की सभी शक्तियां शरीर में ही थीं। वह आत्मा के काम नहीं आईं। अब ऐसा मौका मिलने वाला नहीं है।

फिट फिट रे सैन्या तुमको, क्या न हुती तुमे पेहेचान रे।
जाते जीव का जीवन, तुम क्यों ले न निकसे प्रान रे।। २९ ।।

हे मेरे अंग की सेना ! तुमको धिक्कार है। क्या तुम्हें धनी की पहचान नहीं थी? मेरे जीव के जीवन के जाते समय तुम प्राण लेकर क्यों नहीं निकल गए?

जीवन चलते जीवरा, क्यों छोड्या तें संग रे।
अब कहूं रे तोको करम चंडाल, तूं तो था तिनका अंग रे।। ३० ।।

हे मेरे जीव ! धनी के चलते समय तूने उनका साथ क्यों छोड़ दिया? हे जीव ! तू तो धनी का अंग ही था। अब तेरे को नीच चाण्डाल कहूं?

नीच करम ऐसा चंडाल, तुझ बिना कोई न करे रे।
श्री धनी धाम चले पीछे, इन जिमी में देह कौन धरे रे।। ३१ ।।

हे चाण्डाल जीव ! तेरे बिना ऐसा नीच कर्म कोई नहीं कर सकता। धनी के धाम चलने के बाद इस धरती पर देह लेकर कौन रह सकता है?

कौन विध कहूं मैं तुझको, कुकरमी करम चंडाल रे।
तोहे अंग न उठी अगिन, तो तूं क्यों न झंपाया झाल रे।। ३२ ।।

हे कुकर्मी चाण्डाल जीव ! मैं तुझे क्या कहूं? तेरे अंग को आग क्यों नहीं लग गई? आग की लपटों में तूने अपने को झोंक क्यों नहीं दिया?

झांप न खाई तें भैरव, क्यों कायर हुआ अवसर।
तिल तिल तन न ताछिया, जाते ए सुख सागर।। ३३ ।।

हे जीव ! तूने पहाड़ से गिरकर शरीर क्यों नहीं छोड़ा? तू ऐसे समय कायर (बुजदिल) कैसे बना रह गया? सुख के सागर धाम के धनी के जाते समय तिल-तिल करके शरीर को क्यों नहीं छील दिया?

गुन सागर धनी चलते, क्यों किया ऐसा हाल रे।
बज्रलेपी रे स्वाम द्रोही, जीव क्यों चूक्या चंडाल रे।। ३४ ।।

गुण के सागर, धाम धनी के चलते समय तेरा ऐसा हाल क्यों हो गया? तूने स्वामी द्रोही बनकर बज्रलेप जैसा पाप क्यों किया? हे चाण्डाल जीव ! तूने ऐसी भूल क्यों की?

Nijanand App

दुष्ट अधरमी केता कहूं, हुआ बेमुख देते पीठ रे।
ऐसा समया गमाइया, निपट निठुर जीवरा ढीठ रे।। ३५ ।।

हे दुष्ट अधर्मी जीव ! तुझे कितना कहूं? धनी के जाते समय तूने उलटा मुख कर लिया। तूने ऐसा समय खो दिया है। तू निश्चय ही बड़ा कठोर और ढीठ है।

सब्दातीत के पार के पार, तिन पार जोत का था तेज रे।
यासों था तेरा सनमंध, पर तें कछुए न राख्या हेज रे।। ३६ ।।

शब्दातीत (बेहद) के पार के भी पार परमधाम के वह स्वरूप थे, जिनसे तेरा सम्बन्ध था। तूने उनसे कुछ भी लगाव नहीं रखा।

तुझमें भी तेज है उन जोत का, और वाही कमल की बास रे।
वह तेज फिरते रे तूं तेज, क्यों न पोहोंच्या जोत प्रकास रे।। ३७ ।।

तेरे अन्दर भी परमधाम की आत्मा है और वहीं का तेरे अन्दर ज्ञान भी है। फिर उस परमधाम के तेज के जाते समय, हे मेरी आत्मा ! तू क्यों नहीं उनके साथ निकली?

अब कहा करूं कहां जाऊं, ए बानी धनी ढूंढों कित रे।
पिउ पोहोंचाए मैं पीछे रही, करने विलाप रही इत रे।। ३८ ।।

अब मैं क्या करूं और कहां जाऊं? अब उस वाणी और धनी को कहां ढूंढ़ें? धनी को पहुंचाकर मैं रोने के लिए ही पीछे रह गई।

अब ए बानी तूं कहां सुनसी, मेरे धाम धनी के वचन रे।
बरनन करते जो श्रीमुख, सो अब काहूं न पाइए ठौर किन रे।। ३९ ।।

मेरे धाम के धनी के वचनों की यह वाणी तू कहां सुनेगी? धाम-धनी अपने मुखारबिन्द से जो वर्णन करते थे, अब वह ठिकाना और वाणी कहीं नहीं मिलेगी।

अब तारतम कौन केहेसी, कौन विचार कर देसी हेत।
चौदे भवन में इन धनी बिना, ए बानी कोई ना देत।। ४० ।।

अब तारतम कौन कहेगा और बड़े प्यार के साथ उसके भेद कौन समझाएगा? धनी के बिना इन चौदह लोकों में और कोई इस वाणी को देने वाला नहीं है।

बृजलीला रात दिन अखंड, रासलीला अखंड रात रे।
पिउजी बिना विवेक कौन केहेसी, हुआ प्रतिबिम्ब तीसरा प्रभात रे।। ४१ ।।

बृज लीला रात-दिन अखण्ड है। रास की लीला की रात अखण्ड है। पिया के बिना इस भेद को कौन कहेगा? इस तीसरे ब्रह्माण्ड में प्रतिबिम्ब की लीला प्रभात की लीला है। यह ब्योरा कर कौन समझाएगा?

भेख बागे का बेवरा, रह्या अग्यारे दिन रे।
सात गोकुल चार मथुरा, कौन केहेसी विवेक वचन रे।। ४२ ।।

इस प्रतिबिम्ब की लीला में ग्यारह दिन गोलोक के भेष की लीला, जिसमें सात दिन गोकुल और चार दिन मथुरा के थे, इनके भेद की हकीकत कौन बताएगा?

Nijanand App

उत्तम विचार उत्तम बंधेज, और कई विधके द्रष्टांत रे।
इन धनी बिना ए दया कर, कौन देसी कर खांत रे।।४३।।

ऐसे उत्तम विचार और ऐसे उत्तम ढंग और तरह-तरह के दृष्टांत देकर जो मन के संदेह मिटाकर सन्तुष्ट करने वाले हों, इन धनी बिना कौन दया करके देगा?

पन बांध बरस चौदेलो, सास्त्र को अर्थ कौन लेसी।
सो ए प्रकास इन पिउ बिना, एक साइत में समझाए कौन देसी।।४४।।

चौदह वर्ष तक नेष्टाबन्ध (प्रण-निष्ठावद्ध) होकर भागवत सुनकर शास्त्रों के भेद लेकर हमें एक पल में उनका सार धनी के बिना कौन समझाएगा?

दूध पानी रे जुदा कर, कौन केहेसी कर रोसन रे।
मोहजल गेहेरे में डूबते, कौन काढे या धनी बिन रे।।४५।।

दूध, पानी, (ब्रह्म और माया) को जुदा करने का ज्ञान धनी बिना कौन देगा? इस भवसागर में डूबते हुए सुन्दरसाथ को धनी बिना कौन निकालेगा?

अठोतर सौ पखका, कौन काढ देसी सार रे।
सुख अछर अछरातीत के, कौन देसी बिना आधार रे।।४६।।

एक सौ आठ पक्ष की हकीकत कौन बताएगा? अक्षर और अक्षरातीत के सुख धनी के बिना कौन देगा?

नरसैयां कबीर जाटीय के, और कई साधों सास्त्र वचन रे।
काढ दे सार कौन इनका, करके एह मथन रे।।४७।।

नरसैयां, कबीर, जाटी, कई साधुओं और शास्त्रों के वचनों का मन्थन कर इसका सार निकालकर हमें कौन देगा?

महाप्रले लों जो कोई, सास्त्र पढ करे अभ्यास।
बहु विध लेवे विवेकसों, कर मन द्रढ विस्वास।।४८।।

महाप्रलय तक भी यदि कोई शास्त्र पढ़कर अभ्यास करे और मन में दृढ़ विश्वास कर तरह-तरह के विचार से ग्रहण करे, तो भी उसे वह ज्ञान नहीं मिलता।

तो भी न आवे ए विवेक, ना कछू ए मुख बान रे।
सो संग धनी के एक खिन में, कर देवें सब पेहेचान रे।।४९।।

इतना अध्ययन करने के बाद में भी वह शहूर नहीं आ सका, जो धनी के मुखारबिन्द की वाणी से एक पल में सब पहचान हो जाती है।

अब अबूझ टाल सुबुध देय के, कौन करसी चतुर वचिखिन रे।
नेहेचल निध धनी धाम की, सो कहूं पाइए न चौदे भवन रे।।५०।।

अब अज्ञानता हटाकर जागृत बुद्धि देकर कौन हमें चतुर और प्रवीण बनाएगा परमधाम का अखण्ड ज्ञान चौदह लोकों में कहीं नहीं मिलता।

Nijanand App

दूजा कौन देसी रे लड़ के, ऐसी जाग्रत बुध सुजान रे।
साथ धाम का जान के, कौन केहेसी हेत चित आन रे।।५१ ।।

ऐसी जागृत बुद्धि का ज्ञान प्यार से लड़कर दूसरा हमें कौन देगा? धाम का साथी जानकर कौन प्यार भरी वाणी से हमको ज्ञान देगा?

नींद उड़ाए जगाए के, कौन देसी घर आप पेहेचान रे।
खेल देखाए आप देह धर, कौन काढ़सी होए गलतान रे।।५२ ।।

अज्ञान की नींद उड़ाकर जागृत बुद्धि से जगाकर अपने घर की तथा धनी की पहचान कौन कराएगा? तन धारण कर सुन्दरसाथ को कौन खेल दिखाएगा? अधिक मेहनत से थकने के बाद भी सुन्दरसाथ को माया से कौन निकालेगा?

त्रैलोकी त्रिगुन माया मिने, हम बैठे थे रचके घर रे।
सो नेहेचल धाम में बैठाए के, याको कौन देखावे खेल कर रे।।५३ ।।

ब्रह्मा, विष्णु, महेश की माया के बीच में हम अपना घर बनाकर बैठ गए थे। धनी ने अखण्ड घर की पहचान कराई और इस खेल को झूठ करके दिखाया, ऐसा कौन करेगा?

अब ए चरचा कहां सुनसी, मूल वचन तारतम रे।
ए सुने बिना हम क्यों गलसी, बिना बानी इन खसम रे।।५४ ।।

अब तारतम के मूल वचनों की चर्चा हम कहां सुनेंगे और धनी की वाणी सुने बिना हमारी आतम में चोट कैसे लगेगी?

और घाट बिना गले, क्यों जीव टल होसी आतम रे।
तीन दिवाल आड़ी भई, सो उड़े ना बिना खसम रे।।५५ ।।

धनी की वाणी के बिना जीव का आवागमन हटाकर योगमाया में अखण्ड तन कौन देगा? जीव के इस रास्ते में तीन दीवारें (स्थूल, सूक्ष्म और कारण) खड़ी हैं, इन्हें धनी के बिना कौन हटाएगा?

पांच पचीस जो उलटे, होए बैठे दुस्मन रे।
सो नेहेचल घर में बैठाए के, कौन कर देवे सीधे सजन रे।।५६ ।।

पांच तत्व और पच्चीस प्रकृतियां (पांच कर्मेन्द्रिय, पांच ज्ञानेन्द्रिय, पांच तन्मात्रा, पांच प्राण, चार अन्तःकरण और एक जीव। कर्मेन्द्रियां—हाथ, पैर, मुख, लिंग, गुदा। ज्ञानेन्द्रियां—आंख, कान, नाक, जिह्वा और चमड़ी। पांच तन्मात्रा—स्पर्श, शब्द, रूप, रस, गंध। पांच प्राण—प्राण, अपान, समान, ज्ञान, उदान। चार अन्तःकरण—मन, चित्त बुद्धि, अहंकार) यह माया की तरफ उलटे चल रहे थे और हमारे दुश्मन बने बैठे थे। इनको सज्जन बनाकर हमें परमधाम में धनी के बिना कौन बिठाएगा?

वैरी मार के कौन जिवावसी, उलटे भान के करे सनमुख रे।
या दुख में इन धनी बिना, कौन देवे सांचे सुख रे।।५७ ।।

हमारे इन गुण अंग इन्द्रियों को मारकर हमें कौन जिन्दा करेगा? इनको उलटे रास्ते से निकालकर धनी के सम्मुख कौन करेगा? इस दुःख के संसार में धनी के बिना सच्चे सुख कौन देगा?

Nijanand App

बीच पट आतम परआतमा, कौन उड़ाए कर दे संग रे।
इन दुलहे बिना दुलहिंनसों, क्यों होसी रस रंग रे।।५८।।

आत्मा और परआतम के बीच में फरामोशी का जो परदा पड़ा है, इसे कौन हटाकर आत्मा को परआतम में मिलाएगा? इन धनी के बिना धनी का रस रंग सुन्दरसाथ को कौन कराएगा?

मोहजल पूर अंधेर में, जित काहू न किसी की गम रे।
तहां से काढ़ देवे सुख नेहेचल, ऐसा कौन बिना इन खसम रे।।५९।।

भवसागर के अन्धेरे में जहां किसी को किसी की पहचान नहीं है, यहां से निकाल कर अखण्ड सुख इन धनी के बिना कौन देगा?

इन भवसागर के जीवों में, वासना ढूंढ काढे छुड़ाए के फंद रे।
आतम अपनी पेहेचान के, कौन पावे आनंद रे।।६०।।

इन भवसागर के जीवों में से आत्माओं को ढूंढ़कर माया के फंदे से कौन छुड़ाएगा? अपनी आत्माओं की पहचान करके अब खुशी किसको होगी?

अब कौन रे करसी ऐसा वरनन, नेहेचल बृज रास धाम रे।
ए कौन सुख सैयों को देय के, कौन मिलावे स्यामा जी स्याम रे।।६१।।

अब अखण्ड बृज रास और परमधाम का ऐसा वर्णन कौन करेगा? सुन्दरसाथ को सुख देकर राजजी और श्यामाजी से कौन मिलाएगा?

आतम को रे जगाए के, कौन खोले आतम के श्रवन रे।
अंतर पट उड़ाए के, कौन केहेसी मूल वचन रे।।६२।।

सोई हुई आत्मा को ज्ञान सुनाकर कौन जगाएगा? फरामोशी का परदा उड़ाकर परमधाम के मूल वचनों की खबर कौन देगा?

फोड़ ब्रह्मांड आड़े आवरण, ताए पोहोंचावे अछर पार रे।
सुख अखंड अछरातीत के, कौन देवे बिना इन भरतार रे।।६३।।

क्षर ब्रह्माण्ड के आड़े परदे को हटाकर अक्षर के पार कौन पहुंचाएगा? इन धनी के बिना अखण्ड अक्षरातीत श्री राजजी के सुख कौन देगा?

ऊपर बाड़े वाट धाम की, कौन बतावे और रे।
इन भेदी बिना भोम क्यों छूटही, क्यों पोहोंचिए अखंड ठौर रे।।६४।।

इन भेद के जानने वाले धनी के बिना यह भवसागर कौन छुड़ाएगा? अखण्ड परमधाम कैसे पहुंचेंगे? वहां पहुंचने का रास्ता कौन बताएगा?

साथ अजान अबूझ को, कौन लेसी सुधार रे।
वासना सगाई पेहेचान के, कौन खोल दे नेहेचल द्वार रे।।६५।।

सुन्दरसाथ जो अनजान हैं, अज्ञानी हैं, उन्हें कौन समझाकर सुधारेगा? आत्माओं की पहचान करके उनको परमधाम का रास्ता कौन बताएगा?

Nijanand App

सत सागर सुतेज में, बतावत नेहेचल धन रे।
सो पूर लेहेरां चल गई, आवत अमोल अखंड रतन रे।। ६६ ।।

धनी अखण्ड परमधाम के सच्चे सुखों का आवेश में वर्णन करते थे। अखण्ड ज्ञान की लहरों पर लहरें आती थीं, जिनसे अखण्ड ज्ञान आता था, जो अब चला गया।

ए धन मेरे धनीय का, आया था मुझ कारन रे।
सो धन खोया में नींद में, धनी देते कर कर जतन रे।। ६७ ।।

यह धन मेरे धनी का था और मेरे ही वास्ते आया था। धनी कई यत्न करके मुझे देते थे, वह निधि मैंने नींद में खो दी।

ए धन जाते मेरे धनी का, सो तूं देख के कैसे रही रे।
फिट फिट भूंडी पापनी, तें एती पुकार क्यों सही रे।। ६८ ।।

ऐसा धन (मेरे धनी का) जाता देखकर, दुष्ट पापी आत्मा! तू कैसे देखती रही? तुझे धिक्कार है! धनी इतनी पुकार करते रहे, तूने सहन कैसे की?

फिट फिट रे मेरी आतमा, तें क्यों खोई निध आई हाथ रे।
कर दई धनी धाम पेहेचान, तो तूं क्यों न चली पिउ साथ रे।। ६९ ।।

धिक्कार है मेरी आत्मा ! तूने हाथ में आई वस्तु खो दी। तुझे धनी और धाम की पहचान होने पर भी तू उनके साथ क्यों नहीं चली गयी?

संग पिउ के न चली, क्यों रही पिउसों बिछुर रे।
अजहूं आह तेरी न उड़ी, याद कर अवसर रे।। ७० ।।

हे आत्मा ! तू पिया से क्यों बिछुड़ गई? उनके साथ क्यों नहीं चली गयी? ऐसा अवसर याद कर तेरी सांस निकल क्यों नहीं गयी?

त्राहि त्राहि करूं रे सजनी, पिउजी दियो मोहे छेह रे।
जल बल विरहा आग में, भसम न हुई जीव देह रे।। ७१ ।।

हे सजनी ! मैं हाय-हाय करती हूं। प्रीतम मुझे छोड़कर चले गए हैं। उनके विरह की आग में मेरा शरीर और जीव भस्म क्यों नहीं हो गया?

कई बिध कह्या मोहे पिउजी, पर मैं कछू न कियो सनेह रे।
अब तो बैठी धन खोए के, हाथ आया था जेह रे।। ७२ ।।

मेरे धनी ने मुझे कई प्रकार से समझाया, परन्तु मैंने कुछ भी स्नेह नहीं किया। अब तो हाथ आए धनी को खो बैठी हूं।

धनिऐं तो केहे केहे देखाइया, कर कर मुझसों एकांत रे।
पर मैं चूकी चंडालन अवसर, अब पकड़ बैठी मैं स्वांत रे।। ७३ ।।

धनी ने मुझे तो एकान्त में भी बैठकर ज्ञान दिया, पर मैं ही चाण्डालिनी निकली कि हाथ आया अवसर गंवाकर अब चुपचाप होकर बैठी हूं?

Nijanand App

अब सब्दातीत निध धाम की, ए कौन केहेसी मुख बान रे।
श्री धामके सुख की रे बीतक, कौन केहेसी वर्तमान रे।।७४ ।।

अब बेहद के परे परमधाम के अखण्ड ज्ञान का कौन मुख से वर्णन करेगा? परमधाम की सुख की लीला का अब कौन वर्णन करेगा?

उठते बैठते खेलन की, सुध कौन कहे एह सुकन रे।
बन जाए अन्हाए के, कौन केहेसी सिनगार बरनन रे।।७५ ।।

उठते-बैठते खेलने की परमधाम की लीला के वचन कौन हमको कहेगा? वनों में जाकर झीलने के बाद सिनगार का वर्णन कौन सुनाएगा?

वस्तर भूखन की विगत, पिउ बिना कौन लेवे रे।
ए सुख अनुभव अपना, सनमंध करके कौन देवे रे।।७६ ।।

वस्त्र और आभूषणों की हकीकत का वर्णन धनी के बिना कौन जानता है, जो बताएगा? अपने अनुभव के सुखों का ज्ञान साथी जानकर कौन देगा?

कई सुख अनुभव बन के, कई सुख सातों त्रट रे।
सुख ताल मन्दिर मोहोलन के, कौन देवे उड़ाए अंतर पट रे।।७७ ।।

वनों के कई सुख, सातों घाटों में कई सुख, हौज कौसर तालाब के कई सुख, टापू महल के सुखों को माया का परदा हटाकर कौन देगा?

तीसरी भोम मोहोल सिनगार, और बैठ के आरोग पौढ़न रे।
सुखपाल बैठ बन सिधावते, कौन केहेसी पीछला पोहोर दिन रे।।७८ ।।

तीसरी भोम के महल में सिनगार का और पड़साल पर बैठकर आरोगने (खाने) और नीले-पीले मन्दिर में पौढ़ने का तथा सुखपाल में बैठकर वनों में जाने का और दिन के पिछले प्रहर की लीला का वर्णन कौन करेगा?

सुख चौथी भोम निरत के, सुख पांचमी भोम पौढ़न रे।
ए सुख अनुभव कौन केहेसी, कई विध विलास रैन रे।।७९ ।।

चौथी भोम में नृत्य के सुख का तथा पांचवीं भोम में पौढ़ने के सुख का और श्री राजजी महाराज के साथ रात्रि को विलास के सुख का अनुभव कौन कहेगा?

कई विध सुख तारतम के, जो कहे वचन सुख मूल रे।
या विध हमें कौन कहे बरनन, सनमंध होए सनकूल रे।।८० ।।

तारतम के द्वारा इश्क रब्द के मूल वचनों का वर्णन प्रसन्न होकर कौन बताएगा?

देत बिछोहा धनीधाम के, तुम क्यों न किया एह विचार रे।
हुती आसा मुखी इंद्रावती, सुख चाहती अखंड अपार रे।।८१ ।।

धाम-धनी के बिछुड़ते समय श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि मेरी चाहना बाकी थी। अखण्ड सुखों को बेशुमार लेना चाहती थी। इसका विचार क्यों नहीं किया?

।। प्रकरण ।। ६ ।। चौपाई ।। १६९ ।।

Nijanand App

जाटी भाखा का विलाप

मेरी सैयल रे, साह आए थे मेरे घर।
मैं पेहेचान ना कर सकी, पिउ चले पुकार पुकार।। १ ।।

हे मेरी प्यारी सखी ! प्रीतम मेरे घर आए थे। मैं उनकी पहचान नहीं कर सकी और वह मुझे समझा समझा कर चले गए।

पिउ आए ना पेहेचाने, मोहे ना परी सुध।
वचन कहे जो हेत के, भांत भांत कई बिध।। २ ।।

धनी आए, मैंने उन्हें नहीं पहचाना कि यह मेरे धनी हैं। उन्होंने तरह-तरह से प्यार के वचन कहे।

नींद ऐसी भई निगोड़ी, ए तुम देखो रे सई।
दिन दो पोहोरे जागते, मोहे काली रैन भई।। ३ ।।

हे मेरी बहन ! देखो, इस बेहया नींद ने दिन के दोपहर के समय में घोर काली रात कर दी।

घर आए ना पेहेचाने, कहे विध विध के वचन।
कान आंखां फूटियां, और फूटे हिरदे के नैन।। ४ ।।

प्रीतम मेरे घर आए। मैंने पहचाना नहीं, उन्होंने तरह-तरह से समझाया। परन्तु मेरी आंखें, कान और अन्दर के नैन भी फूट गए और पहचान न सके।

सजन मेरा चल गया, अब रहूंगी विध किन।
वस्त गई जब हाथ थें, अब रोवना रात दिन।। ५ ।।

मेरे धनी चले गए, अब मैं कैसे रहूंगी ? मौका जब हाथ से चला गया तो अब रात-दिन रोना ही है।

मैं तो तब ना उठ सकी, पिउ चले बखत जिन।
क्यों खोऊं धनी अपना, जो तब पकड़ों चरन।। ६ ।।

पियाजी जिस समय धाम चले, मैं उस समय होश में आई नहीं वरन् उसी समय उनके चरण कमल पकड़ लेती और उन्हें नहीं छोड़ती।

जो मैं तबहीं जागती, तो क्यों जावे मेरा पिउ।
क्यों छोड़ों खसम को, संग पिउ के मेरा जिउ।। ७ ।।

उस समय यदि मैं जाग जाती तो मेरे प्रीतम जा नहीं सकते थे। मैं अपने वालाजी को कभी न छोड़ती। उनके साथ ही मेरा जीव भी जाता।

अब तरफ दसो दिस देखिए, तो गेहेरे मोह के जल।
मेर जैसी लेहेरां मिने, मांहें मछ गलागल।। ८ ।।

अब दसों दिशाओं में देखती हूं तो माया ही माया दिखाई पड़ती है। जिसमें पहाड़ जैसी बड़ी-बड़ी लहरें (माया के काम की चाहनाएं), बड़े-बड़े मगरमच्छ (सब सगे सम्बन्धी) जो खाने को तैयार बैठे हैं।

जल मांहें भमरियां, कई बिध तीखे तान।
कहूं सुख नहीं साइत का, ए दुख रूपी निदान।। ९ ।।

इस माया में बड़ी-बड़ी भंवरें (मुसीबतें) आ रही हैं। कई तरह के ताने सुनने पड़ रहे हैं। कहीं भी एक पल का भी चैन नहीं है। पूरा सागर दुःख से भरा है।

Nijanand App

एक घोर अंधेरी आंखां नहीं, और ठौर नहीं बुध मन।
विखम जल ऐसे मिने, पिउ आए मुझ कारन।। १० ।।

एक तो घोर अज्ञानता का भरा संसार है और दूसरी मैं नासमझ थी (आंखें नहीं थीं)। ऐसे भयंकर डरावने संसार में प्रीतम मेरे वास्ते आए थे।

मांहें भभूके आग के, खाना अमल जेहेर अति जोर।
पिउ पुकारे कई विध, मैं उठी ना अंग मरोर।। ११ ।।

इस संसार में बड़ी-बड़ी माया की चाहनाओं की अग्नि जल रही है। माया का ही जहरीला नशा खाना पड़ता है। इसमें से निकालने के लिए प्रीतम ने कई तरह से सावधान किया, पर मैं माया की खुमारी को दूर न कर सकी।

पिउ मेरा मुझ वास्ते, आए ऐसे में आप।
कई बिध जगाई मोहे, मैं कर ना सकी मिलाप।। १२ ।।

ऐसे संसार में मेरे प्रीतम मेरे वास्ते आए और उन्होंने कई तरह से मुझे जगाया। पर मैं उनसे मिल न सकी।

अब कहा करूं कहां जाऊं, टूट गई मेरी आस।
कहां वतन कौन बतावे, पिउ ना देखूं पास।। १३ ।।

अब क्या करूं? कहां जाऊं? मेरी आशा टूट गई है। अब घर कहां है, कौन बताएगा? बताने वाले प्रीतम मेरे पास नहीं हैं।

|| प्रकरण || ७ || चौपाई || १८२ ||

पुकार चले मेरे पिउजी, मैं तो नींदई में उरझीए।
अब ढूंढे मेरा जीव रे, सो सजन अब कित पाइए।। १ ।।

मेरे प्रीतम पुकार-पुकार के चले गए। मैं माया की नींद में ही पड़ी रही। अब मेरा जीव प्रीतम को ढूंढता है, लेकिन अब वह कहां मिलें?

सई रे पिउ की बातें मैं कैसे कहूं, मोसों आए कियो मिलाप।
मेरे वास्ते माया मिने, क्यों कर डास्या आप।। २ ।।

हे बहन ! मैं प्रीतम की बातें कैसे कहूं? वह माया के बीच में मेरे वास्ते आए और मुझे मिले।

आए वतन से पिउ अपना, देखाए के चले राह।
आधा गुन जो याद आवे, तो तबहीं उड़े अरवाह।। ३ ।।

प्रीतम घर से आए और घर का रास्ता बताकर चले गए। यदि उनकी थोड़ी भी कृपा याद आती तो तभी मेरा जीव निकल जाता।

साहेब चले वतन को, केहे केहे बोहोतक बोल।
धिक धिक पड़ो मेरे जीव को, जिन देख्या न आंखां खोल।। ४ ।।

बहुत वचन कहकर साहब (स्वामी) घर चले गए। धिक्कार है मेरे जीव को, जिसने आंखें खोलकर पहचानां नहीं।

Nijanand App

एक घोर अंधेरी आंखां नहीं, और ठौर नहीं बुध मन।
विखम जल ऐसे मिने, पिउ आए मुझ कारन।।१०।।

एक तो घोर अज्ञानता का भरा संसार है और दूसरी मैं नासमझ थी (आंखें नहीं थीं)। ऐसे भयंकर डरावने संसार में प्रीतम मेरे वास्ते आए थे।

मांहें भभूके आग के, खाना अमल जेहेर अति जोर।
पिउ पुकारे कई विध, मैं उठी ना अंग मरोर।।११।।

इस संसार में बड़ी-बड़ी माया की चाहनाओं की अग्नि जल रही है। माया का ही जहरीला नशा खाना पड़ता है। इसमें से निकालने के लिए प्रीतम ने कई तरह से सावधान किया, पर मैं माया की खुमारी को दूर न कर सकी।

पिउ मेरा मुझ वास्ते, आए ऐसे में आप।
कई विध जगाई मोहे, मैं कर ना सकी मिलाप।।१२।।

ऐसे संसार में मेरे प्रीतम मेरे वास्ते आए और उन्होंने कई तरह से मुझे जगाया। पर मैं उनसे मिल न सकी।

अब कहा करूं कहां जाऊं, टूट गई मेरी आस।
कहां वतन कौन बतावे, पिउ ना देखूं पास।।१३।।

अब क्या करूं? कहां जाऊं? मेरी आशा टूट गई है। अब घर कहां है, कौन बताएगा? बताने वाले प्रीतम मेरे पास नहीं हैं।

।। प्रकरण ।। ७ ।। चौपाई ।। १८२ ।।

पुकार चले मेरे पिउजी, मैं तो नींदई में उरझीए।
अब ढूंढे मेरा जीव रे, सो सजन अब कित पाइए।।१।।

मेरे प्रीतम पुकार-पुकार के चले गए। मैं माया की नींद में ही पड़ी रही। अब मेरा जीव प्रीतम को ढूंढता है, लेकिन अब वह कहां मिलें?

सई रे पिउ की बातें मैं कैसे कहूं, मोसों आए कियो मिलाप।
मेरे वास्ते माया मिने, क्यों कर डारया आप।।२।।

हे बहन ! मैं प्रीतम की बातें कैसे कहूं? वह माया के बीच में मेरे वास्ते आए और मुझे मिले।

आए वतन से पिउ अपना, देखाए के चले राह।
आधा गुन जो याद आवे, तो तबहीं उड़े अरवाह।।३।।

प्रीतम घर से आए और घर का रास्ता बताकर चले गए। यदि उनकी थोड़ी भी कृपा याद आती तो तभी मेरा जीव निकल जाता।

साहेब चले वतन को, केहे केहे बोहोतक बोल।
धिक धिक पड़ो मेरे जीव को, जिन देख्या न आंखां खोल।।४।।

बहुत वचन कहकर साहब (स्वामी) घर चले गए। धिक्कार है मेरे जीव को, जिसने आंखें खोलकर पहचानां नहीं।

Nijanand App

सई रे अनेक भांत मोसों कही, मोहे सालत हैं सो बैन रे।
सो भी कह्या आंझू आन के, पर मैं पलक न खोले नैन रे।।५।।

हे बहन ! मुझसे अनेक प्रकार की बातें कीं। वह वचन मुझे चुभते हैं। वह वचन भी मुझे रो-रोकर कहा, परन्तु मैं सावचेत (सावधान) न हुई।

आंखां पानी भर के, हाथ पकड़ किया सोर।
आग परो मेरे जीव को, जाको अजहूं एही मरोर।।६।।

धनी ने आंखों में आंसू भरकर हाथ पकड़कर पुकारा। धिक्कार है मेरे जीव को, जिसे अभी भी माया का अहंकार चढ़ा है।

सई रे अब मैं कहा करूं, मेरा हाल होसी बिध किन।
वतन बैठ सैयन में, क्यों कर करूं रोसन।।७।।

हे बहन ! अब मैं क्या करूं ? मेरा परमधाम में क्या हाल होगा ? जब सुन्दरसाथ में बैठकर बातें होंगी तो मैं अपनी क्या बात कहूंगी ?

अब सुनो रे तुम सैंयां, कहूं सो बीतक बात।
पानी तो पिउजी ले चले, अब तलफूं मछली न्यात।।८।।

हे सुन्दरसाथजी! सुनो, मैं अपनी हकीकत बताती हूं कि परमधाम की वाणी तो अब धनी ले गए हैं। अब बिना उस वाणी के मछली की तरह तड़प रही हूं।

कर कर सोर जो वल्लभा, फिरे जो आप वतन।
चले जो मेरे देखते, केहे केहे अनेक वचन।।९।।

मेरे प्राण वल्लभ तरह-तरह से वाणी सुनाकर घर चले गए और मुझे तरह-तरह के वचन कहते रहे। मैं देखती रही और वह चले गए।

दुलहा मेरा चल गया, मेरी वले न जुबां यों।
पल पल वचन पिउ के, मोहे लगे कटारी ज्यों।।१०।।

मेरी जबान से यह शब्द ही नहीं निकलते कि मेरे धनी चले गए। मुझे पल-पल उनके वचन याद आते हैं जो कटार की तरह मुझे काट रहे हैं।

आग पड़ो तिन देसड़े, जित पिउ की नहीं पेहेचान।
तो भी सुध मोहे न भई, जो हुई एती हान।।११।।

ऐसे मेरे शरीर (देसड़े) को आग लग जाए जहां (जिसको) पिया की पहचान नहीं है। इतनी बड़ी हानि होने पर भी मुझे होश नहीं आया।

काट जीव टुकड़े करूं, मांहें भरूं मिरच लोंन।
ए दरद पिया इन भांत का, अब ए मेटे कौन।।१२।।

अब मैं अपने जीव को काटकर टुकड़े कर दूं और उसमें नमक और मिर्च भर दूं। मेरे पिया के बिछुड़ने का दर्द ऐसा है कि अब इसे कौन मिटाएगा ?

Nijanand App

आग लगी झाला उठियां, जीवरा जले रे मांहें।
तलफ तलफ मैं तलफूं, पर ठंडक न दारू क्यांहें।। १३ ।।

मेरे तन में विरह की अग्नि जल रही है, जिनकी लपटों में अन्दर ही अन्दर जीव जल रहा है। मैं तड़प रही हूं, किन्तु कहीं भी ठंडक व दवाई (उनके दर्शन और चर्चा) नहीं मिलती।

दुलहासों जो मैं करी, ऐसी करे न दूजा कोए।
विलख विलख पिउजी चले, पर मैं मूंदी आंखां दोए।। १४ ।।

मैंने अपने प्रीतम से जो व्यवहार किया है, ऐसा दूसरा कोई नहीं करता। धनी बिलख-बिलखकर समझाकर चले गए, परन्तु मेरी दोनों आंखें बंद रहीं।

अब क्यों करूंगी मैं बातड़ी, सामी क्यों उठाऊंगी मोंह।
मेरे हाथ ऐसी भई, खलड़ी उतारूं सिर नोंह।। १५ ।।

मैं अपने प्रीतम के सामने मुंह ऊंचा करके कैसे बात करूंगी। मेरे हाथ से इतना बुरा हुआ है। अब दिल चाहता है कि नाखून से लेकर सिर तक अपनी चमड़ी उधेड़ दूं।

कादूं तन तरवारसों, भूक करूं हड्डियां तोर।
खलड़ी उतारूं पेहेले उलटी, जीव कादूं यों जोर।। १६ ।।

अपने तन को तलवार से काटूं, हड्डियों को तोड़कर चूरा बनाऊं, पहले उलटी खाल उतारूं। इस तरह से पापी जीव को निकालकर बाहर फेंकूं।

तरवार भाले कटारियां, मोहे काट करी टूक टूक।
मेरे अंग हुए मुझे दुस्मन, जीव करे मिने कूक।। १७ ।।

तलवार, भाले और कटार से मैं अपने अंगों को टुकड़े-टुकड़े करूं। मेरे ही अंग मेरे दुश्मन हो गए हैं, जिनके अन्दर फंसा जीव चिल्ला रहा है।

धाम धनी पेहेचान के, सीधी बात न करी सनमुख।
कबूं दिल धनी का मैं न रख्या, अब क्यों सहूंगी ए दुख।। १८ ।।

धाम-धनी को पहचानकर उनके निकट बैठकर मैंने कभी बातें नहीं कीं। मैंने कभी भी धनी की चाही बात पूरी नहीं की। अब यह दुःख कैसे सहन होगा?

दरद मीठा मेरे पिउ का, ए जो आग दई मुझे तब।
अति सुख पाया मैं इनमें, सो मैं छोड़ ना सकों अब।। १९ ।।

पहले भी मुझे जुदाई का दुःख दिया था (१७०३ से १७१२ तक)। वह मुझे अब अच्छा लगता है और मैंने उसमें सुख का अनुभव किया, जिसे अब मैं कभी भूल नहीं सकती।

एता सुख तेरे सूल में, तो विलास होसी कैसा सुख।
पर मैं न पेहेचाने पिउ को, मोहे मारत हैं वे दुख।। २० ।।

हे धनी ! आपके विरह में जब इतना सुख है तो विलास में कितना सुख होगा? पर मैंने अपने प्रीतम की पहचान नहीं की, मुझे वही दुःख मार रहा है।

Nijanand App

सब अंग मेरे टुकड़े करूं, भूक करूं देह जिउ।
सो वार डारूं तुम दिस पर, इत सेवा हुई कहां प्यिउ।। २१ ।।

अब मैं चाहती हूं कि अपने तन के टुकड़े कर डालूं और जीव तथा शरीर का चूरा बना दूं और आपके चरणों में न्यौछावर कर दूं। मुझसे धनी की सेवा क्यों नहीं हुई?

हड्डियां जारूं आग में, मांहें मांस डारूं सिर।
ए भूली दुख क्योंए न मिटे, ए समया न आवे फिर।। २२ ।।

हड्डियों को आग में जलाऊं। आग में तन का मांस और सिर डाल दूं। फिर भी ऐसी भूल करने का दु:ख नहीं मिटता। गया समय हाथ नहीं आता।

जरा जरा मेरे जीव का, विरहा तेरा करत।
चरनें ल्यो इंद्रावती, पेहेले जगाए के इत।। २३ ।।

हे धनी ! अब मेरे तन का रोम-रोम (जर्रा-जर्रा) आपके विरह में दु:खी है।-इसलिए यहां पहले जागृत करके अपने चरणों में ले लो।

।। प्रकरण ।। ८ ।। चौपाई ।। २०५ ।।

चौपाई प्रगटी है

एक लवो याद आवे सही, तो जीव रहे क्यों काया ग्रही।
अब सुनियो साथ कहूं विचार, भूले आपन समें निरधार।। १ ।।

हे साथजी! धनी के वचनों में से थोड़ा सा भी याद आ जाए, तो जीव इस शरीर को कैसे पकड़कर रखेगा? हे साथजी! मेरे विचार में हमसे अवश्य ही भूल हुई है।

गयो अवसर फेर आयो है हाथ, चेतन कर दिए प्राणनाथ।
तब जो वासना बाई रतन, लीलबाई के उदर उतपन।। २ ।।

मौका जो हाथ से गया था फिर मिल गया है। अपने प्राणनाथ ने हमको सावचेत (सतर्क) कर दिया है। उस समय जो बिहारीजी, रतनबाई की वासना है और लीलबाई उनकी माताश्री हैं।

श्री देवचन्दजी पिता परवान, देख के आवेस दियो निरवान।
वचन धनी के कहे निरधार, आवेस पिउजी को है अपार।। ३ ।।

श्री देवचन्द्रजी उनके पिताश्री हैं। उन्होंने परखकर और विचारकर मुझे अपना आवेश दिया और तारतम दिया। धनी के कहे हुए वचनों के अनुसार पियाजी के आवेश अपार हैं।

इन बानिऐं ब्रह्मांड जो गले, तो वासना वानी से क्यों पीछी टले।
वासना कारन बांधे बंध, कई भांते अनेक सनंध।। ४ ।।

इस वाणी से तो सारे ब्रह्माण्ड को एक रस करके अखण्ड करना है। आत्माएं वाणी से पीछे क्यों रहेंगी? वासनाओं के वास्ते धनी ने तरह-तरह के उपाय किए। जगाने के लिए बन्धन बांधे।

ए वानी कही मेरे धनी, आगे कृपा होसी घनी।
हरखें साथ जागसे एह, रेहेसे नहीं कोई संदेह।। ५ ।।

यह वाणी मेरे धनी ने कही है। आगे बड़ी भारी कृपा होगी। बड़ी खुशी से साथ जागेंगे। सन्देह बाकी नहीं रह जाएंगे।

Nijanand App

सब अंग मेरे टुकड़े करूं, भूक करूं देह जिउ।
सो वार डारूं तुम दिस पर, इत सेवा हुई कहां पिउ।। २१ ।।

अब मैं चाहती हूं कि अपने तन के टुकड़े कर डालूं और जीव तथा शरीर का चूरा बना दूं और आपके चरणों में न्यौछावर कर दूं। मुझसे धनी की सेवा क्यों नहीं हुई?

हड्डियां जारूं आग में, मांहें मांस डारूं सिर।
ए भूली दुख क्योंए न मिटे, ए समया न आवे फिर।। २२ ।।

हड्डियों को आग में जलाऊं। आग में तन का मांस और सिर डाल दूं। फिर भी ऐसी भूल करने का दु:ख नहीं मिटता। गया समय हाथ नहीं आता।

जरा जरा मेरे जीव का, विरहा तेरा करत।
चरनें ल्यो इंद्रावती, पेहेले जगाए के इत।। २३ ।।

हे धनी ! अब मेरे तन का रोम-रोम (जर्रा-जर्रा) आपके विरह में दु:खी है।-इसलिए यहां पहले जागृत करके अपने चरणों में ले लो।

।। प्रकरण ।। ८ ।। चौपाई ।। २०५ ।।

चौपाई प्रगटी है

एक लवो याद आवे सही, तो जीव रहे क्यों काया ग्रही।
अब सुनियो साथ कहूं विचार, भूले आपन समें निरधार।। १ ।।

हे साथजी! धनी के वचनों में से थोड़ा सा भी याद आ जाए, तो जीव इस शरीर को कैसे पकड़कर रखेगा? हे साथजी! मेरे विचार में हमसे अवश्य ही भूल हुई है।

गयो अवसर फेर आयो है हाथ, चेतन कर दिए प्राणनाथ।
तब जो वासना बाई रतन, लीलबाई के उदर उतपन।। २ ।।

मौका जो हाथ से गया था फिर मिल गया है। अपने प्राणनाथ ने हमको सावचेत (सतर्क) कर दिया है। उस समय जो बिहारीजी, रतनबाई की वासना है और लीलबाई उनकी माताश्री हैं।

श्री देवचन्दजी पिता परवान, देख के आवेस दियो निरवान।
वचन धनी के कहे निरधार, आवेस पिउजी को है अपार।। ३ ।।

श्री देवचन्द्रजी उनके पिताश्री हैं। उन्होंने परखकर और विचारकर मुझे अपना आवेश दिया और तारतम दिया। धनी के कहे हुए वचनों के अनुसार पियाजी के आवेश अपार हैं।

इन बानिऐं ब्रह्मांड जो गले, तो वासना वानी से क्यों पीछी टले।
वासना कारन बांधे बंध, कई भांते अनेक सनंध।। ४ ।।

इस वाणी से तो सारे ब्रह्माण्ड को एक रस करके अखण्ड करना है। आत्माएं वाणी से पीछे क्यों रहेंगी? वासनाओं के वास्ते धनी ने तरह-तरह के उपाय किए। जगाने के लिए बन्धन बांधे।

ए वानी कही मेरे धनी, आगे कृपा होसी घनी।
हरखें साथ जागसे एह, रेहेसे नहीं कोई संदेह।। ५ ।।

यह वाणी मेरे धनी ने कही है। आगे बड़ी भारी कृपा होगी। बड़ी खुशी से साथ जागेंगे। सन्देह बाकी नहीं रह जाएंगे।

Nijanand App

साथ को घरों ले जाना सही, कोई माया में ना सके रही।
खैंचे सबों को ए वानी, फिरसी घरों धनी पेहेचानी।।६ ।।

सुन्दरसाथ को अवश्य ही घर ले जाना है। कोई माया में नहीं रह सकेगा। यह वाणी सबको अपनी तरफ खींचती है। सुन्दरसाथ धनी को पहचानकर वापस अपने घर जाएंगे।

भी वाही चरचाने वाही बान, वचन केहेते जो परवान।
बृज रास श्रीधाम के सुख, साथ को केहेते जो श्रीमुख।।७ ।।

(श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि यह धनी मेरे अन्दर आकर बैठ गए हैं इसलिए) अब फिर से वही चर्चा, वही वचन जो धनी निश्चित रूप से प्रमाण देकर कहते थे, वही वाणी जो बृज रास और धाम के सुख को अपने श्रीमुख से सुनाते थे, वह फिर से शुरू हो गई है।

पख पचीस वरनवे जेह, भी सुख वल्लभ देवे एह।
अंतरध्यान समे ज्यों भए, भी आए वचन पिया सोई कहे।।८ ।।

परमधाम के पच्चीस पक्षों का जिस तरह से वर्णन करते थे और सुख देते थे, वही मेरे तन में धनी बैठकर देते हैं। रास में जैसे पहले अन्तर्ध्यान हुए और फिर आ गए, उसी प्रकार श्री देवचन्द्रजी के तन को छोड़कर अब मेरे तन में बैठकर वही पिया, वही वाणी सुना रहे हैं।

पेहेले फेरे हुआ है ज्यों, भी इत पिया ने किया है त्यों।
सोई पिया और सोई दिन, देखो तारतम के वचन।।९ ।।

पहले फेरे 'रास' में धनी ने जो किया था, अब यहां भी धनी ने वैसे ही किया है। तारतम वाणी से विचार कर देखो। यह वही धनी हैं, वही दिन हैं।

सोई घड़ी ने सोई पल, मायाऐं बीच डार्‍यो वल।
साथ को खिन न्यारे ना करे, बिना साथ कहूं पांउ ना धरे।।१० ।।

वही घड़ी है, वही पल है, किन्तु माया ने बीच में कोई ऐसी आंकड़ी (गांठ) लगा रखी है, वरना धनी साथ से एक पल के लिए अलग नहीं होते और साथ के बिना कहीं जाते भी नहीं।

बेर ना हुई एक अधखिन, किया मायाऐं बिछोहा घन।
मारकंड माया द्रष्टांत, मांगी धनी पे करके खांत।।११ ।।

परमधाम में तो आधे क्षण की भी देर नहीं हुई है। यहां माया ने बड़ा भारी वियोग कर दिया है। उसी प्रकार जैसे मार्कण्डेय का हाल हुआ था। उसने भी अपने परमात्मा (नारायण) से माया मांगी थी।

देखो माया को वृतांत, ए दूर होए तो पाइए स्वांत।
ततखिन कंपमान सो भयो, माया मिने भिलके गयो।।१२ ।।

देखो, यह माया की हकीकत है। यह हम से हटे तो हमको शान्ति मिले। मार्कण्डेय भी उसी पल कांपकर माया में मिल गया था।

कल्पांत सात छियासी जुग, कियो मायाऐं बेसुध एते लग।
कछुए ना भई खबर, अति दुख पायो रिखीश्वर।।१३ ।।

उसे सात कल्पान्त और छियासी युग तक माया ने बेसुध रखा। इस समय में मार्कण्डेय को कुछ सुध नहीं आई, इसलिए बड़ा कष्ट उठाया।

Nijanand App

तब नारायनजीऐं कियो प्रवेस, देखाई माया लवलेस।
फिरी सुरत आए नारायन, याद आवते गए निसान।। १४ ।।

तब नारायणजी ने प्रवेश कर माया का छोटा स्वरूप (आकार) दिखाया। नारायणजी के आने पर मार्कण्डेय सावचेत हुए और उन्हें मूल स्थान की याद आई।

याद आया सरूप बैठा जांहें, तब उड़ गई माया जानों हती नांहें।
जाग देखे तो सोई ताल, बीच मायाऐं कियो ऐसो हाल।। १५ ।।

उसे मार्कण्डेय ताल याद आया जहां से बैठकर देख रहा था और तब माया उड़ गई। ऐसा लगा मानो माया थी ही नहीं। जागकर उसने देखा, तो वही वह ताल है और बीच में माया ने बेसुध कर दिया था।

माया की तो एह सनंध, निरमल नेत्रे होइए अंध।
ता कारन कियो प्रकास, तारतम को जो उजास।। १६ ।।

माया की तो यही हकीकत है कि आंखों से देखते हुए भी अन्धे हो जाते हैं। इस वास्ते ही यह दृष्टान्त दिया है जिससे तुम्हें तारतम की पहचान हो जाए।

सो ए लेके आए धनी, दया आपन ऊपर है घनी।
जाने देखसी माया न्यारे भए, तारतम के उजियारे रहे।। १७ ।।

इसी तारतम ज्ञान को लेकर धनी आए हैं और अपने ऊपर बड़ी कृपा की है। हमने समझा था कि हम तारतम ज्ञान के उजाले के हो जाने से माया को माया से जुदा होकर देखेंगे।

भले तारतम कियो प्रकास, देखाया माया में अखंड विलास।
तारतम वचन उजाला कस्या, दूजा देह माया में धस्या।। १८ ।।

हे धनी! आपने तारतम वाणी से हमें अच्छा ज्ञान दिया है जिससे माया में बैठे होने पर भी हमें अखण्ड परमधाम के आनन्द दिखलाए। तारतम वाणी से ही यह ज्ञान हुआ कि धनी हमारे वास्ते दूसरा तन धारण कर माया में आए हैं।

|| प्रकरण || ९ || चौपाई || २२३ ||

सुन्दरसाथ की विनती

साखी–
विनती एक सुनो मेरे प्यारे, कहूं पिउजी बात।
आए प्रगटे फेर कर, करी कृपा देख अपन्यात।। १ ।।

हे मेरे धनी ! मैं विनती करती हूं। मेरी एक बात सुनो। आपने अपनी समझ कर कृपा की है और दुबारा प्रगट हुए हैं।

श्री देवचन्दजी हम कारने, निध तुमारे हिरदे धरी।
वचन पालने आपना, साथ सकल पर दया करी।। २ ।।

सुन्दरसाथ कहते हैं कि श्री देवचन्द्रजी ने हमारे वास्ते यह न्यामत तारतम वाणी आपके हृदय में दी है। वायदों को पूर्ण करने के लिए ही सुन्दरसाथ पर मेहर की है और आपके हृदय में आ विराजे हैं।

Nijanand App

तब नारायनजीऐं कियो प्रवेस, देखाई माया लवलेस।
फिरी सुरत आए नारायन, याद आवते गए निसान।। १४ ।।

तब नारायणजी ने प्रवेश कर माया का छोटा स्वरूप (आकार) दिखाया। नारायणजी के आने पर मार्कण्डेय सावचेत हुए और उन्हें मूल स्थान की याद आई।

याद आया सरूप बैठा जांहें, तब उड़ गई माया जानों हती नांहें।
जाग देखे तो सोई ताल, बीच मायाऐं कियो ऐसो हाल।। १५ ।।

उसे मार्कण्डेय ताल याद आया जहां से बैठकर देख रहा था और तब माया उड़ गई। ऐसा लगा मानो माया थी ही नहीं। जागकर उसने देखा, तो वही वह ताल है और बीच में माया ने बेसुध कर दिया था।

माया की तो एह सनंध, निरमल नेत्रे होइए अंध।
ता कारन कियो प्रकास, तारतम को जो उजास।। १६ ।।

माया की तो यही हकीकत है कि आंखों से देखते हुए भी अन्धे हो जाते हैं। इस वास्ते ही यह दृष्टान्त दिया है जिससे तुम्हें तारतम की पहचान हो जाए।

सो ए लेके आए धनी, दया आपन ऊपर है घनी।
जाने देखसी माया न्यारे भए, तारतम के उजियारे रहे।। १७ ।।

इसी तारतम ज्ञान को लेकर धनी आए हैं और अपने ऊपर बड़ी कृपा की है। हमने समझा था कि हम तारतम ज्ञान के उजाले के हो जाने से माया को माया से जुदा होकर देखेंगे।

भले तारतम कियो प्रकास, देखाया माया में अखंड विलास।
तारतम वचन उजाला कर्‍या, दूजा देह माया में धर्‍या।। १८ ।।

हे धनी! आपने तारतम वाणी से हमें अच्छा ज्ञान दिया है जिससे माया में बैठे होने पर भी हमें अखण्ड परमधाम के आनन्द दिखलाए। तारतम वाणी से ही यह ज्ञान हुआ कि धनी हमारे वास्ते दूसरा तन धारण कर माया में आए हैं।

।। प्रकरण ।। ९ ।। चौपाई ।। २२३ ।।

सुन्दरसाथ की विनती

साखी–
विनती एक सुनो मेरे प्यारे, कहूं पिउजी बात।
आए प्रगटे फेर कर, करी कृपा देख अपन्यात।। १ ।।

हे मेरे धनी ! मैं विनती करती हूं। मेरी एक बात सुनो। आपने अपनी समझ कर कृपा की है और दुबारा प्रगट हुए हैं।

श्री देवचन्दजी हम कारने, निध तुमारे हिरदे धरी।
वचन पालने आपना, साथ सकल पर दया करी।। २ ।।

सुन्दरसाथ कहते हैं कि श्री देवचन्द्रजी ने हमारे वास्ते यह न्यामत तारतम वाणी आपके हृदय में दी है। वायदों को पूर्ण करने के लिए ही सुन्दरसाथ पर मेहर की है और आपके हृदय में आ विराजे हैं।

Nijanand App

जनम अंध जो हम हते, सो तुम देखीते किए।
पीठ पकड़ हम ना सके, सो फेर कर पकर लिए।। ३ ।।

हम जब से माया में आए हैं तभी से अज्ञानी थे। आपने ज्ञान देकर जानकार बना दिया। हम तो आपका पीछा नहीं कर सके (माया में ही डूबने लगे थे) पर आपने हाथ पकड़कर माया से बाहर निकाल लिया।

अब जो कछूए हम में, होसी मूल अंकूर।
जो नींद उड़ाए तुम निध दई, सो क्योंए ना छोडूं पिया नूर।। ४ ।।

अब हमारे अन्दर परमधाम की जो आत्माए होंगी, उनकी अज्ञानता (नींद) हटाकर जो ज्ञान आप दे रहे हो, हे पिया ! आपके इस ज्ञान (नूर) को क्यों छोड़ेंगे? अर्थात् नहीं छोड़ेंगे।

पेहेले तो हम न पेहेचाने, सो सालत है मन।
चरचा कर कर समझाए, कहे विध विध के वचन।। ५ ।।

पहले तो हमने आपकी पहचान नहीं की। वह अभी तक मन में चुभ रही है। आपने चर्चा करके तरह-तरह के वचनों से हमें समझाया था।

चाल–
ऐसे अनेक वचन कहे हमको, जिन एक वचने पेहेचाने तुमको।
तुम दई पेहेचान विध विध कर, पर निरोध बैठा हिरदा पकर।। ६ ।।

आपने तो ऐसे अनेक वचन हमको कहे थे कि जिनमें से एक वचन से आपकी पहचान हो जाती। आपने तरह-तरह से अपनी पहचान कराने के उपाय भी किए, परन्तु मन हृदय को पकड़ कर बैठ गया और आपकी पहचान न कर पाए।

तब हंस कर आंझू आनके कह्या, पर तिन समे हम कछु ए ना लह्या।
तब तारतम केहे देखाया घर, हम तो भी ना सके पेहेचान कर।। ७ ।।

तब आपने हंसकर और रोकर भी कहा, पर उस समय भी हमने कुछ नहीं लिया। तब आपने तारतम कहकर घर की पहचान कराई, तो भी हम पहचान नहीं कर पाए।

तब हममेंसे अद्रष्ट भए, कोई कोई वचन हिरदे में रहे।
जो या समें खबर ना लेते तुम, तो मोहजल अति दुख पावते हम।। ८ ।।

तब आप हमसे अलग हुए। अब उस समय के कोई-कोई वचन हृदय में याद आते हैं। इस समय यदि आप हमारी खबर न लेते तो इस माया के चक्कर में हम वहुत दुःखी होते।

यों जान के आए हम मांहें, आए बैठे प्रगटे तुम जांहें।
ज्यों आपन पेहेले बृज में हते, नित प्रते पियासों प्रेमें खेलते।। ९ ।।

ऐसा जानकर कि आप हमारे बीच में आए हैं। जैसे पहले श्री देवचन्द्रजी के तन में बैठते थे वैसे ही मेहराज ठाकुर के तन में बैठे हैं। ठीक उसी तरह जैसे बृज में हम पियाजी से नित्य ही प्रेम में खेलते थे।

अनेक खेल किए आपन, पूरन मनोरथ सब किए तिन।
अग्यारे बरस लो लीला करी, कालमाया इतही परहरी।। १० ।।

हमने बृज में तरह-तरह की चाहना की जिसे धनी ने पूरा किया। तरह-तरह से ग्यारह वर्ष तक खेल खेले और फिर कालमाया को छोड़ दिया। ब्रह्माण्ड का प्रलय हो गया।

Nijanand App

जोगमाया कर रास जो खेले, कई सुख साथ लिए पिउ भेले।
करी अंतराए देने को याद, हम दुख मांग्या पिउपे आद।। ११ ।।

योगमाया के ब्रह्माण्ड की रचना करके वृन्दावन में रास की लीला की और प्रीतम के साथ में कई सुख लिए। धनी अन्तर्ध्यान हुए। यह याद दिलाने के लिए कि परमधाम में हमने पिया से दुःख का खेल मांगा था।

सोई देख के आए ज्यों, फेर अब प्रगट हुए हैं त्यों।
धनी जब करें अपन्यात, मनचाह्या सुख देवें साख्यात।। १२ ।।

रास में अन्तर्ध्यान के बाद जैसे धनी दुबारा आए थे, वैसे ही अब भी धनी उसी तरह से प्रगट हुए हैं। धनी जब अपना जानकर सुन्दरसाथ को अपनाते हैं तो मनचाहे साक्षात् सुख देते हैं।

तिन समें धाख रहीती जोए, अब इत सुख देत हैं सोए।
अब सुनो पिउ कहूं गुन अपने, अवगुन मेरे हैं अति घने।। १३ ।।

अब श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, हे धनी ! श्री देवचन्द्रजी के समय में मेरी जो परमधाम देखने की इच्छा बाकी रह गई थी, वह सुख धनी मुझे अब दे रहे हैं। हे धनी ! अब मैं अपने गुण कहती हूं। मेरे अन्दर अपार अवगुण भरे हैं।

तुमारे मन में न आवे लवलेस, पर मैं जानों मेरे मन के रेस।
वार डारों तुम पर मेरी देह, तुम किए मोसों अधिक सनेह।। १४ ।।

आपके मन में तो भले ही मेरे अवगुण दिखाई न दें पर मेरे मन के रेशे-रेशे (नस-नस) में अवगुण ही अवगुण भरे हैं, यह मैं जानती हूं। इस पर भी आपने मेरे से बहुत प्यार किया, इसलिए मैं अपना तन आप पर कुर्बान करती हूं (वारी-वारी जाती हूं)।

घोली घोली मैं जाऊं तुम पर, उरिनी मैं होऊंगी क्यों कर।
उरिनी होना तो मैं कह्या, माया लेस हिरदे में रह्या।। १५ ।।

मैं आप पर बार-बार बलिहारी जाती हूं और सोचती हूं कि मैं आपके एहसान का बदला कैसे चुकाऊंगी? एहसानों का बदला तो मैंने इसलिए कहा है क्योंकि माया में बैठी हूं।

अनेक बार मैं लेऊं वारने, तुम अपनी जान गुन किए घने।
मैं वार डारूं आतम अपनी, पर सालत सोई जो करी दुस्मनी।। १६ ।।

हे धनी! आपने मुझे अपनी अंगना जानकर बहुत एहसान किए हैं। मैं अनेक बार वारी-वारी जाती हूं। मैं तो अपनी जान (आतम) भी कुर्बान कर देती, परन्तु मुझे वह मेरा दोष खटकता है कि मैंने आपका मुकाबला कर परमधाम देखने की जिद की।

क्यों छूटोंगी ए गुन्हे हो नाथ, सांची कहूं मेरे धाम के साथ।
तुम साथ मिने मोहे देत बड़ाई, पर मैं क्यों छूटोंगी बज्रलेपाई।। १७ ।।

धाम के साथ ! सुनो, मैंने अपने प्रीतम से जो गुनाह किया है उससे मैं कैसे बचूंगी? हे धनी! आप तो सुन्दरसाथ के बीच बड़ाई दे रहे हैं पर मैं अपने गुनाहों के वज्रलेप से कैसे छूटूंगी?

तुम गुन किए मोसों अति घन, पर अलेखे मेरे अवगुन।
तुम गुन किए मोसों पेहेचान कर, मैं अवगुन किए माया चित धर।। १८ ।।

आपने तो मेरे ऊपर बहुत ही कृपा की है पर मेरे अन्दर अपार अवगुण हैं। आपने मुझे परमधाम का साथी पहचान कर कृपा की, परन्तु मैंने माया में चित्त लगाकर अवगुण किए।

Nijanand App

अब बल बल जाऊं मेरे धनी, मेरे मन में हाम है घनी।
असत मंडल में हासल अति बड़ी, मैं पिउजी की उमेद ले खड़ी।। १९ ।।

अब बलि-बलि जाऊं मेरे धनी। मेरे मन में बहुत चाहना है। इस झूठे संसार में बहुत कुछ प्राप्त हो सकता है, इसलिए मैं ही आपको प्राप्त करूं। इसी उम्मीद पर मैं खड़ी हूं।

जो मनोरथ किए मांहें श्रीधाम, सो पूरन इत होए मन काम।
जो बिध सारी कही है तुम, सो सब द्रढ़ करी चाहिए हम।। २० ।।

जो मनोकामना (इच्छा) हमने परमधाम में की थी, वह सब यहीं पूरी हो गई। जो हकीकत आपने कही है वह हमें सब दृढ़ कर लेनी चाहिए।

सुख धाम के जो पाइए इत, सो काहूं मेरी आतम न देखे कित।
इन अंग की जुबां किन बिध कहे, जो सुख कहूं सो उरे रहे।। २१ ।।

जो परमधाम के सुख यहां मिलते हैं वह मेरी आत्मा को कहीं नहीं दिखाई देते। मेरे झूठे अंग की जबान कैसे कहे। सुख की जो बात कहती हूं वह बात सब इस माया में (निराकार के ब्रह्माण्ड में) ही रह जाती है।

ए सोभा सब्दातीत है धनी, और सब्द में जुबां आपनी।
ए सुख विलसूं होए निरदोस, होए फेरा सुफल दया तुम जोस।। २२ ।।

आपकी शोभा शब्दातीत (परमधाम) की है और मेरी जबान माया की है। यदि माया छूट जाए तो अखण्ड परमधाम के आनन्द लूं और आपकी कृपा से मेरा यहां आना सफल हो जाए।

इतने मनोरथ होंए पूरन, तब जानों दया हुई अति घन।
फेर फेर दया को तो कह्या घना, जो कर न सकी कछू बस आप अपना।। २३ ।।

इतनी चाहनाएं मेरी यहां पूरी हो जाएं तब जानूं कि मेरे ऊपर बड़ी कृपा हुई है। बार-बार जो आपकी मेहर को बड़ा कहती हूं वह इसलिए कि मैं अपने आपको वश में नहीं कर सकी (मैं स्वयं जागृत नहीं हो सकी)।

अब मनसा वाचा करमना कर, क्योंए न छोड़ूं अखंड घर।
नैनों निरखूं करी निरमल चित, रुदे राखूं पिउ प्रेमें हित।। २४ ।।

अब मन, वचन और कर्म से किसी तरह से भी अपने घर परमधाम को नहीं छोड़ूंगी। चित्त को माया से छुड़ाकर हृदय में पिया के प्रेम और स्नेह को लेकर परमधाम को देखूंगी।

कर परनाम लागूं चरने, करूं सेवा प्यार अति घने।
करूं दंडवत जीव के मन, देऊं प्रदखिना रात ने दिन।। २५ ।।

हे धनी ! जीव और मन से आपके चरणों में दण्डवत् प्रणाम करूं। आपकी रात-दिन परिकरमा करके अति प्यार से सेवा करूंगी।

कृपा करत हो साथ पर बड़ी, भी अधिक कीजो घड़ी घड़ी।
इंद्रावती पांउ परत आधार, धनी धाम के लई मेरी सार।। २६ ।।

सुन्दरसाथ पर आप बड़ी कृपा करते हो। और भी कृपा पल-पल करते रहना। श्री इन्द्रावतीजी धनी के चरणों में लगकर कहती हैं कि हे धनी! आपने मेरी अच्छी तरह सुध ली।

।। प्रकरण ।। १० ।। चौपाई ।। २४९ ।।

Nijanand App

आपन में बैठे आधार, खेल देखाया खोल के द्वार।
अब माया कोटान कोट करे प्रकार, तो इत साथ को न छोड़ूं निरधार।। १ ।।

हमारे बीच धाम धनी आकर बैठ गए हैं और परमधाम के दरवाजे खोलकर खेल दिखा रहे हैं। अब माया करोड़ों उपाय भी करे तो भी सुन्दरसाथ को यहां नहीं छोड़ेंगे।

बुलाए सैयों को चले वतन, क्यों न होए जो कहे वचन।
मन के मनोरथ पूरन कर, नेहेचे धनी ले चलसी घर।। २ ।।

सुन्दरसाथ को बुलाकर चलो घर चलें। जो वायदे किए थे वह अब पूर्ण करने हैं। मन की मनोकामना पूरी करके निश्चित ही धाम धनी घर ले चलेंगे।

अब जो आपन होइए सनमुख, तो धनी बोहोत विध पावें सुख।
कई विध दया साथ पर कर, सब विध के सुख देवें फेर।। ३ ।।

अब यदि हम माया छोड़कर धनी के चरणों में आ जाएं तो धनी बहुत खुश हो जाएंगे। उन्होंने सुन्दरसाथ पर कई प्रकार से दया की है। बार-बार सब प्रकार के सुख देते हैं।

फेर कर भलो आयो अवसर, खुले भाग धनी चित में धर।
आपन छोड़ने न करें संसार, पर धनी धाम बिछोहा न सहे लगार।। ४ ।।

दूसरी बार यह मौका हाथ आया है। हमारे नसीब खुल गए हैं। धनी को चित्त में धारण करो। हम संसार नहीं छोड़ना चाहते और धनी हमारा थोड़ा-सा भी वियोग सहन नहीं करते।

बिछोहा नहीं कछू पख तारतम, सुपन में माया देखें हम।
सुपन बिछोहा धनी ना सहे, तारतम वचन प्रगट कहे।। ५ ।।

तारतम वाणी से विचार करके देखो तो वियोग कुछ है ही नहीं (हम मूल मिलावे में बैठे हैं)। हम माया को सपने में देख रहे हैं, परन्तु हमारे धनी सपने में भी हमारा बिछुड़ना सहन नहीं करते। ऐसा तारतम वाणी में साफ जाहिर है।

ल्याए वचन तारतम सार, खोले पार के पार द्वार।
जानों जिन आसंका रहे, साथ ऊपर धनी एता ना सहे।। ६ ।।

धनी सबका सार तारतम वाणी लेकर आए हैं और उससे निराकार के पार बेहद और उसके पार अक्षर और अक्षरातीत के दरवाजे खोल दिए हैं। सुन्दरसाथ को जरा भी संशय रहे, इतना भी धनी सहन नहीं करते।

धनी के गुन मैं केते कहूं, मैं अबूझ कछू बोहोत ना लहूं।
धनी के गुन को नाहीं पार, कर ना सके कोई निरवार।। ७ ।।

धनी की मेहरबानियां मैं कहां तक कहूं? मैं नासमझ हूं ज्यादा कुछ जानती नहीं। धनी के गुण तो बेशुमार हैं जिनकी कोई गिनती नहीं कर सकता।

मैं केते नजरों देखे सही, पर गुन मुखसे न सके कही।
ना कछू किनका भोम गिनाए, सागर लेहेरें गिनी न जाए।। ८ ।।

मैंने नजरों से कई गुण देखे तो हैं पर मुख से कहे नहीं जाते। धरती के कण नहीं गिने जा सकते, सागर की लहरें नहीं गिनी जा सकतीं।

Nijanand App

मेघ की बूंदे जेती परे, ना कोई वनस्पति निरमान करे।
जदिप को निरमान होए, पर गुन धनी के ना गिने कोए।। ९ ।।

बादलों की वर्षा की बूंदें नहीं गिनी जा सकतीं। वृक्षों के पत्ते भी नहीं गिने जा सकते। यदि इनको गिन भी लिया जाए फिर भी धनी के गुणों को गिनना सम्भव है ही नहीं।

इन बेर के भी कहे न जाए, तो और बेर के क्यों कहूं जुबांए।
पेहेले फेरे की क्यों कहूं बात, गुन जो किए धनी साख्यात।। १० ।।

इस बार जो गुण किए हैं वही नहीं गिने जा सकते, तो उनके पूरे गुण जबान से कैसे कहे जाएं? पहले फेरे के बृज और रास की बात कैसे करूं? जो धनी ने हमारे ऊपर साक्षात् एहसान किए थे।

क्यों धनी गुन गिनूं इन आकार, पर कछुक तो गिनना निरधार।
इंद्रावती कहें मैं गुन गिनों, कछुक प्रकासूं आपोपनों।। ११ ।।

इस माया के तन से भी धनी के गुणों को कैसे गिनूं? पर कुछ तो गिननी है। ी इन्द्रावतीजी कहती हैं कि मैं धनी के गुण गिनती हूं और कुछ अपनी पहचान कराती हूं कि मैंने धनी ऽसे पहचाना।

|| प्रकरण || २६० ||

श्री धनीजी के गुन || 99 ||

मैं लिखूं श्री धनीजी के गुन, जो रे किए मे
जोजन पचास कोट जिमी केहेलाए, आड़ी टेढ़ी ... ।। १ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि मैं धनीजी के गुण लिखती हूं जो उन्होंने मेरे साथ बहुत अधिक किए। पचास करोड़ योजन जमीन कहलाती है जिसमें आड़ी, टेढ़ी, ऊंची, नीची सब आ जाती है।

चौदे लोक बैकुंठ सुंन जोए, जिमी बराबर करूं सोए।
मैं प्रगट बिछाए करूं एक ठौर, टेढ़ी टाल करूं सीधी दोर।। २ ।।

चौदह लोक, बैकुण्ठ, शून्य, निराकार से लेकर सारी जमीन को एक समान करूं। फिर इसे एक साथ सीधी बिछाकर टेढ़ा-मेढ़ा, भाग सीधा कर दूंगी।

कागद धस्यो मैं याको नाम, गुन लिखने मेरे धनी श्रीधाम।
चौदे भवनकी लेऊं वनराए, तिनकी कलमें मेरे हाथ गढ़ाए।। ३ ।।

इसका मैंने कागज नाम रखा। इसमें मेरे धाम के धनी के गुण लिखने हैं। अब चौदह लोकों के पेड़ पौधों को इकट्ठा करती हूं। उनकी कलमें अपने हाथ से बनाती हूं।

गढ़ते सरफा करूं अति घन, जानों बड़ी छोही उतरे जिन।
ए सरफा मैं फेर फेर करूं, अखंड धनी गुन हिरदे धरूं।। ४ ।।

कलम बनाते समय खास कजूंसी करूंगी। ऐसा न हो कि नोंक बनाते समय कहीं छिलका मोटा उतर जाए। मैं बार-बार कंजूसी करती हूं और अखण्ड धनी के गुण हृदय में रखती हूं।

Nijanand App

मेघ की बूंदे जेती परे, ना कोई वनस्पति निरमान करे।
जदिप को निरमान होए, पर गुन धनी के ना गिने कोए।। ९ ॥

बादलों की वर्षा की बूंदें नहीं गिनी जा सकतीं। वृक्षों के पत्ते भी नहीं गिने जा सकते। यदि इनको गिन भी लिया जाए फिर भी धनी के गुणों को गिनना सम्भव है ही नहीं।

इन बेर के भी कहे न जाए, तो और बेर के क्यों कहूं जुबांए।
पेहेले फेरे की क्यों कहूं बात, गुन जो किए धनी साख्यात।। १० ॥

इस बार जो गुण किए हैं वही नहीं गिने जा सकते, तो उनके पूरे गुण जबान से कैसे कहे जाएं? पहले फेरे के बृज और रास की बात कैसे करूं? जो धनी ने हमारे ऊपर साक्षात् एहसान किए थे।

क्यों धनी गुन गिनूं इन आकार, पर कछुक तो गिनना निरधार।
इंद्रावती कहें मैं गुन गिनों, कछुक प्रकासूं आपोपनों।। ११ ॥

इस माया के तन से भी धनी के गुणों को कैसे गिनूं? पर कुछ तो गिननी है। [illegible] इन्द्रावतीजी कहती हैं कि मैं धनी के गुण गिनती हूं और कुछ अपनी पहचान कराती हूं कि मैंने धनी [illegible]से पहचाना।

॥ प्रकरण [illegible] ॥ २६० ॥

श्री धनीजी के गुन ॥ ११ ॥

मैं लिखूं श्री धनीजी के गुन, जो रे किए मे[illegible]
जोजन पचास कोट जिमी केहेलाए, आड़ी टेढ़ी [illegible]।। १ ॥

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि मैं धनीजी के गुण लिखती हूं जो उन्होंने मेरे साथ बहुत अधिक किए। पचास करोड़ योजन जमीन कहलाती है जिसमें आड़ी, टेढ़ी, ऊंची, नीची सब आ जाती है।

चौदे लोक बैकुंठ सुंन जोए, जिमी बराबर करूं सोए।
मैं प्रगट बिछाए करूं एक ठौर, टेढ़ी टाल करूं सीधी दोर।। २ ॥

चौदह लोक, बैकुण्ठ, शून्य, निराकार से लेकर सारी जमीन को एक समान करूं। फिर इसे एक साथ सीधी बिछाकर टेढ़ा-मेढ़ा, भाग सीधा कर दूंगी।

कागद धस्यो मैं याको नाम, गुन लिखने मेरे धनी श्रीधाम।
चौदे भवनकी लेऊं बनराए, तिनकी कलमें मेरे हाथ गढ़ाए।। ३ ॥

इसका मैंने कागज नाम रखा। इसमें मेरे धाम के धनी के गुण लिखने हैं। अब चौदह लोकों के पेड़ पौधों को इकट्ठा करती हूं। उनकी कलमें अपने हाथ से बनाती हूं।

गढ़ते सरफा करूं अति घन, जानों बड़ी छोही उतरे जिन।
ए सरफा मैं फेर फेर करूं, अखंड धनी गुन हिरदे धरूं।। ४ ॥

कलम बनाते समय खास कजूंसी करूंगी। ऐसा न हो कि नोंक बनाते समय कहीं छिलका मोटा उतर जाए। मैं बार-बार कंजूसी करती हूं और अखण्ड धनी के गुण हृदय में रखती हूं।

Nijanand App

बारीक टांक मेरे हाथों होए, ऐसी करूं जैसी करे न कोए।
कोई तो केहेती हों जो माया लागी तुम, बोहोतक कह्या जो पेहेले हम।।५ ।।

अपने हाथ से नोंक बारीक से बारीक बनाऊंगी। इतनी बारीक बनाऊंगी कि इतनी बारीक कोई नहीं बना सकता। कोई तो इसलिए कहा है कि तुम सुन्दरसाथ माया में बैठे हो, जिसके लिए मैंने पहले बहुत कुछ कहा है।

तुमको माया लागी होए सत, तुम बिना और सबे असत।
इन जिमी ऊपर के लेऊं सब जल, और लेऊं सात पाताल के तल।।६ ।।

हे साथजी ! तुमको माया सच्ची लग रही है। हकीकत यह है कि सिर्फ तुम सत (सत्य) हो, बाकी सब मिट जाने वाले हैं। इस जमीन के ऊपर का सब जल इकट्ठा कर लेती हूं और सात पाताल लोकों का पानी ले लेती हूं।

जल छे लोक के लेऊं लिखनहारी, एक बूंद न छोडूं कहूं न्यारी।
सब जल मिलाए लेऊं मेरे हाथ, गुन लिखने मेरे श्रीप्राणनाथ।।७ ।।

ऊपर के छः लोकों का भी पानी लेती हूं और एक बूंद भी कहीं नहीं छोडूंगी। सब जल को अपने हाथ से मिला लूंगी। मुझे अपने प्राणनाथ के गुण लिखने हैं।

बाकी स्याही करूं मैं अति विगत, एक जरा न जाए समारूं इन जुगत।
ए कागद कलम मस कर, मांहें बारीक आंक लिखूं चित धर।।८ ।।

स्याही अपने हाथ से निराले ढंग से बनाऊंगी। इस युक्ति से बनाऊंगी कि थोड़ी सी स्याही का भी नुकसान न हो। यह कागज, कलम और स्याही इकट्ठी करूं। एकचित्त (दत्तचित्त) होकर बारीक अंक लिखती हूं।

गुन जो किए पिउ तुम इत आए, सो इन जुबां मैं कहे न जाए।
देह माफक मैं लिखूं परमान, एक पाओ लवे का कादूं निरमान।।९ ।।

हे मेरे धनी ! यहां आकर आपने जितने एहसान किए हैं वह इस जबान से कहे नहीं जाते। मैं अपनी बुद्धि (शक्ति) के माफिक लिखती हूं और एक चौथाई अक्षर का भी हिसाब करती हूं।

अब लिखती हूं साथ देखियो उजास, मैं गजे माफक करूं प्रकास।
मैं बोहोत सकोडूं आंक लिखते ए, जिन जानों मींडे होंए बडे।।१० ।।

अब मैं धनी के गुण लिखती हूं जिसे साथजी जाहिर देखना। मैं अपनी बुद्धि के अनुसार जाहिर करती हूं। मैं बहुत छोटे आकार के अंक लिखती हूं जिससे बिन्दियां बड़ी न हो जाएं।

प्रथम एकड़ा करूं एक चित, लगता मींडा धरूं भिलत।
मेरे हाथ अखर कुसादे न होए, मैं डरूं जानों मिले न दोए।।११ ।।

सबसे पहले एकचित्त होकर एक का अंक लिखती हूं और उसके साथ लगती एक बिन्दी लिखती हूं। मेरे हाथ से अक्षर फैले नहीं और दोनों मिल न जाएं इसकी सावधानी रखती हूं।

Nijanand App

यों करते ए दस जो भए, मींडा धरके एक सौ कहे।
भी एक धरके गिनूं हजार, धनी गुन दया को नाहीं पार।। १२ ।।

ऐसा करके दस की गिनती हो गई। एक बिन्दी और लगाई तो सौ की गिनती हुई। फिर एक बिन्दी रखकर हजार गुण गिने। धनी के गुण और दया का शुमार (गिनती) नहीं है।

भी लगता मींडा धरूं एक, जीव से गिनूं दस हजार विसेक।
भी एक धरके लाख गिनाए, भी धरूं ज्यों दस लाख हो जाए।। १३ ।।

फिर उसके साथ एक बिन्दी लगाई और दस हजार गुणों की गिनती की। एक बिन्दी रखकर लाख गुण गिने। फिर एक बिन्दी रखकर दस लाख हो गए।

कोट होवे मींडा धरते सातमां, दस कोट करूं मींडा धरके आठमां।
नवमां धरके करूं अबज, गुन गिनती जाऊं करती कबज।। १४ ।।

सातवीं बिन्दी रखकर करोड़ की गिनती गिनी और आठवीं रखकर दस करोड़ की। नौवीं रखकर एक अरब (अबज) की गिनती करूं और इसी तरह से धनी के गुण गिनती जाऊं और धनी को अपने वश में करती जाऊं।

दस धरके करूं अबज दस, गुन गिनते आवे मोहे अति घनो रस।
अग्यारे धरके करूं खरब एक, लिखते गुन धनी ग्रहूं विसेक।। १५ ।।

दसवीं बिन्दी रख दस अरब की गिनती गिनती हूं। गुण गिनते हुए मुझे बड़ा आनन्द आता है। ग्यारहवीं बिन्दी रखके एक खरब की गिनती गिनूं और गुण गिनते धनी को विशेष रूप से ग्रहण करूं।

बारे धरके दस करूं खरब, पेहेले यों गिनके किन कहे न कब।
तारतम कहे और कौन गिने गुन, हुआ न कोई होसी हम बिन।। १६ ।।

बारहवीं बिन्दी रखकर दस खरब की गिनती करूं। पहले इस तरह से आज तक गुण किसी ने नहीं गिने। तारतम वाणी कहती है कि गुण गिन कौन सकता है? हमारे बिना न कोई ऐसा हुआ है और न कोई होगा।

मैं गुन गिनूं श्रीधामधनी के रे, पर कमी कागद कलम मस मेरे।
कमी तो केहेती हूं जो बैठी माया मांहें, ना तो कमी नहीं कछुए क्यांहें।। १७ ।।

मैं धाम धनी के गुण गिनती हूं। पर कागज, कलम और स्याही की कमी देख रही हूं। कमी तो इसलिए कहती हूं कि माया में बैठी हूं। नहीं तो वास्तव में कमी कुछ है नहीं।

साथ कारन मैं करूं पुकार, देखों वासना मोहजल वार पार।
तेरह धरके गिनूं गुन नील, घने समावें गुन हिरदे असील।। १८ ।।

सुन्दरसाथ के वास्ते मैं पुकारकर कहती हूं कि हे मेरी आत्माओ ! भवसागर के पार देखो। तेरहवीं बिन्दी रखकर नील की गिनती गिनूं और धनी के गुणों को हृदय के अन्दर सम्भाल कर रखूं।

चौदे धरके करूं नील दस, गुन प्रकास लेऊं धनी जस।
पंद्रे धरके करूं पदम, मेरे धनी के गुन की मैं करूं गम।। १९ ।।

चौदहवीं बिन्दी रखकर दस नील की गिनती गिनूं और धनी के गुण इस तरह से बताकर बड़ा यश लूं। पन्द्रहवीं बिन्दी रखकर पदम की गिनती करूं और अपने धनी के गुणों को बड़ी सहन शक्ति से ग्रहण करूं।

Nijanand App

सोले धरके करूं पदम दस, गुन नजरों आवते हुए धनी बस।
सत्रे धरके करूं गुन अंक, अठारे धरूं ज्यों होंए गुन संक।। २० ।।

सोलहवीं बिन्दी रखकर दस पदम की गिनती करूं और धनी के गुणों को नजर में लेकर धनी को वश में करूं। सत्रहवीं बिन्दी रखकर 'अंक' की गिनती कर अठारहवीं बिन्दी रखूं और संख की गिनती करूं।

सुरिता करूं धरके उनईस, पत गुन ग्रहूं धरके बीस।
अंत करूं धरके इकैस, मध करूं गुन दोए धर बीस।। २१ ।।

उन्नीसवीं बिन्दी रखकर सुरिता की गिनती करूं। बीसवीं बिन्दी रखकर पत तक गुण गिनूं। इक्कीसवीं बिन्दी रखकर अन्त तक गिनती गिनूं और बाईसवीं रखकर मध तक गिनती गिनूं।

एकड़ा ऊपर तेईस मींडे धरूं, प्रारध करके लेखा मेरा करूं।
लौकिक लेखे गुन न गिनाए, मेरे धनी के गुन यों गिने न जाए।। २२ ।।

एक के ऊपर तेइसवीं बिन्दी रखकर प्रारध की गिनती करूं। इस लौकिक तरीके से गुण नहीं गिने जाते। मेरे धनी के गुण गिनना इस तरह से सम्भव नहीं है।

हिसाब करूं साथ देखियो विचार, गुन जाहेर हुए प्राणके आधार।
प्रारध गुने एक मींडेसों बढ़े, दूजे सों हर एक यों चढ़े।। २३ ।।

हिसाब करती हूं, साथजी ! विचार कर देखना। मेरे प्राणों के आधार के गुण जाहिर हुए। एक बिन्दी रखने से गुण प्रारध गुना बढ़ जाते हैं और इसी तरह से दूसरी बिन्दी रखकर गिनती बढ़ जाती है।

यों करते ए होवें जेते, इन बिध चढ़ते जांए तेते।
ए हिसाब मेरी आतमा करे, गुन धनी हिरदे अंतर धरे।। २४ ।।

इस तरह से करते हुए जितने गुण हुए उसी तरह से संख्या बढ़ती जाती है। इनका हिसाब मेरी आत्मा करती है और धनी के गुणों को हृदय में धरती है।

लिखते गुन धनी हिरदे आए, पर डरूं जानों कागद में न समाए।
कलमों को मेरा जीव ललचाए, गढ़ते गढ़ते जानों जिन उतर जाए।। २५ ।।

गुण लिखते-लिखते धनी हृदय में आ गए, पर डरती हूं कि कहीं ऐसा न हो कि गुण कागज में न समाएं। कलमों को मेरा जीव ललचाता है। ऐसा न हो कि घड़ते-घड़ते (गड़ते-गड़ते) समाप्त हो जाएं।

सरफा करूं मैं लिखते स्याही, जिन लिखते अधबीच घट जाई।
यों धरते धरते मींडे रहे भराए, वार किनार सब रहे समाए।। २६ ।।

गुण गिनने में मैं स्याही की कंजूसी करती हूं। लिखते-लिखते कहीं अध बीच में कम न हो जाए। इस तरह से बिंदियां धरते-धरते कागज भर गया। किसी भी किनारे पर जगह नहीं बची।

ए कागद यों पूरन भया सही, स्याही कलमें कछू बाकी न रही।
अब ए गुन गिनूं मैं नीके कर, आतम के अन्दर ले धर।। २७ ।।

इस तरह से एक कागज पूरा हुआ। स्याही कलम कुछ भी नहीं बचा। अब मैं इन गुणों को अच्छी तरह गिनती हूं और आत्मा के अन्दर धारण करती हूं।

Nijanand App

ए तो गुन गिने मैं चित ल्याए, पर इन धनी के गुन यामें न समाए।
भी करूं दूजे लिखने के ठाम, गुन लिखने मेरे धनी श्रीधाम।। २८ ।।

इन गुणों को मैंने एक चित्त से गिना है। धनी के गुण इसमें नहीं समाते हैं। अब दूसरे कागज लिखने का प्रबन्ध करती हूं मुझे मेरे धनी के गुण लिखने हैं।

ए गुन मिल जमें भए जेते, या बिध ऐसे कागद लिखे एते।
ऐसे कागद ऐसी स्याही कलम, मांहें बारीक आंक लिखे हैं हम।। २९ ।।

इस तरह गिनने में जितने गुण गिने, इस तरीके से इतने कागज लिख डाले। ऐसे कागज, ऐसी स्याही, ऐसी कलमों से मैंने बारीक अंक लिखे हैं।

इन कलमों की मैं देखी अनी, कछू कर न सकी बारीक घनी।
ए गुन गिन मैं एकठे किए, सो अपने हिरदे में लिए।। ३० ।।

इन कलमों की नोंक को मैंने देखा, पर इससे अधिक बारीक न कर सकी। इन समस्त गुणों को गिनकर मैंने इकट्ठा किया और अपने हृदय में रखा।

कलमें समारी जोस बुध बल, घडूं रास कर काढ़ के बल।
एक जीव कहियत है कथुआ, ए जो जिमी पर पैदा हुआ।। ३१ ।।

मैं सम्भाल कर अपनी बुद्धि के बल से लकड़ी का टेढ़ापन निकालकर सीधा बनाकर कलमें बनाती हूं। एक कथुआ (कागज खाने वाला कीड़ा) कहलाता है जो जमीन पर पैदा होता है।

कथुए के पांउ का गुन जेता भाग, कलमों की टांक मैं देखी चीर लाग।
इन अनियों आंक लिखे यों कर, ए जेता कागद एती बेर फेर फेर।। ३२ ।।

कथुए के पांव के उतने ही हिस्से किए जितने गुण गिने हैं, उतनी बारीक कलमों की नोंक मैंने बनाई, और इनकी नोंकों से बारीक अंक लिखे। जितने कागज थे उतनी ही बार ऐसे लिखे।

यों लिख लिख के मैं गिने गुन, पर मेरे धनी के गुन हैं अति घन।
ए गुन मिलाए के एकठे किए, सो नीके कर मैं चित में लिए।। ३३ ।।

ऐसा लिख-लिखकर मैंने धनी के गुण गिने। मेरे धनी के गुण बहुत अधिक हैं। इन सब गुणों को मिलाकर मैंने इकट्ठा किया और अपने चित्त में धारण कर लिया।

ए लिखते मोहे केती बेर भई, तिनका निरमान काढ़ना सही।
जेते मिल के भए ए गुन, तेते बांटे किए एक खिन।। ३४ ।।

यह लिखने में मुझे कितना समय लगा, इसका भी हिसाब लगाती हूं। एक पल में इतने हिस्से किए जितने गुण हैं।

बेर भई एक बांटे जेती, ए सब कागद लिखे मांहें बेर एती।
ए लिख लिख के मैं लिखे अपार, अब ए बेर निरने करूं निरधार।। ३५ ।।

पल के एक हिस्से में सब कागज लिखे गए। ऐसे लिख-लिखकर मैंने अनन्त बार लिखे। अब उसका भी मैं हिसाब लगा दूं।

Nijanand App

गुन जेते महाप्रले भए, वाही जोस में लिख गुन कहे।
बीच में स्वांस न खाया एक, ढील ना करी कछू लिखते विसेक।। ३६ ।।

जितने गुण थे उतने महाप्रलय हुए। उसी जोश में यह गुण लिखकर कहे। गुण गिनते समय एक सांस भी खाली नहीं गया और जरा भी सुस्ती नहीं की।

एह जमें मैं गुन की कही, श्रीसुन्दरबाईऐं सिखापन दई।
साथ जाने लेखा जोर किया अपार, पर मेरे जीव के दरद की न दबी किनार।। ३७ ।।

इन सब गुणों को मैंने इकट्ठा किया और जितना योगफल (Total) आया इतने ही सिखापन श्यामा महारानी ने सुन्दरसाथजी को दिए। साथ जानता है कि मैंने बेशुमार (अनगिनत) गुणों का हिसाब किया। पर मेरे जीव में जो दर्द है, उसका एक अंश भी नहीं हुआ।

जीव मेरा बड़ा वतनी पात्र, अजूं जीव जानें ए लिख्या तुछ मात्र।
गुन तो बाकी भरे भंडार, सोई भंडार गुन गिनूं आधार।। ३८ ।।

मेरे जीव का बर्तन बहुत बड़ा है। जीव तो जानता है कि अभी तो कुछ भी गिनती नहीं हुई, गुणों के तो बाकी भण्डार भरे पड़े हैं। अब उन भण्डारों की भी गिनती करती हूं।

ए गुन गिने मैं हिरदे विचार, गुन जेते भंडार गिने निरधार।
गिनते गिनते बाकी देखे अपार, तिनका भी मैं करना निरवार।। ३९ ।।

इन गुणों को हृदय में विचार करके गिना और जितने गुण गिने गए उतने ही ऐसे भण्डार भर दिए। फिर देखा कि गुणों के भण्डार बहुत बाकी हैं। इसका भी मुझे हिसाब करना है।

मैं ना करूं तो दूजा करे कौन, कर निरवार ग्रहूं धनी के गुन।
बाकी भंडार का लेखा देऊं मेरे पिउ, ए मुस्किल नहीं कछू मेरे जिउ।। ४० ।।

मैं न करूं तो दूसरा कौन करेगा? इसलिए धनी के गुणों का हिसाब कर गुण ग्रहण करती हूं। बाकी भण्डार का हिसाब भी अपने पिया को दूंगी। मेरे जीव के लिए यह कुछ भी कठिन नहीं है।

ए गुन गिन किए जीवें अपने हाथ, पल पल पसरे गुन प्राणनाथ।
ए सब तो कहूं जो गुन ठाढ़े रहे, ए गुन मन की न्यात दौड़े जाए।। ४१ ।।

यह गुण मेरे जीव ने गिनकर अपने हाथ में ले लिए, परन्तु प्राणनाथ जी के गुण (मेहर) पल-पल बढ़ रहे हैं। यह सबकी गिनती तो बताऊं जो गुण (मेहर) स्थिर रहे। गुण (मेहर) तो मन की तरह दौड़ रहें हैं।

अब एता तो मैं किया निरमान, और बाकी कहूंगी मांहें फुरमान।
एक खिन के मैं बांटे किए, गुन जेते भाग विचार के लिए।। ४२ ।।

अब मैंने इतना निश्चय किया कि बाकी गुणों को मैं इस वाणी में कहूंगी। एक क्षण के मैंने उतने हिस्से किए जितने कि गुण हैं।

तामें बेर एक बांटे की कही, पिया गुन एते में तेते किए सही।
ए गुन गिनते मेरा कारज सरया, आतम मूल सरूप हिरदे में धरया।। ४३ ।।

फिर एक क्षण के हिस्से में पिया के जितने गुण हैं उतने हिस्से और किए। इतने समय में मेरा काम सिद्ध हो गया कि धनी का मूल स्वरूप हृदय में आ गया।

Nijanand App

सारे जनम के क्यों कहूं गुन, पिया देह धर आए किए धंन धंन।
गुन पांच जनम के क्यों कहूं सोय, धनी दया आई धनी की खुसबोए।। ४४ ।।

अब सारे जन्म के गुण गिनने की क्या आवश्यकता है? इतने में ही प्रीतम मेरे अन्दर आ गए। मैं धन्य धन्य हो गई। पांच जन्मों के (बृज, रास, बरारब, नौतनपुरी और श्री पन्ना की) गुणों को कैसे कहूं? धनी की दया से ही यह सब सुगन्ध अन्दर आ गई है।

ए गुन गिने मैं अस्थिर आकार, ना तो यों क्यों गिनूं मेरे प्राणके आधार।
अब बात करसी तुम अग्या केरी, मुझे आसा इत जाग उड़ाऊं अंधेरी।। ४५ ।।

यह गुण मैंने माया के तन से गिने हैं। नहीं तो इस तरह से मेरे प्राणनाथ के गुण नहीं गिने जाते। हे धनी ! अब तुम्हारी आज्ञा के अनुसार ही काम करूंगी। मुझे आशा है कि इस संसार का अंधेरा मिटाकर सबको जागृत करूंगी।

पिउ तुम आए माया देह धर, साथ की मत फिर गई क्यों कर।
हांसी करसी पिउ साथ पर, क्या करसी माया जब मांगी घर।। ४६ ।।

हे धनी ! आपने माया में आकर तन धारण किया। फिर भी साथ की बुद्धि क्यों बदल गई? पियाजी सुन्दरसाथ के ऊपर हंसी करेंगे। माया तो घर में ही बैठकर मांगी थी। वह सिवाय हंसी के और क्या करेगी?

तुम लई खबर हमारी ततखिन, ले आए तारतम देखाया वतन।
पिया हांसी करसी अति जोर, भुलाए मायाऐं कर बैठाए चोर।। ४७ ।।

हे धनी ! आपने मेरी तुरन्त ही सुध ली और तारतम वाणी लाकर घर दिखाया। धनी माया में हम भूलकर चोरों की तरह गए हैं। इस बात की हंसी धनी परमधाम में करेंगे।

अब करेंगे जाए वतन बात, माया अमल चढ्यो निघात।
पिउ कई विध तारतम कियो रोसन, तो भी क्योंए न भैयां चेतन।। ४८ ।।

माया का नशा जोर का चढ़ा है। इस बात को घर में जाकर करेंगे। धनी ने कई तरह से तारतम वाणी से जगाया, तो भी सुन्दरसाथ जागे नहीं।

लेवे इंद्रावती वारने गुन जेते, इत सुख दिए हमको एते।
घर के सुख की इत कैसी बात, घर के सुख घरों होसी विख्यात।। ४९ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि हमको इस माया मोह में धनी ने जितने सुख दिए हैं (एहसान किए हैं) उतनी ही बार मैं उन पर वारी-वारी जाती हूं। यहां माया में घर परमधाम के सुख की बात नहीं है। घर के सुखों की चर्चा घर में होगी।

चरनो लाग कहें इंद्रावती, गुन न देखे किन एक रती।
धनी जगाए के देखावसी गुन, तब हांसी होसी अति घन।। ५० ।।

श्री इन्द्रावतीजी चरणों में लगकर कहती हैं कि सुन्दरसाथ ने धनी की एक मेहर (गुन) को भी नहीं पहचाना। अब धनी सुन्दरसाथ को जगाकर अपनी मेहर की पहचान कराएंगे, तब बहुत हंसी होगी।

।। प्रकरण ।। १२ ।। चौपाई ।। ३१० ।।

Nijanand App

साथ को सिखापन

सुनो साथ मेरे सिरदार, वचन कहूं सो ग्रहो निरधार।
एते गुन आपनसों कर, बैठे आपन में माया देह धर।। १ ।।

हे मेरे सिरदार सुन्दरसाथ! सुनो, मैं जो कहती हूं उसे निश्चित रूप से धारण करो। धनी अपने ऊपर इतने एहसान करके अपने बीच में ही माया में तन धारण कर बैठे हैं।

भानो भरम वचन देख कर, छोड़ो नींद रोसनी हिरदे धर।
श्रीधाम के धनी केहेलाए, सो बैठे आपन में इत आए।। २ ।।

इन वचनों को देखकर अपने संशय मिटाओ तथा तारतम वाणी को हृदय में लेकर माया छोड़ो। जो धाम के धनी कहलाते हैं, वह अपने बीच आकर तन धारण कर बैठे हैं।

सेवा कीजे पेहेचान चित धर, कारन अपने आए फेर।
भी अवसर आयो है हाथ, चेतन कर दिए प्राणनाथ।। ३ ।।

धनी की पहचान कर चित्त से उनकी सेवा करो। अपने वास्ते वह फिर से आए हैं। फिर मौका अपने हाथ आया है और प्राणनाथ धनी ने अपने को सावचेत (सावधान) भी कर दिया है।

इन ऊपर और कहा कहूं, मैं श्रीधनीजी के चरने रहूं।
कर जोड़ करूं विनती, दूर ना होऊं बेर पाओ पल जेती।। ४ ।।

अब इसके ऊपर और क्या कहूं? सिवाय इसके कि धनी के चरणों में बैठी रहूं और हाथ जोड़कर विनती करूं तथा एक क्षण के लिए भी अलग न होऊं।

॥ प्रकरण ॥ १३ ॥ चौपाई ॥ ३१४ ॥

जीव को सिखापन

मेरे अंध अभागी जीव, तूं क्यों सूता इत।
बिध बिध धनिऐं जगाइया, अजहूं ना घर सूझत।। १ ।।

हे मेरे अन्धे अभागे जीव ! तू यहां क्यों सोता है? धनी ने तुझे तरह-तरह से जगाया फिर भी तुझे घर की सुध नहीं आती।

आगे भी तें कहा कियो, चल गए पिउ जब।
अवगुन ना देखे अपने, पिउ मेहेर करी फेर अब।। २ ।।

आगे भी तूने क्या किया जब धनी आकर चले गए। तू अपने अवगुण नहीं देखता। धनी ने फिर से कृपा की है।

धाम धनी तुझ कारने, आए माया में दोए बेर।
मेहेर ना देखे पिउ की, ऐसो हिरदे निपट अंधेर।। ३ ।।

धाम धनी तेरे लिए माया में दो बार आए। तू धनी की कृपा नहीं देखता। ऐसा कठोर, हृदय से अन्धा हो गया।

Nijanand App

साथ को सिखापन

सुनो साथ मेरे सिरदार, वचन कहूं सो ग्रहो निरधार।
एते गुन आपनसों कर, बैठे आपन में माया देह धर।। १ ।।

हे मेरे सिरदार सुन्दरसाथ! सुनो, मैं जो कहती हूं उसे निश्चित रूप से धारण करो। धनी अपने ऊपर इतने एहसान करके अपने बीच में ही माया में तन धारण कर बैठे हैं।

भानो भरम वचन देख कर, छोड़ो नींद रोसनी हिरदे धर।
श्रीधाम के धनी केहेलाए, सो बैठे आपन में इत आए।। २ ।।

इन वचनों को देखकर अपने संशय मिटाओ तथा तारतम वाणी को हृदय में लेकर माया छोड़ो। जो धाम के धनी कहलाते हैं, वह अपने बीच आकर तन धारण कर बैठे हैं।

सेवा कीजे पेहेचान चित धर, कारन अपने आए फेर।
भी अवसर आयो है हाथ, चेतन कर दिए प्राणनाथ।। ३ ।।

धनी की पहचान कर चित्त से उनकी सेवा करो। अपने वास्ते वह फिर से आए हैं। फिर मौका अपने हाथ आया है और प्राणनाथ धनी ने अपने को सावचेत (सावधान) भी कर दिया है।

इन ऊपर और कहा कहूं, मैं श्रीधनीजी के चरने रहूं।
कर जोड़ करूं विनती, दूर ना होऊं बेर पाओ पल जेती।। ४ ।।

अब इसके ऊपर और क्या कहूं? सिवाय इसके कि धनी के चरणों में बैठी रहूं और हाथ जोड़कर विनती करूं तथा एक क्षण के लिए भी अलग न होऊं।

॥ प्रकरण ॥ १३ ॥ चौपाई ॥ ३१४ ॥

जीव को सिखापन

मेरे अंध अभागी जीव, तूं क्यों सूता इत।
बिध बिध धनिएं जगाइया, अजहूं ना घर सूझत।। १ ।।

हे मेरे अन्धे अभागे जीव ! तू यहां क्यों सोता है? धनी ने तुझे तरह-तरह से जगाया फिर भी तुझे घर की सुध नहीं आती।

आगे भी तें कहा कियो, चल गए पिउ जब।
अवगुन ना देखे अपने, पिउ मेहेर करी फेर अब।। २ ।।

आगे भी तूने क्या किया जब धनी आकर चले गए। तू अपने अवगुण नहीं देखता। धनी ने फिर से कृपा की है।

धाम धनी तुझ कारने, आए माया में दोए बेर।
मेहेर ना देखे पिउ की, ऐसो हिरदे निपट अंधेर।। ३ ।।

धाम धनी तेरे लिए माया में दो बार आए। तू धनी की कृपा नहीं देखता। ऐसा कठोर, हृदय से अन्धा हो गया।

Nijanand App

आप पकड़ तूं अपना, बल कर आंखां खोल।
दूध पानी दोऊ जाहेर, देख नीके तारतम बोल।। ४ ।।

तू अपने आपको संभाल और हिम्मत करके आंखें खोल। अब तारतम वाणी से विचार कर देख, दूध और पानी (ब्रह्म और माया) दोनों जाहिर हो गए हैं।

पेहेले तो आंखां फूटियां, अब तो कछुक संभाल।
ए जासी अवसर हाथ से, पीछे होसी कौन हवाल।। ५ ।।

पहले तो अज्ञानता थी। अब तो कुछ संभल। यह अवसर जब हाथ से निकल जाएगा तब तेरी क्या हालत होगी?

आगे उलटा हुआ अकरमी, अजहूं ना करे कछु सुध।
जागत नहीं क्यों जोर कर, ले हिरदे मूल बुध।। ६ ।।

हे बदनसीब ! पहले भी तू विमुख रहा और अभी भी तुझे कुछ सुध नहीं आ रही। जागृत बुद्धि हृदय में लेकर, ताकत लगाकर क्यों नहीं जागता?

पुकार सुनी दोऊ पिउ की, वतन देखाया नजर।
उठी ना अंग मरोर के, अब आई नजीक फजर।। ७ ।।

तुमने दोनों तनों से (श्री देवचन्द्रज़ी के तन की तथा श्री इन्द्रावतीजी के तन की) धनी की आवाज सुनी है। जिससे उन्होंने अपने घर की पहचान कराई है। फिर तू अंग मरोड़कर क्यों नहीं उठता? फजर (उषा काल) नजदीक आ गयी है।

तारतम देख विचार के, पिउ ल्याए बेर दोए।
एती आग सिर पर जली, तूं रह्या खांगडू होए।। ८ ।।

तारतम वाणी से विचार करके देख। धनी तेरे लिए दो बार ज्ञान लेकर आए हैं। इतनी मार (वाणी की) सिर पर पड़ी, पर तू खांगडू मूंग की तरह गला नहीं।

।। प्रकरण ।। १४ ।। चौपाई ।। ३२२ ।।

मेरे जीव अभागी रे, जिन भूले तूं अब।
इन मोहजल से काढ़न वाला, ऐसा ना मिलसी कोई कब।। १ ।।

हे मेरे बदनसीब जीव ! तू अब मत भूल। इस तरह से भवसागर से निकालने वाला कभी भी नहीं मिलेगा।

ए गुन तूं याद कर, जो किए अनेक सजन।
तूं क्यों सूता जीव अभागी, देकर साहेबी मन।। २ ।।

तू धनी की उन कृपाओं को याद कर, जो धनी ने हमारे ऊपर बेशुमार की हैं। फिर भी अभागे जीव! तू अपने अहंकार में क्यों सो रहा है?

Nijanand App

आप पकड़ तूं अपना, बल कर आंखां खोल।
दूध पानी दोऊ जाहेर, देख नीके तारतम बोल।। ४ ।।

तू अपने आपको संभाल और हिम्मत करके आंखें खोल। अब तारतम वाणी से विचार कर देख, दूध और पानी (ब्रह्म और माया) दोनों जाहिर हो गए हैं।

पेहेले तो आंखां फूटियां, अब तो कछुक संभाल।
ए जासी अवसर हाथ से, पीछे होसी कौन हवाल।। ५ ।।

पहले तो अज्ञानता थी। अब तो कुछ संभल। यह अवसर जब हाथ से निकल जाएगा तब तेरी क्या हालत होगी ?

आगे उलटा हुआ अकरमी, अजहूं ना करे कछु सुध।
जागत नहीं क्यों जोर कर, ले हिरदे मूल बुध।। ६ ।।

हे बदनसीब ! पहले भी तू विमुख रहा और अभी भी तुझे कुछ सुध नहीं आ रही। जागृत बुद्धि हृदय में लेकर, ताकत लगाकर क्यों नहीं जागता ?

पुकार सुनी दोऊ पिउ की, वतन देखाया नजर।
उठी ना अंग मरोर के, अब आई नजीक फजर।। ७ ।।

तुमने दोनों तनों से (श्री देवचन्द्रजी के तन की तथा श्री इन्द्रावतीजी के तन की) धनी की आवाज सुनी है। जिससे उन्होंने अपने घर की पहचान कराई है। फिर तू अंग मरोड़कर क्यों नहीं उठता ? फजर (उषा काल) नजदीक आ गयी है।

तारतम देख विचार के, पिउ ल्याए बेर दोए।
एती आग सिर पर जली, तूं रह्या खांगड़ू होए।। ८ ।।

तारतम वाणी से विचार करके देख। धनी तेरे लिए दो बार ज्ञान लेकर आए हैं। इतनी मार (वाणी की) सिर पर पड़ी, पर तू खांगड़ू मूंग की तरह गला नहीं।

।। प्रकरण ।। १४ ।। चौपाई ।। ३२२ ।।

मेरे जीव अभागी रे, जिन भूले तूं अब।
इन मोहजल से काढ़न वाला, ऐसा ना मिलसी कोई कब।। १ ।।

हे मेरे बदनसीब जीव ! तू अब मत भूल। इस तरह से भवसागर से निकालने वाला कभी भी नहीं मिलेगा।

ए गुन तूं याद कर, जो किए अनेक सजन।
तूं क्यों सूता जीव अभागी, देकर साहेबी मन।। २ ।।

तू धनी की उन कृपाओं को याद कर, जो धनी ने हमारे ऊपर बेशुमार की हैं। फिर भी अभागे जीव ! तू अपने अहंकार में क्यों सो रहा है ?

Nijanand App

पेहेले तें काढ़े वचन, सो क्या मन की दोर।
बुध मन तेरे बैठे रेहेसी, जीव को क्रोध काढ़सी जोर।। ३ ।।

पहले तूने धनी के वियोग का वचनों से विलाप किया और गुण गिने, तो क्या वह मनगढंत थे? तेरे मन और बुद्धि बैठे ही रह जाएंगे और क्रोध अपनी ताकत से जीव को जगा देगा।

जीव तूं क्यों होत है निलज, तोहे अजूं ना लगे घाए।
याद करके पिउ को, क्यों ना उड़े अरवाए।। ४ ।।

हे जीव! तू इतना बेहया (निर्लज्ज) क्यों हो गया है? तुझे अभी भी चोट नहीं लगी? अपने धनी को याद करके अपने तन को छोड़ क्यों नहीं देता?

जो अब जीवरा भूलसी, तो देखी तेरी बिध।
काढूंगी तुझे जोरसे, करके बुरी सनंध।। ५ ।।

हे जीव ! मैंने तेरी हकीकत देख ली है। यदि इस बार भी तू भूला तो तेरी बुरी दशा करके ताकत से निकाल दूंगी।

पेहेले तो तें बुरी करी, अब जिन चूके अवसर।
पिउ तोकों वतन में, बुलावत हैं हंसकर।। ६ ।।

हे जीव ! पहले भी तूने बहुत बुरा किया। अब मत भूलना। धनी तुम्हें प्रसन्न होकर घर बुला रहे हैं।

ससुई सो भी यों कहे, मैं हाथों अपना मार।
पुनों की बधाई में, देऊं कोट सिर उतार।। ७ ।।

वह ससुई (माया का जीव) भी इस तरह से कहती है कि जो भी मेरे प्रीतम पुनू के आने की बधाई देगा, उसको मैं अपने हाथों से अपना सिर करोड़ बार उतारकर दे दूंगी।

क्यों ना देखे ए वचन, भट परो मेरे जिउ।
तूं लेत निमूना किनका, तूं कौन कौन तेरा पिउ।। ८ ।।

हे जीव ! तुझे आग लग जाए। तू इन वचनों को क्यों नहीं देखता? नमूना भी किनका ले रहा है। तू कौन है और तेरा धनी कौन है? इसकी पहचान तो कर।

दुनियां चौदे भवन में, जो देखिए मूल अर्थ।
जो लेवे तेरा निमूना, ऐसा ना कोई समरथ।। ९ ।।

चौदह लोकों की इस दुनियां में यदि हकीकत से देखा जाए तो तेरा नमूना देखकर कोई चल नहीं सकता (क्योंकि तू धनी का अंग है)।

तूं निमूना माया जीव का, क्यों कर लेवे इत।
ए दाग तेरा क्यों छूट हीं, ए तुझे लाग्या जित।। १० ।।

हे मेरे जीव ! तू संसार के जीवों का नमूना क्यों लेता है? वैसी चाल क्यों चलता है? तेरे मत्थे पर जो कलंक लग जाएगा वह कैसे छूटेगा?

Nijanand App

अजूं सुध तोको न होत, तेरी क्यों हुई ऐसी रसम।
याद कर अपना वतन, जो तें सुनी बात खसम।।११।।

तुझे अभी भी होश नहीं आता। तेरी ऐसी हालत क्यों हो गई? अपने धनी की जो बातें सुनी हैं उनसे अपने घर की बातें याद कर।

तूं भूल जात क्यों वचन, जो श्रीधाम धनी कहे आप।
एक आधा सुकन विचारते, तो पलक न छोड़े मिलाप।।१२।।

धाम-धनी ने अपने मुख से तुझे जो वचन कहे हैं, यदि उनमें से एक आधा वचन भी विचार कर ले तो तू एक क्षण के लिए भी धनी का साथ नहीं छोड़ेगा।

तोको कहूं अभागी अकरमी, जो जाग्या न एते सोर।
सात बेर तोको कहूं सोहागी, जो तूं उठे अंग मरोर।।१३।।

हे अभागे बदनसीब जीव ! इतना जगाने पर भी तू नहीं जागा? अब भी तू अंग मरोड़कर जाग जाए तो तुझे सात बार सौभाग्यशाली (सुहागी) कहूंगी।

।। प्रकरण ।। १५ ।। चौपाई ।। ३३५ ।।

मेरे जीव सोहागी रे, जिन छोड़े पिउ कदम।
दूसरी बेर माया मिने, तुझ कारन आए खसम।।१।।

हे मेरे सुहागी (सौभाग्यशाली) जीव ! अब प्रीतम के चरण नहीं छोड़ना। तेरे वास्ते ही धनी माया में दूसरी बार आये हैं।

गुन धनी के याद कर, पकड़ पिउ के पाए।
सुखे बैठ सुखपाल में, देसी वतन पोहोंचाए।।२।।

अब धनी की कृपा (मेहरबानी) को याद कर। उनके चरण पकड़ ले, वह तुझे सुखपाल में बैठाकर घर (परमधाम) पहुंचा देंगे।

खेल हंस कर बातड़ी, पेहेचान अपना पिउ।
दो बेर धनी तुझ कारने, आए जान अपना जिउ।।३।।

तुम हंसते खेलते हुए अपने धनी को पहचानो और उनसे बातें करो। धनी तुम्हें अपना जानकर दो बार माया में आए हैं।

हैं कैसे धनी देख तूं, तोसों करी है ज्यों।
आप ना रख्या आपना, सो याद न कीजे क्यों।।४।।

उन्होंने तेरे पर जो एहसान किए हैं, उससे उनकी पहचान कर। उन्होंने अपनापन भी अपने पास नहीं रखा। उसको क्यों याद नहीं करता?

कर हिंमत बांध कमर, ले हुकम सब हाथ।
पिउ पास हो पेहेचान के, और छोड़ सब साथ।।५।।

उठ, हिम्मत कर। कमर कसकर धनी के हुकम को अपने सिर चढ़ा और पिया की पहचान कर माया के सब साथियों को छोड़ दे।

Nijanand App

अजूं सुध तोको न होत, तेरी क्यों हुई ऐसी रसम।
याद कर अपना वतन, जो तें सुनी बात खसम।। ११ ।।

तुझे अभी भी होश नहीं आता। तेरी ऐसी हालत क्यों हो गई? अपने धनी की जो बातें सुनी हैं उनसे अपने घर की बातें याद कर।

तूं भूल जात क्यों वचन, जो श्रीधाम धनी कहे आप।
एक आधा सुकन विचारते, तो पलक न छोड़े मिलाप।। १२ ।।

धाम-धनी ने अपने मुख से तुझे जो वचन कहे हैं, यदि उनमें से एक आधा वचन भी विचार कर ले तो तू एक क्षण के लिए भी धनी का साथ नहीं छोड़ेगा।

तोको कहूं अभागी अकरमी, जो जाग्या न एते सोर।
सात बेर तोको कहूं सोहागी, जो तूं उठे अंग मरोर।। १३ ।।

हे अभागे बदनसीब जीव ! इतना जगाने पर भी तू नहीं जागा? अब भी तू अंग मरोड़कर जाग जाए तो तुझे सात बार सौभाग्यशाली (सुहागी) कहूंगी।

|| प्रकरण || १५ || चौपाई || ३३५ ||

मेरे जीव सोहागी रे, जिन छोड़े पिउ कदम।
दूसरी बेर माया मिने, तुझ कारन आए खसम।। १ ।।

हे मेरे सुहागी (सौभाग्यशाली) जीव ! अब प्रीतम के चरण नहीं छोड़ना। तेरे वास्ते ही धनी माया में दूसरी बार आये हैं।

गुन धनी के याद कर, पकड़ पिउ के पाए।
सुखे बैठ सुखपाल में, देसी वतन पोहोंचाए।। २ ।।

अब धनी की कृपा (मेहरबानी) को याद कर। उनके चरण पकड़ ले, वह तुझे सुखपाल में बैठाकर घर (परमधाम) पहुंचा देंगे।

खेल हंस कर बातड़ी, पेहेचान अपना पिउ।
दो बेर धनी तुझ कारने, आए जान अपना जिउ।। ३ ।।

तुम हंसते खेलते हुए अपने धनी को पहचानो और उनसे बातें करो। धनी तुम्हें अपना जानकर दो बार माया में आए हैं।

हैं कैसे धनी देख तूं, तोसों करी है ज्यों।
आप ना रख्या आपना, सो याद न कीजे क्यों।। ४ ।।

उन्होंने तेरे पर जो एहसान किए हैं, उससे उनकी पहचान कर। उन्होंने अपनापन भी अपने पास नहीं रखा। उसको क्यों याद नहीं करता?

कर हिंमत बांध कमर, ले हुकम सब हाथ।
पिउ पास हो पेहेचान के, और छोड़ सब साथ।। ५ ।।

उठ, हिम्मत कर। कमर कसकर धनी के हुकम को अपने सिर चढ़ा और पिया की पहचान कर माया के सब साथियों को छोड़ दे।

Nijanand App

आप कहियो अपने साथ को, जो तुझे खुले वचन।
सुध तो नहीं कछू साथ को, पर तो भी अपने सजन।।६।।

जो भेद वाणी के तुझे खुले, वह अपने सुन्दरसाथ को बताना। सुन्दरसाथ को माया में सुध नहीं है फिर भी वह तो अपने साथी हैं।

।। प्रकरण ।। १६ ।। चौपाई ।। ३४१ ।।

मेरे साथ सोहागी रे, पिउसों क्यों न करो पेहेचान।
पेहेले चले पेहेचान बिना, फेर आए सो अपनी जान।।१।।

हे मेरे सुहागी (सौभाग्यशाली) सुन्दरसाथ ! तुम पिया की पहचान क्यों नहीं करते? पहले भी तुम्हारी नासमझी के कारण वह चले गए थे। अब दुबारा अपना साथ समझकर आए हैं।

सोई पिउ सोई बातड़ी, फेर सोई करे पुकार।
कारन अपने पिउ को, आंखों आवे जलधार।।२।।

यह वही पिया हैं और वही चर्चा है। उसी तरह सोए हुए को जगाते हैं। हमारे वास्ते वह अपनी आंखों में आसूं भर-भर कर रोते हैं।

सोई नसीहत देत सजन, खैंचत तरफ वतन।
पिउ पुकारें बेर दूसरी, अब क्यों होंए पीछे आपन।।३।।

धनी वतन (धाम) की तरफ चलने के लिए वैसा ही सिखापन देते हैं। दूसरी बार आकर पुकार कर रहे हैं। अब हम पीछे क्यों रहें?

सोई कूकां करे पेहेले की, सो क्यों न समझो बात।
न तो दिन उजाले खरे दो पोहोरे, अब हो जासी रात।।४।।

धनी पहले की तरह से ही जोश में चर्चा करते हैं। इस बात को तुम क्यों नहीं समझते? अगर अब भी नहीं समझे तो दिन के दोपहर जैसे उजाले में रात हो जाएगी।

फेर पटकोगे हाथड़े, और छाती देओगे घाउ।
चल जासी पिउ हाथ से, फेर न पाओगे दाउ।।५।।

फिर हाथ पटकोगे और छाती पीटोगे जब पिया चले जाएंगे। फिर ऐसा समय नहीं पाओगे।

विलख विलख कहे वचन, रोए रोए किए बयान।
प्रेम करे अति प्रीतसों, पर साथ को सुध न सान।।६।।

धनी ने बिलख-बिलखकर, रो-रोकर वाणी से समझाया और रो-रोकर घर की बातें बताईं। सुन्दरसाथ से बड़ा प्रेम भी किया, फिर भी साथ को सुध नहीं आई।

माया देखी बीच पैठ के, पिउ के उजाले तुम।
विध विध खेल देखावने, पिउ ल्याए तारतम।।७।।

तुमने प्रीतम के ज्ञान के उजाले में माया को माया के संसार में बैठकर देखा। तुमको तरह-तरह से खेल दिखाने के लिए धनी तारतम ज्ञान लाए हैं।

Nijanand App

आप कहियो अपने साथ को, जो तुझे खुले वचन।
सुध तो नहीं कछू साथ को, पर तो भी अपने सजन।। ६ ।।

जो भेद वाणी के तुझे खुले, वह अपने सुन्दरसाथ को बताना। सुन्दरसाथ को माया में सुध नहीं है फिर भी वह तो अपने साथी हैं।

।। प्रकरण ।। १६ ।। चौपाई ।। ३४१ ।।

मेरे साथ सोहागी रे, पिउसों क्यों न करो पेहेचान।
पेहेले चले पेहेचान बिना, फेर आए सो अपनी जान।। १ ।।

हे मेरे सुहागी (सौभाग्यशाली) सुन्दरसाथ ! तुम पिया की पहचान क्यों नहीं करते? पहले भी तुम्हारी नासमझी के कारण वह चले गए थे। अब दुबारा अपना साथ समझकर आए हैं।

सोई पिउ सोई बातड़ी, फेर सोई करे पुकार।
कारन अपने पिउ को, आंखों आवे जलधार।। २ ।।

यह वही पिया हैं और वही चर्चा है। उसी तरह सोए हुए को जगाते हैं। हमारे वास्ते वह अपनी आंखों में आसूं भर-भर कर रोते हैं।

सोई नसीहत देत सजन, खैंचत तरफ वतन।
पिउ पुकारें बेर दूसरी, अब क्यों होंए पीछे आपन।। ३ ।।

धनी वतन (धाम) की तरफ चलने के लिए वैसा ही सिखापन देते हैं। दूसरी बार आकर पुकार कर रहे हैं। अब हम पीछे क्यों रहें?

सोई कूकां करे पेहेले की, सो क्यों न समझो बात।
न तो दिन उजाले खरे दो पोहोरे, अब हो जासी रात।। ४ ।।

धनी पहले की तरह से ही जोश में चर्चा करते हैं। इस बात को तुम क्यों नहीं समझते? अगर अब भी नहीं समझे तो दिन के दोपहर जैसे उजाले में रात हो जाएगी।

फेर पटकोगे हाथड़े, और छाती देओगे घाउ।
चल जासी पिउ हाथ से, फेर न पाओगे दाउ।। ५ ।।

फिर हाथ पटकोगे और छाती पीटोगे जब पिया चले जाएंगे। फिर ऐसा समय नहीं पाओगे।

विलख विलख कहे वचन, रोए रोए किए बयान।
प्रेम करे अति प्रीतसों, पर साथ को सुध न सान।। ६ ।।

धनी ने बिलख-बिलखकर, रो-रोकर वाणी से समझाया और रो-रोकर घर की बातें बताईं। सुन्दरसाथ से बड़ा प्रेम भी किया, फिर भी साथ को सुध नहीं आई।

माया देखी बीच पैठ के, पिउ के उजाले तुम।
विध विध खेल देखावने, पिउ ल्याए तारतम।। ७ ।।

तुमने प्रीतम के ज्ञान के उजाले में माया को माया के संसार में बैठकर देखा। तुमको तरह-तरह से खेल दिखाने के लिए धनी तारतम ज्ञान लाए हैं।

Nijanand App

ए जो मांगी तुम माया, सो देखे तीन संसार।
अब साथ पिउ संग चलिए, ज्यों पिउ पावें करार।। ८ ।।

तुमने परमधाम में माया का खेल मांगा था। वह तुमने तीन लीलाओं में देखा। अब हे साथजी ! धनी के साथ चलें, जिससे धनी को सुख मिले।

पिउ पांच बेर हम वास्ते, सागर में डारया आप।
सो नजरों न आवे प्रेम बिना, बिना मेहेर या मिलाप।। ९ ।।

धनी ने हमारे लिए माया में पांच बार तन धारण किया है। वह प्रेम की नजर के बिना नहीं दिखेगा और न ही उनसे मिलाप होगा और न उनकी मेहर होगी।

भले देखो तुम आकार को, पर देखो अंदर का तेज।
धनीधाम के साथसों, कैसा करत हैं हेज।। १० ।।

भले ही तुम उनके शरीर को देखो। पर उनके अन्दर ज्ञान का प्रकाश भी देखो। यह भी देखो कि वह सुन्दरसाथ से कितना प्यार करते हैं।

अब कैसी विध करूं तुमसों, कछू ना पेहेचाने सजन।
सोर हुआ एता तुम पर, क्यों आवे नींद आंखन।। ११ ।।

अब तुम्हारे साथ कौन सा बर्ताव (सुलूक) करूं? तुमने धनी को नहीं पहचाना। तुम्हारे सिर पर इतनी ज्ञान की चर्चा हुई और अभी भी तुम्हारी आंखें नहीं खुलीं।

ना गई नींद अंदर की, क्यों एते बान सहे।
जाग चलो संग पिउ के, पीछे करोगे कहा रहे।। १२ ।।

तुम्हारे अन्दर के संशय अभी तक नहीं मिटे। तुमने इतने खण्डनी के वचनों को सहन कर लिया। अब जागृत होकर पिया के साथ चलो। पीछे यहां रहकर क्या करोगे?

तुमें धनी बिना कौन दूसरा, ए उड़ावे अंधेर।
तुम देखो साथ विचार के, जिन भूलो इन बेर।। १३ ।।

हे सुन्दरसाथजी ! इन धनी के बिना तुम्हारा अज्ञान कौन मिटाएगा? यह तुम सोचकर देखो। अब भूलो मत।

एक बेर भूले आदमी, ताए और बेर आवे बुध।
ए चोटां सहियां सिर एतियां, तो भी ना हुई तुमें सुध।। १४ ।।

एक बार आदमी भूल करता है तो दूसरी बार वह सावचेत हो जाता है। तुमने खण्डनी की चोट इतनी सह ली, फिर भी तुम्हें सुध नहीं आई।

अब ढील ना कीजे एक पल, इत नाहीं बैठनका लाग।
एक पलक के कोटमें हिसे, हो जासी बड़ा अभाग।। १५ ।।

अब एक पल की भी ढील मत करो। यहां बैठने का समय नहीं है। एक पल के करोड़वें हिस्से में विनाश हो जाएगा।

Nijanand App

कहूं गुसा कर वचन, सो ना वले मेरी जुबांए।
पर इत नफा क्या होएसी, तुम रहे माया लगाए।। १६ ।।

गुस्सा करके कहूं, यह अच्छा नहीं लगता। पर तुम यहां माया में रहकर लाभ क्या लोगे?

टेढ़े सुकन तुमे कहूं, सो काट करूं जुबां दूर।
पर इन मायाका तुमको, कहा होसी रोसन नूर।। १७ ।।

हे साथजी ! मैं तुम्हें लाड़ से समझाता हूं तो माया तुम्हें समझने नहीं देती। इसलिए तुम्हें खण्डनी के वचन कहने पड़ते हैं। अन्यथा मेरी जबान से कठोर वचन निकलें तो उसे काटकर दूर कर दूं।

ना पेहेचाने इन उजाले, ए दोए साख पूरन।
पीछे पिउ आगे वतन में, क्यों होसी मुख रोसन।। १८ ।।

इस तारतम वाणी के उजाले में दो-दो बार धनी के आने और गवाहियां देने पर भी तुमने धनी को नहीं पहचाना तो पीछे घर (परमधाम) में मुंह ऊंचा करके कैसे देखोगे?

पेहेले नजरों देखते, गयो अवसर टूटी आस।
निकस गए जब हाथ से, तब आपन भए निरास।। १९ ।।

पहले देखते-देखते मौका हाथ से निकल गया और आशा टूट गई थी। जब धनी हाथ से चले गए थे और हम निराश हो गए थे।

ए ठौर ऐसा विखम, नास होए मिने खिन।
स्याने हो तुम साथजी, सब चतुर वचिखिन।। २० ।।

ये ठिकाना (स्थान) बड़ा कठिन है और एक क्षण में नाश होने वाला है। हे साथजी ! तुम समझदार हो, चतुर हो और प्रवीण हो।

तुम स्याने मेरे साथजी, जिन रहो विखे रस लाग।
पांउ पकड़ कहे इंद्रावती, उठ खड़े रहो जाग।। २१ ।।

हे मेरे समझदार साथजी ! इस संसार के जहरीले रसों में मन न लगाओ। श्री इन्द्रावतीजी पांव पकड़कर कहती हैं कि इसे छोड़कर खड़े हो जाओ और जाग जाओ।

॥ प्रकरण ॥ १७ ॥ चौपाई ॥ ३६२ ॥

श्री धनीजी के लागूं पाए, मेरे पिउजी फेरा सुफल हो जाए।
ज्यों पिउ ओलखाए मेरे पिउजी, सुनियो हो प्यारे मेरी विनती।। १ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि मैं धनीजी के चरणों में प्रणाम करती हूं जिससे मेरा यहां आना सफल हो जाए। पहले मैंने धनी को नहीं पहचाना था। अब पहचान हो जाए, यह मेरी विनती सुनो।

मैं पेहेले ना पेहेचाने श्री राज, मोहे आड़ी भई माया की लाज।
भवसागर की किने पाई न किनार, सो तुम सेहेजे उतारे पार।। २ ।।

पहले मुझे माया की लज्जा (शर्म) थी। मैं पहचान न सकी। इस भवसागर के किनारे (पार) को किसी ने नहीं पाया। आपने बड़ी आसानी से हमें इससे पार उतार दिया है।

Nijanand App

कहूं गुसा कर वचन, सो ना वले मेरी जुबांए।
पर इत नफा क्या होएसी, तुम रहे माया लगाए।। १६ ।।

गुस्सा करके कहूं, यह अच्छा नहीं लगता। पर तुम यहां माया में रहकर लाभ क्या लोगे?

टेढ़े सुकन तुमे कहूं, सो काट करूं जुबां दूर।
पर इन मायाका तुमको, कहा होसी रोसन नूर।। १७ ।।

हे साथजी ! मैं तुम्हें लाड़ से समझाता हूं तो माया तुम्हें समझने नहीं देती। इसलिए तुम्हें खण्डनी के वचन कहने पड़ते हैं। अन्यथा मेरी जबान से कठोर वचन निकलें तो उसे काटकर दूर कर दूं।

ना पेहेचाने इन उजाले, ए दोए साख पूरन।
पीछे पिउ आगे वतन में, क्यों होसी मुख रोसन।। १८ ।।

इस तारतम वाणी के उजाले में दो-दो बार धनी के आने और गवाहियां देने पर भी तुमने धनी को नहीं पहचाना तो पीछे घर (परमधाम) में मुंह ऊंचा करके कैसे देखोगे?

पेहेले नजरों देखते, गयो अवसर टूटी आस।
निकस गए जब हाथ से, तब आपन भए निरास।। १९ ।।

पहले देखते-देखते मौका हाथ से निकल गया और आशा टूट गई थी। जब धनी हाथ से चले गए थे और हम निराश हो गए थे।

ए ठौर ऐसा विखम, नास होए मिने खिन।
स्याने हो तुम साथजी, सब चतुर वचिखिन।। २० ।।

ये ठिकाना (स्थान) बड़ा कठिन है और एक क्षण में नाश होने वाला है। हे साथजी ! तुम समझदार हो, चतुर हो और प्रवीण हो।

तुम स्याने मेरे साथजी, जिन रहो विखे रस लाग।
पांउ पकड़ कहे इंद्रावती, उठ खड़े रहो जाग।। २१ ।।

हे मेरे समझदार साथजी ! इस संसार के जहरीले रसों में मन न लगाओ। श्री इन्द्रावतीजी पांव पकड़कर कहती हैं कि इसे छोड़कर खड़े हो जाओ और जाग जाओ।

|| प्रकरण || १७ || चौपाई || ३६२ ||

श्री धनीजी के लागूं पाए, मेरे पिउजी फेरा सुफल हो जाए।
ज्यों पिउ ओलखाए मेरे पिउजी, सुनियो हो प्यारे मेरी विनती।। १ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि मैं धनीजी के चरणों में प्रणाम करती हूं जिससे मेरा यहां आना सफल हो जाए। पहले मैंने धनी को नहीं पहचाना था। अब पहचान हो जाए, यह मेरी विनती सुनो।

मैं पेहेले ना पेहेचाने श्री राज, मोहे आड़ी भई माया की लाज।
भवसागर की किने पाई न किनार, सो तुम सेहेजे उतारे पार।। २ ।।

पहले मुझे माया की लज्जा (शर्म) थी। मैं पहचान न सकी। इस भवसागर के किनारे (पार) को किसी ने नहीं पाया। आपने बड़ी आसानी से हमें इससे पार उतार दिया है।

Nijanand App

तुम अपनी जान दया कर, धनी लेवे त्यों लई खबर।
माया गम सास्त्रों मांहें, सो त्रिगुन भी समझत नाहें।। ३ ।।

आपने अपनी अंगना जानकर ऐसे कृपा की है जैसे धनी अपनी पत्नी की खबर लेते हैं। शास्त्रों में माया के विस्तार का वर्णन है। इसको ब्रह्मा, विष्णु, महेश भी समझ नहीं पाए।

सो तारतम केहे करी रोसन, और देवाई साख सास्त्रों वचन।
हम मांग लई जो माया, सो पेहेचान के खेल देखाया।। ४ ।।

आपने कृपा करके तारतम वाणी से सब भेद जाहिर कर दिया है। सभी शास्त्रों से गवाही दे-देकर हमने जिस माया को मांगा, उसकी पहचान कराकर खेल दिखाया।

उमेद करी जो सैयन, सो इत आए करी पूरन।
तुम उमेद करते मने किए, तो भी खेल देखाए सुख दिए।। ५ ।।

ब्रह्मसृष्टियों ने धाम में जो चाहना की थी, वह यहां आकर सब पूरी कर दी। आपने तो खेल देखने के लिए मना किया था, फिर भी हमारी चाहना के अनुसार खेल दिखाकर सुख दिया।

हमको खेल देखन की लागी रढ, सो इत आए देखाई कर मन द्रढ।
तुम हमको खेल देखावन काज, हमसों आगे आए श्री राज।। ६ ।।

हमको खेल देखने की बड़ी धुन लगी थी। उन्होंने यहां आकर हमें दृढ़ता देकर खेल दिखाया। हमको खेल दिखाने के लिए हमसे पहले आप (श्री राज) पधारे।

तुम बिना लाड़ पूरन कौन करे, इन माया में दूजी बेर देह कौन धरे।
तुम मोसों गुन किए अनेक, सो चुभे मेरे हिरदे में लेख।। ७ ।।

आपके बिना हमारे लाड़ (चाहना) कौन पूरे करेगा और हमारे लिए इस माया में आपके बिना कौन दूसरी बार तन धारण कर आएगा? आपने मेरे पर बहुत कृपा की है। वह मुझे अच्छी तरह याद है।

तुम पर वार डारूं जीवसो देह, तुम किए मोसों अधिक सनेह।
मैं वारने लेऊं तुम पर, मैं सुरखरु होऊंगी क्यों कर।। ८ ।।

आपने मेरे से इतना अधिक प्यार किया कि अब मैं आप पर जीव और तन कुर्बान कर दूं। मैं बार-बार आप पर न्योछावर होती हूं, वरन् मैं आपके सामने कैसे खड़ी होऊंगी?

तुम हो हमारे धनी, तो पूरी आसा लाख गुनी।
इंद्रावती चरनों लागे, कृपा करो तो जागी जागे।। ९ ।।

आप हमारे प्रीतम हो, इसलिए आपने हमारी आशाओं को लाख गुना अधिक पूरा किया। अब श्री इन्द्रावतीजी चरणों में लगकर कहती हैं, हे धनी ! अब आप कृपा करें तो हम सब जाग जाएं।

|| प्रकरण || १८ || चौपाई || ३७१ ||

अखंड दंडवत करूं परनाम, हैड़े भीड़के भानूं हाम।
प्रेमें देऊं प्रदखिना, बेर बेर अनेक अति घना।। १ ।।

हे धनी ! मैं आपके चरणों में प्रणाम कर और आपसे चिपटकर अपनी चाहना मिटाऊं तथा अनेक बार प्रेम से आपकी परिकरमा करूं।

Nijanand App

तुम अपनी जान दया कर, धनी लेवे त्यों लई खबर।
माया गम सास्त्रों मांहें, सो त्रिगुन भी समझत नाहें।। ३ ।।

आपने अपनी अंगना जानकर ऐसे कृपा की है जैसे धनी अपनी पत्नी की खबर लेते हैं। शास्त्रों में माया के विस्तार का वर्णन है। इसको ब्रह्मा, विष्णु, महेश भी समझ नहीं पाए।

सो तारतम केहे करी रोसन, और देवाई साख सास्त्रों वचन।
हम मांग लई जो माया, सो पेहेचान के खेल देखाया।। ४ ।।

आपने कृपा करके तारतम वाणी से सब भेद जाहिर कर दिया है। सभी शास्त्रों से गवाही दे-देकर हमने जिस माया को मांगा, उसकी पहचान कराकर खेल दिखाया।

उमेद करी जो सैयन, सो इत आए करी पूरन।
तुम उमेद करते मने किए, तो भी खेल देखाए सुख दिए।। ५ ।।

ब्रह्मसृष्टियों ने धाम में जो चाहना की थी, वह यहां आकर सब पूरी कर दी। आपने तो खेल देखने के लिए मना किया था, फिर भी हमारी चाहना के अनुसार खेल दिखाकर सुख दिया।

हमको खेल देखन की लागी रढ, सो इत आए देखाई कर मन द्रढ।
तुम हमको खेल देखावन काज, हमसों आगे आए श्री राज।। ६ ।।

हमको खेल देखने की बड़ी धुन लगी थी। उन्होंने यहां आकर हमें दृढ़ता देकर खेल दिखाया। हमको खेल दिखाने के लिए हमसे पहले आप (श्री राज) पधारे।

तुम बिना लाड़ पूरन कौन करे, इन माया में दूजी बेर देह कौन धरे।
तुम मोसों गुन किए अनेक, सो चुभे मेरे हिरदे में लेख।। ७ ।।

आपके बिना हमारे लाड़ (चाहना) कौन पूरे करेगा और हमारे लिए इस माया में आपके बिना कौन दूसरी बार तन धारण कर आएगा? आपने मेरे पर बहुत कृपा की है। वह मुझे अच्छी तरह याद है।

तुम पर वार डारूं जीवसो देह, तुम किए मोसों अधिक सनेह।
मैं वारने लेऊं तुम पर, मैं सुरखरु होऊंगी क्यों कर।। ८ ।।

आपने मेरे से इतना अधिक प्यार किया कि अब मैं आप पर जीव और तन कुर्बान कर दूं। मैं बार-बार आप पर न्योछावर होती हूं, वरन् मैं आपके सामने कैसे खड़ी होऊंगी?

तुम हो हमारे धनी, तो पूरी आसा लाख गुनी।
इंद्रावती चरनों लागे, कृपा करो तो जागी जागे।। ९ ।।

आप हमारे प्रीतम हो, इसलिए आपने हमारी आशाओं को लाख गुना अधिक पूरा किया। अब श्री इन्द्रावतीजी चरणों में लगकर कहती हैं, हे धनी ! अब आप कृपा करें तो हम सब जाग जाएं।

।। प्रकरण ।। १८ ।। चौपाई ।। ३७१ ।।

अखंड दंडवत करूं परनाम, हैड़े भीड़के भानूं हाम।
प्रेमें देऊं प्रदखिना, बेर बेर अनेक अति घना।। १ ।।

हे धनी ! मैं आपके चरणों में प्रणाम कर और आपसे चिपटकर अपनी चाहना मिटाऊं तथा अनेक बार प्रेम से आपकी परिकरमा करूं।

Nijanand App

बल बल जाऊं मुखारके बिंद, वरनन करूं सरूप सनंध।
वारने जाऊं नैनों पर, देखत हो सीतल द्रष्ट कर।। २ ।।

आपके स्वरूप पर मैं बलिहारी जाती हूं, आपके स्वरूप की शोभा का वर्णन करती हूं। आपके नैनों पर मैं बलिहारी जाती हूं, जिनसे आप नजर-ए-करम करते हैं।

वारने ऊपर लेऊं वारने, सुख दिए मोको अति घने।
बेर बेर मैं लागूं पाए, सेवा करूं हिरदे चित ल्याए।। ३ ।।

आपने मुझे अत्यधिक सुख दिए हैं, इसीलिए आप पर बलिहारी जाती हूं। बार-बार आपके चरणों में लगकर बड़ी सावचेत होकर आपकी सेवा करूं।

वार फेर डारूं मेरी देह, इंद्रावती कहे अधिक सनेह।
बोहोत अस्तुत मैं जाए ना कही, अपने घर की बात जो भई।। ४ ।।

श्री इन्द्रावतीजी बड़े प्रेम से कहती हैं कि मैं अपने तन मन को आप पर न्योछावर करती हूं। मुझे अधिक स्तुति का ढंग नहीं आता, क्योंकि यह तो पति-पत्नी का नाता है।

अपनी बड़ाई आप मुख होए, ताको मूरख कहे सब कोए।
पर जैसी बात तैसा बरनन, करसी विचार चतुर अति घन।। ५ ।।

यदि कोई अपनी बड़ाई स्वयं करता है तो उसे लोग मूर्ख कहते हैं, परन्तु जैसे का तैसे वर्णन करना चतुर और विचारशील व्यक्तियों से हो सकता है।

वचन धनी के कहे परवान, प्रगट लीला होसी निरवान।
चौदे भवन का कहिए सूर, रास प्रकास उदे हुआ नूर।। ६ ।।

धनी के कहे वचनों के अनुसार अब निश्चित ही यह लीला जाहिर होगी। अब जो रास और प्रकास (प्रकाश) का ज्ञान आ गया है, यह चौदह लोकों को उजाला देगा।

चौदे भवन में जोत न समाए, ए नूर किरना किने पकड़ी न जाए।
सब्दातीत ब्रह्मांड किए प्रकास, देखसी साथ एह उजास।। ७ ।।

चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड में इस तारतम वाणी के ज्ञान के प्रकाश को कोई रोक न सकेगा। इस वाणी ने अक्षर और अक्षरातीत को जाहिर कर दिया है। उस उजाले को सुन्दरसाथ देखेगा।

प्रकास के वचन निरधार, वचन सब करसी विचार।
आगे बड़ो होसी विस्तार, अखंड सब होसी संसार।। ८ ।।

प्रकाश की वाणी ऐसी सत (सत्य) है कि इसको सब कोई देखेगा। आगे चलकर इसका बड़ा भारी विस्तार होगा, जिससे सारा संसार अखण्ड होगा।

इन लीला को करसी विचार, क्या करसी ताको संसार।
प्रगट नीउ बांधी है एह, बड़ी इमारत होसी जेह।। ९ ।।

इस लीला को जो विचार करेगा, उसका संसार कुछ बिगाड़ न पाएगा। इस वाणी ने बड़ी पक्की नींव बांधी है, जिस पर बड़ी भारी इमारत बनेगी, अर्थात् अभी तो थोड़ी किरणें ही निकली हैं। इस तेज से ही ब्रह्माण्ड अखण्ड होगा।

Nijanand App

सुनो वचन ब्रह्मसृष्टी जाग, इंद्रावती कहे चरनों लाग।
ए बानी मेरे धनिऐं कही, फेर फेर तुमको कृपा भई।। १० ।।

सुन्दरसाथजी ! श्री इन्द्रावतीजी आपके चरणों में लगकर कहती हैं कि आप जागकर इस वाणी को सुनो और ध्यान में रखो। यह वाणी मेरे धनी ने कही है और बार-बार आप पर कृपा की है।

ऐसा पकव प्रवीन ना कछू हूं, तो सिखापन तुमको क्यों देऊं।
मैं मन में यों जान्या सही, जीव अपना समझाऊं रही।। ११ ।।

मैं कोई ऐसी विद्वान नहीं हूं जो आपको सिखापन (शिक्षा) दूं। मैंने यह समझा कि मैं अपने ही जीव को समझा रही हूं।

पर साथ ऊपर दया अति घनी, फेर फेर कृपा करत हैं धनी।
तो वचन तुमको कहे जांए, ना तो चींटी मुख कुम्हड़ा न समाए।। १२ ।।

लेकिन सुन्दरसाथ पर श्री राजजी की अति कृपा है और इसीलिए बार-बार कृपा करते हैं, नहीं तो चींटी के मुख में कद्दू (पेठा) नहीं जा सकता है। धनी के वचन भारी हैं और जीव चींटी के समान है।

जिन तुम वचन विसारो एक, कारन साथ कहे विसेक।
वचन कहे हैं कीजो त्यों, आपन पेहेले पांउ भरे हैं ज्यों।। १३ ।।

हे सुन्दरसाथजी! आपके लिए ही श्री राजजी महाराज ने यह विशेषकर वाणी कही है। इसके एक वचन को भी मत भूलना। हमने जिस रास्ते पर पहले चलकर बताया (बृज से रास में जाते समय) था, उसी प्रकार अब भी राजजी के वचनों के अनुसार चलना।

फेर अवसर आयो है हाथ, चरने लाग केहेती हूं साथ।
अब चरने लागूं धनी चितधरी, तुम खबर मेरी भली बिध करी।। १४ ।।

हे साथजी ! आपके चरणों लगकर कहती हूं कि यह दुबारा मौका अपने हाथ आया है। हे धनी ! मैं आपके चरणों में आपका स्वरूप लेकर प्रणाम करती हूं। आपने हमारी अच्छी खबर ली।

ए माया बोहोत जोरावर हती, दूर करी मेरे प्राणपति।
मायाको तजारक भई, तिन कारन ए विनती कही।। १५ ।।

यह माया बहुत ताकतवर थी, जिसको मेरे प्राणनाथ ने ही दूर किया तथा माया को ठोकर मारी। इस कारण धनी से यह विनती की है।

ए विनती सुनियो तुम सार, माया दुख पायो निरधार।
ए माया बातें हैं अति घनी, मोहे मुखथें काढ़ी मेरे धनी।। १६ ।।

यह विनती हमारी बातों का सार है कि हमने माया में कितने दुःख उठाए हैं। इस माया की बातें तो बहुत अधिक हैं। मुझे इसके मुख से मेरे धनी ने ही निकाला है।

तुमारे गुन की कहा कहूं बात, तुम लाड़ पूरे करके अपन्यात।
पिउ ने अपनी जानी परवान, इंद्रावती चरने राखी निरवान।। १७ ।।

हे धनी ! आपके एहसानों का कहां तक वर्णन करूं? आपने अपनी जानकर मेरे सारे लाड़ (इच्छाएं) पूरे किए हैं। श्री इन्द्रावतीजी को निश्चित ही आपने अपना जानकर चरणों में रखा है।

Nijanand App

श्री सुंदरबाई के चरन पसाए, मूल वचन हिरदे चढ़ आए।
चरन फले निध आई एह, अब ना छोडूं चित चरन सनेह।।१८।।

श्री श्यामा महारानीजी के चरणों की कृपा से परमधाम के मूल वचन याद आ गए हैं। इन चरणों की कृपा से मुझे यह न्यामत मिली है। अब किसी तरह से भी राजजी के चरणों को नहीं छोडूंगी।

चरन तले कियो निवास, इंद्रावती गावे प्रकास।
भान के भरम कियो उजास, पावे फल कारन विश्वास।।१९।।

श्री इन्द्रावतीजी श्री राजजी के चरणों का सहारा लेकर प्रकाश की वाणी को जाहिर करती हैं तथा संशय मिटाकर ज्ञान का उजाला करती हैं। वाणी पर जिनका जैसा विश्वास है, उनको वैसा ही फल मिलता है।

विश्वास करके दौड़े जे, तारतम को फल सोई ले।
तिन कारन करों प्रकास, ब्रह्मसृष्टी पूरन करूं आस।।२०।।

जो इस वाणी पर विश्वास करके चलता है, तारतम का फल उसी को ही मिलता है। इस वास्ते वाणी को जाहिर कर ब्रह्मसृष्टि की इच्छाओं को पूर्ण करूंगी।

इंद्रावती धनी के पास, रास को कियो प्रकास।
धनिएं दई मोहे जाग्रत बुध, तो प्रकास करूं तारतमकी निध।।२१।।

श्री इन्द्रावतीजी ने धनी की कृपा से ही अखण्ड रास को जाहिर किया है। इन्हें धनी की कृपा से जागृत बुद्धि मिली है। अब उसके प्रकाश से तारतम वाणी को जाहिर करती हूं!

।। प्रकरण ।। १९ ।। चौपाई ।। ३९२ ।।

गुणों को धनी की तरफ लगाना

अब करूं अस्तुत आधार, वल्लभ सुनो विनती।
एते दिन मैं ना पेहेचाने, मोहे लेहेर माया जोर हुती।।१।।

हे मेरे धनी ! आपकी वन्दना करती हूं। आप मेरी विनती सुनें। आज तक मैंने आपको पहचाना नहीं था। मैं माया में मग्न थी।

भानूं भरम मोह जो मूलको, लेऊं सो जीव जगाए।
करूं अस्तुत पियाकी प्रगट, देऊं सो पट उड़ाए।।२।।

मैं मूल से ही मोह के संशय को मिटाती हूं और जीव को जगाती हूं। सामने पड़े मोह के परदे को पिया की वन्दना कर उड़ा देती हूं।

सोभा पिउ की सब्दातीत, सो आवत नहीं जुबांए।
जोगवाई जेती इन अंग की, सो सब मूल प्रकृती मांहें।।३।।

पिया की शोभा बेहद की है, जिसका जबान से वर्णन होता नहीं है। मेरे तन की जितनी भी शक्तियां हैं, वह सब माया की ही हैं।

Nijanand App

श्री सुंदरबाई के चरन पसाए, मूल वचन हिरदे चढ़ आए।
चरन फले निध आई एह, अब ना छोड़ूं चित चरन सनेह।। १८ ।।

श्री श्यामा महारानीजी के चरणों की कृपा से परमधाम के मूल वचन याद आ गए हैं। इन चरणों की कृपा से मुझे यह न्यामत मिली है। अब किसी तरह से भी राजजी के चरणों को नहीं छोड़ूंगी।

चरन तले कियो निवास, इंद्रावती गावे प्रकास।
भान के भरम कियो उजास, पावे फल कारन विश्वास।। १९ ।।

श्री इन्द्रावतीजी श्री राजजी के चरणों का सहारा लेकर प्रकाश की वाणी को जाहिर करती हैं तथा संशय मिटाकर ज्ञान का उजाला करती हैं। वाणी पर जिनका जैसा विश्वास है, उनको वैसा ही फल मिलता है।

विश्वास करके दौड़े जे, तारतम को फल सोई ले।
तिन कारन करों प्रकास, ब्रह्मसृष्टी पूरन करूं आस।। २० ।।

जो इस वाणी पर विश्वास करके चलता है, तारतम का फल उसी को ही मिलता है। इस वास्ते वाणी को जाहिर कर ब्रह्मसृष्टि की इच्छाओं को पूर्ण करूंगी।

इंद्रावती धनी के पास, रास को कियो प्रकास।
धनिऐं दई मोहे जाग्रत बुध, तो प्रकास करूं तारतमकी निध।।२१।।

श्री इन्द्रावतीजी ने धनी की कृपा से ही अखण्ड रास को जाहिर किया है। इन्हें धनी की कृपा से जागृत बुद्धि मिली है। अब उसके प्रकाश से तारतम वाणी को जाहिर करती हूं!

|| प्रकरण || १९ || चौपाई || ३९२ ||

गुणों को धनी की तरफ लगाना

अब करूं अस्तुत आधार, वल्लभ सुनो विनती।
एते दिन मैं ना पेहेचाने, मोहे लेहेर माया जोर हुती।। १ ।।

हे मेरे धनी ! आपकी वन्दना करती हूं। आप मेरी विनती सुनें। आज तक मैंने आपको पहचाना नहीं था। मैं माया में मग्न थी।

भानूं भरम मोह जो मूलको, लेऊं सो जीव जगाए।
करूं अस्तुत पियाकी प्रगट, देऊं सो पट उड़ाए।। २ ।।

मैं मूल से ही मोह के संशय को मिटाती हूं और जीव को जगाती हूं। सामने पड़े मोह के परदे को पिया की वन्दना कर उड़ा देती हूं।

सोभा पिउ की सब्दातीत, सो आवत नहीं जुबांए।
जोगवाई जेती इन अंग की, सो सब मूल प्रकृती मांहें।। ३ ।।

पिया की शोभा बेहद की है, जिसका जबान से वर्णन होता नहीं है। मेरे तन की जितनी भी शक्तियां हैं, वह सब माया की ही हैं।

Nijanand App

अब किन बिध करूं मैं अस्तुत, मेरे जीव को ना कछू बल।
जीव जोगवाई सब अस्थिरकी, क्यों बरनों सोभा नेहेचल।।४।।

मेरे जीव में कोई शक्ति नहीं है। मैं कैसे आपकी वन्दना करूं? मेरे शरीर की सब शक्ति नाशवान है। इसमें मैं अखण्ड की शोभा का वर्णन कैसे कर सकती हूं?

पेहेले जीवों करी अस्तुत, भली भांत भगवान।
पंडिताई चतुराई महाप्रवीनी, किव कर हिरदे आन।।५।।

पहले कुछ जीवों ने अपनी पण्डिताई, चतुराई और विद्वता से कविता बनाकर विष्णु भगवान की वन्दना की।

ए किव प्रवाही जब देखिए, तामे कोई कोई भारी वचन।
ए तो देवें सोभा अचेत में, पर मोहे सालत है मन।।६।।

प्रवाहियों की कविताओं को जब देखते हैं तो उनके अन्दर भी कोई-कोई महान् शब्द मिलते हैं। इन प्रवाहियों को यह सुध नहीं है कि यह वचन तो केवल हमारे धनी अक्षरातीत के लिए ही कहे जाते हैं। वह उन्हें अपने भगवानों पर घटाते हैं। यह बात मेरे मन में चुभती है।

बेसुध भए देवे एती सोभा, तो कहा करे कर पेहेचान।
जो मुख वचन एक कहों प्रवाही, तो सुन्या नहीं निरवान।।७।।

यह प्रवाही लोग बेसुधी में सच्चिदानन्द शब्द का सम्बोधन विष्णु भगवान को कर देते हैं। यदि उनको पारब्रह्म की पहचान हो जाए तो कौन से शब्द उपयोग में लाएंगे। यदि मैं भी प्रवाहियों की तरह अपने धनी की शोभा के लिए वचन कहूं तो फिर हमने धनी की वाणी को समझा ही क्या? हममें और उनमें अन्तर ही क्या रहा? हम भवसागर से पार कैसे हों? भगवान शब्द बैकुण्ठ तक है और धाम धनी, सच्चिदानन्द केवल हमारे राजजी महाराज के लिए है।

न कछू सुनिया वेद पुरान, न कछू किव चातुरी।
एक दोए वचन सुने मुख धनी के, तिनसे सुध सब परी।।८।।

मैंने न तो वेद पुराणों को सुना है और न ही कविता बनाने की चतुराई को ही जाना है। धनी के दो एक वचनों से ही मुझे क्षर, अक्षर और अक्षरातीत का सब ज्ञान हो गया है।

सो भी न सुन्या चित देयके, न तो जोर गया पूर चल।
पर जो रे गुन आड़े माया के, ताथें ले न सकी बूंद जल।।९।।

धनी तो दरिया के पूर (प्रवाह) के समान ज्ञान देते थे, पर मैंने चित्त देकर सुना ही नहीं। मेरे माया के गुण, अंग, इन्द्रिय आड़े आ गए (अहंकार), इसलिए मैं उनके ज्ञान में से कुछ न ले सकी।

अब तिन गुन को कहा दीजे उपमा, धिक धिक पड़ो ए बुध।
आगे तूं सिरदार सबन के, तें क्यों न लई ए निध।।१०।।

धनी के ऐसे बेशुमार (अपार) ज्ञान के गुणों को यहां बैठकर किन शब्दों से उपमा दें? हे बुद्धि ! तुझे धिक्कार है। तू तो सब से आगे थी। तूने इस ज्ञान रूपी न्यामत को क्यों नहीं लिया?

Nijanand App

अब जागी बुध कहूं मैं तोको, तूं है बुध को अवतार।
कर निरने तूं माया ब्रह्म को, खोल तू पार द्वार।। ११ ।।

हे बुद्धि ! अब तू जागृत हो गई है। तू ही बुध का अवतार है। तू ही माया और ब्रह्म के अलग-अलग भेद बताकर पार के दरवाजे खोल दे।

और न कोई बुध मुझ जैसी, मैं ही बुध अवतार।
धाम धनी ग्रहूं इन विध, और अखंड करूं संसार।। १२ ।।

अब बुद्धि कहती है कि अब तक कोई भी मेरी जैसी बुद्धि नहीं है। मैं ही बुध का अवतार हूं। धाम धनी को इस तरह ग्रहण करूंगी कि सारे संसार को अखण्ड कर दूंगी।

ए बुध रही हमारे आसरे, जो सब थें बड़ा अवतार।
बुधजी बिना माया ब्रह्म को, कोई कर न सके निरवार।। १३ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि जागृत बुद्धि (असराफील, फरिश्ता) हमारी शरण में आने से ही सबसे बड़ा बुध अवतार के रूप में जाहिर हुई। इस जागृत बुद्धि (परा शक्ति) के बिना माया और ब्रह्म को जुदा जुदा करके कोई नहीं दिखा सका।

सुन्य निराकार निरंजन, तिनके पार के पार।
बानी गाऊं तित पोहोंच के, इन चरनों बुध बलिहार।। १४ ।।

धाम धनी के चरणों पर मैं इस जागृत बुद्धि से बलिहारी जाती हूं। उनकी कृपा से शून्य, निराकार, निरंजन के पार बेहद योगमाया का ब्रह्माण्ड तथा उसके पार अक्षर-अक्षरातीत के धाम में पहुंच कर वहां का वर्णन करूंगी।

जो नहीं विष्णु महाविष्णु को, बुधजी पोहोंचे तित।
मेरे हिरदे चरन धनी के, इने ए फल पाया इत।। १५ ।।

जिस परमधाम में विष्णु, महाविष्णु भी नहीं पहुंचते, वहां जागृत बुद्धि पहुंची। श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि मेरे हृदय में धनी विराजमान हैं। हृदय की जागृत बुद्धि से मैंने धनी के स्वरूप की पहचान की। जिनकी कृपा से ही परमधाम के अन्दर तक का वर्णन किया। (मारफत सागर प्रकरण ।। ५ ।। चौपाई ।। २३ ।।) में ऐसा वर्णन है।

ए सार पाए सुख उपजे, धंन धंन ए बुध अवतार।
अबलों किन ब्रह्मांड में, किन खोल्या न ए दरबार।। १६ ।।

परमधाम के अन्दर की लीला का ज्ञान मिला तो बहुत सुख हुआ। जागृत बुद्धि का अवतार धन्य-धन्य धन्यवाद है। आज तक इस ब्रह्माण्ड में अक्षरातीत के धाम की पहचान किसी ने नहीं दी।

लीला इन अवतार की, करसी सब अखंड।
धंन धंन इन अवतार की, वानी गासी सब ब्रह्मांड।। १७ ।।

अब यही बुध अवतार (असराफील) सारे ब्रह्माण्ड को अखण्ड करेगा। परमधाम की वाणी सारे ब्रह्माण्ड के लोग अखण्ड होने पर गाएंगे। इसलिए यह बुध अवतार धन्य है।

Nijanand App

अब कहूं तोको श्रवना, तोको धनिए कहे वचन।
क्यों न लई बानी वचिखिन, फिट फिट भूंडे करन।। १८ ।।

हे मेरे कानो ! मैं तुमको कहती हूं। धनी ने तुम्हें तरह-तरह के वचन कहे, परन्तु तुमने इस अद्भुत वाणी को क्यों नहीं ग्रहण किया? हे पापी कानो ! तुमको धिक्कार है।

मेरे तो मुदा तुम ऊपर, लेना तुमारे जोर।
धनिएं तो धन बोहोतक दिया, पर तें लिया न हरामखोर।। १९ ।।

हे मेरे कानो ! मेरा तो कुल मुद्दा (भरोसा) तुम्हारे ऊपर ही था और ज्ञान हमें तुम्हारी ताकत से ही मिलना था। धाम धनी ने तो बहुत धन (वाणी सुनाई) दिया पर तुमने हरामखोरी की और वाणी सुनी नहीं।

अब अपना तूं संभार श्रवना, हो वचिखिन वीर।
वानी जो वल्लभ की, सो लीजो द्रढ़ कर धीर।। २० ।।

हे कान ! तू अपने आपको सम्भाल और चतुर, बुद्धिमान बन तथा प्रीतम की वाणी को दृढ़ता के साथ सुनकर ग्रहण कर।

श्रवना कहे सुने मैं नीके, विध विध के वचन।
पूरी पिउ ने आस हमारी, उपज्यो आनन्द घन।। २१ ।।

अब कान उत्तर देते हैं कि मैंने धनी की वाणी के तरह-तरह के वचन अच्छी तरह से सुने हैं। प्रीतम ने हमारी चाहना को पूर्ण किया है और मुझे बड़ा आनन्द मिला है।

अब वचन लेऊं सब सार के, भी यों कहे श्रवन।
इन बिध बानी ग्रहूं मैं प्यारी, ज्यों सब कोई कहे धंन धंन।। २२ ।।

कान यह भी कहते हैं कि अब हम सच्चे सार वाले (परमधाम वाले) वचनों को ही ग्रहण करेंगे। इस तरह से प्यारी वाणी को ग्रहण करेंगे कि सभी हमें धन्य-धन्य कहें।

बेसुध नींद कहूं मैं तोको, तूं निठुर नीच निरधार।
हुई तूं सब गुन के आड़े, ना लेने दई निध आधार।। २३ ।।

हे मूर्ख नींद ! मैं तुझको कहती हूं। तू इतनी कठोर और नीच क्यों हुई? तू मेरे सब गुणों के आड़े परदा लगाकर बैठ गई और धनी की अखण्ड वाणी को नहीं लेने दिया।

तूं तो माया रूप पापनी, तें डबोई ले कर बाथ।
तें श्रवना को सुनने ना दिया, आलस जम्हाई तेरे साथ।। २४ ।।

हे नींद ! तू तो निश्चित ही माया का रूप है, पापिनी है। तूने मुझे लिपटाकर डुबा दिया। आलस्य और जम्हाई (उबासी) तेरे साथी हैं। इन्होंने कानों को सुनने नहीं दिया।

अनेक अंधेर दई तें जीव को, ज्यों मीन बांधे मांहें जाल।
जिन नैनों निध निरखूं निरमल, तिन नैनों आड़ी भई पाल।। २५ ।।

हे नींद ! तूने जीव को ऐसे बन्धन में बांध रखा है जैसे मछली जाल में बंध जाती है। जिन आंखों से मुझे धनी के दर्शन मिलने थे, उनके आगे तूने पलकों का परदा डाल दिया।

Nijanand App

फिट फिट भूंडी दुष्ट पापनी, तोको दई अनेक धिकार।
पेहेले अवसर गमाईया, अब नीके निरखो भरतार।। २६ ।।

हे दुष्ट पापिनी नींद ! तुझे अनेक प्रकार से धिक्कार है। पहले भी तूने अवसर खो दिया। अब अच्छी तरह अपने प्रीतम को देख ले (पहचान कर ले)।

तूं करत मृतक समान, ऐसी निपट निखर।
अब तूं आओ आड़ी माया के, ज्यों निरखूं धनी निज घर।। २७ ।।

हे नींद ! तू जीव को मुर्दे के समान कर देती है। तू बिल्कुल ढीठ है। अब तू माया के आड़े आ जिससे मैं धनी और परमधाम को देख सकूं।

नींद कहे आतम जब जागी, तब क्यों रह्यो मैं जाए।
नींद कहे मैं जात हों, लागूं तुमारे पाए।। २८ ।।

अब नींद कहती है कि जब आत्मा जागृत हो जाती है तो मैं किसी तरह से नहीं रह सकती। अब मैं तुम्हारे चरण छू कर जा रही हूं।

अब आई तूं अरुचड़ी, जब मिले मोहे श्री राज।
ऐसी अंधी अकरमन, तूं सरजी किस काज।। २९ ।।

हे अरुचड़ी (अनिच्छा)! जब मुझे श्री धाम धनी मिले थे, तू अन्धी बदनसीब क्यों बन गई? तू किस काम के लिए पैदा हुई है?

फिट फिट भूंडी तें भुलाई, अब कर कछू बल।
आतम दृष्ट जुड़ी परआतम, हो माया मांहें नेहेचल।। ३० ।।

हे अनिच्छा ! पापिनी, तुझे धिक्कार है। तूने निश्चित ही मुझे भुला दिया। अब अपनी ताकत लगा। अब मेरी आत्मा परआतम से जुड़ गई है। तू माया में जाकर, अपना घर बना (अखण्ड होकर वहीं रहना)।

अरुचड़ी कहे मैं बलवंती, मोको न जाने कोए।
छानी होए के बैठूं जीव में, भानूं सो साजा न होए।। ३१ ।।

अब अरुचड़ी (अनिच्छा) कहती है कि मैं इतनी बलवान हूं कि मेरी ताकत को कोई नहीं जानता। मैं जीव के अन्दर जब छिपकर बैठ जाती हूं तो उसका नाश हो जाता है और कुछ भी अच्छा नहीं लगता।

धनी अपना जब आप संभारे, तब चोरी करे क्यों चोर।
अब उलटाए करूं मैं सीधा, बैठों माया में जोर।। ३२ ।।

अरुचड़ी (अनिच्छा) कहती है कि जब तन का मालिक जीव सम्भल जाता है तो चोर चोरी नहीं कर सकता (कोई भी अंग उसको धनी से मिलने में आड़े नहीं आ सकता)। अब जीव को उलटाकर सीधे रास्ते में लगाकर मैं माया में चली जाती हूं।

तलबे सेवा करूं सब अंगों, मोहे मिले धनी एकांत।
तिन समें आए बैठी अंग में, फिट फिट भूंडी स्वांत।। ३३ ।।

हे पापी स्वांत (मौन)! तुझे धिक्कार है। तू उस समय मेरे तन में आकर बैठ गयी जब मुझे अकेले में धनी मिले थे। मैं अपने सब अंगों से बड़ी चाह से धनी की सेवा करना चाहती थी।

Nijanand App

धनी मिले स्वांत न कीजे, क्यों बैठिए करार।
जाग दौड़ कीजे सब अंगों, स्वांत कीजे संसार।। ३४ ।।

जब धनी मिल जाएं तो स्वांत (मौन) होकर बैठे नहीं रहना चाहिए। उस समय जागृत होकर सब अंगों से सेवा करनी चाहिए और संसार की तरफ से मौन रहना चाहिए।

स्वांत कहे मैं तबलो थी, जोलो नींद हुती आतम।
अब मैं बैठी तरफ माया के, विलसो अपना खसम।। ३५ ।।

स्वांत (मौन) कहती है मैं तभी तक थी जब तक आत्मा नींद में सोई थी। अब मैं माया की तरफ बैठ गई हूं। तुम अपने धनी से आनन्द लो।

अब कहूं तोको लोभ लालची, फिट फिट मूरख अजान।
लोभ न लाग्या चरन धनी के, जासों पाईए घर निरवान।। ३६ ।।

हे अज्ञानी मूर्ख लालची लोभ ! तुझे धिक्कार है। अब तुझसे कहती हूं, जब मुझे धनी के चरण मिले थे, जिनसे निश्चित ही परमधाम का सुख प्राप्त होने वाला था, उस समय, हे लोभ ! तू क्यों नहीं आया?

अब जिन जाओ तरफ माया के, मेरे लोभ लालच दोऊ जोड़।
जोर पकड़ो दोऊ पाउं पिउ के, करो रात दिन दौड़।। ३७ ।।

हे लोभी लालच! अब तुम माया की तरफ मत जाओ। तुम दोनों धनी के चरणों को पकड़ लो और रात-दिन उन्हीं में मग्न रहो।

कहे लोभ लालच क्या गुनाह हमारा, जोलो जीव ना करे खबर।
अब तुम पिउ देखाया हमको, तो देखो पिउ ग्रहें द्रढ़ कर।। ३८ ।।

लोभ और लालच कहते हैं कि जब जीव ही सावचेत न हो तो हमारा क्या गुनाह है? अब तुमने हमें धनी के दर्शन करा दिए हैं, तो देखो अब हम प्रीतम के चरणों को पकड़कर रखेंगे।

भट परो तृष्णा कहूं तोको, तूं निपट निठुर निरधार।
और सबे गुन तृपत होवें, पर तो में कोई भूख भंडार।। ३९ ।।

हे तृष्णा ! तुझे आग लग जाए। तू निश्चित ही बड़ी कठोर और नीच है। सब गुण तो सन्तुष्ट हो जाते हैं पर तू तो केवल भूख का भण्डार है। कभी तृप्त नहीं होती।

अब तोको क्यों काढूं रे तृष्णा, तोसों बड़ा मोहे काम।
तृष्णा लाग तूं पूरन पिउसों, ज्यों बस करूं धनी श्रीधाम।। ४० ।।

अब हे तृष्णा ! तुझे क्यों भगाऊं? तुझसे मुझे बड़ा काम है। तू अब सच्चे धनी में लग जा जिससे धाम धनी को मैं अपने वश में कर लूं।

तृष्णा कहे मैं क्योंए न छोडूं, जो आतमाऐ देखाया आधार।
तुम जाए गुन और फिराओ, मैं छोडूं नहीं निरधार।। ४१ ।।

तृष्णा उत्तर देती है कि जब आत्मा ने आधार के दर्शन करा दिए हैं तो मैं किसी तरह भी नहीं छोड़ूंगी। तुम और गुणों को जाकर सीधा करो। मैं धनी को कभी नहीं छोड़ूंगी।

मूरख मोह कहूं मैं तोको, जब आतम धनी घर आया।
इन अवसर तूं चूक्या चंडाल, जाए बैठा मांहें माया।। ४२ ।।

हे मूर्ख मोह ! मैं तुझको कहती हूं कि जब आत्मा के धनी घर आए थे तो तू माया में जाकर बैठ गया। हे चाण्डाल मोह ! इस अवसर को तूने निश्चय ही हाथ से गंवा दिया।

Nijanand App

अब आओ तूं वालाजी में, मायासों कर बिछोह।
देखूं जोर करे तूं कैसा, सांचे सिपाही मेरे मोह।।४३।।

हे मोह ! तू अब माया को छोड़कर वालाजी में आ। तू तो मेरा सच्चा सिपाही है। देखती हूं तू कितनी ताकत लगाता है।

बात बड़ी कहे मोह मेरी, मोको जाने प्रेमी सोए।
मैं बैठत हों जित आए के, तितथें उठाए न सके कोए।।४४।।

मोह उत्तर देता है कि मेरे प्रेमी मुझे जानते हैं। मेरी बात बहुत बड़ी है। मैं जहां जाकर बैठ जाता हूं वहां से कोई उठा नहीं सकता।

जो तुम धनी देखाया मोको, होए लागूं मूरख मूढ़ अंध।
एकै विध है मेरी ऐसी, और न जानूं सनंध।।४५।।

मोह उत्तर देता है कि तुमने मुझे धनी की पहचान करा दी, तो अब मैं मूर्खों और अन्धों की तरह धनी को पकड़ रखूं, मेरा एक यही तरीका है। और तरीका मैं नहीं जानता।

हरख सोक तुम भए माया के, धिक धिक तुमको अजान।
आए धनी हरख न आया, चले सोक न आया निदान।।४६।।

हर्ष-शोक को कहा कि तुम माया के हो गए। तुम्हारी इस नालायकी पर धिक्कार है। धनी आए तो खुशी होनी चाहिए थी जो नहीं हुई। उनके जाने पर दु:ख होना चाहिए था वह भी नहीं हुआ।

हरख सोक कहे हम निठुर, भए सो अंध अभागी।
धनी बिगर करे कहा हम, जोलों जीव न कहे जागी।।४७।।

हर्ष और शोक उत्तर देते हैं, हम दोनों बड़े कठोर, अन्धे और अभागे हो गए, किन्तु जब तक जीव, जो मालिक है, नहीं जागता तब तक उसके बिना हम क्या करें?

अब तुम आओ नेहेचल सुख में, जिन भूलो अवसर।
माया में लाहा लेऊं धनी का, हरख ले जागो घर।।४८।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि हे हर्ष, शोक ! अब तुम अखण्ड सुख में आ जाओ। यह समय हाथ से मत जाने दो। मैं धनी से मिलने का लाहा (लाभ) और हर्ष के साथ परमधाम में जागृत होऊंगी।

हरख कहे मैं क्या करों, जो जीव को नहीं खबर।
सोक कहे न पेहेचान पिउ की, तो बिछुरे जाने क्योंकर।।४९।।

हर्ष कहता है कि जीव को ही खबर नहीं है, सावचेत (सावधान) नहीं है तो मैं क्या करूं? शोक उत्तर देता है कि जब पिया की पहचान ही नहीं है तो मैं कैसे जानूं कि वह बिछुड़ गए?

हरख सोक कहे हम बलिऐ, दोऊ जोधा बड़े जोरावर।
अब पेहेचान करी तुम पिउ की, अब क्योंऐ न भूलों अवसर।।५०।।

हर्ष और शोक दोनों मिलकर बड़े बलवान योद्धा हैं। अब तुमने प्रीतम की पहचान कर ली है, अब हम समय नहीं गंवाएंगे।

फिट फिट जोधा जोरावर तुमको, मद मत्सर अहंकार।
तुम अंतराय करी धनीसों, दौड़ करी संसार।।५१।।

हे मद, मत्सर और अहंकार ! तुम बड़े ताकतवर हो, फिर भी तुम्हें धिक्कार है। तुम धनी से विमुख होकर माया की तरफ भागे।

Nijanand App

तुम तीनों जोधा भए क्यों उलटे, भए माया के दास।
जब जीवनजीं मिले जीवको, तब क्यों न कियो उलास।। ५२ ।।

हे मद, मत्सर, अहंकार ! तुम तीनों ही योद्धा माया के दास हो गए। जीव के जीवन, धनी मिले थे तो तुम्हें उमंग क्यों नहीं आई ?

अब तुम संगी हूजो मेरे, धनिऐं कियो मोसों मिलाप।
सिर ल्यो सोभा धनी धामकी, दूर हो मायाथें आप।। ५३ ।।

अब तुम हमारे संगी बन जाओ। मुझे धनी मिल गए हैं। अब धाम धनी की शोभा अपने सिर लो और माया से हट जाओ।

तीनों जोधा बड़े जोरावर, हम तीनों की राह एक।
धनी आतम से क्यों ए न छूटे, जो पड़े विघन अनेक।। ५४ ।।

तीनों योद्धा कहते हैं कि हम तीनों बलवान हैं और हमारा रास्ता भी एक है। अब कितने ही विघ्न पड़ें, आत्मा को धनी से जुदा नहीं होने देंगे।

सेहेज सुभाव फिट फिट तुमको, ऐसे सूर सुभट।
सांचे तुम हुए मायासों, मोसों मिले कपट।। ५५ ।।

हे सहज स्वभाव ! तुम बड़े वीर और लड़ने वाले हो, फिर भी तुमको धिक्कार है। तुम माया से सच्चे बने और मुझे धोखा दिया।

मूरख मूढ़ करी तुम दुष्टाई, हुए नहीं स्वाम धरमी।
मूरख मूढ़ करी तुम ऐसी, धिक धिक चंडाल अकरमी।। ५६ ।।

हे सहज स्वभाव ! तुमने बड़ी दुष्टता की है। तुम स्वामिभक्त नहीं हुए। तुम मूर्ख और मूढ़ हो। चाण्डाल और बदनसीब हो। तुम्हारी करनी पर तुम्हें धिक्कार है।

जोधा दोऊ जोरावर मेरे, तुम तरफ हो जिनकी।
अनेक उपाय करे जो कोई, पर जीत होए तिनकी।। ५७ ।।

तुम दोनों योद्धा बड़े ताकतवर हो। तुम जिनकी तरफ होते हो जीत उन्हीं की होती है। चाहे दूसरा कोई कितने ही उपाय करे।

अब तुमको कहूं खीज के, तुम हूजो सावधान।
प्रेमें पिउ रुदे लपटाओ, जिन करो किन की कान।। ५८ ।।

हे सहज-स्वभाव! अब तुमको खीजकर कहती हूं। तुम सावधान हो जाना। अब तुम अपने प्रीतम से लिपट जाना और किसी की परवाह नहीं करना।

सेहेजे सुभाव दोऊ हम बलिए, कोई करे जो कोट उपाए।
पकड़ें बात जो हम सांची, सो लोपी किनहूं न जाए।। ५९ ।।

शांति और स्वभाव उत्तर देते हैं कि हम दोनों ताकतवर हैं। कोई कितना उपाय भी क्यों न करे पर हम तो सच्ची बात को पकड़कर बैठते हैं जो किसी के छिपाने से छिपती नहीं।

Nijanand App

अब देखियो जीव जोर हमारा, पिउ पकड़ देवें एकांत।
पूरा पास देऊं रंग लाखी, सो क्योंए ना उचटे भांत।। ६० ।।

हे जीव जी ! अब हमारी ताकत देखना। हम तुम्हें प्रीतम से एकान्त में मिलवा देंगे और तुम पर ऐसा रंग चढ़ा देंगे जो किसी तरह से उतरेगा नहीं।

ममता तूं भई माया की, हलाक किए हैरान।
फिट फिट भूंड़ी चंडालन, तें बड़ी करी मोहे हान।। ६१ ।।

हे ममता ! माया की होकर तूने मुझे हलाक और हैरान कर दिया है। पापिनी चाण्डालिनी ममता ! तुझे धिक्कार है। तूने मुझे बहुत नुकसान पहुंचाया।

अब ममता आओ मेरे पिउ में, तोको पेहेले दई धिकार।
अब संघातन हूजो मेरी, मोहे मिले पिउ सिरदार।। ६२ ।।

हे ममता ! मेरे पिउ में आ जाओ। तुमको मैंने पहले बहुत धिक्कारा था। अब तुम मेरी सहेली बन जाओ। मुझे धाम के धनी मिल गए हैं।

अब मैं चेरी हुई तुमारी, ले देऊं सांची निध।
अब के ए निध क्योंए ना छूटे, करो कारज तुम सिध।। ६३ ।।

ममता जवाब देती है कि मैं आज से तुम्हारी दासी बन गई। सच्ची न्यामत, तुम्हारा धनी लाकर तुमको दे देती हूं। तुम्हारा काम सिद्ध कर देती हूं। तुम्हारे धनी तुमसे कभी नहीं छूटेंगे।

अब फिटकार देऊं कल्पना, उलटी तूं अकरमन।
फिराए खाली करी फजीत, आतम को अति घन।। ६४ ।।

हे बदनसीब कल्पना ! तुझे धिक्कार है। तू उलटी हो गई। धनी को वापस भेजकर तूने हमारी आत्मा को अपमानित किया है।

अब करमन तूं हो कल्पना, कर सेवा मांहें विचार।
धाम धनी मोहे मिले माया में, लाभ लेऊं मांहें संसार।। ६५ ।।

हे कल्पना! तू चुस्त हो जा और सेवा का विचार रख। मुझे धाम के धनी माया में मिले हैं, इसलिए मैं संसार में लाभ लेना चाहती हूं।

कहे कल्पना ए काम मेरा, करूं नए नए अंग उतपन।
बिध बिध की सेवा देखाऊं, धनी विलसो होए धंन धंन।। ६६ ।।

कल्पना उत्तर देती है कि यह मेरा काम है। मैं तन में नए-नए विचार लाकर तरह-तरह की सेवा दिखाऊंगी और फिर धनी से विलास कर कृतकृत्य (धन्य धन्य) हो जाऊंगी।

वैर राग तुम दोऊ जोधा, सूर साम सामे सिरदार।
वैर किया तुम वल्लभजीसों, राग किया संसार।। ६७ ।।

हे वैर और राग ! तुम दोनों ही योद्धा हो। आमने सामने सिरदार (प्रमुख) हो। तुमने प्रीतम से वैर किया और संसार से राग (प्यार) किया।

Nijanand App

बुरी करी तुम अति मोसों, अब मारूं जमधर घाव।
अब अवसर फेर आयो मेरे, जो भुलाए दियो तुम दाव।।६८ ।।

तुमने मेरे से बहुत बुरा सुलूक किया था, मैं यमदूत की मार तुम्हें मारूंगी। मुझे अब फिर अवसर मिला है। इस दांव (मौके) को भुलाना नहीं।

तुम पर मेरे है मुद्दार, ऐसी पीठ क्यों दीजे।
आतम संग मिलाए धनीजी, धंन धंन मोहे कीजे।।६९ ।।

तुम्हारे पर ही मुझे भरोसा है, इसलिए अब धोखा नहीं देना। आत्मा के धनी के साथ मिलाकर मुझे धन्य-धन्य करना।

जुध करो तुम दोऊ जोधा, राग आओ धनी धाम पाया।
बिध बिध वैर कर कठनाई, जाए बैठो मांहें माया।।७० ।।

हे वैर और राग ! तुम दोनों योद्धा ताकतवर हो। हे राग ! तू मेरे में आ, मुझे धाम धनी मिले हैं। हे वैर ! तुम तरह-तरह की कठिनाइयों से युद्ध कर माया में जाओ।

वैर राग कहे क्या गुनाह हमारा, जो जीव न राखे घर।
जो न देखावे धनी विवेकें, तो हम पकड़ें क्यों कर।।७१ ।।

वैर और राग दोनों उत्तर देते हैं कि जब तक जीव ही सावधान न हो तो हमारा क्या दोष है? जीव यदि धनी की पहचान न कराए तो हम धनी को कैसे पकड़ें?

राग कहे मैं भली भांते, पिउजीसों करों रस रीत।
जीव धनी बीच अंतर टालू, गुन देऊं सारे जीत।।७२ ।।

राग कहता है मैं तुम्हारे अन्दर बैठकर पियाजी से एक रस होकर खेलूंगा। जीव और धनी के बीच का अन्तर हटाकर मिला दूंगा।

वैर कहे देखियो बिध मेरी, संग ना आवे संसार।
कोई गुन जीवसों करे लड़ाई, तो मोको दीजो धिकार।।७३ ।।

वैर कहता है कि अब मेरा कमाल देखना। मैं संसार को आपसे मिलने नहीं दूंगा। कोई भी गुण जीव से लड़ाई करे या रुकावट डाले, तो मुझे धिक्कार है।

धिक धिक स्वाद कहूं मैं तोको, मोहे मिल्या था मीठा जीवन।
सो ए स्वाद छोड़ अभागी, जाए पड़या संसार विघन।।७४ ।।

हे स्वाद ! मैं तुझे क्या कहूं? तुझे धिक्कार है। मुझे मीठे प्रीतम मिले थे। उनका स्वाद छोड़कर तू संसार की रुकावटों में चला गया।

अब तूं स्वाद हो सोहागी, ले धनी की मिठास।
इन रंग रस आयो जब स्वाद, तब जेहेर होसी सब नास।।७५ ।।

हे स्वाद! अब तू सुहागी (सौभाग्यवान) बन जा और धनी की अखण्ड मिठास का रस ले। धनी के आनन्द और रस का स्वाद जब तुझे आएगा तो माया का सब जहर नष्ट हो जाएगा।

Nijanand App

स्वाद कहे जब ए सुख आया, तब अभख हुआ मोहजल।
झूठा रंग सब उड़ गया, रस रंग भया नेहेचल।।७६ ।।

स्वाद कहता है कि जब धनी की मिठास का सुख आ गया तो संसार में अब रखा ही क्या है? माया के झूठे स्वाद अब उड़ गए और धनी के अखण्ड आनन्द मिल गए।

फिट फिट भूंडे दुष्ट अभागी, मोहे करायो धनीसो क्रोध।
मैं जान्या था सखा मेरा, पर तें कमल फिराया क्रोध।।७७ ।।

हे दुष्ट अभागे क्रोध! तुझे धिक्कार है। तूने धनी से मेरी दुश्मनी करा दी है। मैंने तो तुझे अपना दोस्त समझा था। पर, हे क्रोध ! तूने उलटा ही चक्कर घुमाया (मित्रघात किया)।

आया नहीं माया के आड़े, तें किया न मेरा काम।
अवसर आए चूक्या चंडाल, रेहे गई हैड़े में हाम।।७८ ।।

तू माया के आड़े नहीं आया और मेरा काम नहीं किया। हे चाण्डाल ! इस कारण मैं मौका खो बैठी और मेरे दिल की हाम (अभिलाषा) दिल में रह गई।

अब क्रोध तूं कमल फिराओ, उलटाए दे संसार।
जोधा जोरावर अब क्या देखे, कर दे जय जय कार।।७९ ।।

हे क्रोध ! अब तू अपने चक्कर को उलटा घुमा और संसार को उलटा दे। हे योद्धा ! देख क्या रहा है। अब तू ऐसा कर जिससे मेरी जय जयकार हो जाए।

क्रोध कहे मैं अति बलवंता, पर क्या करूं धनी बिन।
अब उलटाए देऊं कर सीधा, फेर कबहूं ना होवे दुस्मन।।८० ।।

क्रोध कहता है कि मैं तो बहुत ही बलवान हूं, परन्तु जीव, जो मालिक है, उसके बिना क्या करूं? अब मैं उलटकर गुणों को ऐसा सीधा कर दूंगा कि वह कभी भी तुम्हारे दुश्मन नहीं होंगे।

अब तोको कहूं चाक चकरड़ा, तू चढ़ बैठा जीव के सिर।
तें खाली ऐसा फिराया, रेहे न सके क्योंऐ थिर।।८१ ।।

हे मन ! तू जीव के सिर पर चढ़कर बैठ गया और तुमने बेकार में इतना घुमाया कि जीव स्थिर नहीं रह सका।

अंध अभागी क्यों हुआ ऐसा, तें क्या सुने न धनी के वचन।
धनी मिले तूं थिर न हुआ, फिट फिट भूंडे मन।।८२ ।।

हे अन्धे अभागे मन ! तू ऐसा क्यों हो गया? क्या तूने धनी के वचन नहीं सुने? धनी मिले थे तो तुझे भटकना छोड़कर स्थिर हो जाना था। हे मन ! तुझे धिक्कार है।

समरथ मन तूं बड़ा जोरावर, क्या कहूं तेरो विस्तार।
तुझ में फैल बिध बिध के, अलेखे अपार।।८३ ।।

हे मन ! तू बड़ा समर्थ है। बड़ा ताकतवर है। तेरी ताकत का कहां तक वर्णन करूं? तुझ में तरह-तरह के तरीके बेशुमार हैं।

Nijanand App

तोसों तो काम बड़ा है मेरा, मद मस्त मेवार।
फिर तूं पख पचीस मांहें, बलवंता बेसुमार।। ८४ ।।

हे मेरे योद्धा मन! तुमसे मेरा बड़ा काम है। तुम बहुत बलवान हो। तुम परमधाम के पच्चीस पक्षों में घूमो।

संकल्प विकल्प है तुझमें, सेवा कर धनी धाम।
उमंग अंग आन निसवासर, कर पूरन मन काम।। ८५ ।।

हे मन ! तेरे अन्दर संकल्प और विकल्प हैं। अंग में उमंग भरकर दिन-रात धनी की मन से सेवा कर और मन की चाहना पूरी कर।

बात बड़ी कहे मन मेरी, मैं सकल विध जानों।
मूल बिना करूं सिरदारी, जीव को भी बस आनों।। ८६ ।।

अब मन उत्तर देता है कि मेरी बात सबसे बड़ी है कि मैं सब हकीकत जानता हूं। मेरा मूल भले कहीं नहीं है, फिर भी मैं जीव को वश में करके सब अंगों पर सिरदारी (प्रमुखता) करता हूं।

जोलों जीव जागे नहीं, तोलों कहा करें हम।
जोर हमारा तबहीं चले, जब जाग बैठो तुम।। ८७ ।।

मन कहता है कि जब तक जीव जागृत नहीं होता, तब तक हम क्या करें? मेरा बल तो तभी चलता है जब तुम जागृत होकर बैठ जाओ।

अब तुम बिध मेरी देखियो, सब विध करूं रोसन।
धाम धनी आन देऊं अंगमें, तो कहियो सिरदार सबन।। ८८ ।।

मन कहता है कि अब मेरी शक्ति देखना। धाम धनी को लाकर तुम्हारे दिल में बिठा दूंगा। फिर सबको तुम्हारी पहचान कराकर तुम्हारी जय जयकार कराऊं, तो मुझे सबका सिरदार (प्रधान) कहना।

कोई जो कदर जाने मेरी, अंग अंदर आनूं वतन।
अनेक विध सेवा उपजाऊं, धनी न्यारे न होवे खिन।। ८९ ।।

यदि मेरी कोई कदर जाने तो मैं परमधाम उसके अन्दर ला दूं। अनेक तरह से सेवा करने की भावना पैदा करूंगा और फिर धनी एक क्षण के लिए भी अलग न हो सकेंगे।

बुरी करी तुम भरम भ्रांतड़ी, यों न करे दूजा कोए।
तारतम जोत उद्दोत के आगे, संसे कबूं न होए।। ९० ।।

हे भ्रम और भ्रान्ति ! तुमने बहुत बुरा काम किया। ऐसा दूसरा कोई नहीं करता। तारतम वाणी के ज्ञान के आगे कोई संशय कभी नहीं आता।

संसे भ्रांत के आकार, जो कदी होते तुमारे।
टूक टूक करूं मैं तिल तिल, फेर फेर तीखी तरवारे।। ९१ ।।

हे संशय और भ्रान्ति ! यदि तुम्हारे आकार होते तो तलवार की धार से टुकड़े-टुकड़े कर देता।

Nijanand App

अब जोर कर जाओ माया में, इनके संग होए तुम।
उजाले तारतम के पेहेचान, ज्यों मूल सरूप देखें हम।।९२।।

हे संशय और भ्रान्ति ! अब तुम ताकत लगाकर माया में जाकर वहीं रहो। तारतम की वाणी से पहचानकर मुझे मूल स्वरूप को देखने दो।

अंतर भ्रांत कहे तुम फेर फेर, मार मार देखाओ डर।
नींद कर बैठे इन जिमी में, सो आप न करो खबर।।९३।।

मन के संशय कहते हैं कि तुम बार-बार मार का डर दिखाते हो और स्वयं माया के भ्रम से भरी नींद में सोए पड़े हो। स्वयं ही अपने आपसे बेखबर हो रहे हो।

घर का धनी अखंड फल पावे, सो इत क्यों सोवे करारे।
गफलत को न छोड़े आपे, फेर फेर हमको मारे।।९४।।

जो घर का मालिक अखण्ड फल की प्राप्ति चाहता है वह यहां बेफिक्र होकर नहीं सोता। स्वयं तो माया की गफलत को छोड़ता नहीं है और बार-बार हमको मारता है।

अब इन तारतम के उजाले, करूं तारतम रोसन।
नेहेचल सुख लेओ तुम सांचे, और भी देऊं सबन।।९५।।

हे मेरे भ्रम और भ्रान्ति ! अब मैं तारतम वाणी के उजाले में अखण्ड तारतम की ज्योति जला दूं जिससे तुम अखण्ड सुख लो और दूसरों को भी मैं सुख दूं।

फिट फिट लज्या तूं भई लौकिक, बांधे कबीले सों करम।
धनी मेरे मोहे आए बुलावन, तित तोहे न आई सरम।।९६।।

हे लज्जा ! तुझे धिक्कार है। तू संसार की हो गई और झूठे कबीले से बंध गई। मेरे धनी मुझे बुलाने के लिए आए थे, पर तुझे शर्म नहीं आई। तू सांसारिक कबीलों में लगी रही।

कहा कियो तें दुष्ट पापनी, ऐसी ना करे कोए।
घर धाम धनी के आगे, करी सरमिंदी मोहे।।९७।।

हे दुष्ट पापिनी लज्जा ! तूने ऐसा क्यों किया? ऐसा तो कोई नहीं करता। मुझे धाम-धनी के आगे घर में शर्मिन्दा होना पड़ा।

अब सरमिंदी कहूं मैं तोको, तूं देख परआतम सगाई।
बड़ा अवसर पेहेले तूं चूकी, अब फेर आई जोगवाई।।९८।।

हे शर्मिन्दगी ! मैं तुझे कहती हूं कि तू मेरे परआतम के सम्बन्ध को देख। तू पहले बड़े अवसर पर चूक गई। अब फिर से धनी ने तन धारण किया है।

कहे लज्या मैं पेहेले भूली, अवसर धनी ना छोडूं।
सिर माया का भान के, पिउसों मुख ना मोडूं।।९९।।

अब लज्जा कहती है कि मैं पहले भूली थी। अब इस समय धनी को नहीं छोडूंगी। माया का सिर तोडूंगी और पिया से मुख नहीं मोडूंगी।

Nijanand App

फिट फिट आसा तूं भई माया की, बैठी मोहजल में आए।
मैं माया में अखंड फल पाया, सो मोहे दियो हराए।। १०० ।।

हे आशा ! तुझे धिक्कार है। तू भवसागर में आकर माया की होकर बैठ गई। मुझे माया में अखण्ड फल प्राप्त हुआ था जो मेरे हाथ से चला गया (मैं हार गई)।

अखंड धनी फल छोड़ के, निरफल माया झूठ लई।
ए सिर गुनाह हुआ जीव के, तोको सिखापन ना दई।। १०१ ।।

हे आशा ! अखण्ड धनी को छोड़कर तूने व्यर्थ माया को ले लिया। यह गुनाह जीव के सिर पर लगा दिया कि उसने तुझे सूचित नहीं किया।

कहे आसा मोहे दई जगाए, निकट न जाऊं मोहजल।
इन बल मांहें कमी न राखूं, लागी आतम आसा सुफल।। १०२ ।।

अब आशा कहती है कि अब मुझे जगा दिया है। मैं माया के पास भी नहीं जाऊंगी। ऐसा करने में किसी तरह की कमी नहीं रखूंगी। आत्मा को जो अखंड धनी से मिलने की आशा लगी है, वह अब सफल हो जाएगी।

गुन गरीबन आई अकरमन, ना भई सनमुख सावधान।
लाहा लीजे दौड़ धनी का, सो दिया गरीबी भान।। १०३ ।।

हे गरीब दीनता ! तू धनी के सामने सावधान होकर नहीं आई। जब धनी आए थे तब आगे दौड़कर धनी से मिलने का लाभ लेना चाहिए था। तूने आगे न आकर वह मेरा अवसर गंवा दिया।

किन विध कहूं या सुख की, फिट फिट भूंडे अचेत।
तुझ बैठे न आई तीव्रता, ना तो ए सुख लेत।। १०४ ।।

हे पापी अचेत (बेहोशी) गुण ! तुझे धिक्कार है। इस सुख का वर्णन कैसे करूं जो तेरे बैठने से मुझे तीव्रता नहीं आई। नहीं तो मैं धनी के अखण्ड सुख ले लेती।

कहे गरीबी मैं माया की, मैं बैठों माया मांहें।
लीजो लाहा सुख नेहेचल का, श्री धाम धनी हैं जांहें।। १०५ ।।

गरीबी कहती है कि मैं तो माया की हूं और माया में ही बैठी हूं। जहां धाम धनी हैं, उनका अखण्ड सुख आप लो।

फिट फिट भूंडी न आई तीव्रता, मोहे मिले थे धाम धनी।
ऐसा विलास खोया तें मेरा, बोहोत बुरी करी घनी।। १०६ ।।

हे पापी तीव्रता गुण ! तुझे धिक्कार है। मुझे धाम के धनी मिले थे। तूने मेरा ऐसा आनन्द खो दिया है और बहुत ही बुरा काम किया है।

फेर अवसर आयो है मेरे, चित चेतन कीजे बल।
रात दिन जगाए जीव को, जिन दे मिलने पल।। १०७ ।।

अरी ओ तीव्रता ! अब फिर मेरे हाथ अवसर आया है। तू जल्दी से बल लगाकर जीव को जगा दे। उसे रात-दिन सावचेत रख। उसको जरा भी सुस्त मत होने दे।

Nijanand App

तुझमें बल है सावचेती, चित चेतन अति रोसन।
परआतम बस कर दे आतमां, ना होए अंतराए एक खिन।। १०८ ।।

हे सतर्कता (चुस्ती) ! तू बड़ी बलवान है। तू मेरे चित्त को चौकस रखकर आतम जगाकर परआतम के वश में कर दे। जिससे एक पल के लिए भी धनी से दूर न होना पड़े।

सील संतोख आओ ढिग मेरे, बांधो सागर आड़ी पाल।
गुन सारे हुए अग्या में, पीछे रह्या न कछू जंजाल।। १०९ ।।

हे शील तथा सन्तोष ! तुम मेरे पास आओ। सागर के रोकने के लिए मेढ़ बांधो। मेरी आशा में सारे गुण आ गए हैं। अब कोई झंझट बाकी नहीं है।

सील कहे संतोख सुनो, आपन हुए माया के पाल।
कई बहावे पहाड़ पूर सागर के, मांहें लेहेरें बेहेवट निताल।। ११० ।।

शील कहता है कि हे सन्तोष ! सुनो, अब हम जीव पर माया का पूर (प्रवाह) रोकने के लिए बंध बन जाएं। भवसागर का बहाव बड़े जोर वाला है और लहरें पहाड़ों के समान ऊंची हैं। इस भवसागर में पहाड़ के समान लहरें जीव को बहाकर ले जाने वाली हैं।

भमरियां मांहें बेसुमार, लेहेरां मेर समान।
मछ लड़े बड़े मोहजल के, करनी पाल इस ठाम।। १११ ।।

इस भवसागर के अन्दर बेशुमार भंवर हैं। लहरें पहाड़ के समान ऊंची हैं। बड़े-बड़े मगरमच्छ लड़ने वाले हैं। ऐसे समुद्र के सामने हमें बंध बांधना है।

अब बांधनी पाल खरी करनी, ज्यों ना खसे लगार।
पीछे जल जोर बढ़ा ऊपर अपने, तब सामी सोभा होसी अपार।। ११२ ।।

अब हमें इतना मजबूत बंध बांधना है कि पीछे से कितना भी बड़ा बहाव आए तो हमें जरा भी खिसकना नहीं है और जल के बहाव को पीछे खदेड़ दिया तो अपनी बेशुमार शोभा है।

एह पाल हम बांधी जीवजी, पर तुम जाग करो सावचेत।
फेर नहीं आवे ऐसा समया, सोभा ल्यो साथ में इत।। ११३ ।।

हे जीवजी ! हमने बंध बांध रखा है। अब तुम जागकर सावचेत (सावधान) हो जाओ। ऐसा समय फिर नहीं आएगा। वचनों पर दृढ़ रहकर सुन्दरसाथ के बीच यहीं बैठकर शोभा लो।

जाग जीव तूं जोरावर, क्या देऊं तोको गारी।
तें होए चंडाल अवसर खोया, जीती बाजी हारी।। ११४ ।।

हे मेरे ताकतवर जीव ! तू जाग जा। अब तुझे क्या गाली दूं? तूने चाण्डाल बनकर अवसर खो दिया है और जीती बाजी हार गया है।

कठनाई मैं देखी तेरी, तूं निठुर निपट अपार।
थके धनी तोहे धम धमके, पर तें गल्या नहीं निरधार।। ११५ ।।

हे जीव ! मैंने तेरी कठिनाई को समझा है। तू निश्चित ही कठोर है। धनी तुझे तरह-तरह से समझा कर थक गए पर तू जरा भी गला या पिघला नहीं।

।। प्रकरण ।। २० ।। चौपाई ।। ५०७ ।।

Nijanand App

जीव को सिखापन

सुन मेरे जीव कहूं वृतान्त, तोको एक देऊं द्रष्टांत।
सो तूं सुनियो एकै चित, तोसों कहत हों करके हित।। १ ।।

हे मेरे जीव ! तुझे एक दृष्टान्त देकर हकीकत बताती हूं। उसे सुन। तू सावधान होकर सुनना। मैं तुझे प्यार करके कहती हूं।

परीछितें यों पूछ्यो प्रश्न, सुकजी मोको कहो वचन।
चौदे भवन में बड़ा जोए, मोको उत्तर दीजे सोए।। २ ।।

राजा परीक्षित ने शुकदेवजी से प्रश्न किया कि चौदह लोकों में सबसे बड़ा कौन है? मुझे इसका उत्तर दो।

तब सुकजी यों बोले प्रमान, लीजो वचन उत्तम कर जान।
चौदे भवन में बड़ा सोए, बड़ी मत का धनी जोए।। ३ ।।

तब शुकदेवजी इस प्रकार प्रमाण देकर बोले और कहा कि इन वचनों को अच्छी तरह ग्रहण करना। चौदह भवनों में सबसे बड़ा वही है जिसके पास जागृत बुद्धि है।

भी राजाऐं पूछा यों, बड़ी मत सो जानिए क्यों।
बड़ी मत को कहूं विचार, लीजो राजा सबको सार।। ४ ।।

राजा ने फिर कहा कि बड़ी मत (बुद्धि) की पहचान क्या है? शुकदेवजी कहते हैं कि बड़ी मत का विचार कहता हूं, यह सारे ज्ञान का सार है।

बड़ी मत सो कहिए ताए, श्री कृष्णजी सों प्रेम उपजाए।
मत की मत तो ए है सार, और मत को कहूं विचार।। ५ ।।

बड़ी मत उसको कहते हैं जो श्री कृष्णजी से प्रेम उत्पन्न कराए। सबके ज्ञान का एक यही सार है। दूसरी बुद्धि का विचार बताता हूं।

बिना श्री कृष्णजी जेती मत, सो तूं जानियो सबे कुमत।
कुमत सो कहिए किनको, सबथें बुरी जानिए तिनको।। ६ ।।

श्री कृष्णजी से प्रेम उत्पन्न कराने वाली बुद्धि के सिवाय जितनी बुद्धियां हैं उनको कुबुद्धि समझना। परीक्षित पूछता है कि कुमति किसको कहते हैं? शुकदेवजी कहते हैं कि जो सबसे बुरी बुद्धि हो।

ऐसो तिन को कहा वृतांत, सो भी राजा तोको कहूं द्रष्टांत।
सुन राजा कहूं सो जुगत, जासों पेहेचान होवे दोऊ मत।। ७ ।।

परीक्षित कहता है कि उसकी क्या हकीकत है? शुकदेवजी कहते हैं कि एक दृष्टान्त देता हूं उसे सुनो। हे राजा! मैं ऐसी युक्ति से बताता हूं जिससे दोनों तरह की बुद्धियों की (कुमति और बड़ी मत) पहचान हो जाए।

श्री कृष्णजी सों प्रेम करे बड़ी मत, सो पोहोंचावे अखंड घर जित।
ताए आड़ो न आवे भवसागर, सो अखंड सुख पावे निज घर।। ८ ।।

बड़ी मत श्री कृष्णजी से प्रेम पैदा करती है। जीव को अखण्ड सुख में पहुंचाती है। दुबारा जीव भवसागर में नहीं आता और वह अपने घर (योगमाया) का अखण्ड सुख प्राप्त करता है।

Nijanand App

ए सुख या मुख कह्यो न जाए, याको अनुभवी जाने ताए।
ए कुमत कहिए तिनसे कहा होए, अंधकूप में पड़िया सोए।। ९ ।।

इस अखण्ड सुख को मुख से कहा नहीं जाता। इसको तो अनुभव से ही जाना जाता है। कुमति से क्या होता है? अन्धे की तरह कुएं में गिरना पड़ता है अर्थात् भवसागर में डूबना पड़ता है।

सब दुखों में बुरा ए दुख, कुमत करे धनीसों बेमुख।
केतो कहूं या दुख को विस्तार, जाके उलटे अंग इंद्री विकार।। १० ।।

सब दु:खों में से सबसे बुरा दु:ख यह है जो कुबुद्धि के कारण धनी से विमुख होना पड़ता है। इस दु:ख का विस्तार कहां तक बताऊं? इससे सारे गुण, अंग, इन्द्री उलटे हो जाते हैं।

दोऊ मत को कह्यो प्रकार, ए ब्रह्मसृष्टी करें विचार।
जाको जाग्रत है बड़ी बुध, चेते अवसर जाके हिरदे सुध।। ११ ।।

दोनों प्रकार की बुद्धियों की हकीकत बताई है, जिसका विचार ब्रह्मसृष्टि करेगी। जिसके हृदय में बड़ी बुद्धि है वह इस समय जागृत होकर अपने घर परमधाम की सुध हृदय में लेगी।

ए सुकजी के कहे वचन, नीके फिकर कर देखो मन।
बोहोत फिकर की नहीं ए बात, ए समया हाथ ताली दिए जात।। १२ ।।

शुकदेवजी के इन वचनों को, हे मन ! विचार कर देखो। यहां बहुत सोच विचार करने की बात नहीं है, क्योंकि समय तो हाथ की ताली के समान बीता जाता है।

तेरी गिनती बांधी स्वांसों स्वांस, तिनको भी नाहीं विश्वास।
केते रहे बाकी तेरे स्वांस, एक स्वांस की भी नाहीं आस।। १३ ।।

तेरा जीवन सांसों से बंधा है। इन सांसों का भी विश्वास नहीं है। तेरे सांस कितने बाकी रहे। सांस पूरे होने पर एक सांस की भी आशा नहीं है।

स्वांस तो खिन में कई आवें जाएं, गए अवसर पीछे कछू न बसाए।
तिन कारन सुन रे जीव सही, बड़ी मत मैं तोको कही।। १४ ।।

एक क्षण में तो कई सांस आते जाते हैं। समय निकल जाने के बाद कुछ वश में नहीं रहता। इस वास्ते, हे मेरे जीव ! सुनो, बड़ी मत की पहचान मैंने तुमको बताई है।

जो जोगवाई है तेरे हाथ, सो या मुखथें कही न जात।
एते दिन तें ना करी पेहेचान, तैसी करी ज्यों करे अजान।। १५ ।।

हे जीव ! यह मनुष्य तन जो तेरे हाथ में है, उसकी महिमा इस मुख से नहीं कही जाती। इतने दिन तक तूने पहचान नहीं की और ऐसा किया जैसे मूर्ख करता है।

अब ए वचन विचारो मन, साख दई सुकजी के वचन।
भी वचन कहूं सुन मेरे जिउ, जिन छोड़े चरन खिन पिउ।। १६ ।।

अब जो वचन शुकदेवजी ने कहे हैं उनको मन से विचार करके देखो। और भी कहता हूं। मेरे जीव! सुनो, एक क्षण के लिए भी धनी के चरणों को नहीं छोड़ना।

निज घर पिउ को लीजे प्रकास, ज्यों वृथा न जाय एक स्वांस।
ग्रह गुन इंद्री भर तूं पांओं, ऐसा फेर न पाईए दाओ।। १७ ।।

अपने घर और धनी की पहचान कर, जिससे एक सांस भी व्यर्थ न जाए। अपने गुण, अंग, इन्द्रियों को भी इसी रास्ते पर लाओ। फिर ऐसा समय नहीं मिलेगा।

Nijanand App

भरम भान के कहे वचन, बड़ी मत ले ज्यों होए धंन धंन।
ए भरम की नींद उड़ाए के दे, पेहेचान पिउ की नीके कर ले।।१८।।

यह वचन मैंने भ्रम मिटाकर कहे हैं। जिससे तू बड़ी मत को लेकर धन्य-धन्य हो जा। इस भ्रम की नींद को उड़ा दे और अच्छी तरह से धनी की पहचान कर ले।

मुखथें वचन कहे तो कहा, जो छेद के अजूं ना निकस्या।
अगलों ने किव करी अनेक, तें भी कछुक करी विसेक।।१९।।

हे जीव ! मुख से वचन कहने से क्या होता है? यदि तेरे अन्दर वचन छेदकर निकले नहीं, अर्थात् तू रहनी में नहीं आया। आगे भी लोगों ने बड़ी-बड़ी कविताएं की हैं। तूने भी उनसे कुछ अधिक ही किया है।

पर सांचा तो जो होए गलतान, तो भले मुख निकसी ए बान।
ए बानी मेरी नाहीं यों, और किव करत हैं ज्यों।।२०।।

यह वाणी तभी सच्ची है जब तू सुनकर गलित गात (गलित गात्र) हो जाए। यह मेरी वाणी ऐसी नहीं है जैसे दूसरे कवियों की होती है।

ए गुसा किया मेरे जीव के सिर, ना तो और किवकी भांत कहूं क्यों कर।
आतम मेरी है अति सुजान, अछरातीत निध करी पेहेचान।।२१।।

यह मैंने अपने जीव को समझाने के लिए ही गुस्से से कहा है। नहीं तो दूसरे कवियों की तरह क्यों कहती? मेरी आत्मा जागृत है। इसने अक्षरातीत धनी की पहचान की है।

अब सांचा तो जो करे रोसन, जोत पोहोंची जाए चौदे भवन।
ए समया तो ऐसा मिल्या आए, चौदे भवन में जोत न समाए।।२२।।

अब सच्चा तो तू तब है, जब चौदह भवनों में इस वाणी को फैलाए। यह समय तो ऐसा सुन्दर मिला है कि इस ज्ञान का तेज चौदह लोकों में नहीं समाएगा।

यों हम ना करे तो और कौन करे, धनी हमारे कारन दूजा देह धरे।
आतम मेरी निज धाम की सत, सो क्यों ना करे उजाला अत।।२३।।

यह काम यदि हम न करेंगे तो दूसरा कौन करेगा? हमारे लिए धनी ने दूसरा तन धारण किया है। मेरी आत्मा परमधाम की सच्ची है। वह निश्चय ही चौदह लोकों में उजाला करेगी।

श्री सुंदरबाई के चरन प्रताप, प्रगट कियो मैं अपनों आप।
मोसों गुनवंती बाईऐं किए गुन, साथें भी किए अति घन।।२४।।

श्री श्यामाजी के चरणों के प्रताप से मैंने अपने आपको जाहिर किया है। मुझ पर गुणवन्तीबाई ने (गोवर्धन ठाकुर ने) कृपा की है और सुन्दरसाथ ने भी बहुत कृपा की है।

जोत करूं धनी की दया, ए अंदर आए के कह्या।
उड़ाए दियो सबको अंधेर, काढ्यो सबको उलटो फेर।।२५।।

स्वयं राजजी महाराज ने अन्दर बैठकर कहा है। इस ज्ञान को मैं उनकी कृपा से ही प्रकाशित करती हूं। सबके अन्दर का अज्ञान का अंधेरा मिटा देती हूं। सबकी उलटी विचार-धारा समाप्त कर देती हूं।

Nijanand App

इंद्रावती प्रगट भई पिउ पास, एक भई करे प्रकास।
अखंड धाम धनी उजास, जाग जागनी खेलें रास।। २६ ।।

श्री इन्द्रावतीजी पिया के निकट होकर जाहिर हुईं और उनसे एक रस होकर इन वचनों का प्रकाश कर रही हैं। धाम धनी के अखण्ड ज्ञान से जागृत होकर जागनी रास खेल रही हैं।

।। प्रकरण ।। २१ ।। चौपाई ।। ५३३ ।।

आंखां खोल तूं आप अपनी, निरख धनी श्रीधाम।
ले खुसवास याद कर, बांध गोली प्रेम काम।। १ ।।

हे मेरी आत्मा ! तू अपनी आंखें खोलकर धाम के धनी को देख। उनकी लीलाओं को याद कर, प्रेम के बंध बांध।

प्रेम प्याला भर भर पीऊं, त्रैलोकी छाक छकाऊं।
चौदे भवन में करूं उजाला, फोड़ ब्रह्मांड पिउ पास जाऊं।। २ ।।

मैं धनी के प्रेम के प्याले भर भर कर पिऊं तथा चौदह लोकों को धनी की मस्ती में छका दूं। इस तरह चौदह लोकों में ज्ञान का प्रकाश करके क्षर ब्रह्माण्ड को फोड़कर बेहद से परे पिया के पास जाऊं।

वाचा मुख बोले तूं वानी, कीजो हांस विलास।
श्रवना तूं संभार आपनी, सुन धनी को प्रकास।। ३ ।।

हे मेरी जबान ! तुम पिया की वाणी बोलो। हांस और विनोद करो। हे कानो ! तुम सावचेत (सावधान) होकर धनी के वचनों को सुनना।

कहे विचार जीव के अंग, तुम धनी देखाया जेह।
जो कदी ब्रह्मांड प्रले होवे, तो भी ना छोडूं पिउ नेह।। ४ ।।

जीव के सभी अंग विचार कर कहते हैं कि तुमने हमें धनी के दर्शन कराए हैं। इसलिए अब ब्रह्माण्ड का प्रलय भी हो जाए तो भी प्रीतम का प्रेम नहीं छोड़ेंगे।

खोल आंखां तूं हो सावचेत, पेहेचान पिउ चित ल्याए।
ले गुन तूं हो सनमुख, देख परदा उड़ाए।। ५ ।।

हे मेरी आंखो ! तुम सावचेत (सावधान) होकर पिया की पहचान करो और उन्हें चित्त में बिठाओ। धनी के गुणों को लेकर अन्दर का परदा उड़ाकर धनी के सामने हो जाओ।

एते दिन वृथा गमाए, किया अधम का काम।
करम चंडालन हुई मैं ऐसी, ना पेहेचाने धनी श्रीधाम।। ६ ।।

ओछे काम करके मैंने इतने दिन फिजूल (बेकार) में गंवाए। मैं इतनी कर्महीन हो गई कि धाम के धनी को नहीं पहचाना।

भट परो मेरे जीव अभागी, भट परो चतुराई।
भट परो मेरे गुन प्रकृती, जिन बूझी ना मूल सगाई।। ७ ।।

हे मेरे अभागे जीव ! तुझे आग लग जाए। चतुराई को तथा मेरे प्राकृतिक गुणों को आग लग जाए। इन्होंने मूल सम्बन्ध (धाम धनी) को नहीं पहचाना।

Nijanand App

इंद्रावती प्रगट भई पिउ पास, एक भई करे प्रकास।
अखंड धाम धनी उजास, जाग जागनी खेलें रास।। २६ ।।

श्री इन्द्रावतीजी पिया के निकट होकर जाहिर हुईं और उनसे एक रस होकर इन वचनों का प्रकाश कर रही हैं। धाम धनी के अखण्ड ज्ञान से जागृत होकर जागनी रास खेल रही हैं।

।। प्रकरण ।। २१ ।। चौपाई ।। ५३३ ।।

आंखां खोल तूं आप अपनी, निरख धनी श्रीधाम।
ले खुसवास याद कर, बांध गोली प्रेम काम।। १ ।।

हे मेरी आत्मा ! तू अपनी आंखें खोलकर धाम के धनी को देख। उनकी लीलाओं को याद कर, प्रेम के बंध बांध।

प्रेम प्याला भर भर पीऊं, त्रैलोकी छाक छकाऊं।
चौदे भवन में करूं उजाला, फोड़ ब्रह्मांड पिउ पास जाऊं।। २ ।।

मैं धनी के प्रेम के प्याले भर भर कर पिऊं तथा चौदह लोकों को धनी की मस्ती में छका दूं। इस तरह चौदह लोकों में ज्ञान का प्रकाश करके क्षर ब्रह्माण्ड को फोड़कर बेहद से परे पिया के पास जाऊं।

वाचा मुख बोले तूं वानी, कीजो हांस विलास।
श्रवना तूं संभार आपनी, सुन धनी को प्रकास।। ३ ।।

हे मेरी जबान ! तुम पिया की वाणी बोलो। हांस और विनोद करो। हे कानो ! तुम सावचेत (सावधान) होकर धनी के वचनों को सुनना।

कहे विचार जीव के अंग, तुम धनी देखाया जेह।
जो कदी ब्रह्मांड प्रले होवे, तो भी ना छोडूं पिउ नेह।। ४ ।।

जीव के सभी अंग विचार कर कहते हैं कि तुमने हमें धनी के दर्शन कराए हैं। इसलिए अब ब्रह्माण्ड का प्रलय भी हो जाए तो भी प्रीतम का प्रेम नहीं छोड़ेंगे।

खोल आंखां तूं हो सावचेत, पेहेचान पिउ चित ल्याए।
ले गुन तूं हो सनमुख, देख परदा उड़ाए।। ५ ।।

हे मेरी आंखो ! तुम सावचेत (सावधान) होकर पिया की पहचान करो और उन्हें चित्त में बिठाओ। धनी के गुणों को लेकर अन्दर का परदा उड़ाकर धनी के सामने हो जाओ।

एते दिन वृथा गमाए, किया अधम का काम।
करम चंडालन हुई मैं ऐसी, ना पेहेचाने धनी श्रीधाम।। ६ ।।

ओछे काम करके मैंने इतने दिन फिजूल (बेकार) में गंवाए। मैं इतनी कर्महीन हो गई कि धाम के धनी को नहीं पहचाना।

भट परो मेरे जीव अभागी, भट परो चतुराई।
भट परो मेरे गुन प्रकृती, जिन बूझी ना मूल सगाई।। ७ ।।

हे मेरे अभागे जीव ! तुझे आग लग जाए। चतुराई को तथा मेरे प्राकृतिक गुणों को आग लग जाए। इन्होंने मूल सम्बन्ध (धाम धनी) को नहीं पहचाना।

Nijanand App

आग पड़ो तिन तेज बल को, आग पड़ो रूप रंग।
धिक धिक पड़ो तिन ग्यान को, जिन पाया नहीं प्रसंग।।८।।

मेरी शक्ति को, बल को, रूप को, रंग को आग लगे। मेरे ज्ञान को धिक्कार है। इन्होंने ऐसे सुन्दर अवसर को पहचाना नहीं।

धिक धिक पड़ो मेरी पांचो इंद्री, धिक धिक पड़ो मेरी देह।
श्री स्याम सुन्दरवर छोड़ के, संसार सों कियो सनेह।।९।।

मेरी पांचों इन्द्रियों को और तन को धिक्कार है कि धाम धनी को छोड़कर इन्होंने संसार से प्यार किया।

धिक धिक पड़ो मेरे सब अंगों, जो न आए धनी के काम।
बिना पेहेचाने डारे उलटे, ना पाए धनी श्री धाम।।१०।।

मेरे सब अंगों को धिक्कार है जो धनी के काम नहीं आए। इन्होंने धनी की पहचान न करके उलटे माया में डाला। जिससे मुझे धाम धनी नहीं मिल सके।

तुम तुमारे गुन ना छोड़े, मैं बोहोत करी दुष्टाई।
मैं तो करम किए अति नीचे, पर तुम राखी मूल सगाई।।११।।

हे धनी ! तुमने तो कृपा करनी नहीं छोड़ी। मैंने तो बहुत दुष्टता की है। मैंने तो कर्म भी नीच किए। फिर भी आप मूल सम्बन्ध को जानकर कृपा करते रहे।

।। प्रकरण ।। २२ ।। चौपाई ।। ५४४ ।।

वारने जाऊं बनराए वल्लभ की, जाकी सुख सीतल छाया।
देखो ए बन गुन भव औखदी, देखे दूर जाए माया।।१।।

मैं उस वृक्ष पर बलिहारी जाती हूं, जिसकी सुखदायी सीतल छाया में हमारे धनी (गांगजी भाई के घर) बैठते थे। साथजी, देखिए इसके नीचे प्राणनाथजी बैठकर भवसागर से पार उतरने की औषदी तारतम वाणी देते थे। जिस वाणी को देखने से (ग्रहण करने से) माया से छुटकारा मिलता है।

जाऊं वारने आंगने बेलूं, जित ले बैठो संझा समे साथ।
बातें होत चलने धाम की, घर पैंड़ा देखाया प्राणनाथ।।२।।

गांगजी भाई के आंगन की रेती पर बलिहारी जाती हूं जहां सायंकाल सुन्दरसाथ के साथ हमारे धनी बैठते थे और परमधाम चलने की बातें सुनाते थे तथा घर का रास्ता हमारे प्राणनाथ (धनी देवचन्द्रजी) बतलाते थे।

भी बल जाऊं आंगने, आगे पीछे सब साज।
जहां बैठो उठो पांउ धरो, धनी मेरे श्री राज।।३।।

आंगन के सब सामान पर भी बलिहारी जाती हूं जहां मेरे धनी श्री राजजी महाराज बैठते, उठते, पांव रखते थे।

बलिहारी जाऊं बोहोत बेर, देहरी मंदिर द्वार।
वारने जाऊं इन जिमी के, जहां बसत मेरे आधार।।४।।

मैं बार-बार घर की देहरी, दरवाजे पर बलिहारी जाती हूं और उस जमीन पर भी, जहां मेरे प्रीतम रहते थे।

Nijanand App

आग पड़ो तिन तेज बल को, आग पड़ो रूप रंग।
धिक धिक पड़ो तिन ग्यान को, जिन पाया नहीं प्रसंग।। ८ ।।

मेरी शक्ति को, बल को, रूप को, रंग को आग लगे। मेरे ज्ञान को धिक्कार है। इन्होंने ऐसे सुन्दर अवसर को पहचाना नहीं।

धिक धिक पड़ो मेरी पांचो इंद्री, धिक धिक पड़ो मेरी देह।
श्री स्याम सुन्दरवर छोड़ के, संसार सों कियो सनेह।। ९ ।।

मेरी पांचों इन्द्रियों को और तन को धिक्कार है कि धाम धनी को छोड़कर इन्होंने संसार से प्यार किया।

धिक धिक पड़ो मेरे सब अंगों, जो न आए धनी के काम।
बिना पेहेचाने डारे उलटे, ना पाए धनी श्री धाम।। १० ।।

मेरे सब अंगों को धिक्कार है जो धनी के काम नहीं आए। इन्होंने धनी की पहचान न करके उलटे माया में डाला। जिससे मुझे धाम धनी नहीं मिल सके।

तुम तुमारे गुन ना छोड़े, मैं बोहोत करी दुष्टाई।
मैं तो करम किए अति नीचे, पर तुम राखी मूल सगाई।। ११ ।।

हे धनी ! तुमने तो कृपा करनी नहीं छोड़ी। मैंने तो बहुत दुष्टता की है। मैंने तो कर्म भी नीच किए। फिर भी आप मूल सम्बन्ध को जानकर कृपा करते रहे।

॥ प्रकरण ॥ २२ ॥ चौपाई ॥ ५४४ ॥

वारने जाऊं बनराए वल्लभ की, जाकी सुख सीतल छाया।
देखो ए बन गुन भव औखदी, देखे दूर जाए माया।। १ ।।

मैं उस वृक्ष पर बलिहारी जाती हूं, जिसकी सुखदायी सीतल छाया में हमारे धनी (गांगजी भाई के घर) बैठते थे। साथजी, देखिए इसके नीचे प्राणनाथजी बैठकर भवसागर से पार उतरने की औषदी तारतम वाणी देते थे। जिस वाणी को देखने से (ग्रहण करने से) माया से छुटकारा मिलता है।

जाऊं वारने आंगने बेलूं, जित ले बैठो संझा समे साथ।
बातें होत चलने धाम की, घर पैंड़ा देखाया प्राणनाथ।। २ ।।

गांगजी भाई के आंगन की रेती पर बलिहारी जाती हूं जहां सायंकाल सुन्दरसाथ के साथ हमारे धनी बैठते थे और परमधाम चलने की बातें सुनाते थे तथा घर का रास्ता हमारे प्राणनाथ (धनी देवचन्द्रजी) बतलाते थे।

भी बल जाऊं आंगने, आगे पीछे सब साज।
जहां बैठो उठो पांउ धरो, धनी मेरे श्री राज।। ३ ।।

आंगन के सब सामान पर भी बलिहारी जाती हूं जहां मेरे धनी श्री राजजी महाराज बैठते, उठते, पांव रखते थे।

बलिहारी जाऊं बोहोत बेर, देहरी मंदिर द्वार।
वारने जाऊं इन जिमी के, जहां बसत मेरे आधार।। ४ ।।

मैं बार-बार घर की देहरी, दरवाजे पर बलिहारी जाती हूं और उस जमीन पर भी, जहां मेरे प्रीतम रहते थे।

Nijanand App

बलि जाऊं पाटी पलंग सिराने, चादर सिरख तलाई।
पौढ़त पिउजी ओढ़त पिछौरी, ऊपर चंद्रवा चटकाई।।५।।

मैं बलिहारी जाती हूं उस पलंग पर, निवार पर, तकियों पर, चादर पर, रजाई पर, गद्दे पर जहां मेरे धनीजी पौढ़ते थे और चादर ओढ़ते थे और ऊपर चन्द्रवा लगा हुआ रहता था।

बल बल जाऊं मैं दुलीचा चाकला, बल जाऊं मन्दिर के थंभ।
जिन थंभों कर धनी अपने, जुगतें दिए बंध।।६।।

मैं उस दुलीचा पर, आसन पर, मन्दिर के थंभों पर बलिहारी जाती हूं जिन थंभों को उन्होंने अपने हाथ से बांधा था।

बैठत हो जित महाबलिया, बल बल जाऊं ठौर तिन।
साथ सबेरा आए के बैठत, करो धाम धनी बरनन।।७।।

हे मेरे सर्वशक्तिमान धनी ! जहां आप बैठते थे, उस ठिकाने पर बलिहारी जाती हूं। जहां प्रातः आकर सुन्दरसाथ के बीच बैठकर धाम का वर्णन करते थे।

देखत मन्दिर में कई बिध, वस्त सकल पूरन।
टूक टूक कर वार डारों, मेरे जीव के और तन।।८।।

घर में सभी वस्तुओं, जो कई तरह की हैं, को मैं देखती हूं। अपने जीव और तन के टुकड़े-टुकड़े कर इन पर कुर्बान कर दूं।

भले तुम देह धरी मुझ कारन, कर रोसन टाल्यो भरम।
जीव मेरा बोहोत सखत था, मेहेर नजरों भया नरम।।९।।

हे धनी ! आपने बहुत अच्छा किया जो मेरे वास्ते माया में तन धारण किया और तारतम ज्ञान देकर संशय हटाए। मेरा जीव बड़ा कठोर था जो आपकी नजरे करम से नरम हो गया है।

बल जाऊं मैं चरन कमल की, बल जाऊं मीठे मुख।
बलिहारी सोभा सुंदरता, जिन दरसन उपजत सुख।।१०।।

मैं चरण कमलों पर और आपके सुन्दर स्वरूप पर बलिहारी जाती हूं, जिसके दर्शनों से सुख होता है।

भी बल जाऊं हस्त कमल की, बल जाऊं वस्तर।
लेऊं बलैयां भूखन की, बल जाऊं सीतल नजर।।११।।

मैं आपके हस्त कमल पर, वस्त्रों पर, आभूषणों पर, और शीतल नजर पर वारी-वारी जाती हूं।

वार डारूं मैं नासिका पर, और वार डारूं श्रवन।
वार डारूं मैं नख सिख पर, जो सनकूल हैं अति घन।।१२।।

मैं नासिका पर, कान पर तथा नख से शिख तक की शोभा पर बलिहारी जाती हूं। यह अत्यन्त ही सुन्दर है।

सेवा करत बाई हीरबाई, उछव रसोई जित।
अंतरगत तुम नित आरोगो, मैं बल बल जाऊं तित।।१३।।

हीरबाई (खेताभाई की पत्नी) जहां आपकी सेवा के लिए रसोई बनाती थी, जहां आप नित्य ही आरोगते थे, मैं उस स्थान पर बलिहारी जाती हूं।

Nijanand App

वार डारूं मैं वानी पर, जो वचन केहेत रसाल।
साथ को चरने राख के, सागर आड़ी बांधत हो पाल।। १४ ।।

हे धनी! आपके रस भरे वचनों की वाणी पर, जो सुन्दरसाथ को सुनाकर अपने चरणों में रखकर कृपा की, भवसागर से बचाने के लिए पाल (बंध) बांधते थे, उन पर मैं बलिहारी जाती हूं।

करत हो कृपा कई बिध की, मीठी अति मेहेरबानी।
सांचे लाड़ लड़ाए सुन्दर, ल्याए वतन की वानी।। १५ ।।

धनी परमधाम से तारतम वाणी को लाकर सुन्दरसाथ को तरह-तरह के लाड़ लड़ाते थे और फिर कई तरह की कृपा करते थे।

मैं सेवा करूं सर्वा अंगों, देऊं प्रदखिना रात दिन।
पल न वालूं निरखूं नेत्रे, आतम लगाए लगन।। १६ ।।

मैं सब अंगों से रात-दिन परिकरमा देकर आपकी सेवा करूं और आत्मा में लगन लगाकर लगातार नैनों से निहारती रहूं। एक पलक भी न झपकूं।

मुझसे अजान अबूझ दुष्ट अप्रीछक, अधम नीच मत हीन।
सो इन चरनो आए होए दाना स्याना, सुघड़ सुबुध प्रवीन।। १७ ।।

मुझ जैसा अज्ञानी, नासमझ, दुष्ट, अनजान, अधम, नीच, हीन मत वाला भी आपके चरणों में आकर बुद्धिमान, चतुर, सबुद्धि, सुघड़ और होशियार बन जाता है।

जीव जगाए देत निध निरमल, करत आतम रोसन।
सो जीव बुध ले करे उजाला, सबमें चौदे भवन।। १८ ।।

आप जीव को जगाकर अखण्ड न्यामत (तारतम वाणी) देते हो। आत्मा को जगाते हो। वह जीव आपके ज्ञान को लेकर चौदह लोकों में उजाला करता है।

इन जुबां क्यों कहूं बड़ाई, तुमें सब्द न पोहोंचे कोए।
जो कछू कहूं सो उरे रहे, ताथे दुख लागत है मोहे।। १९ ।।

इस जबान से मैं आपकी कैसे प्रशंसा करूं? यहां के शब्द आप तक कोई नहीं पहुंचते। जो कुछ कहती हूं वह यहीं रह जाता है, इसलिए मुझे बड़ा दुःख लगता है।

दाझ बुझत है एक सब्द में, जब कहूं धनी श्रीधाम।
इन वचनें आतम सुख पायो, भागी हैड़े की हाम।। २० ।।

मैं जब 'धाम-धनी' शब्द को कहती हूं तो मेरे हृदय की प्यास (तड़प) बुझ जाती है। इन वचनों से मेरी आत्मा को सुख होता है और हृदय की चाहना मिट जाती है।

कहे इंद्रावती अति उछरंगे, फोड़ ब्रह्मांड करूं रोसन।
सीधी राह देखाऊं जाहेर, ज्यों साथ सुखे आवे वतन।। २१ ।।

श्री इन्द्रावतीजी बड़ी उमंग के साथ कहती हैं कि ब्रह्माण्ड को फोड़कर सुन्दरसाथ को सीधा रास्ता दिखाऊं, जिससे सुन्दरसाथ बड़े सुख के साथ घर (परमधाम) वापस आ जाएं।

।। प्रकरण ।। २३ ।। चौपाई ।। ५६५ ।।

Nijanand App

अब अस्तुत ऊपर एक विनती कहूं, चरन तुमारे जीव में ग्रहूं।
इन चरनों मोहे सुध भई, पेहेली निध सुंदरबाईऐं दई।। १ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, हे धनी! अब वन्दना के बाद अर्जी करती हूं। हे राजजी महाराज! आपके चरण कमलों को अपने जीव के अन्दर ग्रहण करती हूं। आपके ही चरण कमलों से मैं जागृत हुई हूं। पहले तारतम ज्ञान श्री श्यामा महारानीजी (सुन्दरबाई) ने दिया।

दोऊ सरूप में जोत जो एक, सो मैं देख्या कर विवेक।
ए चरन फलें कहे इंद्रावती, तारतम जोत करूं विनती।। २ ।।

इन दोनों स्वरूपों में (राजजी-श्यामाजी में) एक ही तेज है। उसे मैंने अच्छी तरह विचारकर देखा है। इन चरणों की कृपा से ही इन्द्रावतीजी तारतम वाणी से जागृत होकर विनती करती हैं।

मेरा बुत्ता कछू न था मेरे धनी, मोपे दोऊ सरूपों दया करी अति घनी।
सेवा में न थी हाजर, न जानूं दया करी क्यों कर।। ३ ।।

मेरे अन्दर कोई ताकत नहीं थी। इन दोनों स्वरूपों (राजजी, श्यामाजी) ने अति अधिक कृपा की। मैं तो सेवा में भी हाजिर नहीं थी। पता नहीं धनी ने कृपा कैसे की?

करतब चितवनी और सेवा करे, माया गुन उलटे परहरे।
मनसा वाचा कर करमना, करे दौड़ प्यार अति घना।। ४ ।।

मन, वचन और कर्म से जो कर्तव्य, चितवन और सेवा करता है तथा जो सेवा बड़े प्यार से करता है, वह बुरी आदतों को जीत लेता है।

पर जब लग दया तुमारी न होए, तब लग काम न आवे कोए।
ए परीछा में करी निरधार, देखे सबके सब्द विचार।। ५ ।।

हे धनी ! जब तक आपकी कृपा नहीं होती, तब तक तन के अंग भी काम नहीं आते। यह मैंने सबके ज्ञान की परीक्षा कर, विचार करने के बाद निश्चय किया कि आपकी मेहर ही सबसे बड़ी है।

जीव खरा होए जुदा मन करे, कपट रत्ती न हिरदे धरे।
यों करके तुमको सेवे, वचन विचार अंदर जीव लेवे।। ६ ।।

मन को अलग करके जीव निर्मल हो जाए और हृदय में जरा भी कपट न रहे। फिर जो आपकी सेवा करेगा वही आपके वचनों को विचारकर अपने हृदय में ग्रहण करेगा।

सनकूल करे तुमारा चित, संसे भान करे जीव के हित।
पिउ चित पर चलेगा जोए, साथ में घरों सोभा लेसी सोए।। ७ ।।

हे धनी! जो आपकी वाणी को रहनी में लेकर चलेगा उसके संशय मिट जाएंगे और उसके जीव का कल्याण होगा। वह आपके चित्त को भी खुश करेगा तथा उसे परमधाम में सुन्दरसाथ में मान मिलेगा।

ए नींद उड़ाए के कहे वचन, श्री धाम धनी जीव जानी मन।
जब देख्या धनी नीके फिकर कर, तो अजू न गई नींद है अंदर।। ८ ।।

यह वचन मैंने जीव और मन से जागृत होकर धाम धनी की पहचान करके कहे हैं। फिर भी मैंने धनी का चिन्तन कर देखा तो लगा कि अभी भी मेरी नींद गई नहीं है (माया अभी बाकी है)।

Nijanand App

ए वचन कहे मैं नींदज मांहें, जब नीके देखूं धनी धाम के तांहें।
न तो क्यों कहूं धनी को एह वचन, पर कछुक तासीर है भोम इन।। ९ ।।

इन वचनों को मैंने माया के अन्दर बैठकर धाम धनी को पहचान कर कहा है। नहीं तो ऐसे वचन धनी के लिए क्यों कहती? परन्तु इस माया की भूमि की कुछ तासीर (प्रभाव) ही ऐसी है।

जब घर की तरफ देखों तुमको, तब फेर यों होए मेरे मन को।
ए धाम धनी को कहा कहे वचन, तब जीव विचार दुख पावे मन।। १० ।।

जब मैं परमधाम की तरफ ध्यान करके देखती हूं तो मेरे मन में यह विचार आता है कि मैंने धाम धनी को क्या कह दिया? उस समय जीव विचारकर बहुत दुःखी होता है।

क्या कहूं सब्द तुमें पोहोंचे नांहें, मेरी जुबां भई माया अंग मांहें।
तुम सब्दातीत भए मेरे पिउ, मेरी देह खड़ी माया ले जिउ।। ११ ।।

हे धनी! मैं क्या कहूं? मेरे शब्द आप तक पहुंचते नहीं हैं। मेरी जबान माया के तन की है। मेरा तन माया का जीव लेकर खड़ा है और आप शब्दातीत हैं।

धनी लगते वचन कहूंगी आए धाम, तब भानूंगी मेरे जीव की हाम।
ए तो वानी कही मैं साथ कारन, साथ छोड़सी माया ए देख वचन।। १२ ।।

हे धनी ! आपकी शोभा लायक शब्द तो धाम में आकर ही कहूंगी। तब मुझे शान्ति होगी। यह शब्द तो मैंने सुन्दरसाथ के लिए कहे हैं, ताकि सुन्दरसाथ इन वचनों को देखकर माया छोड़ देगा।

साथ वेगे बुलाओ कहे इंद्रावती, ए कठन माया दुख होए लागती।
ए दुख देख्या मांहें दुस्तर, कोई न पेहेचाने आप न सूझे घर।। १३ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, हे धनी! सुन्दरसाथ को जल्दी बुलाओ। यह माया अति कठिन दुःख देती है। यह सब कठिन दुःख मैंने माया में देखे हैं। यहां न किसी को अपनी पहचान है और न ही घर की सुध है।

ए मैं लुगा कह्या माया सनमंध, मैं देखीतां न देखूं अंध।
ए ताए कहिए जो होए बेसुध, तुम खिन खिन खबर लई कई विध।। १४ ।।

यह थोड़े से शब्द मैंने माया के प्रति कहे हैं। मैं देखकर भी अन्धी बनी हूं जो देख नहीं पाती। यह वचन तो उसे कहे जाएं जो बेसुध हो। आप तो हमारी पल-पल कई तरह से सुध ले रहे हो।

एह कहूं मैं साथ कारन, अधखिन साथ विसारो जिन।
जिन करो तुमारी पाओखिन, तो कई कल्पांत जाए मिने तिन।। १५ ।।

यह वचन मैंने सुन्दरसाथ के लिए कहे हैं। हे धनी! आप आधे क्षण के लिए भी सुन्दरसाथ को भुलाना नहीं। यह आधा क्षण मैंने संसार का कहा है। आपके चौथाई क्षण में तो यहां के कई कल्पान्त बीत जाते हैं।

मैं तो कहूं जो तुम न्यारे हो, पाओ पल साथ की जुदागी ना सहो।
मैं तो कहूं जो मेरी ओछी मत, तुम हम को कई सुख चाहत।। १६ ।।

हे धनी! यह बात तो तब कहूं जब आप मुझसे जुदा हों। आप तो सुन्दरसाथ की जुदाई एक पल भी सहन नहीं करते। यह मैंने अपनी कम अक्ल के कारण कहा है। आप तो हमें बेशुमार सुख देना चाहते हैं।

हम कारन तुम आए देह धर, तुम कई विध दया करी हम पर।
तुम धनी आए कारन हम, देखाई बाट ल्याए तारतम।। १७ ।।

हे धाम-धनी! आपने हमारे लिए ही माया का तन धारण किया है, कई तरह की मेहरबानी हमारे ऊपर की है। हमारे लिए तारतम वाणी लाए, जिससे परमधाम का रास्ता दिखाया।

Nijanand App

साथें माया मांगी सो भई अति जोर, तुम सब्द कहे कई कर कर सोर।
पर तिन समे नींद क्योंए न जाए, तब धनी सरूप भए अंतराए॥ १८ ॥

हे धनी! सुन्दरसाथ ने परमधाम में जो माया मांगी थी वह यहां बड़ी जोरावर (शक्तिशाली) है। माया से निकालने के लिए आपने कई तरह से वाणी सुना-सुनाकर पुकारा। पर उस समय मेरी नींद किसी तरह नहीं टूटी और धनी अन्तर्ध्यान हो गए।

तो भी ना भई हमको खबर, तब फेर आए दूजा देह धर।
ततखिन मिले हमको आए, सागर वतनी नूर बरसाए॥ १९ ॥

फिर भी हम सावचेत (सावधान) नहीं हुए तो धनी दूसरा तन धारण करके आए। तुरन्त हमें आकर मिले तथा घर के ज्ञान की बातों (नूर) की वर्षा बरसाई।

मैं साथ को कह्या सो कहिए क्यों कर, यों तो कहिए जो दूर किए होवें घर।
एता तो मैं जानूं जीव मांहें, जो ए अरज धनीसों करिए नांहें॥ २० ॥

जो कुछ मैंने सुन्दरसाथ को कहा है, यह वचन तो तब कहने चाहिए जब आपने उनको घर से दूर रखा हो। यह तो मैं निश्चित रूप से जानती हूं कि यह अर्ज (प्रार्थना) मुझे आपसे नहीं करनी चाहिए।

पर साथ वास्ते दाह उपजी मन, यों जानें न कह्या हम कारन।
यों न कहूं तो समझे क्यों कोए, कई विध दया धनी की होए॥ २१ ॥

सुन्दरसाथ यह न कहे कि हमारे लिए कहा नहीं, इसलिए यह तड़प मेरे मन में आई। यदि ऐसा न कहूं तो सुन्दरसाथ कैसे समझेंगे? आपकी तो दया पल-पल कई प्रकार से होती है।

ए साथ की चिन्हार को कहे वचन, ना तो धनी दया जीव जाने मन।
साथ चरने हैं सो तो वचिखिन वीर, ए भी वचन विचारे द्रढ़ धीर॥ २२ ॥

हे धनी! आपकी मेहर को मेरा मन अच्छी तरह जानता है। यह वचन तो मैंने सुन्दरसाथ की जानकारी के लिए कहे हैं। सुन्दरसाथ जो चरणों में आ गए हैं, वह तो चतुर और बुद्धिमान हैं। इन वचनों का वह भी दृढ़ मन से विचार करेंगे।

पर करूं साथ पीछले की बड़ी जतन, देख वानी आवसी इन बाट वतन।
देखियो साथ दया धनी, ए कृपा की बातें हैं अति घनी॥ २३ ॥

जो सुन्दरसाथ अभी माया में पड़े हैं, उनके लिए मैं यह उपाय कर रही हूं। वह इस वाणी को ही देखकर जागृत होंगे। हे सुन्दरसाथजी ! धनी की मेहर की बड़ी भारी बातें हैं जिन्हें तुम देखना।

ए दया धनी मैं जानूं सही, पर इन जुबां ना जाए कही।
जो जीव वचन विचारे प्रकास, तो अंग उपजे धाम धनी उलास॥ २४ ॥

धनी की मेहर को मैं तो अच्छी तरह जानती हूं, किन्तु जबान से कही नहीं जाती। यदि जीव इन प्रकाश के वचनों पर विचारकर देखे तो धनी से मिलने की उमंग (उल्लास) उसके अन्दर आ जाएगी।

कहे इंद्रावती सुंदरबाई चरनें, सेवा पिउ की प्यार अति घने।
और कछू ना इन सेवा समान, जो दिल सनकूल करे पेहेचान॥ २५ ॥

श्री इन्द्रावतीजी सुन्दरबाई (श्यामाजी महारानी) के चरणों की कृपा से कहती हैं कि धनी की दिल से अति प्यार से सेवा करना। यदि प्रसन्न मन से विचार करके देखो तो सेवा के समान और दूसरा कुछ नहीं है।

॥ प्रकरण ॥ २४ ॥ चौपाई ॥ ५९० ॥

Nijanand App

सूत कातने का दृष्टान्त

भट परो तिन नींद को, जिन सोहागनियां दैयां भुलाए।
तो भी नींद निगोड़ी ना उड़ी, जो धनी थके बुलाए बुलाए।। १ ।।

ऐसी माया (नींद) को आग लग जाए जिसने ब्रह्मसृष्टियों को भुला दिया है। धनी बार-बार बुलाकर थक गए पर इस बेहया नींद ने सुन्दरसाथ को नहीं छोड़ा।

ए नींद अमल कासों कहिए, क्योंए ना छोड़े आतम।
तो भी बेसुधी ना टली, जो जल बल हुई भसम।। २ ।।

इस बेशर्म नींद के नशे को किस से कहें? यह आत्मा को छोड़ती ही नहीं है। इसका बल जलकर भस्म हो जाने पर भी इसके नशे के कारण बेसुधी नहीं हटती।

वतन से आइयां सैयां, सबे बांध के होड़।
सो याद न रह्या कछुए, इन नीदें दैयां सब तोड़।। ३ ।।

परमधाम से सब सखियां शर्त (होड़) लगाकर आई थीं कि हम संसार में जाकर धनी को नहीं भूलेंगे, परन्तु यहां आकर कुछ भी याद नहीं रहा। इस माया ने (माया के तनों ने) उन सबके विश्वास को तोड़ दिया।

तुमको नींद उड़ावने, मैं देऊं एक दृष्टांत।
तुम विध अगली देखके, जो कदी समझो इन भांत।। ४ ।।

हे सुन्दरसाथजी! मैं आपके अज्ञान की नींद उड़ाने के लिए एक दृष्टान्त देती हूं, जिसकी हकीकत देखकर शायद आप समझ जाओगे कि यही हालत तुम्हारी है।

आइयां आस कातन की, करके उमेद दूनी।
किनहूं कात्या बारीक, किन रूईथें न करी पूनी।। ५ ।।

दुगना सूत कातने के वास्ते सखियां परमधाम से माया में आई थीं। उनमें से किसी ने बारीक काता और किसी ने रूई से पूनी भी नहीं बनाई!

नोट—सूत कातने का अर्थ यहां रूई कातने से नहीं है। माया में रहकर केवल अपने प्रीतम को याद करने से है।

आइयां कातन वालियां, मिनो मिने रब्द कर।
किन किन मिहीं कातिया, सांचा सनेह धर।। ६ ।।

सूत कातने के लिए सब सखियां शर्त लगाकर आई थीं। किसी-किसी ने दिल में सच्ची लगन (प्यार) लेकर बारीक सूत काता।

कोई बड़ाई ले बैठियां, सो गैयां आपको भूल।
उठियां अंग पछताए के, होए सूरत बेसूल।। ७ ।।

कोई सखी बड़प्पन लेकर बैठी रही और सूत कातना भूल गई। वह पीछे पछताकर उठेगी और उसकी शक्ल घबराई हुई होगी।

Nijanand App

किनहूं कात्या सोहाग का, सूत भर भर सेर।
कोई बैठियां पांउ पसार के, ले बैठी हिरदे अंधेर।। ८ ।।

किसी किसी ने अपने धनी को रिझाने के लिए किलो भर सूत काता। कोई तो माया में ही मग्न हो गई और धनी को भूल गई।

कोई तलबें तांत चढ़ावहीं, भले पाई ए बेर।
कोई नीचा सिर कर रही, कोई चढ़ियां सिर मेर।। ९ ।।

कोई सोचती हैं अच्छा समय मिला है और बड़ी चाहना से तकले पर सूत चढ़ाती हैं और कोई निर्लज्जता से सिर नीचा करके बैठी हैं। कोई अधिक सूत कातकर सिर ऊंचा किए बैठी हैं।

एक सूत देखे और के, उमर सब गई।
फेरा देवें रूपवंतियां, कबूं पूनी हाथ न लई।। १० ।।

किसी ने दूसरों के सूत देखने में ही उम्र गंवा दी (गुण-अवगुण देखती रहीं)। उन्होंने कईयों चरखे को खाली घुमाकर समय गंवा दिया और अपने हाथ में पूनी तक नहीं ली (कुछ किया ही नहीं)।

कोई सोए रहियां आतन में, उठियां तब उदमाद।
दुख पाया तब दिल में, जब सूत आया याद।। ११ ।।

कोई आतन भवसागर में आकर सो गईं। जब खुमारी लेकर उठीं और सूत की याद आई, तो दिल में दुःख पाया।

जिन दिल दे मिहीं कातिया, ढ़ील न करी एक पल।
सो ए उठी सैंयन में, हंसते मुख उजल।। १२ ।।

जिन्होंने एक पल को भी व्यर्थ नहीं गंवाया और दिल से बारीक सूत काता, वह जब परमधाम में उठेंगी तो उज्जवल मुख से हंसते-हंसते उठेंगी।

किनहूं ऊंचा कातिया, दे फारी फुकार।
सो ए घरों सैयनमें, हुई धंन धंन कातनहार।। १३ ।।

किसी ने बड़ी मेहनत से कीमती सूत काता। ऐसा कातने वाली अपने घर सखियों में धन्य-धन्य होगी।

जब सूत सैयां देखिया, तब जाहेर हुईयां सब कोए।
पर जिन कछूए न कातिया, छिपाए रही मुख सोए।। १४ ।।

जब सखियों ने एक-दूसरे के सूत को देखा, तब सब एक-दूसरे की हकीकत को जान गई, पर जिन्होंने कुछ भी नहीं काता, वह मुंह छिपाकर खड़ी रहीं (शर्मसार हुई)।

सूतवाली सोहागनी, तिन सोभा पाई घनी।
सैयां भी कहे धंन धंन, और दियो मान धनी।। १५ ।।

जिन सखियों ने यह अधिक सूत काता है उनको बहुत मान मिला। उनके धनी भी उनको धन्य-धन्य कहते हैं और सखियां भी धन्य-धन्य कहती हैं।

एक फेरे चरखा उतावला, दिल बांध तांत के साथ।
रातों भी करे उजागरा, सूत होवे तिनके हाथ।। १६ ।।

कुछ सखियां चरखे को बड़ी तेजी से घुमाती हैं और उनका चित्त सूत के साथ लगा है। यह रात को भी जागती हैं तो सूत उनके हाथ में ही रहता है।

Nijanand App

करे जो बातां बीच में, सो तांत न निकसे तिन।
पूनी रही तिन हाथ में, बैठी फिरावे मन॥ १७ ॥

जो बीच में बातें करती रहती हैं उनके हाथ से सूत निकलता ही नहीं है। हाथ में उनके पूनी ही रह जाती है। इसी में अपने मन को लगाए रहती हैं।

फजर हुई बीच सैयनमें, मिल बातां करसी सब।
जिन कछुए न कातिया, तिन कहा हाल होसी तब॥ १८ ॥

प्रातः काल में जब सखियां मिलकर बातें करेंगी तब जिन्होंने कुछ नहीं काता उनका क्या हाल होगा?

न कछू कात्या रात में, न कछू कात्या दिन।
सो वतन बीच सैयनमें, मुख नीचा होसी तिन॥ १९ ॥

जिन्होंने दिन में या रात में कुछ भी सूत नहीं काता है, घर में सखियों के बीच बैठकर उनके मुख नीचे (शर्मिंदा) होंगे।

जो मोटा या बारीक, तिन भी पाया मोल।
पर जिन कछुए न कातिया, तिनका कछुए न सूल॥ २० ॥

जिन्होंने मोटा या बारीक कुछ भी सूत काता है, उन्हें भी कुछ मूल्य (मोल) मिला, जिन्होंने कुछ भी नहीं काता उनकी क्या दशा होगी?

हुकम धनी के बिध बिध, अनेक किए पुकार।
जिन सुनी न तिन की वतन में, बातें हुई बिकार॥ २१ ॥

धनी के हुकम से तरह-तरह से सबको समझाया गया, पर जिन्होंने उनकी बातों को नहीं सुना, घर (परमधाम) में वह बुरी हालत में होंगी, उनका रूप बिगड़ा हुआ होगा।

सुनते पुकार धनीयकी, काल गया दिन ले।
पीछे मुख नीचा होएसी, क्यों न कात्या चित दे॥ २२ ॥

धनी की वाणी सुनकर भी जिन्होंने उम्र गंवाई, उनका मुख शर्म से नीचे होगा। वह पश्चाताप करेंगी कि हमने चित्त देकर सूत क्यों नहीं काता?

जिनो आज न कातिया, करसी याद ए दिन।
जब बातां करसी सोहागनी, मिलकर बीच वतन॥ २३ ॥

जिन्होंने आज का दिन गंवा दिया और सूत नहीं काता, वे सखियों के बीच बैठकर अपनी भूल पर पछताएंगी।

जो कछुए न समझी, हाथ न लई पूनी।
आई थी उमेद में, पर उठी अलूनी॥ २४ ॥

जिन्होंने धनी को कुछ भी नहीं पहचाना उन्होंने हाथ में पूनी भी नहीं ली, वह घर से बड़ी चाहना लेकर आई थीं, पर उदासी के साथ उठीं।

एक लेसी सोहाग सुलतान का, सोई सोहागिन।
सो बातां सिर उठाए के, करसी बीच सैयन॥ २५ ॥

एक धनी का प्यार पाएगी। वही सुहागिनी है और वही सिर ऊंचा कर अपनी सखियों में बात करेगी।

॥ प्रकरण ॥ २५ ॥ चौपाई ॥ ६१५ ॥

Nijanand App

भट परो नींद मोह की, जो टाली न टले क्यों।
आंखां खोल सीधा कहे, फेर वली त्यों की त्यों।। १ ।।

इस मोह की नींद को आग लग जाए, यह किसी तरह से नहीं हटती। होश में आकर कुछ संभलती भी है तो फिर माया में जैसी की तैसी ही बेहोश हो जाती है।

एक तकला भाने ताओ में, फोकट फेरा खाए।
झगड़ा लगावे आप में, हिरदे रस न जुबांए।। २ ।।

एक क्रोध में आकर तकला तोड़ देती है और व्यर्थ में घूमती फिरती है। आपस में (पार्टी बनाती है) लड़वाती है। उनके हृदय में या जबान में प्रेम नहीं होता।

एक तकले समारे और के, लर लर कतावे।
कहे अपनायत जान के, समया बतावे।। ३ ।।

एक ऐसी मददगार होती है कि अपना कातने के साथ-साथ दूसरे के तकलों को भी संवारती है और लड़-लड़कर उनसे सूत कतवाती है। वह ऐसा अपनापन (अपना साथ) जानकर करती है और समय का महत्व बताती है।

एक झगड़ा लगावे और को, सामी तकले डाले वल।
ए बातें होसी वतन में, जब उतर जासी अमल।। ४ ।।

एक ऐसी है जो आपस में लड़वा कर उनके तकले टेढ़े कर देती है। जब माया का नशा उतर जाएगा तो यह सब बातें घर में होंगी।

एक औरों को उलटावहीं, कहा बिध होसी तिन।
कातना उन पीछा पड़या, सामी धके दिए औरन।। ५ ।।

एक ऐसी है जो दूसरों को उलटा रास्ता बताती है। उसका क्या हाल होगा? स्वयं भी कातने में पीछे रह गई तथा सामने से औरों को भी धक्के मारे।

जो झगड़ा लगावें आपमें, ताए होसी बड़ो पछताप।
ओ जानें कोई ना देखहीं, पर धनी बैठे देखें आप।। ६ ।।

एक ऐसी है जो आपस में झगड़ती है। उसे पछताना पड़ेगा। वह समझ बैठी है कि और कोई नहीं देखता, पर धनी सबके अन्दर बैठे देख रहे हैं। इसकी उसको खबर नहीं है।

बात उठावें जो मन से, सो होसी सबे वतन।
एक जरा छिपी ना रहे, यों कोई भूलो जिन।। ७ ।।

जो झूठी बातें उठा-उठाकर आरोप लगाती हैं, उन सबकी बातें घर में होंगी। वहां कोई भी बात छिपी नहीं रहेगी, इसलिए भूल न करो।

एक काते मांहें चुपकतियां, सो ताने सहे औरन।
तांत चढ़ावे तलबें, नजर ना चूके खिन।। ८ ।।

एक चुपचाप कात रही है। दूसरों के ताने सहती है। सूत बड़ी चाहना से कात रही है। वह अपनी नजर तकले और तांत से एक क्षण के लिए भी नहीं हटाती।

Nijanand App

ताए होसी मान धनीय को, साथ मिने रंग लाल।
उठसी हंसती हरख में, पांउ दे पड़ताल।। ९ ।।

ऐसी सखी को धनी का प्यार तथा सुन्दरसाथ में मान मिलेगा। वह बड़ी खुशी से धरती पर पाँव की पड़ताल देकर उठेगी।

हाथ घससी हाथसो, जो लई इंद्रियों घेर।
सो पछतासी आंखां खुले, पर ए समया न आवे फेर।। १० ।।

जो इन्द्रियों के सुख में लिप्त रही, वह हाथ मलती उठेगी। वह आंखें खुलने पर पछताएगी। यह समय दुबारा नहीं मिलेगा।

जो इत आंखां खोलसी, ले इस्क या विचार।
सो करसी बातें बिध बिध की, सब सैयों में सिरदार।। ११ ।।

जो यहां पर धनी की वाणी या इश्क लेकर जागृत होंगी, वह साथ में सिरदार (प्रमुख) होकर तरह-तरह की बातें करेंगी।

जिन इत आंखां ना खोलियां, करके बल बेसुमार।
नींद उड़ाए ना सकी, सो ले उठसी खुमार।। १२ ।।

जिन्होंने अपना बल कर अपनी आंखें नहीं खोलीं, वह माया को दूर नहीं कर सकीं और वह खुमारी में ही उठेंगी।

जिन इत उड़ाई नींदड़ी, सो उठत अंग रोसन।
केहेसी कातनहार को, विध विध के वचन।। १३ ।।

और जिन्होंने नींद को भगा दिया है, उनके अंग खुशी से भरे होंगे और कातने वाली सखियों के बीच तरह-तरह की बातें करेंगी।

जो उठसी आंखां चोलती, सो केहेसी कहा वचन।
ना तो आई थी उमेद देखने, पर नींद ना गई तिन।। १४ ।।

जो घर में आंखें मलती-मलती उठेंगी वह दूसरों को क्या कहेंगी? यहां आई तो बड़ी चाहना लेकर थीं पर वह नींद को वश में न कर सकीं।

सुनो सैयां कहे इंद्रावती, तुम आईयां उमेद कर।
अब समझो क्यों न पुकारते, क्यों रहियां नींद पकर।। १५ ।।

श्री इन्द्रावतीजी साथ को कहती हैं कि तुम परमधाम से चाहना करके आई थीं और यहां पर जगाने पर भी क्यों नहीं जागतीं। माया पकड़कर क्यों बैठी हो।

तुम वतन में धनीयसों, क्यों करसी बात अंधेर।
रेहेसी उमेदां मन में, ए न आवे समया और बेर।। १६ ।।

घर में जागने पर इस माया की बातें धनी से कैसे करोगी? तुम्हारे मन में चाहना बाकी रह जाएगी और फिर दुबारा यह समय नहीं मिलेगा।

कातने को उतावलियां, आईयां मिलकर तुम।
अब झूलो रहियां नींद में, कातना भूल खसम।। १७ ।।

हे सखियो! तुम बड़ी तेजी से कातने के लिए आई थीं, किन्तु धनी की याद को (कातना) भूलकर नींद में झूल रही हो।

Nijanand App

धनी आए जगावहीं, कहे कहे अनेक सनंध।
नींदें सब भुलाइयां, सेवा या सनमंध।। १८ ।।

धनी आकर हर तरह से वाणी सुनाकर तुम्हें जगा रहे हैं। इस माया ने सेवा और मूल सम्बन्ध सब भुला दिया।

ए जिमी लगसी आग ज्यों, जब धनी चले घर।
वचन पिउ के लेयके, इत क्यों न जागो मांहें अवसर।। १९ ।।

धनी के घर जाने के बाद यह जमीन आग जैसी लगेगी। इसलिए, हे सुन्दरसाथजी! यह सुन्दर अवसर आपके हाथ में है। धनी की वाणी सुनकर जागते क्यों नहीं हो?

भट परो इन नींद को, ए ठौर बुरी विखम।
यों जगावते न जागियां, तो कौन विध होसी तिन।। २० ।।

आग लग जाए ऐसी माया के संसार को, जहां जहर भरी जमीन है। जो यहां जगाने पर भी नहीं जागेगी तो उनका घर चलकर क्या हाल होगा?

तुम देखो भांत धनीय की, कई विध करी चेतन।
सबों सुनाए कहे इंद्रावती, जागो चलो वतन।। २१ ।।

हे साथजी! तुम धनी की मेहर को देखो। धनी ने कई तरह से तुम्हें चेतन किया है। यह वचन सबको सुनाकर श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, साथजी! जागो और घर चलो।

साहेब मांहें बैठ के, बतावत हैं ठौर।
सो घर तुमको देखाइया, जहां नहीं कोई और।। २२ ।।

धनी अपने बीच बैठकर घर का ठिकाना बताते हैं। वह घर तुम्हें दिखाया है जहां अपने सिवाय कोई और नहीं है।

।। प्रकरण ।। २६ ।। चौपाई ।। ६३७ ।।

अब तूं जिन भूल आतम मेरी, पेहेचान के खसम।
वतन देखाया अपना, जिन छोड़े पिउ कदम।। १ ।।

हे मेरी आत्मा! धनी की पहचान करने के बाद अब मत भूलना। धनी ने अपने घर की पहचान करा दी है। अब उनके चरण कमलों को नहीं छोड़ना।

वचन कहे बड़े मुखथें, पर तूं तो समया न भूल।
तूं कात बारीक धनीय का, ए तातें पावेगी मूल।। २ ।।

तुमने अपने मुख से बड़ी-बड़ी बातें की थीं। तू तो अब न भूल और अपने धनी का बारीक सूत कात। इसकी कीमत तुझे मिलेगी।

अजूं तें पाओ न कातिया, इत चाहिएगा सेर भर।
जब उठेगी आतन से, तब बहुरि चाहेगी अवसर।। ३ ।।

अभी तूने पाव भर भी नहीं काता और वहां तो सेर (किलो) भर चाहिए। जब तू आतन (भवसागर) से उठेगी, फिर इस समय को ललचाएगी कि और क्यों नहीं काता?

ए जो गमाए दिनड़े, गफलत में जो गल।
अब तोको उठन के, आए सो दिनड़े चल।। ४ ।।

इतने दिन तूने माया में लिप्त होकर गंवा दिए। अब तेरे घर चलने के दिन आ गए हैं।

Nijanand App

धनी आए जगावहीं, कहे कहे अनेक सनंध।
नींदें सब भुलाइयां, सेवा या सनमंध।। १८ ।।

धनी आकर हर तरह से वाणी सुनाकर तुम्हें जगा रहे हैं। इस माया ने सेवा और मूल सम्बन्ध सब भुला दिया।

ए जिमी लगसी आग ज्यों, जब धनी चले घर।
वचन पिउ के लेयके, इत क्यों न जागो मांहें अवसर।। १९ ।।

धनी के घर जाने के बाद यह जमीन आग जैसी लगेगी। इसलिए, हे सुन्दरसाथजी! यह सुन्दर अवसर आपके हाथ में है। धनी की वाणी सुनकर जागते क्यों नहीं हो?

भट परो इन नींद को, ए ठौर बुरी विखम।
यों जगावते न जागियां, तो कौन विध होसी तिन।। २० ।।

आग लग जाए ऐसी माया के संसार को, जहां जहर भरी जमीन है। जो यहां जगाने पर भी नहीं जागेगी तो उनका घर चलकर क्या हाल होगा?

तुम देखो भांत धनीय की, कई विध करी चेतन।
सबों सुनाए कहे इंद्रावती, जागो चलो वतन।। २१ ।।

हे साथजी! तुम धनी की मेहर को देखो। धनी ने कई तरह से तुम्हें चेतन किया है। यह वचन सबको सुनाकर श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, साथजी! जागो और घर चलो।

साहेब मांहें बैठ के, बतावत हैं ठौर।
सो घर तुमको देखाइया, जहां नहीं कोई और।। २२ ।।

धनी अपने बीच बैठकर घर का ठिकाना बताते हैं। वह घर तुम्हें दिखाया है जहां अपने सिवाय कोई और नहीं है।

।। प्रकरण ।। २६ ।। चौपाई ।। ६३७ ।।

अब तूं जिन भूल आतम मेरी, पेहेचान के खसम।
वतन देखाया अपना, जिन छोड़े पिउ कदम।। १ ।।

हे मेरी आत्मा! धनी की पहचान करने के बाद अब मत भूलना। धनी ने अपने घर की पहचान करा दी है। अब उनके चरण कमलों को नहीं छोड़ना।

वचन कहे बड़े मुखथें, पर तूं तो समया न भूल।
तूं कात बारीक धनीय का, ए तातें पावेगी मूल।। २ ।।

तुमने अपने मुख से बड़ी-बड़ी बातें की थीं। तू तो अब न भूल और अपने धनी का बारीक सूत कात। इसकी कीमत तुझे मिलेगी।

अजूं तें पाओ न कातिया, इत चाहिएगा सेर भर।
जब उठेगी आतन से, तब बहुरि चाहेगी अवसर।। ३ ।।

अभी तूने पाव भर भी नहीं काता और वहां तो सेर (किलो) भर चाहिए। जब तू आतन (भवसागर) से उठेगी, फिर इस समय को ललचाएगी कि और क्यों नहीं काता?

ए जो गमाए दिनड़े, गफलत में जो गल।
अब तोको उठन के, आए सो दिनड़े चल।। ४ ।।

इतने दिन तूने माया में लिप्त होकर गंवा दिए। अब तेरे घर चलने के दिन आ गए हैं।

Nijanand App

जो तूं उठी काते बिना, आए इन अवसर।
कहा करेगी इन नींद को, जो ले चलसी घर।। ५ ।।

ऐसा अवसर हाथ आने पर यदि तू काते बिना उठेगी तो इस माया को घर में ले जाकर क्या करेगी?

अजूं न जागे जोर कर, जो ऐसी तुझ पर भई।
धनी आए बेर दूसरी, तेरी सुध ऐसी क्यों गई।। ६ ।।

तुझे क्या हो गया है कि धनी आए और चले गए, फिर भी तू हिम्मत करके नहीं जागती। धनी दूसरी बार तन धारण करके आए हैं। तेरी सुध ऐसी क्यों हो गई?

कर सीधा समार तकला, कस कर बांध अदवान।
दे गांठ माल मरोर के, पूनी लगाए के तान।। ७ ।।

हे सखी! तू तकला सीधा करके चरखे को संभाल। कसकर डोरी (अदवान) बांध और माल को डोरी में मरोड़कर गांठ लगा कि वह खुले नहीं। पूनी तकले से लगाकर सूत खींचो।

फेर तूं चरखा उतावला, करके अंग कूवत।
तूं लेसी सोहाग धनीय को, तेरे बारीक इन सूत।। ८ ।।

तू अपने चरखे को ताकत से तेजी से घुमा। तेरे इस बारीक सूत कातने से धनी का प्यार तुझे मिलेगा।

ऐ रेहेसी अधबीच कातना, दिन आए समें करे भंग।
तुझ देखत सैयां चलियां, जो हुती तेरे संग।। ९ ।।

हे सखी! समय पूरा होने पर तेरा कातना अधूरा रह जाएगा। तेरे देखते ही देखते तेरे साथी चले गए।

अब हिंमत करके कात तूं, दिल बांध सूत के साथ।
ए मिहीं सूत सोहाग का, सो होसी तेरे हाथ।। १० ।।

चित्त लगाकर हिम्मत से सूत कातो, निश्चित ही तुमसे बारीक सूत कतेगा और धनी का प्यार मिलेगा।

अब नींद करे जिन तूं, ए नींद देवे दुहाग।
उठ तूं जाग जोर कर, दौड़ ले पिउ सोहाग।। ११ ।।

अब नींद करने का समय नहीं है। यह नींद दु:खी करेगी, इसलिए जोर लगाकर जागो और धनी का प्यार लो।

ए सूत है अति सोहना, मोल मोहोंगा होसी एह।
तूं पहचान पिउ अपना, वार फेर जीव देह।। १२ ।।

तेरा यह सूत बहुत अच्छा है। इसकी कीमत अच्छी मिलेगी। इसलिए अपने धनी को पहचान और अपने जीव को उन पर कुर्बान कर दे।

अब ले स्याबासी सैयनमें, कर तूं ऐसी भांत।
एह मिहों सूत सोहाग का, सो रात दिन ले कात।। १३ ।।

हे सखी! अब तू ऐसा करके रात-दिन मेहनत करके बारीक सूत कात। जिससे धनी प्यार देंगे और सखियों से शाबाशी मिलेगी।

।। प्रकरण ।। २७ ।। चौपाई ।। ६५० ।।

Nijanand App

भोरी तूं न भूल इंद्रावती, ऐसा पिउ का समया पाए।
तूं ले धनी अपना, औरों जिन देखाए।। १ ।।

हे भोली इन्द्रावती! तूने ऐसा सुन्दर समय प्राप्त किया। पिया को भूलना नहीं। तुम धनी को अपना लो और औरों को मत दिखाओ।

तोहे यों धनी कब मिलसी, पेहेचान के ले सोहाग।
ऐसी एकांत कब पावेगी, अब है तेरा लाग।। २ ।।

हे इन्द्रावती! तुझे इस तरह से धनी कब मिलेंगे? तू अपने धनी को पहचान कर सुख ले। ऐसा एकान्त समय भी कब पाएगी? अब तो तेरे सुख लेने का समय है। मौका तेरे हाथ है।

बोहोत वखत भला पाइया, धनिऐं दियो तुझे आप।
मेहेर करी मेहेबूबें, करके संग मिलाप।। ३ ।।

हे इन्द्रावती! धनी तुझ पर कृपा करके तुझ से मिले हैं। ऐसा सुन्दर मौका धनी ने खुद दिया है।

आंखां खोल के ढांपिए, जिन चूके एती बेर।
रात दिन तेरे राज का, सूत कात सवा सेर।। ४ ।।

आंखें खोलकर मूंदने में जितना समय लगता है, उतना समय भी नहीं गंवाना चाहिए। अपने धनी को रिझाने के लिए रात-दिन सवा सेर (किलो) सूत कातो।

नेह कर तूं नैनों से, और चसमें से कताए।
मिहीं सूत ले उजला, आओ आंखें कर पाए।। ५ ।।

तू इस वाणी से प्यार कर और ज्ञान का चश्मा लगाकर बारीक व उज्जवल सूत कात। ज्ञान से आंखें खोलकर धनी को पहचान लो और अपनी आंखों में प्रेम लेकर घर आओ।

भले कात्या इन सूत को, भला पाया ए बखत।
भले सो भागी नींदड़ी, भले मिले धनी इत।। ६ ।।

यह बहुत ही अच्छा समय मिला कि धनी हमको यहां मिले। हमारी नींद भाग गई जिससे इतना अच्छा सूत कात सकी।

धनी बिना ए नींदड़ी, टाल न सके कोई और।
वार डारों जीव देह सों, मोहे धनी मिले इन ठौर।। ७ ।।

धनी के बिना इस माया की नींद को कोई नहीं हटा सकता था। मैं अपने जीव और तन को धनी के चरणों पर कुर्बान करती हूं जो मुझे यहां आकर मिले हैं।

सई मेरी मुझ कारने, पिउजी दिए इत पाए।
मैं वारूं तिन पर आतमा, धनी आए जिन राहे।। ८ ।।

हे मेरी बहन! (रतनबाई—बिहारीजी) पिया ने मेरे लिए माया का तन धारण किया। मैं उस रास्ते पर बलिहारी जाती हूं जिस रास्ते से धनी आए हैं।

सई तूं मेरा धनी ले बैठी, कोई और न देखनहार।
देख तूं पिउ लेऊं अपना, तो तूं कहियो सोहागिन नार।। ९ ।।

हे बहन! (रतनबाई—बिहारीजी) तू गद्दी पर मेरे धनी के नाम को लेकर बैठी है। जहां कोई और पहचान करने वाला नहीं है। अब मैं अपने धनी को लेकर दिखाऊं तो मुझे सुहागिनी नारी कहना।

Nijanand App

इंद्रावती कहे तूं सई मेरी, धनी मिले मुझे इत।
पिउ ने सब पूरन करी, जो मैं करी उमेदा तित।।१०।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, तू मेरी सखी है। सुन, धनी मुझे यहां माया में मिले हैं। मैंने जो जो चाहना परमधाम में की थी वह सब उन्होंने यहां पूरी कर दी है।

सई तूं मेरी बाई रतन, मोहे मिले छबीले लाल।
करी मुझे सोहागनी, अब मैं भई निहाल।।११।।

हे मेरी बहन रतनबाई! (बिहारीजी) मुझे सुन्दर लाड़ले धनी मिल गए हैं। मुझे उन्होंने अविधार (अंगीकार) कर सुहागवंती बनाया है। अब मैं असीम प्रसन्न हूं।

मैं एक विध मांगी पिउ पे, पिउ ने कई विध करी रोसन।
बातें इन रोसन की, करसी जाए वतन।।।१२।।

मैंने तो धनी से एक ही बात मांगी थी (कि मुझे धाम क्यों नहीं दिखता)। अब धनी ने आकर कुल वाणी ही मेरे अन्दर रख दी। अब इस ज्ञान की बातें घर चलकर करेंगे।

।। प्रकरण ।। २८ ।। चौपाई ।। ६६२ ।।

लखमी जी को दृष्टांत

मैं जानूं निध एकली लेऊं, धाम धनी मेरे जीव में ग्रहूं।
ए सुख और काहूं ना देऊ, फेर फेर तुमको काहे को कहूं।।१।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि मेरे मन में इच्छा है कि धनी को अपने तन में बिठाकर अकेली ही आनन्द लूं और यह सुख किसी और को न दूं। हे साथजी! मैं तुमको बार-बार जगाने को क्यों कहूं और यह सुख मैं किसी को क्यों दूं?

ए वचन यों कहे न जाए, जीव दुख पावे ना कहे जुबांए।
एह फिकर मैं बोहोतक करूं, पर देह ना पकड़े जो हिरदे धरूं।।२।।

यह वचन इस तरह से नहीं कहे जाते। इनको कहने से जीव बड़ा दुःखी होता है। यह जबान पर ही नहीं आते। इसकी मैं बहुत चिन्ता करती हूं, किन्तु माया का मेरा यह तन इन वचनों को पकड़कर हृदय में नहीं छिपा सकता।

धनी कहावे तो यों कहूं, ना तो ए सुख औरों क्यों देऊं।
ए देते मेरा जीव निकसे, ए बानी मेरे जीव में बसे।।३।।

धनी कहलाते हैं तो यह कहती हूं, नहीं तो यह सुख किसी और को क्यों दूं? यह धनी की वाणी मेरे जीव के अन्दर रहती है। इस वाणी को कहते ऐसा लगता है जैसे मेरा जीव ही निकल जाएगा।

ए निध लई मैं कसनी कर, श्री धाम धनी चरणों चित धर।
मैं बोहोतक करूं अंतर, पर सागर पूर प्रगट करे घर।।४।।

इस वाणी (न्यामत) को मैंने धनी के चरणों को चित्त में लेकर बड़ी कठिनाई से पाया है और इसे बहुत छिपाना चाहती हूं, पर सागर के पूर (प्रवाह) की तरह यह वाणी घर की सुध देती है।

ए बानी धनी अंतरगत कही, केहेने की सोभा कालबुत को भई।
ना तो एह वचन क्यों कहे जाएं, अंदर कलेजे ज्यों लगे घाए।।५।।

यह वाणी मेरे धनी मेरे अन्दर बैठकर स्वयं कह रहे हैं। मेरे शरीर को मात्र शोभा दे रहे हैं, नहीं तो यह वाणी इतनी सरलता से नहीं कही जाती। मेरे कलेजे में चोट लगती है।

Nijanand App

इंद्रावती कहे तूं सई मेरी, धनी मिले मुझे इत।
पिउ ने सब पूरन करी, जो मैं करी उमेदा तित।।१०।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, तू मेरी सखी है। सुन, धनी मुझे यहां माया में मिले हैं। मैंने जो जो चाहना परमधाम में की थी वह सब उन्होंने यहां पूरी कर दी है।

सई तूं मेरी बाई रतन, मोहे मिले छबीले लाल।
करी मुझे सोहागनी, अब मैं भई निहाल।।११।।

हे मेरी बहन रतनबाई! (बिहारीजी) मुझे सुन्दर लाड़ले धनी मिल गए हैं। मुझे उन्होंने अविधार (अंगीकार) कर सुहागवंती बनाया है। अब मैं असीम प्रसन्न हूं।

मैं एक विध मांगी पिउ पे, पिउ ने कई विध करी रोसन।
बातें इन रोसन की, करसी जाए वतन।।१२।।

मैंने तो धनी से एक ही बात मांगी थी (कि मुझे धाम क्यों नहीं दिखता)। अब धनी ने आकर कुल वाणी ही मेरे अन्दर रख दी। अब इस ज्ञान की बातें घर चलकर करेंगे।

।। प्रकरण ।। २८ ।। चौपाई ।। ६६२ ।।

लखमी जी को दृष्टांत

मैं जानूं निध एकली लेऊं, धाम धनी मेरे जीव में ग्रहूं।
ए सुख और काहूं ना देऊ, फेर फेर तुमको काहे को कहूं।।१।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि मेरे मन में इच्छा है कि धनी को अपने तन में बिठाकर अकेली ही आनन्द लूं और यह सुख किसी और को न दूं। हे साथजी! मैं तुमको बार-बार जगाने को क्यों कहूं और यह सुख मैं किसी को क्यों दूं?

ए वचन यों कहे न जाए, जीव दुख पावे ना कहे जुबांए।
एह फिकर मैं बोहोतक करूं, पर देह ना पकड़े जो हिरदे धरूं।।२।।

यह वचन इस तरह से नहीं कहे जाते। इनको कहने से जीव बड़ा दुःखी होता है। यह जबान पर ही नहीं आते। इसकी मैं बहुत चिन्ता करती हूं, किन्तु माया का मेरा यह तन इन वचनों को पकड़कर हृदय में नहीं छिपा सकता।

धनी कहावे तो यों कहूं, ना तो ए सुख औरों क्यों देऊं।
ए देते मेरा जीव निकसे, ए बानी मेरे जीव में बसे।।३।।

धनी कहलाते हैं तो यह कहती हूं, नहीं तो यह सुख किसी और को क्यों दूं? यह धनी की वाणी मेरे जीव के अन्दर रहती है। इस वाणी को कहते ऐसा लगता है जैसे मेरा जीव ही निकल जाएगा।

ए निध लई मैं कसनी कर, श्री धाम धनी चरणों चित धर।
मैं बोहोतक करूं अंतर, पर सागर पूर प्रगट करे घर।।४।।

इस वाणी (न्यामत) को मैंने धनी के चरणों को चित्त में लेकर बड़ी कठिनाई से पाया है और इसे बहुत छिपाना चाहती हूं, पर सागर के पूर (प्रवाह) की तरह यह वाणी घर की सुध देती है।

ए बानी धनी अंतरगत कही, केहेने की सोभा कालबुत को भई।
ना तो एह वचन क्यों कहे जाएं, अंदर कलेजे ज्यों लगे घाए।।५।।

यह वाणी मेरे धनी मेरे अन्दर बैठकर स्वयं कह रहे हैं। मेरे शरीर को मात्र शोभा दे रहे हैं, नहीं तो यह वाणी इतनी सरलता से नहीं कही जाती। मेरे कलेजे में चोट लगती है।

Nijanand App

जिन जानो वचन अचेत में कहे, ए केहेते अनेक दुख भए।
जब मैं विचारूं चित में आन, ए कैसी मुख निकसी वान।।६।।

ऐसा नहीं समझना कि मैं बेहोशी में बोल रही हूं। इसको कहने में मुझे बहुत कठिनाई होती है। जब मैं चित्त में विचार करके देखती हूं तो लगता है कि ऐसी वाणी मेरे मुख से कैसे निकली?

मेरी बुधें लुगा न निकसे मुख, धनी जाहेर करें अखंड घर सुख।
अब साथ कछुक करो तुम बल, तो पूरन सोभा ल्यो नेहेचल।।७।।

मेरी बुद्धि से तो एक शब्द भी नहीं निकलता। यह तो धनी हैं जो अन्दर बैठकर घर के अखण्ड सुख बता रहे हैं। हे साथजी ! अब तुम भी कुछ हिम्मत करो और परमधाम के सब सुख लो।

ए बोहोत भांत है भारी वचन, जो कदी देखो आप होए चेतन।
इन वचन पर एक कहूं विचार, सुनो साथ मेरे धाम के आधार।।८।।

यदि सावचेत होकर देखो तो यह वचन बहुत भारी हैं। हे मेरे प्राणों के आधार सुन्दरसाथजी ! इन वचनों पर मैं अपना एक विचार बताती हूं।

धड़थें सिर कोई न्यारा करे, तो आधा वचन ना मुखथें परे।
जो कोई सारे सकल संधान, तो कह्या न जाए पाओ लुगा निरवान।।९।।

धड़ से सिर भी कोई अलग कर दे तो भी मुख से आधा वचन भी नहीं कहा जाता। इसी तरह से शरीर के भी सब अंग अलग-अलग कर दिए जाएं तो भी एक शब्द का चौथाई भाग भी नहीं कहा जाता।

साथ कारन जीव सगाई जान, सेवियो धाम धनी पेहेचान।
यों केहेके पकड़ न देवे कोए, यों देते न लेवे सो अभागी होए।।१०।।

हे सुन्दरसाथजी ! मैं तुम्हें अपना साथी जानकर कहती हूं कि धाम धनी की पहचान कर सेवा करना। इस तरह से कहकर धनी को तुम्हारे हाथ में कोई नहीं देगा। ऐसे देने पर भी जो न ले, वह बदनसीब है।

तुम साथ मेरे सिरदार, एह दृष्टांत लीजो विचार।
रोसन वचन करूं प्रकास, सुकजी की साख लीजो विश्वास।।११।।

हे मेरे धाम के सिरदार सुन्दरसाथजी ! एक दृष्टान्त देती हूं। तुम उस पर विचार करना। जो वचन कह रही हूं उसकी गवाही पर शुकदेवजी के वचनों को सुनकर विश्वास करना।

ए देख के नींद टालो भरम, इन वचनों जीव करो नरम।
वचन जीवसो करो विचार, तब सुख अखंड होए आधार।।१२।।

इस दृष्टान्त को सुनकर अपनी भ्रम की नींद को हटाओ और अपने जीव को नरम करो (अपना अहं हटाओ) तथा इन वचनों का जीव से मिलकर विचार करो तो तुम्हें अखण्ड प्रीतम के सुख की प्राप्ति होगी।

पिउ पेहेचान टालो अंतर, परआतम अपनी देखो घर।
इन घर की कहा कहूं बात, वचन विचार देखो साख्यात।।१३।।

धनी को पहचान कर यह माया का परदा उड़ा दो और अपने घर तथा परआतम को देखो। अपने घर की बातों को वचनों से क्या कहूं? खुद (स्वयं) साक्षात् अनुभव करो।

अब जाहेर लीजो दृष्टांत, जीव जगाए करो एकांत।
चौद भवन का कहिए धनी, लीला करे बैकुंठ विखे घनी।।१४।।

अब अपने जीव को जागृत कर ध्यान से इस दृष्टान्त को समझना। चौदह लोकों के जो भगवान विष्णु हैं वह अपने बैकुण्ठ में बैठकर लीला करते हैं।

Nijanand App

लखमी जी सेवे दिन रात, सो ए कहूं तुमको विख्यात।
जो चाहे आप हेत घर, सो सेवे श्री परमेश्वर।। १५ ।।

लक्ष्मीजी इनकी दिन-रात सेवा करती हैं, जिनकी हकीकत तुमको बताती हूं। जो अपनी भलाई चाहते हैं, वह इनको परमेश्वर मानकर सेवा करते हैं।

ब्रह्मादिक नारद कई देव, कई सुर नर करे एह सेव।
ब्रह्मांड विखे केते लेऊं नाम, सब कोई सेवें श्री भगवान।। १६ ।।

ब्रह्मा, नारद, आदि कई देवता तथा मनुष्य इनकी सेवा में लगे रहते हैं। इस ब्रह्माण्ड में और किसके नाम लूं, सब कोई भगवान विष्णु की ही सेवा करते हैं।

ए लीला सेवे कर सार, सेवतां न पावें पार।
पेहेले सेवा करी है घनें, सो देखियो सुकव्यास वचनें।। १७ ।।

लक्ष्मीजी इस तरह से भगवान की सेवा करती हैं कि उनकी सेवा का कोई पार नहीं है। इन्होंने पहले भी बहुत सेवा की है, जो शुकदेव और व्यास की वाणी से देखना।

ए तो है ऐसा समरथ, सेवक के सब सारे अरथ।
अब तुम याको देखो ग्यान, बड़ी मत का धनी भगवान।। १८ ।।

यह विष्णु भगवान समर्थ हैं। अपने सेवकों की सब चाहना पूरी करते हैं। अब तुम इन विष्णु भगवान के ज्ञान को देखो, जो इस संसार में बड़ी बुद्धि वाले कहलाते हैं।

एक समें बैठे धर ध्यान, बिसरी सुध सरीर की सान।
ए हमेसा करे चितवन, अंदर काहूं न लखावे किन।। १९ ।।

एक समय विष्णु भगवान ध्यान में बेसुध होकर बैठे थे। यह तो सदा चितवन करते हैं, परन्तु किसी को बताते नहीं।

ध्यान जोर एक समें भयो, लाग्यो सनेह ढांप्यो न रह्यो।
लखमीजी आए तिन समें, मन अचरज भए विस्मे।। २० ।।

एक समय प्रेम अधिक होने से ध्यान मग्न हो गए। लक्ष्मीजी उसी समय आयीं, यह देखकर मन में आश्चर्य करने लगीं।

आए लखमीजी ठाढ़े रहे, भगवानजी तब जाग्रत भए।
करी विनती लखमीजी ताहें, तुम बिन हम और कोई सुन्या नाहें।। २१ ।।

लक्ष्मीजी तब तक खड़ी रहीं जब तक भगवान जागृत नहीं हुए। उनके सावचेत होने पर लक्ष्मीजी ने कहा, हे स्वामी ! आपके बिना हमने किसी और का नाम नहीं सुना है।

किनका तुम धरत हो ध्यान, सो मोहे कहो श्री भगवान।
मेरे मन में भयो संदेह, कहे समझाओ मोको एह।। २२ ।।

आप किसका ध्यान करते हो ? हे भगवान! मुझे बताओ। मेरे मन में संशय हो गया है। मुझे समझाओ।

कौन सरूप बसे किन ठाम, कैसी सोभा कहो कहा नाम।
ए लीला सुनो श्रवन, फेर फेर के लागों चरन।। २३ ।।

वह कौन-सा स्वरूप है ? कहां रहता है ? कैसी शोभा है ? क्या नाम है ? इस लीला को अपने कानों से सुनना चाहती हूं। ऐसा कहकर लक्ष्मीजी ने चरणों में प्रणाम किया।

Nijanand App

सुनो लखमीजी एह वचन, एह बात प्रकासो जिन।
लखमीजी कहो त्यों करूं, मेरा अंग तुमथे न परूं।। २४ ।।

विष्णु भगवान बोले, हे लक्ष्मीजी वचन सुनो। यह बात मैं नहीं बता सकता, बाकी जो कहो सो करूं। मैं तुमसे कोई अलग नहीं हूं।

सुनो लखमीजी कहूं तुमको, पेहेले सिवे पूछा हमको।
इन लीला की खबर मुझे नांहें, सो क्यों कहूं मैं इन जुबांए।। २५ ।।

सुनो लक्ष्मीजी ! यह बात पहले शिवजी ने भी पूछी थी। इस लीला की मुझे खबर नहीं है। मैं इस जबान से इसका वर्णन कैसे करूं?

एह वचन जिन करो उचार, न तो दुख होसी अपार।
और इतका जो करो प्रश्न, सो चौदे लोक की करूं रोसन।। २६ ।।

इन वचनों को मत पूछो, नहीं तो असीम दुःख होगा। यहां का कोई प्रश्न करो तो चौदह लोकों की बात बताऊं।

जिन आसंका आनो एह, एह जिन पूछो सन्देह।
लखमीजी तुम करो करार, मुखथें वचन न आवे बाहार।। २७ ।।

यह संशय तुम मत लाओ और न ही यह सन्देह वाली बात ही पूछो। लक्ष्मीजी ! तुम धीरज (धैर्य) रखो। यह वचन मेरे मुंह से बाहर नहीं निकलेंगे।

तब लखमीजी बड़ो पायो दुख, कह न सके कलपे अति मुख।
मोसों तो राख्यो अंतर, अब रहूंगी मैं क्यों कर।। २८ ।।

तब लक्ष्मीजी को बहुत दुःख हुआ। मुख से कुछ कह न सकीं और रोने लगीं। विचार करने लगीं कि मुझसे विष्णु भगवान ने अन्तर (छिपाया) किया है। अब मैं कैसे रहूंगी?

नैनों आंसू बहुविध झरे, फेर फेर रमा विनती करे।
धनी एह अंतर सह्यो न जाए, जीव मारो मांहें कलपाए।। २९ ।।

उनकी आंखों से आंसू गिरने लगे। लक्ष्मीजी बार-बार विनती करने लगीं, हे प्रभु ! यह आपका अन्तर मेरे से सहन नहीं होता। मेरा जीव अन्दर से रो रहा है।

अब क्यों कर राखूं जीव हटाए, कलेजा मेरा कटाए।
कंपमान होए कलकले, उठी आह अंतस्करन जले।। ३० ।।

अब मैं अपने जीव को कैसे जीवित रखूं? मेरा कलेजा फट रहा है। कांपते और बिलखते हुए उनके अन्दर से हाय-हाय की सांसें निकलने लगीं।

अब जो धनी करो मेरी सार, तो ए लीला केहेनी निरधार।
बोहोत बेर मने किया सही, अनेक विध सिखापन दई।। ३१ ।।

लक्ष्मीजी बोलीं, हे मेरे धनी ! मेरी सुध लो। यह लीला तो अवश्य ही बतानी पड़ेगी। भगवान ने अनेक बार समझाकर मना किया।

मेरा जीव क्योंए न रहे, लखमीजी फेर फेर यों कहे।
तब बोले श्री भगवान, लखमीजी तूं नेहेचे जान।। ३२ ।।

लक्ष्मीजी कहती हैं, मेरा जीव किसी तरह से नहीं रह सकता। भगवानजी बोले, तुम निश्चय जानो।

Nijanand App

कोटान कोट करो प्रकार, तो एता तुम जानो निरधार।
मेरी जुबां न वले एह वचन, एह दृढ़ करो जीवके मन।। ३३ ।।

तुम करोड़ों उपाय कर लो तो भी यह निश्चय जानो कि मेरी जबान यह वचन निकाल ही नहीं सकती। तुम इसे मन और जीव में दृढ़ करके समझ लो।

लखमीजी कहे सुनो अब राज, मेरे आतम अंग उपजत दाझ।
नहीं दोष तुमारा धनी, अप्राप्त मेरी है घनी।। ३४ ।।

लक्ष्मीजी कहती हैं, हे मेरे नाथ ! सुनो, मेरे अंग में आग लग रही है। हे नाथ ! इसमें तुम्हारा दोष नहीं है। मैं ही उसकी पात्र नहीं हूं।

अब सरीर मेरा क्यों रहे, ए अगनी जीव न सहे।
अब अग्या मांगूं मेरे धनी, करूं तपस्या देह कसनी।। ३५ ।।

मेरा तन कैसे रहेगा? इस आग को जीव सहन नहीं कर सकता। अब मैं इतनी आज्ञा चाहती हूं कि मैं तन को कष्ट देकर तपस्या करूं।

भगवानजी बोले तिन ताओ, लखमीजी बेर जिन ल्याओ।
तब कलप्या जीव दुख अनंत कर, उपज्यो वैराग लियो हिरदे धर।। ३६ ।।

भगवानजी तुरन्त बोले, हे लक्ष्मीजी ! शुभ कार्य में देर मत करो। तब लक्ष्मीजी का मन बहुत दुःखी हुआ तथा मन में वैराग्य हो गया।

लखमीजी को आसा थी घनी, जानों विछोहा न देसी धनी।
अब चरनों लाग लखमीजी चले, प्यादे पांउ रोवे कलकले।। ३७ ।।

लक्ष्मीजी को पूरी आशा थी कि उनके नाथ उनको नहीं छोड़ेंगे। अब चरण लगकर लक्ष्मीजी रोते बिलखते पैदल चल पड़ीं।

इन समें विरह कियो अति जोर, बड़ो दुख पाए कियो अति सोर।
एक ठौर बैठे जाए दमे देह, भगवानजी सों पूरन सनेह।। ३८ ।।

उस समय उन्हें विरह का बड़ा भारी दुःख हुआ। वह दहाड़ मारकर रोने लगीं। एक ठिकाने (स्थान पर) जाकर देह दमन करने लगीं, परन्तु चित्त तो भगवान विष्णु में ही रहा।

सीत धूप बरखा ना गिने, करे तपस्या जोर अति घने।
सनेह धर बैठे एकान्त, एते सात भए कल्पांत।। ३९ ।।

ठण्ड, गर्मी, वर्षा की परवाह न कर जोर से तपस्या में लग गईं। एकान्त में बैठकर भगवान विष्णु के प्रेम में मग्न हो गईं। इस तरह से सात कल्पान्त का समय बीत गया।

तब ब्रह्माजी खीरसागर, आए विष्णु पे बैकुंठ घर।
ए प्रभूजी ए क्या उतपात, लखमीजी तप करे कल्पांत सात।। ४० ।।

तब ब्रह्मा और क्षीरसागर (श्री लक्ष्मीजी के पिता) विष्णुजी के पास वैकुण्ठ में आए और बोले—हे प्रभुजी ! यह क्या झगड़ा है, जो लक्ष्मीजी सात कल्पान्त से तपस्या कर रही हैं?

भगवानजी बोले तब तांहें, दोष हमारा कछुए नांहें।
तो भी वचन तुमको कहे जाए, लखमीजी बोहोत दुख पाए।। ४१ ।।

भगवानजी बोले, इसमें मेरा कोई दोष नहीं है, तब ब्रह्मा और क्षीरसागर दोनों ने कहा, लक्ष्मीजी बहुत दुःखी हैं, कुछ तो बताओ?

Nijanand App

एता रोष तुम ना धरो, लखमीजी पर दया करो।
तुम स्वामी बड़े दयाल, लखमीजी दुख पावे बाल।। ४२ ।।

हे भगवान ! इतना गुस्सा मत करो। लक्ष्मीजी पर कृपा करो। तुम बड़े दयालु हो और लक्ष्मीजी में तो बाल बुद्धि है। वह दुःख पा रही हैं।

स्वामीजी ए ढील करो जिन, लखमीजी बुलाओ ततखिन।
चरन ग्रहे तब खीरसागरें, और फेर फेर ब्रह्मा विनती करे।। ४३ ।।

ब्रह्माजी और क्षीरसागर विष्णु भगवान से विनती करते हैं। हे स्वामी ! देरी मत करो और लक्ष्मीजी को तुरन्त बुलाओ। क्षीरसागर ने चरण पकड़ लिए और ब्रह्माजी विनती करते हैं।

चलो प्रभुजी जाइए तित, बुलाए लखमीजी आइए इत।
तब दया कर आए भगवान, लखमीजी बैठे जिन ठाम।। ४४ ।।

चलो, प्रभुजी वहां चलें और लक्ष्मीजी को यहां बुला लाएं। तब दया करके विष्णु भगवान उस ठिकाने पर, जहां लक्ष्मीजी तपस्या कर रही थीं, आए।

लखमीजी परनाम कर आए, भगवानजी तब सनमुख बुलाय।
लखमीजी चलो जाइए घरे, तब फेर रमा बानी उचरे।। ४५ ।।

लक्ष्मीजी ने प्रणाम किया। भगवानजी ने सामने बुलाया और कहा, चलो, लक्ष्मीजी घर चलो, लक्ष्मीजी फिर बोलीं।

धनी मेरे कहो वाही वचन, जीव बोहोत दुख पावे मन।
जो तप करो कल्पांत एकईस, तो भी जुबां ना वले कहे जगदीस।। ४६ ।।

हे मेरे नाथ ! वही वचन कहो। मेरा जीव बड़ा दुःखी है। भगवानजी कहते हैं कि हे लक्ष्मीजी ! इक्कीस कल्पान्त भी तप करो तो भी मेरी जबान नहीं बोल सकती।

देखलाऊं मैं चेहेन कर, तब लीजो तुम हिरदे धर।
तब ब्रह्मा और खीरसागर दोए, लखमीजी की विनती होए।। ४७ ।।

मैं तुम्हें लीला करके बताऊंगा। तब तुम अपने हृदय में उनका ध्यान कर लेना। तब ब्रह्मा और क्षीर-सागर ने मिलकर कहा, लक्ष्मीजी ! तुम्हारी विनती स्वीकार हो गई।

लखमीजी उठो तत्काल, दया करी स्वामी दयाल।
अब जिन तुम हठ करो, आनंद अंतस्करन में धरो।। ४८ ।।

दोनों कहते हैं, जल्दी उठो। स्वामी ने कृपा कर दी है। अब तुम हठ मत करो। दिल में खुशी मनाओ।

तब लखमीजी लागे चरनें, यों बुलाए ल्याए आनंद अति घनें।
तब ब्रह्मा खीरसागर सुख पाए फिरे, दोऊ आए आप अपने घरे।। ४९ ।।

तब लक्ष्मीजी ने चरणों में प्रणाम किया और इस तरह आनन्द मंगल से घर आ गईं। तब ब्रह्मा और क्षीरसागर सुख प्राप्त कर अपने-अपने घर चले गए।

अब ए विचार तुम देखो साथ, ना वली जुबां बैकुंठ नाथ।
ग्रही वस्त भारी कर जान, तो भी वचन ना कहे निरवान।। ५० ।।

हे साथजी ! विचार करके देखो कि बैकुण्ठ के नाथ विष्णु भगवान भी एक शब्द भी पार का नहीं कह सके। पार के ज्ञान को भारी करके ग्रहण किया, तो भी एक वचन न कह सके।

Nijanand App

ना तो बैकुंठनाथ को कैसी खबर, बिना तारतम क्या जाने मूल घर।
और भी खबर कछुए ना कही, तो भी निध भारी कर ग्रही।।५१ ।।

बैकुण्ठनाथ विष्णु भगवान को बेहद की खबर नहीं थी। बिना तारतम ज्ञान के अक्षरातीत धाम की पहचान विष्णु भगवान को कैसे हो सकती है? इसलिए लक्ष्मीजी को और खबर न दे सके। पार के वचन भारी कर ग्रहण किए।

बिना भारी कौन भार उठावे, मुखथें वचन कह्यो न जावे।
जब भया कृष्ण अवतार, रुकमनी हरन कियो मुरार।।५२ ।।

बेहद के वचन को बेहद के साथी ही सुन सकते हैं। बाकी किसी के भी मुख से पार के वचन नहीं निकल सकते। जब श्री कृष्ण अवतार हुआ और उन्होंने रुक्मिणी का हरण किया।

माधवपुर व्याही रुकमनी, धवल मंगल गावे सोहागनी।
गाते गाते लिया बृज नाम, तब पीछे भोम पड़े भगवान।।५३ ।।

माधवपुर में रुक्मिणी के साथ विवाह हो रहा था। सुहागिनी स्त्रियां मंगलगीत गा रही थीं। उन्होंने गाते गाते बृज का नाम लिया। उस समय भगवान मूर्छित होकर गिर गए।

तब नैनों आंसू बोहोत जल आए, काहूपे न रहे पकराए।
सुख आनन्द गयो कहूं चल, अंग अंतस्करन गए सब गल।।५४ ।।

उनकी आंखों से बहुत आंसू आए। पोंछने पर भी आंसू नहीं रुके। शादी का सुख आनन्द सब भूल गया। अंतस्करण में लीला (प्रतिबिम्ब) याद आ गई।

तब सब किने पायो अचरज, यों लखमीजी को देखाया बृज।
सोले कला दोऊ सरूप पूरन, ए आए हैं इन कारण।।५५ ।।

तब सबको बड़ी हैरानी हुई। इस तरह से लक्ष्मीजी को बृज की लीला के चिन्तन (गोलोक की शक्ति) का ज्ञान दिया। लक्ष्मीजी और भगवान श्री कृष्ण, सोलह कला सम्पूर्ण बैकुण्ठनाथ के अवतार हैं। इसी वास्ते आए हैं।

लोक जाने आए असुरों कारन, विष्णु कृष्ण देह धर पूरन।
ए हुकमें असुर कई देवे उड़ाए, ऐसा बल है बैकुंठराए।।५६ ।।

दुनियां जानती है कि विष्णु भगवान कृष्ण के तन में राक्षसों के कारण आए हैं। भगवान विष्णु तो इतने शक्तिशाली हैं कि उनके हुकम से ही कई राक्षस मर जाते हैं।

क्या समझें लोक अंदर की बात,दिखलावने लखमीजी को आए साख्यात।
उठ बैठे श्री कृष्णजी पूरन किया काम, यो लखमीजी की भानी हाम।।५७ ।।

बाहरी दुनियां अन्दर की बातों को क्या जाने? भगवान विष्णु लक्ष्मीजी को लीला दिखाने के लिए आए थे। श्री कृष्णजी शादी मण्डप में उठकर बैठ गए और लक्ष्मीजी की चाहना मिटाई।

ए चित में विचारो रही, ए इसारत सुकें कही।
ए लीला सुकें नीके कर गाई, जो लखमीजी को भगवानें देखाई।।५८ ।।

हे साथजी ! चित्त में विचार कर के देखो। यह गहरी बात शुकदेवजी ने इशारे में कही। जो लीला भगवानजी ने लक्ष्मीजी को दिखाई उसका शुकदेवजी ने अच्छी तरह वर्णन किया है।

Nijanand App

ए बृज लीला जो अपनी, जाकी अस्तुति करत हैं धनी।
पेहेले जो लीला तुम बृज में करी, अछर सदासिव चित में धरी।।५९ ।।

यह बृज लीला अपनी है। (बृज अखण्ड)। जिसकी वन्दना ब्रह्माण्ड के भगवान विष्णु करते हैं। साथजी! तुमने जो बृज में लीला की थी वह अक्षर ब्रह्म के चित्त में (सबलिक में) अखण्ड है।

रास लीला जो तुम बनमें किध, सो अछर सरूपें ग्रही जाग्रत बुध।
ता लीला को ए प्रतिबिंब, जो विष्णुए देखाई रमा को सनंध।।६० ।।

हे साथजी ! तुमने जो रास लीला वन में की, उसे अक्षर ब्रह्म ने जागृत बुद्धि से ग्रहण कर लिया। उसी लीला के प्रतिबिम्ब को भगवान विष्णु ने लक्ष्मीजी को दिखाया।

तो वचन तुमको कहे जाएं, जो तुम धाम की लीला मांहें।
बृजवालो पिउ सो एह, वचन अपन को केहेत हैं जेह।।६१ ।।

हे साथजी ! यह वचन तुमको इसलिए कहे जाते हैं कि तुम मेरे धाम की लीला के साथी हो। यह वही बृज के वालाजी हैं, जो हमको इस ब्रह्माण्ड में ज्ञान दे रहे हैं।

रास मिने खेलाए जिने, प्रगट लीला करी है तिने।
धनी धाम के केहेलाए, ए जो साथ को बुलावन आए।।६२ ।।

जिन्होंने रास की लीला दिखाई, वही यह वालाजी हैं। अब लीला प्रगट करके बता रहे हैं। यही अपने धाम के धनी हैं, जो साथ के बुलाने के वास्ते आए हैं।

तुम कारन मैं कह्या दृष्टांत, जीव सो वचन विचारो एकांत।
बैकुंठ ठौर तित का ग्यान, केहेने वाला श्री भगवान।।६३ ।।

इस वास्ते मैंने तुमको दृष्टान्त देकर समझाया। अब अपने चित्त में एकान्त में विचार कर देखना। बैकुण्ठ जैसे स्थान का ज्ञान कहने वाले स्वयं भगवान विष्णु हैं।

लखमीजी तहां श्रोता भई, कई बिध कसनी कर कर रही।
तो भी न पाया एक वचन, तुम धाम धनी ले बैठे धन।।६४ ।।

लक्ष्मीजी वहां सुनने वाली (श्रोता) हैं, जिन्होंने कई तरह से कष्ट उठाए तो भी एक वचन को नहीं सुन सकीं। पर हे सुन्दरसाथजी ! आप तो पूर्ण ब्रह्म को साक्षात् लेकर बैठे हो।

अजहूं न तुम टालो भरम, क्यों न करत हो जीव नरम।
ए नौतनपुरी जो कही नगरी, श्री देवचन्दजीऐं लीला करी।।६५ ।।

अब भी तुम अपने संशय मिटाकर अपने जीव को नरम (निर्मल) क्यों नहीं करते ? यह जो नौतनपुरी नगरी है, इसमें श्री देवचन्द्रजी के तन में उन्होंने लीला की है।

ए प्रगट वचन किए अपार, तो भी न हुई तुमें सुध सार।
छोड़ो अमल माया जोर कर, जीव जगाओ वचन चित धर।।६६ ।।

यह प्रत्यक्ष वचन अनेक बार तुमको कहे तो भी तुम्हें सुध नहीं आई। अब हिम्मत करके माया के नशे को छोड़ो और इन वचनों से अपने जीव को जागृत करो।

ए माया देखो न्यारे होए, भई तारतम की रोसनाई दोए।
जो बानी श्री धनिएं दई, सो आतम के अंदर तुम क्यों न लई।।६७ ।।

तारतम की वाणी से इस माया से अलग होकर देखो। यह वाणी श्री राजजी ने दो तनों से कही है। इसे तुम आत्मा के अन्दर क्यों नहीं लेते?

Nijanand App

माया गुन सब करो हाथ, पेहेचानो प्राण को नाथ।
अब एता आतमसों करो विचार, कौन वचन कहे आधार।। ६८ ।।

माया के गुण, अंग, इन्द्रियों को वश में करके अपने प्राणनाथ को पहचानो। अब इतना आत्मा से विचार करो कि अपने प्रीतम ने यह कौन से वचन कहे हैं?

जोलों जीव विचार विकार न काटे, ज्यों छींट ना लगे घड़े चिकटे।
इंद्रावती कहे सुनो साथ, जिन छोड़ो अपनो प्राणनाथ।। ६९ ।।

जब तक जीव विचार कर संशय (विकार) नहीं मिटाता, तब तक यह वाणी चिकने घड़े की तरह उस पर टिकेगी नहीं। इसलिए श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, हे साथजी ! सुनो और अपने प्राणनाथ (धनी) को मत छोड़ो।

फेर फेर ना आवे ए अवसर, जिन हाम ले जागो घर।
थोड़े में कह्या अति घना, जान्या धन क्यों खोइए अपना।। ७० ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि ऐसा समय फिर नहीं मिलेगा। बिना चाहना पूरी किए घर में जागना ठीक नहीं है। मैंने तुमको यह थोड़े में बहुत कुछ कहा है। जानकर भी अपने धन (प्राणनाथ) को क्यों गंवाएं?

हम आगे ना समझे भए ढीठ, तो दई श्री देवचंदजीऐं पीठ।
ना तो क्यों छोड़े साथ को एह, जो कछू किया होए सनेह।। ७१ ।।

हम पहले ढीठ हो गए। जब श्री देवचन्द्रजी गए तब हम समझ नहीं पाए। अगर हमने उनसे प्रेम किया होता, वह अपना साथ छोड़कर न जाते।

अब फेर आए दूजा देह धर, दया आपन ऊपर अति कर।
अब ए चेतन कर दिया अवसर, ज्यों हंसते बैठे जागिए घर।। ७२ ।।

अब वही (धाम-धनी) दूसरा तन धारण करके मेरे अन्दर आए हैं। बड़ी कृपा से हमें जागृत करके धनी की पहचान करने का समय दिया है, जिससे हम हंसते-हंसते घर में जागें।

सब मनोरथ हुए पूरन, जो ए बानी विचारो अंतस्करन।
ए तो इंद्रावती कहे फेर फेर, जो धाम धनी कृपा करी तुम पर।। ७३ ।।

मन के सभी मनोरथ पूर्ण हो जाएंगे, यदि इस वाणी को चित्त में विचार कर देखोगे। श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि यह तुम्हारे ऊपर धाम धनी ने कृपा की है जो दुबारा तन धारण करके आए हैं।

।। प्रकरण ।। २९ ।। चौपाई ।। ७३५ ।।

प्रगट बानी प्रकास की

सोई ने सोई सूते क्या करो जी, या अगिन जेहेर जिमी मांहीं जी।
जाग देखो आप याद करो, ए नींद निगल गई जीव के तांई जी।। १ ।।

सुन्दरसाथजी ! इस अग्नि के समान जलाने वाली जहरीली जमीन में सोकर क्या करोगे? सावचेत (सावधान) होकर याद करो और देखो यह माया जीव को निगले बैठी है।

ए नींद तिनको ले गई रे, जो नाहीं साथी आपन जी।
इन ठगनी जिमिऐं बोहोतक ठगे रे, तुम जिन सोओ इत खिन जी।। २ ।।

यह माया उनको निगल गई है जो अपने परमधाम के साथी नहीं हैं। इस ठगनी माया ने बहुतों को ठगा है। तुम यहां पर एक पल के लिए भी मत सोना।

Nijanand App

माया गुन सब करो हाथ, पेहेचानो प्राण को नाथ।
अब एता आतमसों करो विचार, कौन वचन कहे आधार।। ६८ ।।

माया के गुण, अंग, इन्द्रियों को वश में करके अपने प्राणनाथ को पहचानो। अब इतना आत्मा से विचार करो कि अपने प्रीतम ने यह कौन से वचन कहे हैं?

जोलों जीव विचार विकार न काटे, ज्यों छींट ना लगे घड़े चिकटे।
इंद्रावती कहे सुनो साथ, जिन छोड़ो अपनो प्राणनाथ।। ६९ ।।

जब तक जीव विचार कर संशय (विकार) नहीं मिटाता, तब तक यह वाणी चिकने घड़े की तरह उस पर टिकेगी नहीं। इसलिए श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, हे साथजी ! सुनो और अपने प्राणनाथ (धनी) को मत छोड़ो।

फेर फेर ना आवे ए अवसर, जिन हाम ले जागो घर।
थोड़े में कह्या अति घना, जान्या धन क्यों खोइए अपना।। ७० ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि ऐसा समय फिर नहीं मिलेगा। बिना चाहना पूरी किए घर में जागना ठीक नहीं है। मैंने तुमको यह थोड़े में बहुत कुछ कहा है। जानकर भी अपने धन (प्राणनाथ) को क्यों गंवाएं?

हम आगे ना समझे भए ढीठ, तो दई श्री देवचंदजीऐं पीठ।
ना तो क्यों छोड़े साथ को एह, जो कछू किया होए सनेह।। ७१ ।।

हम पहले ढीठ हो गए। जब श्री देवचन्द्रजी गए तब हम समझ नहीं पाए। अगर हमने उनसे प्रेम किया होता, वह अपना साथ छोड़कर न जाते।

अब फेर आए दूजा देह धर, दया आपन ऊपर अति कर।
अब ए चेतन कर दिया अवसर, ज्यों हंसते बैठे जागिए घर।। ७२ ।।

अब वही (धाम-धनी) दूसरा तन धारण करके मेरे अन्दर आए हैं। बड़ी कृपा से हमें जागृत करके धनी की पहचान करने का समय दिया है, जिससे हम हंसते-हंसते घर में जागें।

सब मनोरथ हुए पूरन, जो ए बानी विचारो अंतस्करन।
ए तो इंद्रावती कहे फेर फेर, जो धाम धनी कृपा करी तुम पर।। ७३ ।।

मन के सभी मनोरथ पूर्ण हो जाएंगे, यदि इस वाणी को चित्त में विचार कर देखोगे। श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि यह तुम्हारे ऊपर धाम धनी ने कृपा की है जो दुबारा तन धारण करके आए हैं।

|| प्रकरण || २९ || चौपाई || ७३५ ||

प्रगट बानी प्रकास की

सोई ने सोई सूते क्या करो जी, या अगिन जेहेर जिमी मांहीं जी।
जाग देखो आप याद करो, ए नींद निगल गई जीव के तांई जी।। १ ।।

सुन्दरसाथजी ! इस अग्नि के समान जलाने वाली जहरीली जमीन में सोकर क्या करोगे? सावचेत (सावधान) होकर याद करो और देखो यह माया जीव को निगले बैठी है।

ए नींद तिनको ले गई रे, जो नाहीं साथी आपन जी।
इन ठगनी जिमिऐं बोहोतक ठगे रे, तुम जिन सोओ इत खिन जी।। २ ।।

यह माया उनको निगल गई है जो अपने परमधाम के साथी नहीं हैं। इस ठगनी माया ने बहुतों को ठगा है। तुम यहां पर एक पल के लिए भी मत सोना।

Nijanand App

नाहीं रे नींद कोई घेन घारन, नींद होए तो लीजे उठाए जी।
उठाए जीव को खड़ा कीजे, फेर पड़े सोई उलटाए जी।। ३ ।।

यह कोई साधारण नींद नहीं है। यह कोई बेहोशी का नशा है। नींद होती तो जगा लेते। यदि जीव को उठाकर खड़ा करते हैं तो वह फिर से उलटकर गिर जाता है।

सोई घेनने सोई घारन रे, सोई घूटन अधकी आवे जी।
याही जिमी और याही नींद से, धनी बिना कौन जगावे जी।। ४ ।।

यह वही नींद है, वही बेहोशी का नशा है जिसमें अधिक घुटन हो रही है। ऐसी जमीन से और ऐसी नींद से, धनी बिना कौन जगाएगा ?

इन जेहेर जिमी से कोई न उबरया, तुम सूते तिन ठाम जी।
ए जेहेर जिमी अगिन उजाड़ रे, नहीं वसती इन गाम जी।। ५ ।।

इस जहरीली जमीन से कोई निकलकर नहीं जा सका। जहां तुम सोए पड़े हो, यह अग्नि के समान है। उजाड़, वीरान है। जहां न कोई बस्ती है, न गांव है (ठिकाना है)।

ए विख की जिमी और विख के बिछौने, विखै की आकार जी।
अष्ट धात मिने सब विख के, विखै का विस्तार जी।। ६ ।।

यहां जमीन विष की है और बिस्तर जहर का है। विष भरा ही यह तन है और तन के अन्दर आठों धातु (खून, रस, मांस, मज्जा, चर्बी, हड्डी, वीर्य, ओज) भी विष के हैं। सब विष का ही विस्तार है।

गुण पख इंद्री सब विख के, विखै को सब आहार जी।
आतम निरमल एक वतन की, सो तो कही निराकार जी।। ७ ।।

गुण, पख (अंतःकरण), इन्द्रियां—सब विष के हैं (तीन गुण—रजो गुण, तमो गुण, सतो गुण, पख—मन, चित्त, बुद्धि और अहंकार और दस इंद्रियां-पांच कर्मेन्द्रियां, पांच ज्ञानेन्द्रियां) खान-पान सब विष का है। इस शरीर के अन्दर केवल एक आत्मा है जो विष से रहित है और निराकार है।

विख की तलाई ने विख के ओढ़ना, विख पलंग दिया बिछाए जी।
विख का सिराने विख का ओछाड़, विख पंखा विख वाए जी।। ८ ।।

विष का गद्दा है और विष की रजाई है। विष का पलंग है, विष का तकिया है। विष की पिछौरी है और विष का पंखा विष की हवा दे रहा है।

जागते विख और सुपने विख रे, नींद में विख निदान जी।
बाहेर का विख क्यों कर कहूं रे, वहे आंधी वाए अग्यान जी।। ९ ।।

जागते विष है और स्वप्न भी विष का है। नींद भी विष की है। बाहर के विष का कहां तक वर्णन करें ? यहां तो अज्ञान की आंधी चल रही है।

वस्तर विख के भूखन विख के, सकल अंग विख साज जी।
ए विख नख सिख जीव को भेद्यो, सो क्यों छूटे बिना श्री राजजी।। १० ।।

वस्त्र विष के हैं, आभूषण विष के हैं तथा तन का सब सामान विष का ही है। नख से शिख तक विष ही विष है। यह धाम धनी की कृपा के बिना छूट नहीं सकता।

Nijanand App

जोर कर तुम जागो जीव जी, नहीं सूते की एह जिमी जी।
ज्यों ज्यों सोइए त्यों त्यों बाढ़े विख विस्तार, पीछे दुख पावे जीव आदमी जी।। ११ ।।

हे जीव जी ! जोर लगाकर जागो। यह सोने का ठिकाना नहीं है। यहां जैसे-जैसे सोवोगे वैसे-वैसे ही विष बढ़ेगा। बाद में आदमी का जीव दुःखी होगा।

ए जिमी तुम क्यों न छोड़ो, अजूं नाहीं नींद बाढ़ी जी।
इन जिमी नींद दुखड़े घनें रे, पीछे क्योंए न जाए काढ़ी जी।। १२ ।।

इस विष की जमीन को तुम क्यों नहीं छोड़ते? क्या अभी तुम्हारी चाहना पूरी नहीं हुई? इस जमीन में बहुत ज्यादा दुःख है। पीछे किसी तरह से भी नहीं निकला जा सकेगा।

बोहोत देखे दुख अनेक होएसी, तार्थे उठो तत्काल जी।
जल के जीव को घर जल में, ज्यों रहे मकड़ी मांहें जाल जी।। १३ ।।

ज्यादा दुःख देखने से और दुःख होगा, इसलिए तुरन्त उठो। संसार के जीवों का घर तो संसार ही है। जिस तरह से जल का जीव जल में, मकड़ी जाल में रहती है, उसी तरह संसार के जीव संसार में रहते हैं।

सब कोई जाली गूंथे अपनी, फेर अपनी गूंथी में उरझाए जी।
उरझे पीछे कई दुख देखे, दुखै में जीव जाए जी।। १४ ।।

यहां सब कोई अपना जाल गूंथते हैं और फिर उसी में ही फंस जाते हैं। फंसने के बाद बहुत दुःखी होते हैं! फिर दुःख में ही प्राण निकलते हैं।

बोहोत दुख देखे जीव जाते, तो भी गूंथे जाली फेर फेर जी।
दोष नहीं इन मकड़ी का रे, इनका घर हुआ जाली अंधेर जी।। १५ ।।

दुःख में पड़कर मरते हुए अनेक जीवों को देखकर भी लोग अपने दुःख का जाल गूंथते हैं। इस संसार में मकड़ी का दोष नहीं है, उसका तो घर ही जाल है।

अपने घर इत नाहीं साथजी, चौदे भवन में कित जी।
ता कारन पिउजी करें रे पुकार, तुम क्यों सूते इत जी।। १६ ।।

हे साथजी ! अपना घर चौदह लोकों में कहीं भी नहीं है। इस वास्ते धनी पुकार करते हैं कि तुम क्यों यहां सोए पड़े हो?

ओ दुख के घर सो भी ना छोड़े, तुम याद ना करो सुख के घर जी।
सास्त्र सबों पे साख देवाई, तुम अजहूं ना देखो चित धर जी।। १७ ।।

संसार के जीव जब अपने दुःख के घर को नहीं छोड़ते, तो तुम अपने सुख के घर को क्यों नहीं याद करते? तुमको सब शास्त्रों से भी गवाही दिलवाई, फिर भी तुम ध्यान से नहीं देखते हो।

बेहद सुख पार बेहद घर, बेहद पार श्री राज जी।
अछरातीत सुख अखंड देवे को, मैं जगाऊं तुमारे काज जी।। १८ ।।

तुम्हारा घर बेहद के पार है जहां पर बेहद सुख हैं। तुम्हारे धनी भी बेहद के पार हैं। इसलिए, हे साथजी ! अक्षरातीत के अखण्ड सुख देने के लिए मैं तुम्हें जगा रही हूं।

Nijanand App

पिउ पुकार पुकार थके, तुम अजहूं जल बिन गोते खात जी।
दिन उगते संझा होत है, पीछे आड़ी पड़ेगी रात जी।। १९ ।।

पिया पुकार-पुकार करके थक गए। तुम अभी बिना जल के डुबकियां लगा रहे हो। दिन उगने के बाद सन्ध्या होती है, फिर पीछे रात आ जाएगी।

रात पड़ी तब कोई न जागे, पीछे कोई ना करे पुकार जी।
निसाएं नींद जोर बाढ़ेगी, पीछे बढ़ेगा विख विस्तार जी।। २० ।।

धनी के जाने पर रात हो जाएगी। तब कोई तुम्हें आवाज देकर नहीं जगाएगा। रात को नींद का जोर बढ़ेगा और फिर माया का विस्तार बढ़ जाएगा।

संझा लगे धनी रेहेसी साथ कारन, तुम अजहूं ना नींद निवारो जी।
पेहेचान पिउ सुख लीजिए, तुम अपना आप वार डारो जी।। २१ ।।

अपने धनी सन्ध्या (कयामत) तक सुन्दरसाथ के वास्ते रहेंगे। तुम अभी भी नींद नहीं छोड़ते हो। धनी को पहचानकर घर के सुख लो। तन, मन और धन उन पर क़ुर्बान कर दो।

पुकार करते रात पड़ी, पिउ रात ना रेहेसी निरधार जी।
जो दुस्मन तुमको भुलावत हैं, सो तुम क्यों न करत विचार जी।। २२ ।।

धाम धनी के पुकारते-पुकारते रात्रि (महाप्रलय) आ जाएगी और धनी पहले ही चले जाएंगे। तुमको तुम्हारे दुश्मन (रिश्तेदार-बिरादरी वाले) भुला रहे हैं। उनका तुम साथ क्यों नहीं छोड़ते हो ?

ए विखम भोम छोड़ते जो आड़ी करे, सो जानियो तेहेकीक दुस्मन जी।
जो लेने न देवे सुख अखंड, सो क्यों न देखो सुन वचन जी।। २३ ।।

इस माया की (विष की) भूमि छोड़ने में जो रुकावट डाले उसे निश्चित ही दुश्मन समझना, क्योंकि वह अखण्ड सुख नहीं लेने देते। हे साथजी ! तुम इन वचनों को विचार कर क्यों नहीं देखते।

ए दुस्मन तेरे विख भरे, जिन लियो संसार घेर जी।
ओ भुलावत तुमको जुदी भांतें, तुम जिन भूलो इन बेर जी।। २४ ।।

यह तेरे दुश्मन जहर भरे हैं और इन्होंने ही सारे संसार को घेर रखा है। तरह-तरह के तरीकों से तुम्हें भुलाते हैं। पर तुम इस बार मत भूलना।

भी तुमको दिखाऊं दुस्मन, जिनहूं न छोड़्या कोए जी।
सो तुमको दिखाऊं जाहेर, तुमको अंदर झूठ लगावे सोए जी।। २५ ।।

मैं तुमको और दुश्मनों की पहचान कराती हूं, जिन्होंने किसी को नहीं छोड़ा। वह तुमको मैं जाहिर करके दिखाती हूं। वह तुमको झूठ की तरफ घसीट रहे हैं।

गुन अंग इंद्री देखो रे चलते, जो उलटे लगे संसार जी।
एही दुस्मन विसेखे अपने, सो करत हैं सिर पर मार जी।। २६ ।।

यह जो तेरे गुण, अंग, इन्द्रियां हैं, वह सब तुम्हें संसार की तरफ खींचने में लगे हैं। यही अपने खास दुश्मन हैं जो सिर पर चोट मार रहे हैं।

तुम करो लड़ाई इनसों, मार टूक करो दुस्मन जी।
फेर वाको उलटाए चेतन करो, ज्यों होवें तुमारे सजन जी।। २७ ।।

तुम उनसे लड़ाई करो और उनको मारकर टुकड़े-टुकड़े कर दो। फिर उन्हें उलटा करके सावचेत करो। तब वह तुम्हारे हितकारी बनेंगे।

Nijanand App

सनमंधी साथ को कहे वचन, जीव को एता कौन कहे जी।
ए वानी सुन ढील करे क्यों वासना, सो ए विखम भोम क्यों रहे जी।। २८ ।।

हे सुन्दरसाथजी ! तुम मेरे धाम के साथी हो इसलिए तुमको यह वचन कहे हैं। वरन् जीव को इतना कौन कहता? ऐसे वचनों को सुनकर आत्माएं क्यों ढील करेंगी? इस विष की भूमि में क्यों रहेंगी?

छल की भोम को तुम समझत नाहीं, ना सुनत मेरी बात जी।
जानत हो दिन दो पोहोर रेहेसी, पाओ पल में हो जासी रात जी।। २९ ।।

तुम जानते हो कि यह छल की भूमि है, तो सावचेत होकर मेरी बात क्यों नहीं सुनते? जानते हो कि दिन दो प्रहर रहेगा और उसके बाद एक पल में रात हो जाएगी।

अबही रात आई देखोगे, उठसी अनेक अंधेर जी।
जीव अंधेर जब देख उरझसी, तब आवसी विख के फेर जी।। ३० ।।

अभी रात आ गई, ऐसा अनुभव करोगे। उस रात्रि में अनेक तरह के तूफान आएंगे जिसमें जीव अंधेरे में उलझ जाएगा। तब फिर विष ही विष हो जाएगा (जन्म-मरण का चक्कर चालू हो जाएगा)।

विख के फेर अनेक उपजसी, करम केरा जे दुख जी।
भी फिरसी फेर अनेक विध के, काहूं जीव को न होवे सुख जी।। ३१ ।।

किए हुए कर्मों के फल से आवागमन के चक्कर में आना पड़ेगा। अनेक योनियों में घूमने से जीव को सुख नहीं मिलेगा।

सुनियो जो तुम हो ब्रह्मसृष्ट के, जिन आओ मांहें रात जी।
इन रात के दुख घने दोहेले, पीछे उड़सी अंधेर प्रभात जी।। ३२ ।।

सुन्दरसाथजी ! तुम परमधाम की ब्रह्मसृष्टि हो, इसलिए रात्रि आने से पहले जाग जाओ। उस रात के दुःख बहुत कठिन हैं। रात आ जाने पर दुःख प्रातः तक हटाने पर भी नहीं हटेंगे।

दूर होसी इन रात के प्रभात, रात छेह क्योंए न आवे जी।
दुख की रात घनूं लागसी दोहेली, पीछे फजर मुख न देखावे जी।। ३३ ।।

इस रात के बाद सवेरा बहुत दूर होगा। रात्रि का तो अन्त ही नहीं आएगा। दुःख की रात बड़ी कष्ट दायक होगी। प्रातःकाल कहीं दिखाई नहीं देगा।

महाप्रले होसी जब लग, तबलों रेहेसी अंधेर जी।
ता कारन पिउजी करे रे पुकार, जिन भूलो इन बेर जी।। ३४ ।।

जब तक महाप्रलय होगा तब तक अंधेरा रहेगा, इसलिए धनी पुकार रहे हैं कि इस बार मत भूलो।

तारतम के उजाले कर, रोसन कियो इन सूल जी।
कई कोट ब्रह्मांड देखाई माया, पाया अंकूर पेड़ मूल जी।। ३५ ।।

तारतम का उजाला कर धनी ने इस हकीकत की पहचान कराई और कई करोड़ ब्रह्माण्डों में माया का विस्तार दिखाया। अब तारतम ज्ञान से इस माया रूपी पेड़ की जड़ को पहचान लो।

पिउ पधारे बुलावन तुमको, तो होत है एती पुकार जी।
यों करते जो नहीं मानो, तो दुख पाए चलसी निरधार जी।। ३६ ।।

धनी तुमको बुलाने के लिए आए हैं, इसलिए तुमको इतना बुलाया जा रहा है। इतना बुलाने पर भी अगर नहीं मानोगे तो कठिन दुःख भोगकर चलना होगा।

Nijanand App

विखम बड़ा जल मांहें अंधेर, कई लगसी लेहेरें निघात जी।
विसेखें जीव बेसुध होसी, नहीं सुनोगे निध साख्यात जी।। ३७ ।।

इस संसार में मोह सागर दुःखों से भरा हुआ है और इसमें दुःख की लहरों के घाव लगेंगे। उससे हैरान होकर जीव बेहोश हो जाएगा और अपने साक्षात् धनी की वाणी को नहीं सुनेगा।

मांहें मछ गलागल, लेहेरें आड़े टेढ़े बेहेवट जी।
दसो दिसा कोई ना सूझे, फिरवलसी अंधकार पट जी।। ३८ ।।

इस मोह के सागर में बड़े-बड़े मगरमच्छ (रिश्तेदार, बिरादरी) हैं। आड़ी-टेढ़ी लहरें बहती हैं जिससे दसों दिशाओं में कुछ दिखाई नहीं पड़ता। फिर अन्धकार का ही परदा पड़ जाएगा।

तुम हो अंग मेरे के, जिन देखो माया को मरम जी।
धाम धनी आए तुम कारन, तुमें अजहूं न आवे सरम जी।। ३९ ।।

हे मेरे साथजी ! तुम परमधाम के साथी हो। इसलिए माया के सुखों को मत देखो। धाम धनी तुम्हें बुलाने आए हैं फिर भी शर्म नहीं आती।

ए नींद तुमको क्यों कर उड़सी, जोलों न उठो बल कर जी।
सेवा करो समें पिउ पेहेचान, याद करो आप घर जी।। ४० ।।

हे साथजी ! जब तक हिम्मत कर नहीं उठोगे तब तक तुम्हारी नींद कैसे जाएगी ? तुम इस समय धनी को पहचान कर अपने घर की याद कर धनी की सेवा करो।

ए अमल तुमको क्यों रे उतरसी, जो ज़ेहेर चढ़्या अति भारी जी।
पिउजी के बान तो तोड़े संधान, पर तुमको केहे केहे हारी जी।। ४१ ।।

हे साथजी ! यह माया का नशा तुम्हारा कैसे उतरेगा ? तुम्हें इसका बहुत जहर चढ़ा है। प्रीतम की वाणी तो इतनी जोरदार है कि माया की कड़ियां तोड़ देती है, पर मैं तुमको वाणी सुना-सुनाकर थक गई।

जो जानो घर पाइए अपना, तो एक राखियो रस वैराग जी।
सकल अंगे सुध सेवा कीजो, इन विध बैठो घर जाग जी।। ४२ ।।

यदि अपने घर को प्राप्त करने की इच्छा हो तो माया से वैर और धनी के रस में मग्न रहना तथा सब अंगों से सावचेत होकर धनी की सेवा करना। ऐसा करने से ही अपने घर परमधाम में जाग सकोगे।

जो जानो इत जाग चलें, तो लीजो अर्थ प्रकास जी।
जीव को कहियो ए कह्या सब तोको, सिर लिए होसी उजास जी।। ४३ ।।

हे साथजी ! यदि यहां से जागृत होकर चलने की इच्छा हो तो "प्रकास वाणी" के ज्ञान को ग्रहण करना और जीव को समझाना कि यह तेरी भलाई के वास्ते कहा है। जिसे ग्रहण करने से अन्धकार मिट जाएगा और सुख ही सुख मिलेगा।

इन उजाले ज़ेहेर उतरसी, तब बढ़ते बल नहीं बेर जी।
परआतम को आतम देखसी, तब उतर जासी सब फेर जी।। ४४ ।।

इस वाणी के ज्ञान से माया का नशा उतर जाएगा, तब तुम्हारा आत्मिक बल बढ़ने में देर नहीं लगेगी। तुम्हारी आत्मा यहीं पर बैठे-बैठे अपनी परआतम को देखेगी, तब माया का जहर उतर जाएगा।

Nijanand App

एह विध कर कर आतम जगाई, तब होसी सब सुध जी।
सुध हुए पूर चलसी प्रेम के, होसी जाग्रत हिरदे बुध जी।।४५।।

हे साथजी ! इस प्रकार से तुम्हारी आत्मा जागृत हो जाएगी। तब सब सुध (होश) आ जाएगी। होश आने के बाद जागृत बुद्धि हृदय में आएगी और प्रेम के पूर (प्रवाह) चलेंगे।

निरमल हिरदे में लीजो वचन, ज्यों निकसे फूट बान जी।
ए कह्या ब्रह्मसृष्ट ईश्वरी को, ए क्यों लेवे जीव अग्यान जी।।४६।।

हे साथजी ! इन वचनों को अपने निर्मल हृदय में इस तरह से लेना, जिस तरह एक बाण छेदकर निकल जाता है। यह ज्ञान ब्रह्म सृष्टि और ईश्वरी सृष्टि को कहा है। माया के अज्ञानी जीव इसे नहीं ले सकते।

माया जीव हममें रहे ना सके, सो ले न सके एह वचन जी।
ना तो सब्द घने लागसी मीठे, पर रेहेने ना देवे झूठा मन जी।।४७।।

माया के जीव हम में रह नहीं सकते और न वह इस वाणी को ले सके। यह वाणी उनको अच्छी तो लगेगी, पर उनका झूठा मन उनको लेने नहीं देगा।

जो कोई जीव होए माया को, सो चलियो राह लोक सत जी।
जो कोई होवे निराकार पार को, सो राह हमारी चलत जी।।४८।।

जो कोई माया का जीव हो वह बैकुण्ठ का रास्ता पकड़ना। जो कोई निराकार के पार के हों वह हमारे रास्ते पर चलना।

वासना को तो जीव न कहिए, जीव कहिए तो दुख लागे जी।
झूठ की संगते झूठा केहेत हों, पर क्या करों जानों क्योंए जागे जी।।४९।।

आत्मा को जीव नहीं कहना। जीव कहने से दुःख लगता है, पर सच्ची आत्मा ने झूठे जीव का संग किया है, इसलिए आत्मा को जीव कहना पड़ा है, ताकि आत्मा किसी तरह से जाग जाए।

ए कठन वचन मैं तो केहेती हों, ना तो क्यों कहूं वासना को जीव जी।
जिन दुख देखे गुन्हेंगार होत हो, आग्या ना मानो पिउ जी।।५०।।

ऐसा कठोर वचन मैं तो कहती हूं ताकि आत्माएं जागृत हो जाएं। वैसे आत्मा को जीव नहीं कहना चाहिए। जिस माया को देखकर गुनाह कर रहे हो वही अपने धनी की हुकम अदूली (आज्ञा न मानने का दोष) मानी जाती है।

प्रकास बानी तुम नीके कर लीजो, जिन छोडो एक खिन जी।
अन्दर अर्थ लीजो आतम के, विचारियो अंतस्करन जी।।५१।।

हे साथजी ! ज्ञान की इस वाणी को जो 'प्रकास' में कही है, अच्छी तरह से ग्रहण करना और एक क्षण के लिए भी नहीं छोड़ना। आत्मा से वास्तविक अर्थ को समझकर अपने चित्त में विचार करना।

अंदर का जब लिया अर्थ, तब नेहेचे होसी प्रकास जी।
जब इन अर्थे जागी वासना, तब वृथा न जाए एक स्वांस जी।।५२।।

हे साथजी ! जब वास्तविक अर्थ को आप समझ लोगे तो निश्चित ही तुम्हें हकीकत की पहचान हो जाएगी। जब इस हकीकत के ज्ञान से आत्मा जागृत हो जाएगी, तब एक सांस भी फिजूल (व्यर्थ) नहीं जाएगा।

Nijanand App

ए प्रगट बानी कही प्रकास की, इंद्रावती चरने लागे जी।
सो लाभ लेवे दोनों ठौर को, जाकी वासना इत जागे जी।।५३।।

श्री इन्द्रावतीजी धनी के चरणों में लगकर प्रकास ग्रन्थ की प्रगट वाणी कह रही हैं कि जिसकी आत्मा यहां जाग जाएगी उसे माया में दोनों ठौर (स्थान, ठिकानों) का (माया और परमधाम का) लाभ होगा।

।। प्रकरण ।। ३० ।। चौपाई ।। ७८८ ।।

बेहद बानी

बेहद के साथी सुनो, बोली बेहद वानी।
बड़े बड़े रे हो गए, पर काहूं न जानी।।१।।

हे मेरे बेहद के सुन्दरसाथ! मैंने तुमको बेहद (अखण्ड) की वाणी बताई है, जिसे आज तक बड़े-बड़े (ब्रह्मा, विष्णु, महेश, ज्ञानी, ध्यानी) लोग हो गए, पर किसी ने नहीं जाना।

उपाय किए अनेको, पर काहूं न लखानी।
ए वानी निज बुध बिना, न जाए पेहेचानी।।२।।

बहुतों ने कई उपाय किए, पर बेहद कहां है, किसी को पता नहीं चला। यह अखण्ड का ज्ञान जागृत बुद्धि (परा शक्ति) के बिना कोई नहीं पहचान सका।

न तो आए बुध के सागर, गुन खट ग्यानी।
भगवानजी को महादेवजी, पूछे बेहद वानी।।३।।

इस ब्रह्माण्ड में छः शास्त्रों के बड़े-बड़े ज्ञानी आए, किन्तु वह भी पार के ज्ञान को जान नहीं सके। यहां तक कि शंकर भगवान भी नहीं जान सके तो उन्होंने भगवान विष्णु से पूछा।

विष्णु कहे सिवजी सुनो, तुम पूछत हो जेह।
आद करके अबलों, अगम कहियत है एह।।४।।

भगवान विष्णु कहते हैं कि हे शिव ! सुनो, जो तुम पूछ रहे हो उसे, जब से सृष्टि बनी है, आज तक सबने अगम ही अगम पुकारा है। वहां तक कोई जा नहीं सका।

कोट ब्रह्मांड जो हो गए, तित काहूं न सुनी।
खोज खोज खोजी थके, चौदे लोक के धनी।।५।।

करोड़ों ब्रह्माण्ड हो गए, उनमें भी लोगों ने खूब खोजा। यहां तक कि चौदह लोकों के ब्रह्मा, विष्णु, महेश भी खोज-खोजकर थक गए, पर बेहद का एक वचन भी नहीं पा सके।

फेर पूछे सिव विष्णु को, कहे ब्रह्मांड और।
और ब्रह्मांड की वारता, क्यों पाइए इन ठौर।।६।।

फिर शंकरजी ने विष्णु से पूछा कि क्या कोई दूसरा ब्रह्माण्ड और है, दूसरे ब्रह्माण्ड की हकीकत को इस ब्रह्माण्ड में कैसे पाया जाए?

ए बात तो सिवजी जाहेर, इत है कई भांत।
ठौर ठौर कहे वचन, ए जो भेद कल्पांत।।७।।

विष्णुजी उत्तर देते हैं कि हे शंकरजी ! यह तो स्पष्ट है, हर शास्त्रों में इसका वर्णन है। ब्रह्माण्ड का बनना और मिटना लिखा है।

Nijanand App

ए प्रगट बानी कही प्रकास की, इंद्रावती चरने लागे जी।
सो लाभ लेवे दोनों ठौर को, जाकी वासना इत जागे जी।।५३ ।।

श्री इन्द्रावतीजी धनी के चरणों में लगकर प्रकास ग्रन्थ की प्रगट वाणी कह रही हैं कि जिसकी आत्मा यहां जाग जाएगी उसे माया में दोनों ठौर (स्थान, ठिकानों) का (माया और परमधाम का) लाभ होगा।

॥ प्रकरण ॥ ३० ॥ चौपाई ॥ ७८८ ॥

बेहद बानी

बेहद के साथी सुनो, बोली बेहद वानी।
बड़े बड़े रे हो गए, पर काहूं न जानी।। १ ।।

हे मेरे बेहद के सुन्दरसाथ! मैंने तुमको बेहद (अखण्ड) की वाणी बताई है, जिसे आज तक बड़े-बड़े (ब्रह्मा, विष्णु, महेश, ज्ञानी, ध्यानी) लोग हो गए, पर किसी ने नहीं जाना।

उपाय किए अनेको, पर काहूं न लखानी।
ए वानी निज बुध बिना, न जाए पेहेचानी।। २ ।।

बहुतों ने कई उपाय किए, पर बेहद कहां है, किसी को पता नहीं चला। यह अखण्ड का ज्ञान जागृत बुद्धि (परा शक्ति) के बिना कोई नहीं पहचान सका।

न तो आए बुध के सागर, गुन खट ग्यानी।
भगवानजी को महादेवजी, पूछे बेहद वानी।। ३ ।।

इस ब्रह्माण्ड में छः शास्त्रों के बड़े-बड़े ज्ञानी आए, किन्तु वह भी पार के ज्ञान को जान नहीं सके। यहां तक कि शंकर भगवान भी नहीं जान सके तो उन्होंने भगवान विष्णु से पूछा।

विष्णु कहे सिवजी सुनो, तुम पूछत हो जेह।
आद करके अबलों, अगम कहियत है एह।। ४ ।।

भगवान विष्णु कहते हैं कि हे शिव ! सुनो, जो तुम पूछ रहे हो उसे, जब से सृष्टि बनी है, आज तक सबने अगम ही अगम पुकारा है। वहां तक कोई जा नहीं सका।

कोट ब्रह्मांड जो हो गए, तित काहूं न सुनी।
खोज खोज खोजी थके, चौदे लोक के धनी।। ५ ।।

करोड़ों ब्रह्माण्ड हो गए, उनमें भी लोगों ने खूब खोजा। यहां तक कि चौदह लोकों के ब्रह्मा, विष्णु, महेश भी खोज-खोजकर थक गए, पर बेहद का एक वचन भी नहीं पा सके।

फेर पूछे सिव विष्णु को, कहे ब्रह्मांड और।
और ब्रह्मांड की वारता, क्यों पाइए इन ठौर।। ६ ।।

फिर शंकरजी ने विष्णु से पूछा कि क्या कोई दूसरा ब्रह्माण्ड और है, दूसरे ब्रह्माण्ड की हकीकत को इस ब्रह्माण्ड में कैसे पाया जाए?

ए बात तो सिवजी जाहेर, इत है कई भांत।
ठौर ठौर कहे वचन, ए जो भेद कल्पांत।। ७ ।।

विष्णुजी उत्तर देते हैं कि हे शंकरजी ! यह तो स्पष्ट है, हर शास्त्रों में इसका वर्णन है। ब्रह्माण्ड का बनना और मिटना लिखा है।

Nijanand App

सुकजी और सनकादिक, कई और भी साध।
तिन खोज खोज के यों कह्या, ए तो अगम अगाध।। ८ ।।

शुकदेवजी, सनकादिक तथा अन्य कई साधुओं ने खोज की तथा बताया कि बेहद का ज्ञान किसी ने नहीं जाना। वह बहुत गहरा है, भारी है।

एक सब्द के कारने, लखमीजी आप।
नेक भी जाहेर न हुई, अंग दिए कई ताप।। ९ ।।

बेहद का एक शब्द सुनने के लिए ही लक्ष्मीजी ने अपने शरीर को कई प्रकार का कष्ट देकर सात कल्पान्त तपस्या की, फिर भी भगवान विष्णु उनको एक शब्द भी नहीं कह सके।

याही रस के कारने, कैयों किए बल।
कैयों कलप्या अपना, पर काहूं न प्रेमल।। १० ।।

इस बेहद के ज्ञान के लिए बहुतों ने ताकत लगाई और कइयों ने तो दुःखी हो अपने को समाप्त कर दिया, परन्तु उनको हद तक का पता नहीं चला।

सो रस बृज की सुंदरी, पायो सुगम।
सो सेहेजे घर आइया, जो कहे वेद अगम।। ११ ।।

वेदों ने जिसको अगम कहा है, उसको सरलता और सुगमता से बृज की सखियों ने घर बैठे ही पा लिया।

ए निध अपने घर की, इन यों तो बिलसी।
अनूं चोंच पात्र या बिना, नाहीं काहूं कैसी।। १२ ।।

हे साथजी! यह अपने घर की अखण्ड न्यामत है, जिसका बृज की सखियों ने (क्योंकि वह परमधाम की आत्माएं थीं) साधारण रूप से आनन्द लिया, परन्तु चींटी के मुख के बराबर भी इनके बिना कोई नहीं कह सका।

अबलों काहूं न जाहेर, श्री धाम के धनी।
खेले आप इच्छा कर, अर्धांग जो अपनी।। १३ ।।

आज तक किसी को भी यह ज्ञान नहीं हुआ कि उन सखियों (आत्माओं) के साथ उनकी आत्मा के धनी अपनी इच्छानुसार खेलते रहे। यह भेद किसी को जाहिर नहीं हुआ।

साथ इच्छाएं सुपन में, खेल मांहें आया।
बेहद थे पिउ आए के, बेहद साथ खेलाया।। १४ ।।

सुन्दरसाथ ने परमधाम में खेल देखने की इच्छा की थी। उसके अनुसार वह खेल देखने आए। उनके धनी ने बेहद (परमधाम) से आकर बेहद की आत्माओं को ही अपने संग खिलाया।

ए बानी इत हम बिना, और काहूं न होवे।
आधा लुगा न पाइए, जो जीव अपना खोवे।। १५ ।।

इस वाणी का ब्रह्मसृष्टि के बिना और किसी को आधा शब्द भी नहीं प्राप्त हो सकता। भले वह सारी उम्र तपस्या कर अपने आपको भी गंवा दे।

Nijanand App

साथ देखने आइया, पिउ इछा कर।
बेहद धनी साथ को, खेलावें चित धर।। १६ ।।

सुन्दरसाथ परमधाम से खेल देखने की इच्छा लेकर आए हैं। उनके धाम धनी अपने बेहद के साथ को इच्छा के अनुसार खेल खिलाते हैं।

ले चलसी सब साथ को, पार बेहद घर।
पीछे अवतार बुध को, सब करसी जाहेर।। १७ ।।

धाम धनी अपने सुन्दरसाथ को हद पार बेहद तथा बेहद पार परमधाम ले चलेंगे। उसके बाद जागृत बुद्धि के अवतार इस ज्ञान को चौदह लोकों में जाहिर करेंगे।

बैकुंठ जाए विष्णु को, सब देसी खबर।
विष्णु को पार पोहोंचावसी, सब जन सचराचर।। १८ ।।

भगवान विष्णु को जागृत बुद्धि के अवतार बैकुण्ठ में जाकर इस ज्ञान से समझाएंगे और तब विष्णु भगवान को और संसार के सब जीवों को बेहद में पहुंचाकर अखण्ड कर देंगे (विष्णु भगवान ही सबके अन्दर बैठे हैं) जैसे ही उनको तारतम मिलेगा सब जीव जागृत हो जाएंगे। तब ब्रह्माण्ड का प्रलय होगा और सब बेहद में (योगमाया में) अखण्ड हो जाएंगे।

खोज पाई जिन ए निध, धंन धंन सो बुध।
दृढ़ करी सनेहसों, साथ को कही सुध।। १९ ।।

श्री देवचन्द्रजी ने बड़ी खोज की तब श्यामजी के मन्दिर में श्री राजजी महाराज से यह जागृत बुद्धि की न्यामत पाई, जिसको उन्होंने बड़ी दृढ़ता से ग्रहण किया, जिससे सुन्दरसाथ को घर की सुध दी, ऐसी जागृत बुद्धि धन्य-धन्य है।

नौतन पुरी भली पेरे, चितसों चरचानी।
साथी जो बेहद के, तिनहूं पेहेचानी।। २० ।।

नौतनपुरी में जब यह बुद्धि श्री देवचन्द्रजी के हृदय में विराजमान हो गई तो उन्होंने इस बेहद के ज्ञान की सुन्दरसाथ के बीच बड़े चित्त से चर्चा की। जो बेहद के साथी थे, उन्होंने ही पहचान की।

बेहद वाट देखावहीं, पिउ आए के पास।
तारतम ले आए धनी, ए जोत उजास।। २१ ।।

सुन्दरसाथ के पास धाम के धनी श्री राजजी महाराज तारतम ज्ञान लेकर आए हैं, जिसके उजाले से (पहचान से) बेहद का रास्ता दिखाते हैं।

जाहेर हुई जो साथ में, देखो रास प्रकास।
तारतम वानी वतन की, जिन कियो तिमर सब नास।। २२ ।।

यह तारतम वाणी (जागृत बुद्धि का ज्ञान) हमारे घर की है। इस वाणी के द्वारा सुन्दरसाथ को रास और प्रकास के ग्रन्थों के भेद मालूम हुए और सारा संशय मिट गया।

हिरदे आद नारायन के, वेद जिनको स्वांस।
ग्रन्थ सबों की उतपन, वानी वेद व्यास।। २३ ।।

आदि नारायण के हृदय से सांसों द्वारा वेद का ज्ञान आया और उन सब वेद ग्रन्थों का सार व्यास जी की वाणी में जाहिर हुआ।

Nijanand App

तामे फल श्री भागवत, सुकजी मुख भाख।
पाती ल्याया बेहद की, साथ की पूरी साख।। २४ ।।

उन सबके सार का भागवत में शुकदेवजी के मुख से वर्णन हुआ। शुकदेवजी ने बेहद का समाचार लाकर ब्रह्मसृष्टि की गवाही दी।

और भी नाम केते कहूं, इंड वानी अलेखे।
सब साख देवे बेहद की, जो कोई दिल दे देखे।। २५ ।।

इस ब्रह्माण्ड में और भी अनेक ग्रन्थ हैं। उनके नाम कहां तक गिनाऊं? उनके अन्दर कोई चित्त से खोज करे तो सभी ग्रन्थ बेहद की साक्षी (गवाही) देते हैं।

ए बानी ए वाटड़ी, कबूं ना जाहेर।
धनी ब्रह्मांड के खोजिया, सब मांहें बाहेर।। २६ ।।

इस वाणी और इस रास्ते को आज तक किसी ने नहीं जाना। ब्रह्माण्ड के मालिक ब्रह्मा, विष्णु, महेश ने भी अन्दर बाहर सब जगह खोजा।

एक जरा किनहूं न पाइया, इत अनेक जो धाए।
नाम ब्रह्मांड के धनी कहे, दूजे कहा करूं सुनाए।। २७ ।।

दूसरे लोगों ने भी खोज की, परन्तु किसी को भी थोड़ा भी ज्ञान नहीं हुआ। जब ब्रह्माण्ड के मालिकों का यह हाल है तो दूसरों की क्या कहूं?

सो निध जाहेर इत हुई, धंन धंन संसार।
धंन धंन खंड भरथ का, धंन धंन नर नार।। २८ ।।

वह बेहद का ज्ञान (तारतम वाणी) अब यहां आकर जाहिर हो गया, इसलिए यह संसार, भरतखण्ड तथा यहां के सब नर-नारी धन्य हैं।

धंन धंन पांचों तत्व, धंन धंन त्रैगुन।
धंन धंन जुग सो कलजुग, धंन धंन पुरी नौतन।। २९ ।।

यहां के पांच तत्व, तीन गुण, कलियुग तथा नौतनपुरी भी धन्य-धन्य हैं।

अब कहूं लीला प्रथम की, सुनियो तुम साथ।
जो कबूं कानों ना सुनी, सो पकड़ देऊं हाथ।। ३० ।।

हे मेरे साथजी! अब पहली लीला जो हमने बृज में की है और जिसका ज्ञान यहां किसी को नहीं है, वह ज्ञान तुम्हें देकर अच्छी तरह पहचान करा देती हूं।

धोखा कोई न राखहूं, करूं निरसंदेह।
मुक्त होत सचराचर, आयो वतनी मेह।। ३१ ।।

हे मेरे साथजी! अब परमधाम का अखण्ड ज्ञान आ गया है, जिससे सारे ब्रह्माण्ड को मुक्ति मिलनी है। वह ज्ञान देकर तुम्हारे सब सन्देह मिटा देता हूं।

धंन गोकुल जमुना त्रट, धंन धंन बृजवासी।
अग्यारे बरस लीला करी, करी अविनासी।। ३२ ।।

गोकुल ग्राम, यमुना का किनारा तथा बृज के रहने वाले धन्य हैं, जहां पर ग्यारह वर्ष तक धनी ने लीला की और उसे अखण्ड कर दिया।

Nijanand App

चौदे लोक सुपन के, साथ आया देखन।
मुक्त दे पीछे फिरे, सदासिव चेतन।। ३३ ।।

चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड को देखने के लिए सुन्दरसाथ बृज में आए थे। बृज लीला देखकर सदाशिव चेतन में अखण्ड करके घर गए।

और ब्रह्मांड जोगमाया को, कियो खेलने रास।
खेल करे श्री राजसों, साथ सकल उलास।। ३४ ।।

इसके बाद रास खेलने के लिए योगमाया का दूसरा ब्रह्माण्ड बनाया गया, जिसमें सब सुन्दरसाथ अपने धनी के साथ मिलकर बड़ी उमंग से खेले।

नौतन खेल या रास को, कबहूं न होवे भंग।
खेले साथ सुपन में, जोगमाया के रंग।। ३५ ।।

इस योगमाया के ब्रह्माण्ड में सुन्दरसाथ ने जो नए-नए खेल खेले वह अखण्ड कर दिए। इनका लय नहीं होगा, परन्तु इस ब्रह्माण्ड में सपने की तरह ही रहे जहां घर की सुध नहीं थी।

तुम देखो साथ सुपन में, खेल खेले ज्यों।
एक विधें साथ जागिया, खेल त्यों का त्यों।। ३६ ।।

हे सुन्दरसाथजी! देखो यह सपने में जो हमने खेल खेले वह ज्यों के त्यों आज भी अखण्ड हैं और हम भी घर में जागृत हुए।

एह ब्रह्मांड तीसरा, हुआ उतपन।
धाख रही कछू अपनी, तो फेर आए देखन।। ३७ ।।

यह तीसरा ब्रह्माण्ड नया बना। अपने मन में माया की चाहना बाकी रह गई थी, उसे देखने आए हैं।

ब्रह्मांड तीनों देखे हम, खेल बिना हिसाब।
जाग वतन बातां करसी, जो देखी मिने ख्वाब।। ३८ ।।

हमने तीनों ब्रह्माण्डों को देखा और बेशुमार खेल खेले (लीला की)। अब परमधाम में जागृत होने पर इन सपने के ब्रह्माण्डों की बातें करेंगे।

ए जो ब्रह्मांड उपज्या, जिनमें राख्या सेर।
साथ घरों सब पोहोंचिया, और इत आए फेर।। ३९ ।।

यह ब्रह्माण्ड नया उतपन (उत्पन्न) हुआ है। इसके पहले रास खेलकर हम अपने घर परमधाम गए थे और यहां पर दूसरी बार आए हैं।

ज्यों हरे ब्रह्मांएं बाछरू, गोवाला संघातें।
ततखिन सो नए किए, आप अपनी भांतें।। ४० ।।

जिस तरह से ब्रह्माजी ने ग्वाल-बाल और बछड़ों को हरण कर लिया था और उसी क्षण श्री कृष्ण ने ज्यों के त्यों नए बना दिए थे।

गोकुल मिने आप अपने, घर सब कोई आया।
खबर ना पड़ी काहूं को, ऐसी रची माया।। ४१ ।।

यह नए ग्वाल, बछड़े अपने-अपने घर गोकुल आए, परन्तु किसी को यह खबर नहीं हुई कि यह नए हैं। ऐसी माया की रचना कर दी।

Nijanand App

एह दृष्टांते समझियो, राह राख्या इन विध।
ए बल माया देखियो, और ऐसी किध।।४२।।

इसी दृष्टान्त से समझना कि यह नया ब्रह्माण्ड उसी तरह बना है। इस माया की कला देखना जैसे का तैसा ब्रह्माण्ड धनी के हुकम से बना दिया।

साथ चल्या सब वतन, अपने पिउ साथ।
और खेले रास में अखंड, इत उठे प्रभात।।४३।।

रास लीला खेलकर हम सब धनी के साथ घर चले गए थे। रास भी अखण्ड हो गई फिर इस तीसरे ब्रह्माण्ड में सब उठे।

सोई गोकुल जमुना त्रट, जानों सोई बृजवासी।
रास लीला जाने खेल के, इत आए उलासी।।४४।।

अब ऐसे लगा कि यह वही गोकुल है, वही यमुना तट है। वही बृजवासी हैं जो रास लीला खेलने के बाद यहां आए हैं।

जाने सोई ब्रह्मांड, जो खेलत सदाए।
ए ब्रह्मांड जो उपज्या, ऐसी रे अदाए।।४५।।

सभी दुनियां वाले यह जानते हैं कि यह वही ब्रह्माण्ड है जिसमें हम सदा से खेलते रहे हैं, जबकि हकीकत यह है कि यह ब्रह्माण्ड उसी तरह से नया बना है।

दोऊ ब्रह्मांडों बीच में, सेर राख्या सार।
खबर न पड़ी काहू को, बेहद का बार।।४६।।

इन दोनों बृज के ब्रह्माण्डों के बीच जो छिपा हुआ भेद हमारी अखण्ड रास का है, जिसकी बातें यह लोग नहीं जानते, अब बेहद की वाणी आने से सबको यह ज्ञान हो जाएगा।

इत फेर उठे जो प्रतिबिंब, यामें साथ पिउ।
खेल आए जाने हम नहीं, धोखा रह्या जिउ।।४७।।

इस नए ब्रह्माण्ड में जो प्रतिबिम्ब के स्वरूप बने, उसमें तन इस विष्णु भगवान का, शक्ति और भेष गोलोक का, ग्यारह दिन रहा। गोपियों पर भी शक्ति और भेष गोलोक का था। इसलिए यहां के नए जीवों को यह पता नहीं चला कि हम नए बने हैं या क्या हुआ है, यह संशय जीव का बना रहा।

धोखा इनों का भी न मिट्या, तो कहा करे और।
बेहद वानी के माएने, क्यो होवे दूजे ठौर।।४८।।

नए बृज के नए तनों के जीवों का संशय नहीं मिटा तो दूसरों का कहना ही क्या, इसलिए बेहद वाणी के भेद बेहद के साथियों के बिना दूसरा कोई जान ही नहीं सकता।

यों साथ पिछला आइया, इत इन दरवाजे।
मूल साथ फेर आवसी, ए किया जिन काजे।।४९।।

इस तरह से कुमारिका सखियां जिनकी इच्छा पहले बृज में पूरी नहीं हुई थी, उन्होंने इस ब्रह्माण्ड में आकर प्रतिबिम्ब की लीला की। परमधाम के सुन्दरसाथ जिनके वास्ते खेल बनाया है, वह दुबारा बाद में आएंगे।

Nijanand App

क्या जाने हद के जीवड़े, बेहद की बातें।
रास में खेले अखंड, इत उठे प्रभातें।।५० ।।

माया के जीव अखण्ड ब्रह्माण्ड की बातों को क्या जानें। रात में इन जीवों ने अखण्ड रास की लीला की और रात के बाद प्रातः बृज में उठे।

खेले पिछले साथ में, सात दिन तांई।
अक्रूर चल्या बुलाए के, पोहोंचे मथुरा मांहीं।।५१ ।।

कुमारिका सखियों के जीवों के साथ सात दिन तक बृज में गोलोक की शक्ति ने लीला की, उसके बाद अक्रूरजी श्री कृष्ण को मथुरा ले गए।

तोलों भेख जो पिउ का, कुबलापील मार्‍या।
चांडूल मुष्टक संघार के, जाए कंस पछाड़्या।।५२ ।।

मथुरा में कुबलयापीड़ (हाथी) को मारा, चाणूर और मुष्टिक पहलवानों को मारा और उसके बाद कंस को मार दिया। यहां तक अभी गोलोक श्री कृष्ण की लीला ही चल रही है।

टीका दिया उग्रसेन को, भए दिन चार।
छोड़ वसुदेव भेख उतारिया, या दिन थें अवतार।।५३ ।।

उग्रसेन को मथुरा का राजा बनाकर राज तिलक दिया। वसुदेव और देवकी को जेल से छुड़ाकर और पिउ वाला भेष (गोलोक वाला भेष) उतारकर नन्द बाबा को दिया। यहां चार दिन की लीला पूरी हुई। उसके बाद यहां जो अब विष्णु भगवान हैं, उनकी लीला शुरू होती है।

अब इहां से लीला हद की, सोतो सारे केहेसी।
पर वेहद वानी हम बिना, दूजा कौन देसी।।५४ ।।

यहां से क्षर ब्रह्माण्ड के श्री कृष्ण (विष्णु भगवान) की लीला शुरू होगी। इसका वर्णन सब कोई करेगा, परन्तु बेहद की लीला का भेद हमारे जो बेहद के साथी हैं, उनके बिना कौन देगा?

नरसैयां इन पेंडे खड़ा, लीला बेहद गाए।
बल करे अति निसंक, मिने पैठ्यो न जाए।।५५ ।।

नरसैयां इस बेहद के रास्ते खड़े होकर बेहद की लीला में मग्न हो गया। उसने अन्दर जाने का प्रयत्न तो किया पर जा नहीं सका।

जो बल किया नरसैऐं, कोई करे न और।
हद के जीव बेहद की, लीला देखी या ठौर।।५६ ।।

जो बल नरसैयां ने किया, कोई और नहीं कर सकता। यह क्षर ब्रह्माण्ड का जीव था, परन्तु लीला देखकर इसने बेहद का अनुभव किया।

नरसैयां दौड़्या रस को, वानी करे रे पुकार।
रस जाए हुआ अंदर, आड़े दरवाजे चार।।५७ ।।

नरसैयां रास का आनन्द लेने के लिए दौड़ा। जैसा उसकी वाणी से पता लगता है कि बेहद का रस अन्दर ही रह गया, जहां वह नहीं पहुंच सका। उसके आड़े चार दरवाजे आ गए। (स्थूल, सूक्ष्म, कारण, महाकारण)।

Nijanand App

द्वारने इन बेहद के, लेहेरें आवें सीतल।
सो इत खड़ा लेवहीं, रस की प्रेमल।। ५८ ।।

वह बेहद के दरवाजे पर खड़ा होकर मात्र अनुभव करता रहा। सब आवाजें सुनता रहा। वह यहां रहकर भी रास की लहरों का सुख लेता रहा।

इन दरवाजे नरसैयां, प्रेमें लपटाना।
लीला पीछले साथ में, सुख ले समाना।। ५९ ।।

बेहद के रास्ते में खड़ा होकर नरसैयां प्रेम मे मगन (मग्न) हो गया और इस प्रतिबिम्ब लीला को देखकर सुख में लीन हो गया।

लीला सुकें बरनन करी, बृज रास बखाना।
बेहद की बानी बिना, ठौर ठौर बंधाना।। ६० ।।

शुकदेवजी ने बृज और रास की लीला का वर्णन किया, परन्तु बेहद का ज्ञान जागृत बुद्धि न होने से, बार-बार संशय में पड़े रहने से न पा सके।

ना तो ए क्यों ऐसे बरनवे, क्यों कहे पंच अध्याई।
ए रस छोड़ और वचन, मुख काढ्यो न जाई।। ६१ ।।

नहीं तो इस आनन्द के रस का वर्णन शुकदेवजी केवल पांच अध्याय में ही क्यों समाप्त कर देते। यह रस अर्थात् बेहद यदि उनको मिलता तो और कोई वाणी उनके मुख से न निकलती।

होवे अस्कंध द्वादस थें, इत कोट गुने।
पर क्या करे आग्या इतनी, बस नांहीं अपने।। ६२ ।।

यदि बेहद का ज्ञान मिल गया होता तो बारह स्कन्ध के बजाय करोड़ों स्कन्ध बन जाते, परन्तु क्या करें? जितनी आज्ञा थी उतना ही वर्णन कर सके। बेहद ज्ञान का वर्णन करना उनकी शक्ति से बाहर था।

ना हुई जाहेर या मुख, बेहद की बान।
धाख रही बोहोत हिरदे, कलप्या दुख आन।। ६३ ।।

शुकदेवजी के मुख से बेहद की वाणी का वर्णन न हो सकने के कारण उनको बहुत दुःख हुआ। उनके मन में तो बेहद के वर्णन करने की चाहना थी।

कंपमान होए कलप्या, रस गया याथें।
सोए दुख क्यों सेहें सके, रस जाए जाथें।। ६४ ।।

राजा परीक्षित के प्रश्न कर देने से बेहद का वर्णन न हो सका, इसलिए शुकदेवजी बहुत बिलखते हुए रोए। जिससे ऐसा अखण्ड सुख छिन जाए वह उस दुःख को कैसे सहन कर सकता है?

बेहद के सब्द कहे का, था हरख अपार।
दरवाजा ना खोलिया, रह्या रस सार।। ६५ ।।

शुकदेवजी के मन में बेहद के ज्ञान का वर्णन करने की बड़ी खुशी थी, परन्तु वह थोड़ा भी दरवाजा नहीं खोल पाए (ज्ञान का वर्णन नहीं कर पाए)। आनन्द के रस का आना रुक गया।

रास रात बरनन करी, देखो मन विचार।
नारायनजी की रात को, कोईक पावे पार।। ६६ ।।

सुन्दरसाथजी! जरा विचार करके देखो कि नारायणजी की रात्रि कितनी लम्बी होती है। शायद ही कोई उसका पार पाता हो, परन्तु रास की रात्रि जो अखण्ड है, उसका पार पाना कैसे सम्भव हो सकता है?

Nijanand App

पार नहीं रास रात को, ए तो बेहद कही।
तामें अखंड लीला रासकी, पंच अध्याई भई।। ६७ ।।

रास की रात्रि में जो लीला हो रही है उसका पारावार नहीं और अखण्ड है। उस अखण्ड रास की लीला को शुकदेवजी ने पांच अध्याय में कैसे समाप्त कर दिया?

देखो जाहेर याके माएने, चित ल्याए वचन।
रात ऐसी बड़ी तो कही, लीला बड़ी वृंदावन।। ६८ ।।

सुन्दरसाथ! इन वचनों को चित्त में धारण कर विचारो और जाहिरी अर्थ में भी देखो। इससे जाहिर है कि वृन्दावन की रास की लीला अखण्ड रात की होने के कारण से भारी कही गयी है।

ए पंच अध्याई होवे क्यों कर, मेरे मुनीजी की बान।
पर सार समें बीच अटक्या, रस आए सुजान।। ६९ ।।

इतनी बड़ी अखण्ड रास की लीला का वर्णन केवल पांच अध्याय में शुकदेवजी मुनि की वाणी से हो नहीं सकता था, परन्तु जैसे ही पार के ज्ञान का वर्णन शुरू हुआ, राजा परीक्षित के प्रश्न से पार का रस आना बन्द हो गया। बीच में ही अटका रहा।

दुख हुआ बोहोत कलप्या, पर कहा करे जान।
पात्र बिना पावे नहीं, रस बेहद बान।। ७० ।।

शुकदेवजी मुनि को बहुत दुःख हुआ और रोए। पर क्या करें? बेहद का रस पात्र के बिना टिकता नहीं।

पात्र बिना तुम पाइया, मुनीजी क्यों करो दुख।
आज लगे बेहद का, किन लिया है सुख।। ७१ ।।

स्वामीजी कहते हैं, हे मुनिजी! तुमने पात्र न होते हुए भी इतना सुख प्राप्त कर लिया। अब दुःख क्यों करते हो? आज तक बेहद का सुख किसी ने नहीं लिया।

एतो हमारा कागद, तुम साथे आया।
खबर हद बेहद की, देकर पठाया।। ७२ ।।

यह तो हमारी चिट्ठी है, जो तुम्हारे द्वारा आई है। इसमें क्षर और अक्षर की खबर देकर हमारे धनी ने भेजी है।

विध सारी कागदमें, हम लिए विचार।
तुम साथे मुनीजी संदेसड़ा, आए समाचार।। ७३ ।।

इस भागवत (कागज) में हमारी खबर है, जिसको हमने विचार कर ग्रहण कर लिया है। हे मुनिजी! तुम्हारे द्वारा हमारे घर का समाचार आया है।

या सुध कागद हम लई, समझे सब सार।
औरन को ए कोहेड़ा, ना खुले द्वार।। ७४ ।।

इस भागवत ग्रन्थ को हमने लेकर सार वस्तु को समझ लिया है जो हमारे घर की है। दूसरों के लिए तो यह धुन्ध ही है। उनको समझ में आएगा ही नहीं।

Nijanand App

और विचारे क्या जानहीं, जाने जाको होए।
हम बिना द्वार बेहद के, खोल ना सके कोए।।७५ ।।

इस दुनियां के जीव इस रहस्य को कैसे जान सकते हैं? जिसका है वही जानता है। हमारे बिना और कोई बेहद का ज्ञान नहीं जान सकता, क्योंकि हम ही बेहद के हैं, अन्य सब हद के जीव हैं।

लाख बेर देखो फेर, न पावे कड़ी कल।
पाई नहीं त्रिगुनने, कर कर गए बल।।७६ ।।

इस भागवत ग्रन्थ को लाख बार पढ़ो, फिर भी इसमें जो बेहद के ज्ञान की कड़ी है वह किसी को नहीं मिलेगी। ब्रह्मा, विष्णु, महेश ने भी बहुत बल किया, परन्तु नहीं समझ पाए।

एतो कोहेड़ा हद का, बेहदी समाचार।
ए देखावें हम जाहेर, साथ को खोल द्वार।।७७ ।।

यह भागवत संसार के जीवों के लिए धुंध है और हम, बेहद के सुन्दरसाथ के घर का समाचार है। इससे हम भेदों को खोलकर जाहिर में बताएंगे।

सुकजी इत ले आइया, बेहद के बोल।
फेर टालो अंदर का, देखो आंखां खोल।।७८ ।।

यहां पर शुकदेवजी बेहद के वचन लेकर आए हैं। हे सुन्दरसाथजी! अपने अन्दर के संशय मिटाकर आंखें खोलकर देखो।

अस्कंध दूजा मुनिऐं कह्या, चत्रश्लोकी जित।
ब्रह्मांड की जहां उतपन, अर्थ देखो तित।।७९ ।।

शुकदेव मुनि ने भागवत के दूसरे स्कन्ध में चार विशेष श्लोकों का वर्णन किया है। इनमें ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति का वर्णन है। इनके अर्थ को पहचानो और देखो।

ए द्वार देखोगे जाहेर, होसी माया पेहेचान।
ए माएना नीके लीजियो, हिरदेमें आन।।८० ।।

इन चार श्लोकों से तुम्हें माया की पहचान होगी तथा बेहद का पता चलेगा। हे साथजी! हृदय में इसके भेद को समझ कर धारण करना।

मोह तत्व कह्या नींद को, सुरत अहंकार।
सुपन को कह्या ब्रह्मांड, नाम धरे बेसुमार।।८१ ।।

मोह-तत्व को नींद कहा है और सुरता को अहंकार कहा है। ब्रह्माण्ड को सपना कहा है। इनके और बेशुमार नाम रखे हैं।

पैंडा बेहद वतन का, ए वतनी जाने।
हद का जीव बेहद का, द्वार क्यों पेहेचाने।।८२ ।।

बेहद का रास्ता हमारे घर के सुन्दरसाथ ही जानेंगे। क्षर ब्रह्माण्ड के जीव बेहद की बातों को नहीं जानेंगे।

देख्यो द्वार बेहद के, सुकजी बलवंत।
पर कल किल्ली क्यों पावहीं, जोर किया अनंत।।८३ ।।

देखो, सुन्दरसाथजी! शुकदेवजी जैसे महान मुनि ने बहुत ताकत लगाने पर भी बेहद के द्वार खोलने के लिए चाबी (तारतम) और खोलने की कला (जागृत बुद्धि) को नहीं पाया।

Nijanand App

द्वार खोलने दौड़िया, सुकजी सपराना।
ले चल्या संग परीछित, सो तो बोझे दबाना।। ८४ ।।

बेहद का दरवाजा शुकदेवजी खोलने दौड़े। संग में संसार का जीव राजा परीक्षित होने से खुद भी पार का वर्णन न कर सके। राजा आड़े आ गया।

बल किया बलिऐं घना, द्वार द्वार पछटाना।
पर साथे संघाती हद का, इत सो उरझाना।। ८५ ।।

शुकदेवजी ने बल तो बहुत लगाया, परन्तु बेहद के दरवाजे खोलकर प्रवेश नहीं कर सके और पछताते रहे। उनका संगी परीक्षित माया का जीव था, इसलिए वह भी उलझ गए।

रास लीला सुख अखंड, इत तो न केहेलाना।
पाछल तान हुई घनी, अध बीच लेवाना।। ८६ ।।

रास लीला के अखण्ड सुख का वर्णन नहीं कर सके। राजा परीक्षित ने जोर से पीछे खींचा, इसलिए बीच में ही अटक गए।

पात्र बिना रस क्यों रहे, आवत ढलकाना।
पात्र हुते तिन पाइया, भली भांत पेहेचाना।। ८७ ।।

पात्र के बिना इस बेहद का रस टिक नहीं सकता, इसीलिए आते-आते लुढ़क गया। जो पात्र हैं उन ब्रह्मसृष्टियों (सुन्दरसाथ) ने अपने घर की पहचान ले ली।

बरस असी लगे ए रस, सारी पेरे सचवाना।
लिंया पिया साथ में, जिन जैसा जाना।। ८८ ।।

अस्सी वर्ष तक (१६३८ से १७१८ जूनागढ़) यह रस सुन्दरसाथ के बीच में ही बंटता रहा। सुन्दरसाथ ने जितना जाना उतना ही अपने धनी के साथ आनन्द किया।

एक बूंद बाहेर न निकसया, साथ मिने समाना।
जिन का था तिन बिलसिया, मिनो मिने बटाना।। ८९ ।।

इन अस्सी वर्षों में एक बूंद भी जीवों को नहीं मिला। यह सुन्दरसाथ में ही रहा। यह रस सुन्दरसाथ का था। उन्होंने आपस में प्रेम से बांटा।

अब हम मिने थें ए रस, इत आए छलकाना।
छोल आई ज्यों सागर, अंग थें उभराना।। ९० ।।

अब हमारे बीच में से यह रस (वाणी) यहां आकर (जूनागढ़ में) छलक गया। जैसे सागर में पूर (प्रवाह) आता है, उसी तरह श्री राजजी के आवेश से मेरे तन से बाहर निकल गया। सबसे पहले जीवों में यह हरजी व्यास को मिला।

जोर किया हम बोहोतेरा, रस रह्या न ढ़पाना।
ए अब जाहेर होएसी, बाहेर प्रगटाना।। ९१ ।।

हमने बहुत कोशिश की, लेकिन यह रस (तारतम वाणी) हमारे रोके से नहीं रुका। अब यह रस (वाणी) बाहर जाहिर हो गया तथा और आगे भी जाहिर होगा।

Nijanand App

ए रस आज के दिन लों, कित काहू न लखाना।
आवसी साथ इन विध, ए रस लपटाना।। ९२ ।।

इस वाणी को आज दिन तक किसी ने नहीं पहचाना। अब सुन्दरसाथ वाणी के इन वचनों को पहचान कर आएंगे।

जान होए सो जानियो, ए क्योंकर रहे छाना।
क्यों कर ए छिपा रहे, सब सुनसी जहाना।। ९३ ।।

इस वाणी को जिसे समझना हो, समझ ले। यह अब छिपी नहीं रहेगी। सारा संसार इसको सुनेगा।

ए बानी बेहद प्रगटी, इंद्रावती मुख।
बोहोत विधें हम रस पिए, बेहद के सुख।। ९४ ।।

यह बेहद की वाणी श्री इन्द्रावतीजी के मुख से प्रकट हुई है। हर सुन्दरसाथ ने बेहद के सुखों का कई प्रकार से आनन्द लिया।

या बानी के कारने, कई करे तपसन।
या बानी के कारने, कई पीवें अगिन।। ९५ ।।

इस वाणी के लिए कई ने तपस्या की। कई ने अग्निपान किया।

या बानी के कारने, कई दमे देह।
या बानी के कारने, कई करें कष्ट सनेह।। ९६ ।।

इस वाणी के लिए कई ने देह का दमन किया। कई ने प्रेम से कष्ट सहे।

या बानी के कारने, कई गले हेम।
या बानी के कारने, कई लेवे अंनसन नेम।। ९७ ।।

इस वाणी के लिए कई बर्फ में गले और कई ने अन्न तक भी नहीं खाया।

या बानी के कारने, कई भैरव झंपावे।
या बानी के कारने, तिल तिल देह कटावे।। ९८ ।।

इस वाणी के वास्ते कई पहाड़ों से गिरे तथा कई ने काशी में करवट लेकर अपनी देह को तिल-तिल कटाया।

या बानी के कारने, कई संधान सारे।
या बानी के कारने, कई देह जारे।। ९९ ।।

इस वाणी के वास्ते कई ने अपनी हड्डियों के जोड़ खुलवा डाले। कई ने अपने तन को आग में जलाया।

या बानी के कारने, करें कई बिध ताब।
सो मुख थें केते कहूं, हुए जो बिना हिसाब।। १०० ।।

इस वाणी के वास्ते कई ने तरह-तरह के कष्ट सहे। इस मुख से कहां तक कहूं? कई ने तो बिना हिसाब के अपने तन को भस्म किया है।

किन एक बूंद न पाइया, रसना भी वचन।
ब्रह्मांड धनियों देखिया, जो कहावें त्रैगुन।। १०१ ।।

किसी को एक बूंद भी बेहद के रस (तारंतम वाणी) एक बूंद भी नहीं मिली। त्रिगुण ब्रह्माण्ड के मालिक कहलाते हैं, उन्होंने खूब खोजा पर मिला नहीं।

Nijanand App

और भी नाम अनेक हैं, पर लेऊं कहा के।
ब्रह्मांड के धनियों ऊपर, लिए जाए न ताके।। १०२ ।।

ब्रह्माण्ड के मालिकों के और भी नाम बहुत हैं, पर ऊपर कैसे कहें।

सो रस सागर इत हुआ, लेहेरें उछले।
साथ सबे हम बिलसहीं, बाहेर पूर भी चले।। १०३ ।।

इस रस के सागर की लहरें उछलीं और हम सब सुन्दरसाथ ने उनका आनन्द लिया और बाहर भी बांटा।

पेहेले बीज उदे हुआ, पुरी जहां नौतन।
सब पुरियों में उत्तम, हुई धंन धंन।। १०४ ।।

सबसे पहले नौतनपुरी में जागृत बुद्धि का ज्ञान आया। इससे वह सब पुरियों में उत्तम और धन्य धन्य हुई। (यहां सब पुरियों का अर्थ है द्वारिकापुरी, अयोध्यापुरी, जगन्नाथपुरी, अवन्तिकापुरी, बद्रीनाथपुरी, इत्यादि।

फेर कहूं विध सकल, जासों सब समझाए।
संसा कोई साथ को, मैं राख्यो न जाए।। १०५ ।।

अब फिर से सारी हकीकत को समझाकर कहते हैं, जिससे किसी प्रकार का संशय सुन्दरसाथ में न रह जाए।

जो रस गोकुल प्रगट्या, सो तो सुख अलेखे।
विन जाने सुख बिलसिया, घर कोई न देखे।। १०६ ।।

जो आनन्द गोकुल की लीला में मिला वह अपार है, किन्तु इस सुख को अनजानपन में लिया। घर की सुध नहीं थी।

ए सुख सुपने बिलसिया, साथ पिउ संघाते।
घर देखे भागे सुपना, न देखाय ताथे।। १०७ ।।

यह सपने के सुख सुन्दरसाथ ने अपने धनी के साथ लिए। घर की पहचान न होने के कारण से ही यह सपने की लीला देख सके। जागने पर सपना टूट जाता है।

सुपन भागे सुख क्यों होए, खेल क्यों देखाए।
जब सुख वतन लीजिए, नींद उड़के जाए।। १०८ ।।

सपना मिट जाने से यह सुख कैसे देखते? खेल कैसे देखते? (ब्रज और रास के)। जब अखण्ड घर का सुख आ जाएगा तो संसार का मोह टूट जाएगा।

नींद उड़े भागे सुपना, तब फेर फेरा होए।
सुख सुपन और वतन, लिए जांए न दोए।। १०९ ।।

नींद उड़ जाने से स्वप्न टूट जाता है। हमारी चाहना बाकी रह जाती है और फिर से आना पड़ता है। सपने के सुख और घर के सुख अर्थात् माया के सुख और परमधाम के सुख एक साथ नहीं लिए जा सकते।

या बिध साथ समझियो, सुख साथ को दियो।
यों बिन जाने बृजमें, सुख सुपने लियो।। ११० ।।

हे सुन्दरसाथजी! इस तरह समझना कि हमने बिना जाने ब्रज के सुख सपने में लिए।

Nijanand App

अब सुख रास कहा कहूं, जाने निज सुख होए।
ए सुख साथ पिउ बिना, न जाने कोए।। १११ ।।

अब रास के सुख को कैसे कहूं? यह तो अपने सुख हैं। इनको हम सुन्दरसाथ तथा अपने पिया के बिना दूसरा कोई नहीं जानता।

ए पिउ सरूप नौतन, नौतन सिनगार।
नेह हमारा नौतन, नौतन आकार।। ११२ ।।

रास में हमारे प्रीतम ने नया तन धारण किया। श्रृंगार नया, हमारा प्रेम नया और हमारा तन भी नया था।

ए बन सुंदर नौतन, नौतन वाओ वाए।
जल जमुना नौतन, लेहेरां लेवें बनराए।। ११३ ।।

यह वृन्दावन अत्यन्त सुन्दर तथा नया था। नयी वायु थी, यमुनाजी का जल नया था और हवा की लहरों में वन झूमते थे।

सुगंध बेलियां नौतन, जिमी रेत सेत प्रकास।
नेहेकलंक चंद्रमा नौतन, सकल कला उजास।। ११४ ।।

सुगन्ध देने वाली बेलें नयी थीं। जमीन और रेत चमकती थी। निष्कलंक चन्द्रमा नया था जो अपनी पूर्ण कलाओं से चांदनी फैला रहा था।

नौतन रंग पसु पंखी, बानी नई रसाल।
नौतन वेन बजावहीं, नए सुख देवें लाल।। ११५ ।।

नए-नए रंग के पशु पक्षी, नए-नए स्वरों में रस भरी वाणी बोलते। श्री कृष्णजी ने बंसी भी नए-नए स्वरों में बजाकर सुख दिए।

या रस सुख केते कहूं, कई रेहेस प्रकार।
साथ पिउ संग विलास, हम किए अपार।। ११६ ।।

इस आनन्द का वर्णन कहां तक करूं? कई भेद हैं। हम सुन्दरसाथ ने अपने धनी के साथ बेशुमार आनन्द की लीला की।

कई बातें या सुख की, जीव हिरदे जाने।
ए सुख पेहेले थें अलेखे, अति अधिकाने।। ११७ ।।

इस सुख की कई बातें हमारे जीव के हृदय में हैं, वही जानता है। यह सुख पहले से (ब्रज से) बेशुमार है।

तेज सबों में मूल का, सबहीं चेतन।
थिर चर चेतन ए लीला, ऐसी उतपन।। ११८ ।।

वृन्दावन की सम्पूर्ण सामग्री में शुरू से ही चेतना है। इस प्रकार से यहां चर और अचर सभी चेतन हैं। यहां रास की लीला की।

पर ए सुख सबे सुपन में, नेठ नींद जो मांहें।
ए सुख जोग माया मिने, दृष्ट ना घर तांहें।। ११९ ।।

(भले यह ब्रह्माण्ड चेतन तत्व का है) पर हमने इसको फरामोशी के सपने में देखा है। इस योगमाया के सुखों में भी हमें घर की पहचान नहीं थी।

Nijanand App

एक सुख कहे गोकुल के, और सुख रास सुपन।
सुख दोऊ क्यों होवहीं, विचारियो मन॥१२०॥

एक सुख गोकुल (ब्रज) के और सुख रास के सपने में देखे। हे सुन्दरसाथ! मन में विचार करके देखना। यह दोनों सुख कैसे हो सकते हैं?

जब लीजे सुख सुपन, नहीं वतन दृष्ट।
जब सुख वतन देखिए, नहीं सुपन की सृष्ट॥१२१॥

जब सपने के सुख लेते हैं तब नजर घर (परमधाम) की तरफ नहीं होती। इसी प्रकार जब घर के सुख लेते हैं तो सपने की सृष्टि नहीं रहती।

यों सुख सुपने लिए, कछुए नहीं खबर।
इन दोऊ लीला मिने, सुध नाहीं घर॥१२२॥

इस तरह से ब्रज और रास में हमने सपने के सुख लिए। तब घर की सुध नहीं थी।

या विध लीला दोऊ करी, सिधारे वतन।
ए ब्रह्मांड जो तीसरा, ले आए आपन॥१२३॥

इस तरह से दोनों लीलाएं (ब्रज और रास) देखने के बाद हम घर (परमधाम) पहुंचे। यह ब्रह्माण्ड तीसरा है, जो हमारे लिए बना है।

जो मनोरथ मूल का, हुआ नहीं पूरन।
विन सुध विरह विलास किए, यों रही धाख मन॥१२४॥

जो इच्छाएं इश्क रब्द के समय की थीं, उनमें से कुछ बाकी रह गईं। विरह और विलास दोनों हमने अनजाने में लिए, इसलिए चाहना बाकी रह गई।

धाख क्यों रहे अपनी, ए किया इंड फेर।
साथें आए पिउजी, इत दूजी बेर॥१२५॥

अपनी चाहना बाकी न रहे, इसलिए यह ब्रह्माण्ड फिर से बनाया और यहां पर दूसरी बार धनी आए।

लीला दोऊ पेहेले करी, दूजे फेरे भी दोए।
बिना तारतम ए माएने, न जाने कोए॥१२६॥

पहले फेरे में दो लीलाएं (ब्रज और रास)। दूसरे फेरे में भी दो लीलाएं कीं। एक नौतनपुरी में और दूसरी श्री पद्मावतीपुरी में। बिना तारतम वाणी के यह भेद कोई नहीं जान सकता।

एक में उपज्या तारतम, दूजे मिने उजास।
सब विध जाहेर होएसी, जागनी प्रकास॥१२७॥

एक तन में तारतम ज्ञान आया (देवचन्द्रजी के तन में)। दूसरे तन में ज्ञान को प्रकाशित करने की शक्ति आई (मेहराज ठाकुर का तन)। इस तरह से अब यह जागनी की लीला सब तरह से जाहिर हो जाएगी।

तारतम जोत उद्दोत है, तिनथे कहा होए।
एक सुपन दूजा वतन, जीव देखे दोए॥१२८॥

तारतम की ज्योति से क्या होता है? तारतम वाणी के द्वारा यहां का जीव स्वप्न की लीला और घर—दोनों देखता है।

Nijanand App

वतन देखत जाहेर, दूजी दोए लीला जो करी।
ए सब याद आवहीं, इत दोए दूसरी।। १२९ ।।

तारतम वाणी के द्वारा साक्षात् घर दिखाई देता है। पहले जो दो लीलाएं (ब्रज और रास) की हैं उनकी सुध आती है। दो लीलाएं जागनी के ब्रह्माण्ड में की हैं। यह सभी याद आती हैं।

याद आवें सारे सुख, और जीव नैनों भी देखे।
तारतम सब सुख देवहीं, विध विध अलेखे।। १३० ।।

तारतम वाणी के द्वारा इन सब लीलाओं की याद आती है और जीव आंखों से देखता भी है। इस तरह तारतम वाणी तरह-तरह से अपार सुख देती है।

या लीला की बातें इत, जुबां कही न जाए।
सुख दोऊ इत लीजिए, मनोरथ पुराए।। १३१ ।।

इस लीला की बातें जबान से कही नहीं जातीं। निज घर के तथा सपने के सुख सब यहां मिलते हैं और हमारी मनोकामना पूर्ण होती है।

या लीला को जो बल, वचन सब केहेसी।
वचन माएने देखके, सब सुख लेसी।। १३२ ।।

इस लीला की ताकत का तारतम वाणी से पता चलेगा। उस वाणी को समझकर सब सुख मिलेंगे।

धंन धंन ब्रह्मांड ए हुआ, धंन धंन भरथखंड।
धंन धंन जुग सो कलजुग, जहां लीला प्रचंड।। १३३ ।।

यह ब्रह्माण्ड, यह भरतखण्ड और यह कलियुग धन्य-धन्य हैं, जहां यह लीला जोर-शोर से हुई।

धंन धंन पुरी नौतन, जहां लीला उदे हुई।
केताक साथ आइया, दूजिऐं सब कोई।। १३४ ।।

नौतनपुरी धन्य-धन्य है, जहां यह लीला उदय हुई। इससे कुछ सुन्दरसाथ को नौतनपुरी में ज्ञान मिला और फिर तीनों सृष्टियों को उनके दूसरे तन श्री प्राणनाथजी के स्वरूप से सुख मिला।

धंन धंन धनी साथसों, धंन धंन तारतम।
पूरन प्रकास ल्याए के, सुख दिए हम।। १३५ ।।

धन्य-धन्य हैं धाम के धनी, धन्य-धन्य है तारतम जिसके प्रकाश को लाकर हम सुन्दरसाथ को सब सुख दिए।

तारतम रस बेहद का, सब जाहेर किया।
बोहोत विधें सुख साथ को, खेल देखते दिया।। १३६ ।।

इस तारतम वाणी से बेहद के सभी सुख जाहिर हो गए। सुन्दरसाथ को खेल में तरह-तरह के सुख दिए।

तारतम रस वानी कर, पिलाइए जाको।
जेहेर चढ्या होए जिमीका, सुख होवे ताको।। १३७ ।।

तारतम वाणी से जिसे जागृत किया जाए उसको सब प्रकार के सुख मिलते हैं और माया का नशा टूट जाता है।

Nijanand App

जो जीव नींद छोड़े नहीं, पिलाइए वानी।
ल्याए पिउ वतन थें, बल माया जानी।। १३८ ।।

यदि जीव माया को न छोड़ रहा हो तो उसे तारतम वाणी से समझाइए। माया का बल जान करके ही धनी यह वाणी घर से लाए हैं।

जेहेर उतारने साथ को, ल्याए तारतम।
बेहद का रस श्रवनें, पिलावें हम।। १३९ ।।

सुन्दरसाथ का माया का नशा (अज्ञानता) हटाने के लिए धनी तारतम लाए हैं। उससे पार का ज्ञान हमें पिला रहे हैं।

ए रस श्रवनों जाके झरे, ताए कहा करे जेहेर।
सुपन ना होवे जागते, देखी तां वैर।। १४० ।।

इस तारतम वाणी का रस जिसके कानों में पड़ जाता है उसकी माया की अज्ञानता हट जाती है और जागृत होने पर माया निकट नहीं आती, क्योंकि जहां जागृत अवस्था है वहां नींद (माया) नहीं और जहां माया है वहां जागृत अवस्था नहीं। इन दोनों का वैर है, यह इकट्ठे नहीं रह सकते।

सुपन होवे नींद थें, कई इंड अलेखे।
जिन खिन आंखां खोलिए, तब कछुए ना देखे।। १४१ ।।

नींद के सपने में कई ब्रह्माण्ड दिखाई देते हैं और जब आंखें खोलकर देखें तो कुछ नहीं रहता।

एही रस तारतम का, चढ्या जेहेर उतारे।
निरविख काया करे, जीव जागे करारे।। १४२ ।।

इसी प्रकार से तारतम वाणी का रस माया के नशे को उतार देता है और तन को निर्मल बना देता है और जीव जागकर दृढ़ हो जाता है।

जागे सुख अनेक हैं, इतही अलेखे,
वतन सुख लीजिए, जीव नैनों भी देखे।। १४३ ।।

जागने के बाद यहीं बेशुमार (अनन्त) सुख हैं। यहां बैठे-बैठे घर का भी सुख मिलता है। जीव देखता भी है।

सुख बड़े तारतम के, क्यों जाहेर कीजे।
वानी माएने देखके, जीव जगाए लीजे।। १४४ ।।

तारतम वाणी के बड़े सुख हैं। उन्हें क्यों जाहिर करें? स्वयं वाणी पढ़ के देखो और अपने जीव को जगाओ।

ए वचन साथ के कारने, मैं तो बाहेर पाड़े।
दरवाजे बेहद के, अनेक उघाड़े।। १४५ ।।

सुन्दरसाथ के लिए ही मैंने इस वाणी को बाहर जाहिर किया है और बेहद के बन्द दरवाजों को खोल दिया है।

आधे अखर का पाओ लुगा, कबूं न बाहेर।
श्री धाम थें ल्याए धनी, तो हुए जाहेर।। १४६ ।।

इससे पहले इस वाणी के आधे अक्षर का भी किसी को ज्ञान नहीं था। अब इस वाणी को धाम के धनी लाए और सब में जाहिर हुई।

Nijanand App

या खेल साथ देखहीं, जुदे जुदे होए।
तो सुख ऐसा पसर्‌या, नाहीं सुख बिना कोए।। १४७ ।।

यहां सुन्दरसाथ अलग-अलग होकर खेल देख रहे हैं। तारतम वाणी ने ऐसा सुख फैलाया कि बिना सुख कोई नहीं रहा।

ऐसा खेल छलका, छोड़ाए नहीं।
ब्रह्मांड की कारीगरी, सारी करी सही।। १४८ ।।

यह माया का ऐसा छल का खेल है जो सुन्दरसाथ से छोड़ा नहीं जाता। वह इसे सत (अखण्ड) समझ बैठे हैं। इस ब्रह्माण्ड को ऐसे हुनर (कला) से बनाया गया है जिससे सत्य झूठ और झूठ सत्य दिखाई देता है।

कबूतर बाजीगर के, जैसे कंडिया भरिया।
तबही देखे फूंक देएके, तुरत खाली करिया।। १४९ ।।

जैसे एक बाजीगर अपने जादू की कला से फूंक मारकर खाली पिटारी को कबूतरों से भर देता है और उसी पल फूंक मारकर खाली कर देता है।

ऐसी बाजी इन छलकी, ब्रह्मांड जो रचियो।
देख बाजी कबूतर, साथ मांहें मचियो।। १५० ।।

इसी तरह से यह माया के खेल का ब्रह्माण्ड बना है। ऐसे बाजीगर और कबूतरों के खेल देखकर सुन्दरसाथ इसी में रच पच गया।

आंबो बोए जल सींचियो, तबही फूले फलियो।
बिध बिध की रंग बेलियां, बन उपर चढ़ियो।। १५१ ।।

बाजीगर ने आम के बीज को बोया, जल सींचा और फूंक लगाई और तुरन्त उस पर फूल-फल आ गए तथा इस तरह से तरह-तरह की लताएं पेड़ पर चढ़ जाती हैं।

एह देख चित भरमिया, सुध नहीं सरीर।
विकल भई रंग बेलियां, चित नाहीं धीर।। १५२ ।।

देखने वालों का चित्त भ्रम में पड़ जाता है और उन्हें शरीर तक की सुध नहीं रहती। यह देखकर कि रंग भरी बेलें कहां से आईं, मन स्थिर नहीं रहता।

ततखिन कछू न देखिए, बाजीगर हाथ।
आंबो न कछू बेलियां, या रंग बांध्यो साथ।। १५३ ।।

उसी समय देखते हैं कि बाजीगर के हाथ खाली हैं। न आम हैं, न बेलें हैं। इसी तरह के खेल में सुन्दरसाथ भूला है।

बिसरी सुध सरीर की, बिसर गए घर।
चींटी कुंजर निगलिया, अचरज या पर।। १५४ ।।

सुन्दरसाथ इस माया को देखकर अपने मूल तनों और परमधाम को भूल गए। इस तरह से चींटी के समान माया ने हाथी के समान सुन्दरसाथ (ब्रह्मसृष्टि) को निगल लिया। यही बड़ी हैरानी की बात है।

Nijanand App

अचरज एक बड़ो सखी, देखो दिल मांहें।
वस्त खरी को ले गई, जो कछुए नांहें।। १५५ ।।

हे सुन्दरसाथजी! एक और आश्चर्य की बात है दिल में विचार करके देखो कि माया, जो कुछ भी नहीं है, सत वस्तु, जो सुन्दरसाथ है, उनको ले गई (खा गई)।

जोर हुई नींद साथ को, यों सुपन बाढ़्या।
खेल मिने थें बल कर, न जाए काढ़्या।। १५६ ।।

सुन्दरसाथ को माया का ऐसा गहरा नशा हो गया कि उनको माया में से जोर लगाकर निकालना मुश्किल हो गया।

ता कारन बानी बेहद, केहे नींद टालों।
ना देऊं सुपन पसरने, चढ़्या जेहेर उतारों।। १५७ ।।

इस कारण बेहद वाणी कहकर सुन्दरसाथ की माया हटा देती हूं। स्वप्न को फैलने नहीं देंगे और माया के जहर को उतार देंगे।

कुंजर काढ़ों चींटी मुख, सुध आनो सरीर।
तारतम केहे जुदे जुदे, करों खीर और नीर।। १५८ ।।

इसलिए अब हाथी की तरह सुन्दरसाथ को चींटी की तरह माया के मुख में से इनको असल की याद दिलाकर निकाल लेती हूं तथा तारतम वाणी कहकर ब्रह्म और माया को अलग-अलग कर देती हूं।

झूठे को झूठा करूं, सांचा सागर तारूं।
ए रस श्रवनों पिलाएके, साथ के कारज सारूं।। १५९ ।।

झूठी माया को झूठा करके सच्चे सुन्दरसाथ को भवसागर से पार कर दूंगी तथा वाणी का रस पिलाकर सुन्दरसाथ के सब कार्य सिद्ध कर दूंगा।

मोह जेहेर ऐसा जानके, ल्याए तारतम।
सब विध का ए औखद, प्रकासे खसम।। १६० ।।

मोह सागर के ऐसे जहर को समझकर ही धनी तारतम वाणी लाए हैं जो सब दुःखों की दवा है। इसे धनी जाहिर कर रहे हैं।

सब किया उजाला खेल में, साथ देखन आया।
और जीव बंधाने या बिध, बिध बिध की माया।। १६१ ।।

सुन्दरसाथ जो खेल देखने आया है, उसे बेहद पार तक का पूरा ज्ञान खेल में दे दिया और संसार के जीव तो माया में अभी भी बंधे पड़े हैं।

दूजे तीजे मैं तो कहे, जो साथ को माया भारी।
तुम देखो सुपना सत कर, तो मैं कह्या विचारी।। १६२ ।।

हे सुन्दरसाथजी! तुम माया को सत (सत्य) मान बैठे हो, इसलिए मैंने दूसरा (ईश्वरी सृष्टि) और तीसरा (जीव सृष्टि) विचारकर ऐसा कहा है।

विचार के छल छोड़िए, तो होवे दोऊ पर।
सुपने भी सुख लीजिए, हरखें जागीए घर।। १६३ ।।

ऐसा विचार कर माया को छोड़ दो तो तुमको दोनों तरह का सुख मिलेगा। सपने में भी सुख मिलेगा और घर में भी हंसते हुए उठोगे।

Nijanand App

तारतम पख दूजा कोई नहीं, बिना साथ सब सुपन।
जो जगाऊं माया झूठी कर, धाख रहे जिन मन।। १६४ ।।

तारतम से विचार कर देखा जाए तो सुन्दरसाथ के बिना दूसरा कोई है ही नहीं, अर्थात् सब सपना है। यदि जगाए बिना तुम्हें घर ले चलें तो तुम्हारी इच्छा ज्यों की त्यों बनी रहेगी। मैं यह नहीं चाहती।

हद के पार बेहद है, बेहद पार अछर।
अछर पार वतन है, जागिए इन घर।। १६५ ।।

हद (माया का संसार-क्षर ब्रह्माण्ड), बेहद (योगमाया का ब्रह्माण्ड) अक्षर (बेहद के पार श्री राजजी का सत अंग-अक्षर धाम) तथा अक्षर के पार अपना घर परमधाम है, जहां जागना है।

ए दोऊ विध मैं तो कही, सुपन हरखें उड़ाऊं।
कहे इंद्रावती उछरंगे, साथ जुगतें जगाऊं।। १६६ ।।

माया की तथा घर (परमधाम) की दोनों की हकीकत तुमको अलग-अलग समझा दी है। श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि इस तरह से सुन्दरसाथ को हंसते-खेलते जगाऊंगी और इस माया के ब्रह्माण्ड को उड़ाऊंगी।

।। प्रकरण ।। ३१ ।। चौपाई ।। ९५४ ।।

दूध पानी का निबेरा
राग सामेरी

हो वतनी बांधो कमर तुम बांधो, सुरत पिआसों साधो।
तीनों कांडों बड़ा सुकदेव, ताकी बानी को कहूं भेव।। १ ।।

हे परमधाम के प्यारे सुन्दरसाथ! तुम कमर बांधकर खड़े हो जाओ और अपनी सुरता (ध्यान) को धनी के चरणों में लगा दो। कर्म, उपासना और ज्ञान तीनों काण्डों में शुकदेवजी का ज्ञान बड़ा है। उनकी वाणी की हकीकत मैं बताती हूं।

बिन पूछे कहूं विचार, निज वतनी जो निरधार।
जिन कोई संसे तुमें रहे, सो मेरी आतम ना सहे।। २ ।।

हे परमधाम के साथियो! मैं तुमको तुम्हारे पूछे बिना ही बता रही हूं, ताकि तुम्हारे अन्दर यदि संशय रह गया, तो मेरी आत्मा सहन नहीं करेगी।

एक वचन इत यों सुनाए, चींटी पांउ कुंजर बंधाए।
तिनके पर्वत ढांपिया, सो तो काहूं न देखिया।। ३ ।।

यहां ऐसा कहा जाता है कि चींटी के पैर से हाथी बंध गया तथा तिनके ने पर्वत को ढक लिया, किन्तु उसे किसी ने देखा नहीं।

चींटी हस्ती को बैठी निगल, ताकी काहूं ना परी कल।
सनकादिक ब्रह्मा को कहे, जीव मन दोऊ भेले रहे।। ४ ।।

चींटी हाथी को खा गई इसकी भी जानकारी किसी को नहीं हुई। सनकादिक ऋषियों ने ब्रह्माजी से पूछा कि क्या जीव और मन इकट्ठे रहते हैं?

Nijanand App

तारतम पख दूजा कोई नहीं, बिना साथ सब सुपन।
जो जगाऊं माया झूठी कर, धाख रहे जिन मन।। १६४ ।।

तारतम से विचार कर देखा जाए तो सुन्दरसाथ के बिना दूसरा कोई है ही नहीं, अर्थात् सब सपना है। यदि जगाए बिना तुम्हें घर ले चलें तो तुम्हारी इच्छा ज्यों की त्यों बनी रहेगी। मैं यह नहीं चाहती।

हद के पार बेहद है, बेहद पार अछर।
अछर पार वतन है, जागिए इन घर।। १६५ ।।

हद (माया का संसार-क्षर ब्रह्माण्ड), बेहद (योगमाया का ब्रह्माण्ड) अक्षर (बेहद के पार श्री राजजी का सत अंग-अक्षर धाम) तथा अक्षर के पार अपना घर परमधाम है, जहां जागना है।

ए दोऊ विध मैं तो कही, सुपन हरखें उड़ाऊं।
कहे इंद्रावती उछरंगे, साथ जुगतें जगाऊं।। १६६ ।।

माया की तथा घर (परमधाम) की दोनों की हकीकत तुमको अलग-अलग समझा दी है। श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि इस तरह से सुन्दरसाथ को हंसते-खेलते जगाऊंगी और इस माया के ब्रह्माण्ड को उड़ाऊंगी।

।। प्रकरण ।। ३१ ।। चौपाई ।। ९५४ ।।

दूध पानी का निबेरा
राग सामेरी

हो वतनी बांधो कमर तुम बांधो, सुरत पिआसों साधो।
तीनों कांडों बड़ा सुकदेव, ताकी बानी को कहूं भेव।। १ ।।

हे परमधाम के प्यारे सुन्दरसाथ! तुम कमर बांधकर खड़े हो जाओ और अपनी सुरता (ध्यान) को धनी के चरणों में लगा दो। कर्म, उपासना और ज्ञान तीनों काण्डों में शुकदेवजी का ज्ञान बड़ा है। उनकी वाणी की हकीकत मैं बताती हूं।

बिन पूछे कहूं विचार, निज वतनी जो निरधार।
जिन कोई संसे तुमें रहे, सो मेरी आतम ना सहे।। २ ।।

हे परमधाम के साथियो! मैं तुमको तुम्हारे पूछे बिना ही बता रही हूं, ताकि तुम्हारे अन्दर यदि संशय रह गया, तो मेरी आत्मा सहन नहीं करेगी।

एक वचन इत यों सुनाए, चींटी पांउ कुंजर बंधाए।
तिनके पर्वत ढांपिया, सो तो काहूं न देखिया।। ३ ।।

यहां ऐसा कहा जाता है कि चींटी के पैर से हाथी बंध गया तथा तिनके ने पर्वत को ढक लिया, किन्तु उसे किसी ने देखा नहीं।

चींटी हस्ती को बैठी निगल, ताकी काहूं ना परी कल।
सनकादिक ब्रह्मा को कहे, जीव मन दोऊ भेले रहे।। ४ ।।

चींटी हाथी को खा गई इसकी भी जानकारी किसी को नहीं हुई। सनकादिक ऋषियों ने ब्रह्माजी से पूछा कि क्या जीव और मन इकट्ठे रहते हैं?

Nijanand App

ए भेले हुए हैं आद, के भेले हैं सदा अनाद।
कहे ब्रह्मा भेले नाहीं तित, ए आए मिले हैं इत।। ५ ।।

यह दोनों यहां आकर मिले हैं या पहले से ही इकट्ठे हैं? ब्रह्माजी उत्तर देते हैं कि यह दोनों मूल में इकट्ठे नहीं थे, यहां आकर मिले हैं।

तब सनकादिके फेर यों कह्यो, तो ए जुदे करके देओ।
फेर ब्रह्मांऐ करी फिकर, तब देखे वचन विचार चित धर।। ६ ।।

तब सनकादिक ने फिर से पूछा कि इनको अलग-अलग करके बताओ। फिर ब्रह्मा जी सोचने लगे और चित्त से विचार कर बोले।

ए समझ मुझसे ना होए, क्यों कर करों जुदे मैं दोए।
तब सरन विष्णु के गए, अंतरगतें वचन कहे।। ७ ।।

यह व्योरा मेरे से नहीं होगा। इन दोनों को (मन और जीव को) अलग नहीं कर सकता। तब वह भगवान विष्णु की शरण में गए और मन ही मन में विष्णु से पूछा।

बैकुंठ नाथे सुने वचन, हंस होए आए ततखिन।
हंसे रूप धर्यो सुन्दर, लिए सनकादिक के चित हर।। ८ ।।

भगवान विष्णु इन वचनों को सुनकर हंस रूप होकर आए। हंस के मोहिनी रूप ने सनकादिक के मन को हर लिया।

जीवें हंससो करी पेहेचान, चारों चरन लगे भगवान।
फेर मनें यों कियो विचार, ले नजरों देख्या आकार।। ९ ।।

जीव ने हंस के रूप में भगवान विष्णु को पहचान लिया और चारों ने हंस रूप भगवान के चरणों में प्रणाम किया। फिर मन ने विचार किया और हंस के रूप को देखकर संशय हो गया।

जो जीवें करी पेहेचान, सो मनने तबही दई भान।
फेर सनकादिकें यों पूछिया, तुम कौन हो यों कर कह्या।। १० ।।

जीव ने तो ठीक पहचान की थी, परन्तु मन ने उसे उलट दिया और हंस को पक्षी समझा। फिर सनकादिक ने हंस से पूछा कि तुम कौन हो?

तब हंसे कियो जवाब, समझे सनकादिक भान्यो वाद।
चित किये चारों के धीर, पर न हुए जुदे खीर नीर।। ११ ।।

तब हंस ने जवाब दिया, हे सनकादिक ऋषियो! तुम समझे नहीं। तुम्हारे संशय मिटाए हैं। इस तरह से चारों के मन को स्थिर कर दिया, किन्तु इस दृष्टान्त से जीव और मन की पहचान नहीं हुई।

आओ हंस या और कोए, पर कोई जुदे कर ना देवे दोए।
दोऊ के जुदे बासन, यों कबहूं ना किए किन।। १२ ।।

अब श्रीजी कहते हैं कि यहां भगवान विष्णु (हंस रूप) या और कोई भी आओ, परन्तु जीव और मन को कोई जुदा नहीं कर पाया। इन दोनों के मूल घर ही अलग-अलग हैं, जिनको किसी ने नहीं जाना।

अब याकी कहूं समझन, जुदे कर देऊं जीव और मन।
समझ के पेहेचानों जिउ, निज वतन जो अपना पिउ।। १३ ।।

स्वामीजी कहते हैं कि इसे मैं समझाता हूं तथा जीव और मन को अलग करके बताता हूं। जीव से पहचान कर अपने घर और धनी की पहचान करो।

Nijanand App

नहीं राखों तुमें संदेह, इन चारों का अर्थ जो एह।
जो कोई साध पूछे क्यों, ताए सास्त्र सब केहेवे यों।। १४ ।।

अब स्वामीजी कहते हैं कि इन चारों बातों का (चींटी हाथी निगल गई, चींटी के पैर में हाथी बंध गया, तिनके ने पर्वत ढका, चींटी के मुख में कुम्हड़ा आ गया) मैं तुम्हें भेद खोलकर बताता हूं, ताकि तुम्हारे मन में कोई संशय न रहे। यदि कोई पूछे ऐसा क्यों? तो कहना यह सब शास्त्रों में लिखा है।

अकल अगम बैकुंठ का धनी, ए थोड़ी अर्जू करे घनी।
इन करते सब कछू होए, पर ए अर्थ ना देवे कोए।। १५ ।।

बैकुण्ठ के मालिक विष्णु भगवान की बुद्धि तेज है। इन्होंने थोड़े में ही बड़ी बात को समझा दिया अर्थात् हंस रूप होकर जीव और मन का भेद समझा दिया। इसकी शक्ति से संसार में सब सिद्ध हो सकता है, पर इन अर्थों से कोई समझता नहीं।

यों धोखा रह्या सब मांहें, समझ काहूं ना परी क्यांहें।
अब समझाऊं देखो बानी, दूध विछोड़ा कर देऊं पानी।। १६ ।।

इस तरह संसार के सभी लोगों के बीच धोखा (संशय) बना है। किसी को इन चारों की हकीकत का पता न चला। स्वामीजी कहते हैं कि अब मैं इस वाणी से समझाता हूं तथा जीव और मन को जुदा-जुदा करता हूं।

जो तुमें साख देवे आतम, तो सत माएने जानो तारतम।
इन अंतर देखो उजास, या जीव को बड़ो प्रकास।। १७ ।।

ऐसा करने से यदि तुम्हारी आत्मा साक्षी दे तो तारतम वाणी को सत (सत्य, अखण्ड) मानना। इसके उजाले से जीव को ज्ञान प्राप्त हो जाता है।

चौदे लोक उजाला करे, जो निज वतन दृष्टें धरे।
याको नूर सदा नेहेचल, नेक कहूंगी याको आगे बल।। १८ ।।

वह जीव फिर चौदह लोकों को ज्ञान देता है और परमधाम की तरफ ध्यान रखता है। इस जीव का तेज सदा अखण्ड है। इसकी ताकत का आगे चलकर वर्णन करूंगी।

ए उजाला इंड न समाए, सो इन जुबां कह्यो न जाए।
या मन को नाहीं कछू मूल, याथे बड़ा कहिए आक का तूल।। १९ ।।

इस जीव का उजाला ब्रह्माण्ड में नहीं समाता तो इस जबान से कैसे कहा जाए? इस मन का तो कोई स्थान नहीं है। इससे बड़ा तो आक (मदार) का तूल (रुई) होता है (तूआ होता है)।

तूल का भी कोटमा हिसा, मन एता भी नहीं ऐसा।
सो ए गया जीव को निगल, यों सब पर बैठा चंचल।। २० ।।

उस तूल के भी (तूआ का) करोड़वें हिस्से के बराबर मन नहीं है। ऐसा चंचल मन सब जीवों के ऊपर बैठकर जीव को अपने अधीन कर लेता है।

यों तिनके पर्वत ढांपिया, यों गज चींटी पांउ बांधिया।
जो जीव करे उजास, तो मन को आगे ही होए नास।। २१ ।।

इस तरह से मन रूपी तिनके ने पर्वत रूपी जीव को ढांपा (ढका) और इसी तरह से हाथी की तरह जीव चींटी की तरह मन के पैर में बंध गया। यदि जीव थोड़ी सी हिम्मत करे तो मन को जीत सकता है।

Nijanand App

अब या पर एक कहूं दृष्टांत, देखो आपमें वृतांत।
सुकजी के कहे प्रवान, सात सागर को काढ्यो निरमान।। २२ ।।

अब इसके ऊपर एक दृष्टान्त देता हूं, जिसकी हकीकत देखो। शुकदेवजी के कहे के अनुसार सात सागरों का रूप गाय के बछड़े के पांव के गड्ढे के समान है।

भव सागर को नाहीं छेह, सुकजी यों मुख जाहेर कहे।
पेहेले पांउ भरे तुम जेह, कर सांचा मूल सनेह।। २३ ।।

शुकदेवजी स्वयं कहते हैं कि भवसागर अथाह है। इसका पार नहीं है, परन्तु ब्रज से रास में जाते समय धनी से सच्चा प्रेम होने के कारण सखियों ने भवसागर को गाय के बछड़े के पैर के गड्ढे के समान समझा।

सखी बेन सुन न रही कोई पल, देखियो एह जीव को बल।
इन आड़ा था मन संसार, पर जीव निकस्या वार के पार।। २४ ।।

जीव ने बांसुरी की आवाज को सुनकर धनी को पहचाना, इसलिए सखियां एक पल नहीं रुकीं। इनके मन के सामने भी संसार के झंझट थे, परन्तु जीव मन को मारकर निकल गया।

देखो पाऊं जीवने भरे, भव सागर ए क्यों कर तरे।
जाको न निकस्यो निरमान, सुकजीकी वानी प्रमान।। २५ ।।

देखो, जीव ने भवसागर किस तरीके से पार किया, जिस भवसागर का विस्तार अधिक था। शुकदेवजी की वाणी ऐसा कहती है।

सो फेर कह्यो गौपद बछ, यों भवसागर होए गयो तुछ।
एता भी न दृष्टें आया, पर लिखने को नाम धराया।। २६ ।।

शुकदेवजी ने फिर से भवसागर को गौपद समान तुच्छ (छोटा) कहा है। गोपियों को वह दिखाई ही नहीं पड़ा जिसे भवसागर कहते हैं, परन्तु लिखने के लिए भवसागर का नाम दिया है।

भव सागर क्यों एता भया, जो जीव खरे जीवनजी ग्रह्या।
यों मन जीवथें जुदा टल्या, तब झूठा मन झूठेमें मिल्या।। २७ ।।

भवसागर इतना छोटा कैसे हो गया? वह इसी कारण कि सखियों के जीव ने धनी को अच्छी तरह पहचान लिया और इस प्रकार मन को जीव से अलग कर दिया तथा झूठा मन झूठी माया में ही रह गया।

खीर नीर देखो विचार, एक धनी दूजा संसार।
दोऊ बासनमें दोऊ जुदे, यों नीके कर देखो हिरदे।। २८ ।।

इस तरह क्षीर (दूध) और नीर (पानी) (ब्रह्म और माया) का आप विचार कर देखो। एक तरफ धनी (क्षीर) हैं तथा दूसरी तरफ संसार (नीर) है। दोनों ही दोनों पात्रों में अलग-अलग हो गए।

अंतरगत बैठे हैं सही, अंतर उड़ावने बानी कही।
विचार देखो तो इतहीं पिउ, सागर तबहीं तूल करे जिउ।। २९ ।।

विचार कर देखो तो साक्षात् धनी अन्दर बैठे हैं और इस माया के अन्दर भ्रम को उड़ाने के लिए वाणी कही है। सोचो तो धनी यहीं हैं। जीव जागृत होने पर भवसागर को तूल (भुए) के समान समझ लेगा।

Nijanand App

तब इतहीं जो वतन पिउ पार, सखी भाव भजिए भरतार।
आतम महामत है सूरधीर, प्रेमें देखाए जुदे खीर नीर।। ३० ।।

तब पार के पार विराजमान धनी, जो यहां हैं, उन्हें अंगना भाव से भजकर (सेवा कर) प्राप्त करें। श्री महामति की आत्मा बड़ी बलशाली है, जिसने जीव और मन को अलग-अलग कर दिया।

|| प्रकरण || ३२ || चौपाई || ९८४ ||

श्री भागवत को सार

सुनियो साथ कहूं विचार, फल वस्त जो अपनों सार।
सो ए देख के आओ वतन, माया अमल से राखो जतन।। १ ।।

हे मेरे सुन्दरसाथजी! मैं अपने और ज्ञान के प्रति विचार कहती हूं। इन वचनों को देखकर घर और माया के अमल (प्रभाव) से दूर रहो और अपने घर परमधाम आओ।

इन अमल को बड़ो विस्तार, सो ए देखना नहीं निरधार।
पेहेले आपन को बरजे सही, श्री मुख वानी धनिऐं कही।। २ ।।

इस माया के अमल (प्रभाव) का बड़ा विस्तार है। निश्चय करके इसे देखना नहीं। पहले ही धाम धनी ने हमको रोका था।

तिन कारन तुमें देखाऊं सार, मूल वतन के सब प्रकार।
धनी अपनों धनी को विलास, जिनथें उपज अखंड हुओ रास।। ३ ।।

इसलिए तुम्हें सार वस्तु दिखाती हूं और घर की हकीकत बताती हूं। अपने धनी और धनी के आनन्द से ही रास अखण्ड हुआ।

ए सुनियो आतम के श्रवन, सो नाहीं जो सुनिए ऊपर के मन।
वेद को सार कह्यो भागवत, ए फल उपज्यो सास्त्रों के अंत।। ४ ।।

इसको ध्यान से सुनना। यह ऐसी वाणी नहीं है कि साधारण रूप से सुन ली जाए। वेदों का सार भागवत कहा गया है, जो सब शास्त्रों के बाद में आई है।

सो फल सार सुकजीऐं लियो, सींच के अमृत पकव कियो।
ए फल सार जो भागवत भयो, ताको सार दसम स्कंध कह्यो।। ५ ।।

वेदों का सार शुकदेवजी ने ग्रहण किया तथा अपनी अमृतवाणी को सींचकर पक्का किया। इस प्रकार से यह भागवत सार-ग्रन्थ बना और इस पूरे ग्रन्थ का सार दसवां स्कंध है।

दसम के नब्बे अध्या, तिनका सार भी जुदा कह्या।
ताको सार अध्याय पैंतीस, जो बृजलीला करी जगदीस।। ६ ।।

दसवें स्कंध में नब्बे अध्याय हैं। उनका सार भी अलग से कहा है। इस सार में पैंतीस अध्याय हैं। जिसमें श्री कृष्ण की ब्रज की लीला का वर्णन है।

जगदीस नाम विष्णु को होए, यों न कहूं तो समझे क्यों कोए।
ए जो प्रेम लीला श्री कृष्णजीऐं करी, सो गोपन में गोपियों चितधरी।। ७ ।।

संसार के लोग जगदीश नाम से विष्णु भगवान को समझते हैं, इसलिए जगदीश शब्द का प्रयोग किया है। ऐसा न कहूं तो लोग समझेंगे कि श्री कृष्णजी ने जो प्रेम की लीला की है, उसे ग्वालों और गोपियों में केवल गोपियों ने चित्त में धारण किया है।

Nijanand App

तब इतहीं जो वतन पिउ पार, सखी भाव भजिए भरतार।
आतम महामत है सूरधीर, प्रेमें देखाए जुदे खीर नीर।। ३० ।।

तब पार के पार विराजमान धनी, जो यहां हैं, उन्हें अंगना भाव से भजकर (सेवा कर) प्राप्त करे। श्री महामति की आत्मा बड़ी बलशाली है, जिसने जीव और मन को अलग-अलग कर दिया।

।। प्रकरण ।। ३२ ।। चौपाई ।। ९८४ ।।

श्री भागवत को सार

सुनियो साथ कहूं विचार, फल वस्त जो अपनों सार।
सो ए देख के आओ वतन, माया अमल से राखो जतन।। १ ।।

हे मेरे सुन्दरसाथजी! मैं अपने और ज्ञान के प्रति विचार कहती हूं। इन वचनों को देखकर घर और माया के अमल (प्रभाव) से दूर रहो और अपने घर परमधाम आओ।

इन अमल को बड़ो विस्तार, सो ए देखना नहीं निरधार।
पेहेले आपन को बरजे सही, श्री मुख वानी धनिएं कही।। २ ।।

इस माया के अमल (प्रभाव) का बड़ा विस्तार है। निश्चय करके इसे देखना नहीं। पहले ही धाम धनी ने हमको रोका था।

तिन कारन तुमें देखाऊं सार, मूल वतन के सब प्रकार।
धनी अपनों धनी को विलास, जिनथें उपज अखंड हुओ रास।। ३ ।।

इसलिए तुम्हें सार वस्तु दिखाती हूं और घर की हकीकत बताती हूं। अपने धनी और धनी के आनन्द से ही रास अखण्ड हुआ।

ए सुनियो आतम के श्रवन, सो नाहीं जो सुनिए ऊपर के मन।
वेद को सार कह्यो भागवत, ए फल उपज्यो सास्त्रों के अंत।। ४ ।।

इसको ध्यान से सुनना। यह ऐसी वाणी नहीं है कि साधारण रूप से सुन ली जाए। वेदों का सार भागवत कहा गया है, जो सब शास्त्रों के बाद में आई है।

सो फल सार सुकजीऐं लियो, सींच के अमृत पकव कियो।
ए फल सार जो भागवत भयो, ताको सार दसम स्कंध कह्यो।। ५ ।।

वेदों का सार शुकदेवजी ने ग्रहण किया तथा अपनी अमृतवाणी को सींचकर पक्का किया। इस प्रकार से यह भागवत सार-ग्रन्थ बना और इस पूरे ग्रन्थ का सार दसवां स्कंध है।

दसम के नब्बे अध्या, तिनका सार भी जुदा कह्या।
ताको सार अध्याय पैंतीस, जो बृजलीला करी जगदीस।। ६ ।।

दसवें स्कंध में नब्बे अध्याय हैं। उनका सार भी अलग से कहा है। इस सार में पैंतीस अध्याय हैं। जिसमें श्री कृष्ण की ब्रज की लीला का वर्णन है।

जगदीस नाम विष्णु को होए, यों न कहूं तो समझे क्यों कोए।
ए जो प्रेम लीला श्री कृष्णजीऐं करी, सो गोपन में गोपियों चितधरी।। ७ ।।

संसार के लोग जगदीश नाम से विष्णु भगवान को समझते हैं, इसलिए जगदीश शब्द का प्रयोग किया है। ऐसा न कहूं तो लोग समझेंगे कि श्री कृष्णजी ने जो प्रेम की लीला की है, उसे ग्वालों और गोपियों में केवल गोपियों ने चित्त में धारण किया है।

Nijanand App

ए ब्रह्म लीला भई जो दोए, बृज लीला रास लीला सोए।
तामे तीस अध्याय जो बाल चरित्र, ए ब्रह्म लीला उत्तम पवित्र।। ८ ।।

यह जो ब्रह्म की लीला हुई है, एक ब्रज की और दूसरी रास की लीला है। इसमें तीस अध्याय में बाल लीला का वर्णन है। यह ब्रह्मलीला बड़ी उत्तम और पवित्र है।

पंच अध्यायी ताको जो सार, किसोर लीला जोगमाया विस्तार।
बृज लीला को जो ब्रह्मांड, रात दिन जित होत अखंड।। ९ ।।

इस लीला का सार पंचाध्यायी रास है, जिसमें योगमाया में किशोर लीला का वर्णन है। बृज की लीला का जो ब्रह्माण्ड है, वहां की रात और दिन की लीला अखण्ड होकर हो रही है।

जोग माया जो लीला रास, रात अखंड सब चेतन विलास।
ए लीला सुकें आवेसमें कही, राजा परीछितें सही न गई।। १० ।।

योगमाया के ब्रह्माण्ड में जो रास की लीला है, वह चेतन अवस्था में आनन्द करते हुए रात की अखण्ड लीला है। उस लीला का वर्णन शुकदेवजी ने आवेश में कहा है, जिसे राजा परीक्षित सहन नहीं कर सका।

ए लीला क्यों सही जाए, बैकुंठ को अधिकारी राए।
सुक के अंग हुओ उलास, जानूं बरनन करूंगो रास।। ११ ।।

राजा परीक्षित बैकुण्ठ का अधिकारी था। इस लीला को कैसे सहन करता? शुकदेवजी के तन में बड़ी चाहना थी कि मैं रास का वर्णन करूं।

या समें प्रश्न कियो राजान, सुक को जोस दियो तिन भान।
प्रश्न चूक्यो भयो अजान, रास लीला ना बरनवी प्रवान।। १२ ।।

इस समय राजा ने प्रश्न कर दिया और शुकदेवजी के जोश को भंग कर दिया। प्रश्न करके राजा ने बड़ी भूल की। फिर रास लीला का वर्णन नहीं हो सका।

तब हाथ निलाटें दियो सही, सुकें दुख पाए के कही।
मैं जोगी तें राजा भयो, रास को सुख न जाए कह्यो।। १३ ।।

तब शुकदेवजी ने दुःखी होकर माथे पर हाथ मारकर कहा, मैं योगी और तू राजा रह गया। अब रास के सुख का वर्णन नहीं हो सकता।

ए वानी मेरे मुख थें ना परे, ना तेरे श्रवना संचरे।
ए जोग आपन नाहीं दोए, तो इन लीला को सुख क्यों होए।। १४ ।।

यह वाणी अब मेरे मुख से नहीं निकल सकती, न तेरे कान सुन सकते हैं। हम दोनों ही इसके पात्र नहीं हैं, तो इस लीला का सुख कैसे मिले?

याके पात्र होसी इन जोग, या लीला को सो लेसी भोग।
केसरी दूध ना रहे रज मात्र, उत्तम कनक बिना जो पात्र।। १५ ।।

जो इस लीला के पात्र होंगे वही इसका आनन्द ले सकेंगे। सिंहनी (शेरनी) का दूध सोने के बर्तन के बिना नहीं टिकता।

एह वचन सुनके राए, पड़यो भोम खाए मुरछाए।
कंपमान होए कलकल्या, रोवे बोहोत अंतस्करन गल्या।। १६ ।।

ऐसे वचन सुनकर राजा मूर्छित होकर भूमि पर गिर पड़ा और बिलख-बिलखकर कांपते हुए रोने लगा। उसके अन्तःकरण में (दिल में) बहुत ही दुःख हुआ।

Nijanand App

तलफ तलफ दुख पावे मन, अंग मांहें लागी अगिन।
तब सुकजिऐं दिलासा दिया, आंसूं पोंछ के बैठा किया।। १७ ।।

वह तड़प-तड़पकर मन में दुःखी होने लगा और उसे ऐसा लगा जैसे उसके तन में आग लग गई हो। तब शुकदेवजी ने उसे दिलासा दी और आंसू पोंछकर बिठाया।

सुनहो राजा द्रढ़ कर मन, अंतरगत केहेता वचन।
सो केहेने वाला उठके गया, मैं अकेला बैठा रह्या।। १८ ।।

शुकदेवजी बोले, हे राजा! एकचित्त होकर सुनो। मेरे अन्दर से कहने वाली शक्ति उठकर चली गई है और अब मैं अकेला बैठा हूं।

अब राजा पूछत मोहे कहा, तुझ सरीखा मैं हो रह्या।
तब परीछित चरन पकड़ के कहे, स्वामी ए दाझ जिन अंगमें रहे।। १९ ।।

हे राजा! अब मेरे से क्या पूछते हो? मैं भी अब तेरे समान ही हूं। तब राजा परीक्षित ने शुकदेवजी के चरण पकड लिए और बोले, हे स्वामी! इस भूल की आग मुझसे सहन नहीं हो रही है।

मुनीजी मैं बोहोत दुख पाऊं, एह दाझ जिन लिए जाऊं।
तब भागे जोस कही पंच अध्याई, रास बरनन ना हुआ तिन तांई।। २० ।।

राजा परीक्षित कहता है, हे मुनिजी! मैं बहुत दुःखी हो रहा हूं। कुछ ऐसा करो जिससे मैं इस भूल की ज्वाला से बच सकूं। तब जोश (शक्ति) जाने के बाद शुकदेवजी ने पांच अध्याय वर्णन किए। अखण्ड रास का वर्णन फिर भी नहीं हुआ।

नातो पंच अध्यायी क्यों कहे सुक मुन, रासलीला अखंड बरनन।
ए लीला क्यों अध बीच रहे, एकादस द्वादस स्कंध कहे।। २१ ।।

नहीं तो शुकदेवजी की वाणी से अखण्ड रास का वर्णन पांच अध्यायों में कैसे समाप्त हो जाता? यह लीला बीच में कैसे छूट जाती? फिर ग्यारहवें और बारहवें स्कन्ध का वर्णन किया।

ए रास लीला को छोड़ के सुख, आधा लुगा न निकसे मुख।
पर ए केहेवाए धनी के जोस, सो उतर गया वचन के रोस।। २२ ।।

इस रास लीला के सुख इतने बेशुमार हैं कि इसे छोड़कर आधा अक्षर भी दूसरा वर्णन नहीं होता, परन्तु इस लीला का वर्णन धनी के जोश से हो रहा था। वह राजा के प्रश्न करने से चला गया।

क्या करे अधबीच में लिया, अखंड सुख पूरा केहेने ना दिया।
दोष नहीं राजा को इत, ब्रह्मसृष्टी बिना न पोहोंचे तित।। २३ ।।

क्या करे, बीच में ही प्रश्न कर दिया और अखण्ड सुख का वर्णन करने नहीं दिया। यहां राजा का कोई दोष नहीं है। यह सुख ब्रह्मसृष्टि के बिना कोई पा नहीं सकता।

जाको जाना बैकुंठ बास, सो क्यों सहे अखण्ड प्रकास।
तो पार दरवाजे मूंदे रहे, हद के संगिए खोलने ना दिए।। २४ ।।

जिसका ठिकाना (स्थान) बैकुण्ठ हो, वह अखण्ड के ज्ञान को सहन कैसे करेगा? इसलिए बेहद के दरवाजे बन्द ही रह गए और हद के संगी राजा परीक्षित ने खोलने नहीं दिए।

Nijanand App

अब सुकजीकी केती कहूं बान, सार काढ़ने ग्रह्यो पुरान।
सबको सार कह्यो ए जो रास, एजो इंद्रावती मुख हुओ प्रकास।। २५ ।।

अब शुकदेवजी की वाणी का कितना वर्णन करूं? यह मैंने उसका सार ग्रहण करने के लिए किया है। पूरी भागवत का सार रास है जो श्री इन्द्रावतीजी के मुख से प्रकट हुआ।

अब कहूं इन रासको सार, जो तारतम वचन है निरधार।
तारतम सार जागनी विचार, सबको अर्थ करसी निरवार।। २६ ।।

अब इस रास के सार को कहती हूं, जो तारतम वाणी से स्पष्ट हुआ। तारतम का सार जागनी है। यह सब ग्रन्थों के अर्थ का निर्णय करेगा।

निराकार के पार के पार, तारतम को जागनी भयो सार।
अछर पार घर अछरातीत, धाम के यामें सब चरित्र।। २७ ।।

निराकार क्षर के पार बेहद, बेहद के पार अक्षर तथा अक्षर के पार अक्षरातीत घर। तारतम वाणी के ज्ञान से इस घर की सब लीला का जाहिर होना ही जागनी का सार है।

इत ब्रह्म लीला को बड़ो विस्तार, या मुखथें कहा कहूं प्रकार।
ए तारतम को बड़ो उजास, धनी आएके कियो प्रकास।। २८ ।।

उस अक्षरातीत धाम में ब्रह्म लीला का बहुत बड़ा विस्तार है। इसे मुख से कैसे कहूं? धनी ने स्वयं आकर तारतम वाणी के उजाले से इसे जाहिर किया है।

संसे काहूं ना रेहेवे कोए, ए उजाला त्रैलोकी में होए।
प्रगट भई परआतमा, सो सबको साख देवे आतमा।। २९ ।।

इस तारतम वाणी से किसी प्रकार का संशय नहीं रह जाएगा और उसका प्रकाश चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड में फैलेगा। हमारी परात्म जो धाम धनी के चरणों में बैठी हैं, उनकी जानकारी मिली और इसकी गवाही सब सुन्दरसाथ की आत्माएं देंगी।

उड़्यो अंधेर काढ़्यो विकार, निरमल सब होसी संसार।
ए प्रकास ले धनी आए इत, साथ लीजो तुम मांहें चित।। ३० ।।

इस तारतम वाणी से अज्ञान का अन्धकार उड़ जाएगा और सारा संसार निर्मल होगा। धनी तारतम ज्ञान को लेकर आए हैं, जिसे हे सुन्दरसाथजी! अपने चित्त में धारण करना।

इन घर बुलावे ए धनी, ब्रह्मसृष्ट जो है अपनी।
खेल किया सो तुम कारन, ए विचार देखो प्रकास वचन।। ३१ ।।

धनी अपनी ब्रह्मसृष्टियों को घर (परमधाम) में बुला रहे हैं। यह खेल भी तुम्हारे वास्ते ही किया है। इसका विचार प्रकाश वाणी में देखो।

देख्यो खेल मिल्यो सब साथ, जागनी रास बड़ो विलास।
खेलते हंसते चले वतन, धनी साथ सब होए प्रसंन।। ३२ ।।

खेल देखकर सब सुन्दरसाथ मिला। जागनी रास का बड़ा आनन्द लेकर धनी और सब सुन्दरसाथ हंसते खेलते घर चलेंगे।

Nijanand App

इतहीं बैठे जागे घर धाम, पूरन मनोरथ हुए सब काम।
उड़्यो अग्यान सबों खुली नजर, उठ बैठे सब घर के घर।। ३३ ।।

मूल मिलावे में बैठे ही अपने घर में जाग गए। सबके मनकी इच्छा पूरी हो गई। अज्ञानता उड़ गई और नजर खुल गई। सब अपने घर में उठ बैठे।

हांसी न रहे पकरी, धनीऐं जो साथ पर करी।
हंसते ताली देकर उठे, धनी महामत साथ एकठे।। ३४ ।।

श्री राजजी महाराज ने जो सुन्दरसाथ पर हंसी की है, परमधाम में उठने के बाद काबू से बाहर होगी। सभी सुन्दरसाथ और महामति अपने पिया के साथ ताली बजाकर एक साथ उठेंगे।

|| प्रकरण || ३३ || चौपाई || १०१८ ||

पख पुष्ट मरजाद प्रवाह

अब कहूं सो हिरदे रख, अठोत्तर सौ जो है पख।
एक विचार सुनियो प्रवान, याको सार काढूं निरवान।। १ ।।

श्री महामतिजी सुन्दरसाथ को कहती हैं कि अब एक सौ आठ पक्षों का वर्णन करती हूं। उसे हृदय में रखना। एक विचार मैं तुम्हें बताती हूं जिसका सार निश्चित रूप से निकालूंगी।

माया जीव कोई है समरथ, दौड़ करत है कारन अरथ।
निसंक आपोपा डारया जिन, निहकर्म पैंडा लिया तिन।। २ ।।

माया में जितने भी समर्थ जीव हैं वह केवल धन सम्पत्ति के लिए दौड़ते हैं। जिन्होंने निडर होकर अपने आपको कुर्बान किया है, उन्होंने ही सच्चा रास्ता ग्रहण किया है।

पुष्ट मरजाद जो प्रवाह पख, याको सार बताऊं लख।
ताके हिसे किए नौं, चढ़े सीढ़ी भगत जल भौं।। ३ ।।

पुष्टि, मर्यादा और प्रवाह पक्ष कहे जाते हैं, जिनके सार को देखकर बताती हूं। इन तीन के नौ हिस्से किए तो नवधा (नौ) प्रकार की भक्ति से बैकुण्ठ तक की सीढ़ी चढ़ते हैं और इस तरह से पुष्टि, मर्यादा और प्रवाह के नौ-नौ भाग हो गए।

भी ताके बांटे किए सताईस, चढ़े ऊंचे सुरत बांध जगदीस।
सो बांटे किए असी और एक, पोहोंचे बैकुंठ चढ़े या विवेक।। ४ ।।

फिर नौ बांटकर सत्ताईस किए। इस तरह से नवधा भक्ति वाले पुष्टि, मर्यादा और प्रवाह से बैकुण्ठ नाथ की भक्ति कर ऊंचे चढ़ते हैं। इसके भी तीन-तीन हिस्से किए और इक्यासी पक्ष हुए। जिसके विवेक से चलकर बैकुण्ठ पहुंचते हैं। (नवधा प्रकार की भक्ति—श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पाद-सेवन, अर्चना, वन्दना, दास्य, सखा, आत्म निवेदन। इनको किस किसने किया? श्रवण **परीक्षित**, कीर्तन **शुकदेव**, स्मरण **प्रहलाद**, पाद-सेवन **लक्ष्मी**, अर्चना **राजा पृथु**, वन्दना **अक्रूर**, दास्य **हनुमान**, सखा **अर्जुन**, आत्म निवेदन **राजा बलि**।) हर एक भक्ति को तीन-तीन तरह से सुनना और फिर प्रत्येक भाव की भक्ति तीन तरह से लाना, यह इक्यासी पक्ष हैं।

Nijanand App

इतहीं बैठे जागे घर धाम, पूरन मनोरथ हुए सब काम।
उड़्यो अग्यान सबों खुली नजर, उठ बैठे सब घर के घर।। ३३ ।।

मूल मिलावे में बैठे ही अपने घर में जाग गए। सबके मनकी इच्छा पूरी हो गई। अज्ञानता उड़ गई और नजर खुल गई। सब अपने घर में उठ बैठे।

हांसी न रहे पकरी, धनीऐं जो साथ पर करी।
हंसते ताली देकर उठे, धनी महामत साथ एकठे।। ३४ ।।

श्री राजजी महाराज ने जो सुन्दरसाथ पर हंसी की है, परमधाम में उठने के बाद काबू से बाहर होगी। सभी सुन्दरसाथ और महामति अपने पिया के साथ ताली बजाकर एक साथ उठेंगे।

।। प्रकरण ।। ३३ ।। चौपाई ।। १०१८ ।।

पख पुष्ट मरजाद प्रवाह

अब कहूं सो हिरदे रख, अठोत्तर सौ जो है पख।
एक विचार सुनियो प्रवान, याको सार काढूं निरवान।। १ ।।

श्री महामतिजी सुन्दरसाथ को कहती हैं कि अब एक सौ आठ पक्षों का वर्णन करती हूं। उसे हृदय में रखना। एक विचार मैं तुम्हें बताती हूं जिसका सार निश्चित रूप से निकालूंगी।

माया जीव कोई है समरथ, दौड़ करत है कारन अरथ।
निसंक आपोपा डार्‍या जिन, निहकर्म पैंडा लिया तिन।। २ ।।

माया में जितने भी समर्थ जीव हैं वह केवल धन सम्पत्ति के लिए दौड़ते हैं। जिन्होंने निडर होकर अपने आपको कुर्बान किया है, उन्होंने ही सच्चा रास्ता ग्रहण किया है।

पुष्ट मरजाद जो प्रवाह पख, याको सार बताऊं लख।
ताके हिसे किए नौं, चढ़े सीढ़ी भगत जल भौं।। ३ ।।

पुष्टि, मर्यादा और प्रवाह पक्ष कहे जाते हैं, जिनके सार को देखकर बताती हूं। इन तीन के नौ हिस्से किए तो नवधा (नौ) प्रकार की भक्ति से बैकुण्ठ तक की सीढ़ी चढ़ते हैं और इस तरह से पुष्टि, मर्यादा और प्रवाह के नौ-नौ भाग हो गए।

भी ताके बांटे किए सताईस, चढ़े ऊंचे सुरत बांध जगदीस।
सो बांटे किए असी और एक, पोहोंचे बैकुंठ चढ़े या विवेक।। ४ ।।

फिर नौ बांटकर सत्ताईस किए। इस तरह से नवधा भक्ति वाले पुष्टि, मर्यादा और प्रवाह से बैकुण्ठ नाथ की भक्ति कर ऊंचे चढ़ते हैं। इसके भी तीन-तीन हिस्से किए और इक्यासी पक्ष हुए। जिसके विवेक से चलकर बैकुण्ठ पहुंचते हैं। (नवधा प्रकार की भक्ति—श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पाद-सेवन, अर्चना, वन्दना, दास्य, सखा, आत्म निवेदन। इंनको किस किसने किया ? श्रवण **परीक्षित**, कीर्तन **शुकदेव**, स्मरण **प्रहलाद**, पाद-सेवन **लक्ष्मी**, अर्चना **राजा पृथु**, वन्दना **अक्रूर**, दास्य **हनुमान**, सखा **अर्जुन**, आत्म निवेदन **राजा बलि**।) हर एक भक्ति को तीन-तीन तरह से सुनना और फिर प्रत्येक भाव की भक्ति तीन तरह से लाना, यह इक्यासी पक्ष हैं।

Nijanand App

तहां चार विध की कही मुगत, करनी माफक पावे इत।
इतथें जो कोई आगे जाए, निराकार से न निकसे पाए।।५।।

बैकुण्ठ में चार प्रकार की मुक्ति कही है अर्थात् सालोक्य, सारूप्य, सामीप्य और सायुज्य, जिसे अपनी करनी (कर्म) के माफिक जीव प्राप्त करते हैं। यहां से कोई आगे जाना चाहता है तो निराकार में रुक जाता है। निराकार से निकल नहीं पाता।

पख बयासिमां जो कह्या, वल्लभाचारज तहां पोहोंचिया।
स्यामा वल्लभियों करी बड़ी दौर, एभी आये रहे इन ठौर।।६।।

बयासीवां पक्ष जो कहा है, वहां वल्लभाचार्य पहुंचे हैं। श्यामां वल्लभी मत ने दौड़ की। वह भी यहां आकर रुक गए (यह गोलोक धाम तक की पहुंच है)।

छेद इंड में कियो सही, पर अखंड दृष्टें आया नहीं।
आड़ी सुंन भई निराकार, पोहोंच न सके ताके पार।।७।।

इन्होंने ब्रह्माण्ड को पार तो किया, किन्तु अखण्ड नजर में नहीं आया। इनके आड़े शून्य निराकार आ गया जिससे आगे नहीं जा सके।

इनों की तो एह सनंध, पीछे फेर पकड़्या प्रतिबिंब।
और साध अलेखे केते कहूं, निसंक दौड़ करी जिनहूँ।।८।।

इनकी ऐसी हकीकत हुई। जब इनको आगे कुछ नजर नहीं आया तो उन्होंने प्रतिबिम्ब की लीला को पकड़ लिया। कितने साधु महात्माओं की बात कहूं, जिन्होंने निडर होकर बहुत दौड़ की।

ग्यानी अनेक कथें बहु ग्यान, ध्यानी कई बिध धरें ध्यान।
पर ए सबही सुन्य के दरम्यान, छूट्या न काहूं संसे उनमान।।९।।

ज्ञानी लोगों ने अनेक तरह से ज्ञान का बखान किया। ध्यानियों ने कई तरह से ध्यान का बखान किया, पर यह सब शून्य निराकार के अन्दर ही रहे। किसी के जब संशय नहीं मिटे तो अपने-अपने अनुमान से बोले।

उपासनी निरगुन या निरंजन, किन उलंघ्यो न जाय विष्णु को कारन।
या सास्त्र या साधू जन, द्वैत सबे समानी सुंन।।१०।।

कई निर्गुणी और निरंजनी ने उपासना की, किन्तु कोई भी विष्णु के कारण स्वरूप (मोह तत्व) को पार नहीं कर सका। शास्त्रकारों को या साधुओं को सबको माया लगी और सब निराकार के अन्दर ही रहे।

इन ऊपर पख है एक, सुनियो ताको कहूं विवेक।
पुरुख प्रकृती उलंघ के गए, जाए अखंड सुख मांहें रहे।।११।।

इसके ऊपर भी एक पक्ष है उसका वर्णन सुनो। जो पुरुष-प्रकृति को उलंघ (लांघ) कर आगे और अखण्ड सुख में पहुंचे।

त्रासिमा पख प्रवान, जो वासना पांचों लिया निरवान।
ए पांचो कहूं अपनायत कर, देखांऊं सब्दातीत घर।।१२।।

तिरासीवें पक्ष में पांच वासनाएं पहुंचीं। इन पांचों को अपना जानकर अपने घर अक्षरातीत की बात बताती हूं।

Nijanand App

नातो प्रबोध काहे को कहूं, चरन पिया के प्रेमें ग्रहूं।
पर साथ कारन कहूं फेर फेर, ए पांचो नाम लीजो चित धर।। १३ ।।

यह अपने न होते तो समझाने की क्या जरूरत थी? अपने धनी के चरणों में चित्त लगाकर आनन्द करती, पर साथ के वास्ते बार-बार कहती हूं कि इन पांचों के नाम चित्त में रखना।

एक भगवानजी बैकुंठ को नाथ, महादेवजी भी इनके साथ।
सुकजी और सनकादिक दोए, कबीर भी इत पोहोंच्या सोए।। १४ ।।

एक भगवानजी बैकुण्ठ के नाथ हैं। महादेवजी को इनके साथ गिनें। शुकदेवजी और सनकादिक दो यह हुए। कबीर भी यहां तक पहुंचे, यह जानना।

लखमीनारायन जुदे ना अंग, सो तो भेले विष्णु के संग।
ए पांचो कहे मैं तिन कारन, चित ल्याए देखो याके वचन।। १५ ।।

लक्ष्मी, नारायण के अंग जुदे नहीं, यह विष्णु के दो स्वरूप हैं। इन पांचों के नाम मैंने इसलिए कहे हैं कि हे साथजी! चित्त में ला करके इनके वचनों को देखो।

देखो सब्द इनों की रोसनी, पर जानेगा बड़ी मत का धनी।
पख पचीस या ऊपर होय, तारतम के वचन हैं सोए।। १६ ।।

इनके शब्दों के ज्ञान को वही जान पाएगा, जिसके पास जागृत बुद्धि होगी। इनके ऊपर पच्चीस पक्ष हैं, जो तारतम की वाणी है।

इन वचनों में अछरातीत, श्री धाम धनी साथ सहीत।
ए देखो तारतम को उजास, धनी ल्याए कारन साथ।। १७ ।।

इन वचनों में अक्षरातीत धाम-धनी, सुन्दरसाथ की हकीकत है, जो धनी अपने सुन्दरसाथ के लिए लाए हैं। इस तारतम वाणी में देखो।

तुम आपको ना करो पेहेचान, बोहोत ताए कहिए जो होए अजान।
तुम जो हो इन घर के प्रवान, सुनते क्यों न होत गलतान।। १८ ।।

तुम अपनी पहचान क्यों नहीं करते। बहुत तो उसे कहना पड़ता है जो अजान हो। तुम तो इस घर परमधाम के ही हो। घर की बातों को सुनकर तुम्हें एक रस हो जाना चाहिए।

सनेहसों सेवा कीजो धनी, घर की पेहेचान देखियो अपनी।
तुम प्रेम सेवाएं पाओगे पार, ए वचन धनी के कहे निरधार।। १९ ।।

बड़े प्यार से धनी की सेवा करना और अपने घर की पहचान करना। तुम प्रेम सेवा से ही पार पाओगे। ऐसे अपने धनी का फरमान (आदेश) है।

पीछला साथ आवेगा क्योंकर, प्रकास वचन हिरदेमें धर।
चरने हैं सोतो आए सही, पर पीछले कारन ए बानी कही।। २० ।।

पिछला सुन्दरसाथ (जो अभी माया में है) कैसे आएगा? प्रकाश की वाणी को समझकर आएगा। जो माया छोड़कर स्वामीजी के चरणों में आए हैं, वह तो आ ही गए हैं और पिछले सुन्दरसाथ के वास्ते यह वाणी कही।

Nijanand App

आवसी साथ ए देख प्रकास, अंधकार सब कियो नास।
एह वचन अब केते कहूं, इन लीला को पार ना लहूं।। २१ ।।

सब अज्ञानता मिटा दी है। अब सुन्दरसाथ इस प्रकाश वाणी के प्रकाश को देखकर आएंगे। यह लीला बहुत भारी है, इसलिए अब कहां तक कहूं?

या वानी को नाहीं पार, साथ केता करसी विचार।
तिन कारन बोहोत कह्यो न जाए, ए तो पूर बहे दरियाए।। २२ ।।

इस वाणी का इतना विस्तार है जैसे एक दरिया का बाढ़। सुन्दरसाथ कितना ग्रहण करेगा? इसलिए मैंने ज्यादा नहीं कहा।

याको नेक विचारे जो एक वचन, ताए घर पेहेचान होवे मिने खिन।
जो वासना होसी इन घर, सो एह वचन छोड़े क्यों कर।। २३ ।।

इस वाणी के एक वचन का भी थोड़ा सा विचार करे तो एक क्षण में घर की पहचान हो जाएगी। जो परमधाम की आत्माएं होंगी वह इन वचनों को कभी नहीं छोड़ेंगी।

ए वचन सुनते बाढ़े बल, सोई लेसी तारतम को फल।
तारतम फल जागिए इन घर, कहे महामती ए हिरदे धर।। २४ ।।

इन वचनों को सुनते जिसे आवेश आ जाता है, वही तारतम वाणी के फल को (परमधाम) को ग्रहण कर लेगा। श्री महामतिजी कहती हैं कि इस ज्ञान को हृदय में रखो।

।। प्रकरण ।। ३४ ।। चौपाई ।। १०४२ ।।

गुननकी आसंका

अब कछुक मैं अपनी करूं, ना तो तुमे बोहोतक ओचरूं।
भी एक कहूं वचन, तुमको संसे रेहेवे जिन।। १ ।।

हे सुन्दरसाथजी! मैंने तुम्हें बहुत कुछ कह दिया है, ताकि तुम्हारे अन्दर कोई संशय न रह जाए। इसलिए मैं कुछ अपनी तरफ से कहती हूं।

मैं धाम धनी गुन लिखे सही, एक आसंका मेरे मनमें रही।
मैं गेहेरे सब्द कहे निरधार, सो साथ क्यों करसी विचार।। २ ।।

मैंने धाम धनी के गुणों को लिखा तो है पर एक संशय मेरे मन में रह गया है। मैंने गुण लिखते समय बहुत बड़े-बड़े शब्द कहे हैं। उसका विचार सुन्दरसाथ किस तरह से करेंगे?

जोलों आतम ना देवे साख, तोलों प्रबोध भले दीजे दस लाख।
पर सो क्योंए ना लगे एक वचन, जोलों ना समझे आतम बुध मन।। ३ ।।

जब तक अपनी आत्मा ही अन्दर से न स्वीकार करे तब तक भले ही दस लाख बार किसी को समझाया जाए तो भी उसे एक वचन का असर नहीं होता। उसे अपनी आत्मा, बुद्धि और मन में समझना जरूरी है।

ताथें यों दिल आई हमको, जिन कोई संसे रहे तुमको।
एक प्रवाही वचन यों कहे, मुखथें कहे पर अर्थ ना लहे।। ४ ।।

इसलिए मेरे दिल में एक बात आई कि सुन्दरसाथ को किसी प्रकार का संशय न रहे। जैसे प्रवाही भी अपने मुंह से बड़े-बड़े शब्द बोलते हैं, परन्तु उनके अर्थ नहीं समझते।

Nijanand App

आवसी साथ ए देख प्रकास, अंधकार सब कियो नास।
एह वचन अब केते कहूं, इन लीला को पार ना लहूं।। २१ ।।

सब अज्ञानता मिटा दी है। अब सुन्दरसाथ इस प्रकाश वाणी के प्रकाश को देखकर आएंगे। यह लीला बहुत भारी है, इसलिए अब कहां तक कहूं?

या वानी को नाहीं पार, साथ केता करसी विचार।
तिन कारन बोहोत कह्यो न जाए, ए तो पूर बहे दरियाए।। २२ ।।

इस वाणी का इतना विस्तार है जैसे एक दरिया का बाढ़। सुन्दरसाथ कितना ग्रहण करेगा? इसलिए मैंने ज्यादा नहीं कहा।

याको नेक विचारे जो एक वचन, ताए घर पेहेचान होवे मिने खिन।
जो वासना होसी इन घर, सो एह वचन छोड़े क्यों कर।। २३ ।।

इस वाणी के एक बचन का भी थोड़ा सा विचार करे तो एक क्षण में घर की पहचान हो जाएगी। जो परमधाम की आत्माएं होंगी वह इन वचनों को कभी नहीं छोड़ेंगी।

ए वचन सुनते बाढ़े बल, सोई लेसी तारतम को फल।
तारतम फल जागिए इन घर, कहे महामती ए हिरदे धर।। २४ ।।

इन वचनों को सुनते जिसे आवेश आ जाता है, वही तारतम वाणी के फल को (परमधाम) को ग्रहण कर लेगा। श्री महामतिजी कहती हैं कि इस ज्ञान को हृदय में रखो।

।। प्रकरण ।। ३४ ।। चौपाई ।। १०४२ ।।

गुननकी आसंका

अब कछुक मैं अपनी करूं, ना तो तुमे बोहोतक ओचरूं।
भी एक कहूं वचन, तुमको संसे रेहेवे जिन।। १ ।।

हे सुन्दरसाथजी! मैंने तुम्हें बहुत कुछ कह दिया है, ताकि तुम्हारे अन्दर कोई संशय न रह जाए। इसलिए मैं कुछ अपनी तरफ से कहती हूं।

मैं धाम धनी गुन लिखे सही, एक आसंका मेरे मनमें रही।
मैं गेहेरे सब्द कहे निरधार, सो साथ क्यों करसी विचार।। २ ।।

मैंने धाम धनी के गुणों को लिखा तो है पर एक संशय मेरे मन में रह गया है। मैंने गुण लिखते समय बहुत बड़े-बड़े शब्द कहे हैं। उसका विचार सुन्दरसाथ किस तरह से करेंगे?

जोलों आतम ना देवे साख, तोलों प्रबोध भले दीजे दस लाख।
पर सो क्योंए ना लगे एक वचन, जोलों ना समझे आतम बुध मन।। ३ ।।

जब तक अपनी आत्मा ही अन्दर से न स्वीकार करे तब तक भले ही दस लाख बार किसी को समझाया जाए तो भी उसे एक वचन का असर नहीं होता। उसे अपनी आत्मा, बुद्धि और मन में समझना जरूरी है।

ताथें यों दिल आई हमको, जिन कोई संसे रहे तुमको।
एक प्रवाही वचन यों कहे, मुखथें कहे पर अर्थ ना लहे।। ४ ।।

इसलिए मेरे दिल में एक बात आई कि सुन्दरसाथ को किसी प्रकार का संशय न रहे। जैसे प्रवाही भी अपने मुंह से बड़े-बड़े शब्द बोलते हैं, परन्तु उनके अर्थ नहीं समझते।

Nijanand App

सूईके नाके मंझार, कुंजर कई निकसे हजार।
ए अर्थ भी होसी इतहीं, तारतम आसंका राखे नहीं।।५ ।।

सुई की नोंक में से हजारों हाथी निकल गए। तारतम वाणी इसका अर्थ यहीं जाहिर कर देगी और कोई संशय नहीं रहेगा।

मैं गुन लिखते कही लेखन अनी, ए आसंका जिन होसी घनी।
कथुए के पांऊ प्रवान, कलमे गढ़िया हाथ सुजान।।६ ।।

गुण लिखते समय मैंने कलम की नोंक की बारीकी के बारे में कहा था कि कथुए के पांव के समान मैंने बड़ी सावधानी से कलमें बनाईं। यह भी एक शंका वाली बात हो सकती है।

तिनकी भी मैं करी चीर, गुन जेती उतारी लीर।
अब जिन किनको संसे रहे, तारतम संसे कछू ना सहे।।७ ।।

फिर उन कलमों को मैंने बीच में चीरा और जितने गुण उतने ही बारीक छिल्के उतारे। तारतम ज्ञान से यह संशय भी किसी का नहीं रहेगा। तारतम वाणी किसी का संशय बाकी रखती ही नहीं।

या पर एक कहूं विचार, सुनियो ब्रह्मसृष्ट सिरदार।
ए चौद भवन देखो आकार, याके मूल को करो विचार।।८ ।।

इसके ऊपर भी अपना एक विचार बताती हूं। हे मेरे सिरदार (प्रमुख) सुन्दरसाथजी! सुनो, चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड के जिस आकार को देखते हो, उसके मूल का भी विचार करो।

याको सास्त्र सुपनांतर कहे, कोई याको जीव याको ना लहे।
ए सुपन मूल तो है समरथ, याके मूल को देखो अर्थ।।९ ।।

सब शास्त्र इसे सपने का कहते हैं, परन्तु इसके अन्दर रहने वाले जीव इस तरह से नहीं मानते। इस सपने को बनाने वाला अक्षरब्रह्म समर्थ है। अब उसके मूल के भेद को समझो।

सुपन मूल तो नींद जो भई, जब जाग उठे तब कछुए नहीं।
याको पेड़ कछू न रह्यो लगार, कथुए के पांउ का तो मैं कह्या आकार।। १० ।।

सपने का मूल तो नींद है। जब जागते हैं तो सपना उड़ जाता है। इस सपने का तो जागने पर कुछ भी आकार नहीं रहता, परन्तु कथुआ भले कितना छोटा क्यों न हो उसका रूप तो है।

बिना पेड़ देखो विस्तार, एता बड़ा किया आकार।
एतो पेड़ कह्या आकार, तो ताको क्यों ना होए विस्तार।।११।।

महामतिजी कहती हैं कि चौदह लोकों के पेड़ रूपी इस ब्रह्माण्ड के आकार और विस्तार को देखो, जो बिना आधार का है, परन्तु कथुए के जीव का कुछ तो आकार है तो उसका विस्तार क्यों न हो।

यों सूई के नाके मांहें, कई लाखों ब्रह्मांड निकसे जांए।
अब ए नीके लीजो अर्थ, गुन लिखने वालो समरथ।। १२ ।।

इस तरह से सुई के एक छेद में से कई लाखों ब्रह्माण्ड जो सपने के हैं, निकल जाते हैं। इसके अर्थ को तुम अच्छी तरह से समझना, क्योंकि गुणों को इस तरह से लिखने वाला सर्वशक्तिमान है।

अब केता कहूं तुमको विस्तार, एक एह सब्द लीजो निरधार।
फेर फेर कहूं मेरे साथ, नीके पेहेचानो प्राण को नाथ।। १३ ।।

हे सुन्दरसाथजी! अब ज्यादा विस्तार से क्या बताएं? इस एक शब्द से ही अपने प्राणनाथ धनी को पहचान लेना और ग्रहण कर लेना।

Nijanand App

गुन लिखने वालो सो एह, आपन मांहें बैठा जेह।
इंद्रावती कहे दिल दे रे दे, जिन गुन किए सो ए रे ए।। १४ ।।

गुण लिखने वाले भी यही प्राणनाथ हैं जो अपने बीच में बैठे हैं। श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि इनको अपना दिल दो। जिन्होंने हमारे ऊपर इतने एहसान किए हैं, वह यही अपने धनी हैं।

तेरे केहेना होए सो केहे रे केहे, लाभ लेना होए सो ले रे ले।
तारतम केहेत है आ रे आ, हजार बार कहूं हां रे हां।। १५ ।।

हे साथजी! अब तुमको कुछ कहना हो तो कहो। लाभ लेना है तो लो। तारतम वाणी कहती है, मेरे प्यारे सुन्दरसाथ! आओ, तुम्हारा हजार बार स्वागत है।

मायासों कीजो ना रे ना, नाबूद फेरा जिन खा रे खा।
धनी के चरने जा रे जा, ऐसा न पावे दा रे दा।। १६ ।।

माया को छोड़ दो और व्यर्थ में आवागमन के चक्कर में मत पड़ो। धनी के चरणों में जाओ। फिर ऐसा समय नहीं मिलेगा।

जो चूक्या अबको ता रे ता, तो सिर में लगसी घा रे घा।
संसार में नहीं कछू सा रे सा, श्री धामधनी गुन गा रे गा।। १७ ।।

यदि अब की बार चूक गए तो ऐसा घाव लगेगा जो सहन नहीं होगा, अर्थात् जन्म-मरण में पड़ना होगा। संसार में कुछ भी नहीं है, इसलिए धनी के गुण गाओ।

लीजो मूल को भाओ रे भाओ, जिन छोड़े अपनो चाहो रे चाहो।
प्रेमें पकड़ पिउ के पाए रे पाए, ज्यों सब कोई कहे तोको वाहे रे वाहे।। १८ ।।

अपने मूल परमधाम की भावनाओं को समझ कर अपनी चाहनाओं को पूरा करो और प्रेम से धनी को अपना लो, जिससे तुम्हें सब कोई वाह-वाह कहे।

॥ प्रकरण ॥ ३५ ॥ चौपाई ॥ १०६० ॥

गुन केते कहूं मेरे पिउ जी, जो हमसों किए अनेक जी।
ए बुध इन आकार की, क्यों कहे जुबां विवेक जी।। १ ।।

हे मेरे पिउजी! मैं आपके एहसानों, जो आपने मेरे ऊपर किए हैं, का कहां तक वर्णन करूं? यह मेरी बुद्धि झूठे आकार की है, इसलिए इस जबान से वर्णन कैसे करूं?

माया मांगी सो देखाए के, भानी मन की भ्रांत जी।
सब सुख दिए जगाए के, कई विध के दृष्टांत जी।। २ ।।

हमने परमधाम में जो माया मांगी थी वह दिखाकर हमारे संशय मिटा दिए और तरह तरह के दृष्टान्त देकर जागृत करके सुख दिए हैं।

बृज के सुख इत आए के, हमको अलेखे दिए जी।
रासके सुख इत देएके, आप सरीखे किए जी।। ३ ।।

ब्रज के सुख भी यहां आकर आपने बेशुमार दिए तथा रास के सुख देकर अपने समान कर लिया।

Nijanand App

गुन लिखने वालो सो एह, आपन मांहें बैठा जेह।
इंद्रावती कहे दिल दे रे दे, जिन गुन किए सो ए रे ए।।१४।।

गुण लिखने वाले भी यही प्राणनाथ हैं जो अपने बीच में बैठे हैं। श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि इनको अपना दिल दो। जिन्होंने हमारे ऊपर इतने एहसान किए हैं, वह यही अपने धनी हैं।

तेरे केहेना होए सो केहे रे केहे, लाभ लेना होए सो ले रे ले।
तारतम केहेत है आ रे आ, हजार बार कहूं हां रे हां।।१५।।

हे साथजी! अब तुमको कुछ कहना हो तो कहो। लाभ लेना है तो लो। तारतम वाणी कहती है, मेरे प्यारे सुन्दरसाथ! आओ, तुम्हारा हजार बार स्वागत है।

मायासों कीजो ना रे ना, नाबूद फेरा जिन खा रे खा।
धनी के चरने जा रे जा, ऐसा न पावे दा रे दा।।१६।।

माया को छोड़ दो और व्यर्थ में आवागमन के चक्कर में मत पड़ो। धनी के चरणों में जाओ। फिर ऐसा समय नहीं मिलेगा।

जो चूक्या अबको ता रे ता, तो सिर में लगसी घा रे घा।
संसार में नहीं कछू सा रे सा, श्री धामधनी गुन गा रे गा।।१७।।

यदि अब की बार चूक गए तो ऐसा घाव लगेगा जो सहन नहीं होगा, अर्थात् जन्म-मरण में पड़ना होगा। संसार में कुछ भी नहीं है, इसलिए धनी के गुण गाओ।

लीजो मूल को भाओ रे भाओ, जिन छोड़े अपनो चाहो रे चाहो।
प्रेमें पकड़ पिउ के पाए रे पाए, ज्यों सब कोई कहे तोको वाहे रे वाहे।।१८।।

अपने मूल परमधाम की भावनाओं को समझ कर अपनी चाहनाओं को पूरा करो और प्रेम से धनी को अपना लो, जिससे तुम्हें सब कोई वाह-वाह कहे।

।। प्रकरण ।। ३५ ।। चौपाई ।। १०६० ।।

गुन केते कहूं मेरे पिउ जी, जो हमसों किए अनेक जी।
ए बुध इन आकार की, क्यों कहे जुबां विवेक जी।।१।।

हे मेरे पिउजी! मैं आपके एहसानों, जो आपने मेरे ऊपर किए हैं, का कहां तक वर्णन करूं? यह मेरी बुद्धि झूठे आकार की है, इसलिए इस जबान से वर्णन कैसे करूं?

माया मांगी सो देखाए के, भानी मन की भ्रांत जी।
सब सुख दिए जगाए के, कई विध के दृष्टांत जी।।२।।

हमने परमधाम में जो माया मांगी थी वह दिखाकर हमारे संशय मिटा दिए और तरह तरह के दृष्टान्त देकर जागृत करके सुख दिए हैं।

बृज के सुख इत आए के, हमको अलेखे दिए जी।
रासके सुख इत देएके, आप सरीखे किए जी।।३।।

ब्रज के सुख भी यहां आकर आपने बेशुमार दिए तथा रास के सुख देकर अपने समान कर लिया।

Nijanand App

कई विध विध के सुख धाम के, जो हमको दिए इत जी।
तारतम करके रोसनी, कई बिध करी प्राप्त जी।। ४ ।।

परमधाम के भी कई सुख हमको यहीं पर दिए। हमने भी तारतम वाणी को समझकर कई तरह से उनको प्राप्त किया।

सेहेजल सुखमें झीलते, काहूं दुख न सुनिया नाम जी।
सो मायामें इत आए के, सुख अखंड देखाया धाम जी।। ५ ।।

परमधाम में हम सहज में आराम से रहते थे। कभी दुःख का नाम तक नहीं सुना था। अब दुःख रूपी माया में आकर भी अखण्ड परमधाम के सुख की लज्जत दी।

कहे इंद्रावती अति उछरंगे, हमको लाड़ लड़ाए जी।
निरमल नेत्र किए जो आतम के, परदे दिए उड़ाए जी।। ६ ।।

श्री इन्द्रावती जी बड़ी उमंग के साथ कहती हैं कि आपने हमको बहुत ही लाड लडाए हैं तथा हमारी आत्मा के नेत्रों को तारतम वाणी से निर्मल करके सब संशय मिटा दिए हैं।

आप पेहेचान कराई अपनी, लई अपने पास जगाए जी।
बड़ी बड़ाई दई आपथें, लई इंद्रावती कंठ लगाए जी।। ७ ।।

आपने अपनी पहचान स्वयं कराई और जागृत करके अपने पास बुलाया। अपने से भी अधिक बड़ाई (मान) देकर श्री इन्द्रावतीजी को अपने गले से लगा लिया।

।। प्रकरण ।। ३६ ।। चौपाई ।। १०६७ ।।

नोट—श्यामजी के मन्दिर में श्यामाजी महारानी को (देवचन्द्रजी को) धाम धनीजी ने दर्शन दिया और उन्हें अपनी, श्यामाजी की, क्षर, अक्षर तथा अक्षरातीत के ब्रह्माण्डों की, ब्रज, रास, जागनी और धाम की लीलाओं की पहचान कराकर जागृत किया और उनके हृदय में विराजमान हो गए।

।। प्रगट वाणी ।।

निजनाम श्रीकृष्ण जी, अनादि अछरातीत।
सोतो अब जाहेर भए, सब विध वतन सहीत।। १ ।।
श्री स्यामाजी वर सत्य हैं, सदा सत दुख के दातार।
विनती एक जो वल्लभा, मो अंगना की अविधार।। २ ।।
वानी मेरे पिउ की, न्यारी जो संसार।
निराकार के पार थें, तिन पार के भी पार।। ३ ।।
अंग उत्कंठा उपजी, मेरे करना एह विचार।
ए सत वानी मथ के, लेऊं जो इनको सार।। ४ ।।
इन सार में कई सत सुख, सो मैं निरने करूं निरधार।
ए सुख देऊं ब्रह्मसृष्ट को, तो मैं अंगना नार।। ५ ।।
जब ए सुख अंग में आवहीं, तब छूट जाएं विकार।
आयो आनन्द अखंड घर को, श्री अछरातीत भरतार।। ६ ।।

Nijanand App

कई विध विध के सुख धाम के, जो हमको दिए इत जी।
तारतम करके रोसनी, कई बिध करी प्राप्त जी।।४।।

परमधाम के भी कई सुख हमको यहीं पर दिए। हमने भी तारतम वाणी को समझकर कई तरह से उनको प्राप्त किया।

सेहेजल सुखमें झीलते, काहूं दुख न सुनिया नाम जी।
सो मायामें इत आए के, सुख अखंड देखाया धाम जी।।५।।

परमधाम में हम सहज में आराम से रहते थे। कभी दु:ख का नाम तक नहीं सुना था। अब दु:ख रूपी माया में आकर भी अखण्ड परमधाम के सुख की लज्जत दी।

कहे इंद्रावती अति उछरंगे, हमको लाड़ लड़ाए जी।
निरमल नेत्र किए जो आतम के, परदे दिए उड़ाए जी।।६।।

श्री इन्द्रावती जी बड़ी उमंग के साथ कहती हैं कि आपने हमको बहुत ही लाड लडाए हैं तथा हमारी आत्मा के नेत्रों को तारतम वाणी से निर्मल करके सब संशय मिटा दिए हैं।

आप पेहेचान कराई अपनी, लई अपने पास जगाए जी।
बड़ी बड़ाई दई आपथें, लई इंद्रावती कंठ लगाए जी।।७।।

आपने अपनी पहचान स्वयं कराई और जागृत करके अपने पास बुलाया। अपने से भी अधिक बड़ाई (मान) देकर श्री इन्द्रावतीजी को अपने गले से लगा लिया।

।। प्रकरण ।। ३६ ।। चौपाई ।। ५०६७ ।।

नोट—श्यामजी के मन्दिर में श्यामाजी महारानी को (देवचन्द्रजी को) धाम धनीजी ने दर्शन दिया और उन्हें अपनी, श्यामाजी की, क्षर, अक्षर तथा अक्षरातीत के ब्रह्माण्डों की, ब्रज, रास, जागनी और धाम की लीलाओं की पहचान कराकर जागृत किया और उनके हृदय में विराजमान हो गए।

।। प्रगट वाणी ।।

निजनाम श्रीकृष्ण जी, अनादि अछरातीत।
सोतो अब जाहेर भए, सब विध वतन सहीत।।१।।
श्री स्यामाजी वर सत्य हैं, सदा सत दुख के दातार।
विनती एक जो वल्लभा, मो अंगना की अविधार।।२।।
वानी मेरे पिउ की, न्यारी जो संसार।
निराकार के पार थें, तिन पार के भी पार।।३।।
अंग उत्कंठा उपजी, मेरे करना एह विचार।
ए सत वानी मथ के, लेऊं जो इनको सार।।४।।
इन सार में कई सत सुख, सो मैं निरने करूं निरधार।
ए सुख देऊं ब्रह्मसृष्ट को, तो मैं अंगना नार।।५।।
जब ए सुख अंग में आवहीं, तब छूट जाएं विकार।
आयो आनन्द अखंड घर को, श्री अछरातीत भरतार।।६।।

Nijanand App

अब लीला हम जाहेर करें, ज्यों सुख सैयां हिरदे धरें।
पीछे सुख होसी सबन, पसरसी चौदे भवन।। ७ ।।

अब हम लीला को जाहिर करते हैं, जिससे ब्रह्मसृष्टियों को सुनकर हृदय में सुख हो। पीछे जब यह वाणी चौदह लोकों में फैलेगी तो सारे संसार को सुख होगा।

अब सुनियो ब्रह्मसृष्ट विचार, जो कोई निज वतनी सिरदार।
अपनों धनी श्री स्यामा स्याम, अपना वासा है निज धाम।। ८ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि अब जो कोई ब्रह्मसृष्टि है, मेरे वतन (परमधाम) की है, मेरे विचार सुनो। अपने धनी श्यामा श्याम हैं और अपना घर परमधाम है।

सोई अखंड अछरातीत घर, नित्य बैकुंठ मिने अछर।
अब ए गुझ करूं प्रकास, ब्रह्मानंद ब्रह्मसृष्ट विलास।। ९ ।।

वह अपना घर अक्षर के पार अखण्ड है। अपना ठिकाना वहां है। ब्रह्माण्ड बनने और मिटने की लीला अक्षर ब्रह्म के तन से अव्याकृत और सबलिक में होती है। यह नित्य बैकुण्ठ है। अब उसी छिपी बात को जाहिर करती हूं कि परमधाम में श्री राजजी और सखियों के प्यार की क्या लीला है?

ए वानी चित दे सुनियो साथ, कृपा करके कहें प्राणनाथ।
ए किव कर जिन जानो मन, श्री धनीजी ल्याए धामथें वचन।। १० ।।

सुन्दरसाथजी, इस वाणी को चित्त देकर सुनना। अपने धनी प्राणनाथजी कृपा करके कह रहे हैं। ऐसा नहीं समझना कि यह कविता की गई है। यह वचन धाम धनी परमधाम से लाए हैं।

सो केहेती हूं प्रगट कर, पट टालूं आड़ा अंतर।
तेज तारतम जोत प्रकास, करूं अंधेरी सबको नास।। ११ ।।

अब उसे मैं जाहिर करती हूं। माया के परदे, जो किसी ने आज दिन तक नहीं खोले, वह खोल देती हूं। तारतम वाणी के ज्ञान के तेज प्रकाश से सम्पूर्ण अज्ञानता के अंधेरे को नष्ट कर देती हूं।

अब खेल उपजे के कहूं कारन, ए दोऊ इछा भई उतपन।
बिन कारन कारज नहीं होय, सो कहूं याके कारन दोए।। १२ ।।

अब खेल बनने के कारण बताती हूं। यह दो (ब्रह्मसृष्टि और अक्षर ब्रह्म) की इच्छा से बना है। बिना कारण के कार्य नहीं होता, इसलिए इसके दो कारण बताती हूं।

ए उपजाई हमारे धनी, सो तो बातें हैं अति घनी।
नेक तामें करूं रोसन, संसे भान देऊं सबन।। १३ ।।

हमारे धनी ने ही इस खेल को दिखाने की इच्छा हमारे दिल में पैदा की, जिसकी बातें बहुत हैं। उनमें से कुछ मैं प्रकट करती हूं, जिससे सबके संशय मिट जाएं।

अब सुनियो मूल वचन प्रकार, जब नहीं उपज्यो मोह अहंकार।
नाहीं निराकार नाहीं सुन्य, न निरगुन न निरंजन।। १४ ।।

अब आप परमधाम के मूल वचनों को सुनना। यह उस समय की बात है जब मोह सागर के ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति नहीं हुई थी। न निराकार था, न शून्य था, न निर्गुण था, न निरंजन था। कुछ भी नहीं था।

Nijanand App

ना ईश्वर ना मूल प्रकृती, ता दिन की कहूं आपा बीती।
निज लीला ब्रह्म बाल चरित्र, जाकी इछा मूल प्रकृत।।१५।।

न आदि नारायण और न उनकी माया (संसार) थी। उस दिन अपने ऊपर बीती बात बताती हूं। अक्षर ब्रह्म के बाल चरित्र की लीला मूल प्रकृति है, जो उनकी इच्छा का स्वरूप है, जिससे वह ब्रह्माण्ड को बनाते और मिटाते हैं।

नैन की पाओ पल में इसारत, कई कोट ब्रह्मांड उपजत खपत।
इत खेल पैदा इन रवेस, त्रैलोकी ब्रह्मा विष्णु महेस।। १६ ।।

अक्षर की मूल प्रकृति की आंख के चौथाई पल के इशारे में करोड़ों ब्रह्माण्ड बनते और मिटते हैं। यह खेल इस तरह से पैदा हुआ। इसके मालिक ब्रह्मा, विष्णु और शंकरजी हैं।

कई बिध खेलें यों प्रकृत, आप अपनी इछासो खेलत।
या समें श्री बैकुंठ नाथ, इछा दरसन करने साथ।। १७ ।।

इस तरह अक्षर ब्रह्म अपनी इच्छा से ऐसे माया के करोड़ों ब्रह्माण्ड बनवाते और मिटाते हैं। इस समय अक्षर ब्रह्म को ब्रह्मसृष्टियों के दर्शन करने की इच्छा हुई।

अछर मन उपजी ए आस, देखों धनीजी को प्रेम विलास।
तब सखियों मन उपजी एह, खेल देखें अछर का जेह।। १८ ।।

अक्षर के मन में यह भी चाहना हुई कि मेरे धनी अपनी सखियों के साथ क्या प्रेम की लीला करते हैं? मैं भी देखूं। तब सखियों के मन में भी अक्षर का खेल देखने की इच्छा हुई।

तब हम जाए पियासों कही, खेल अछर का देखे सही।
जब एह बात पियाने सुनी, तब बरजे हांसी करने घनी।। १९ ।।

तब हमने अपने धनी से जाकर कहा, हम अक्षर, जो माया का खेल बनवाते हैं, उसका खेल देखना चाहते हैं। हमारे धनी ने यह बात सुनी और हंसकर टाल दिया।

मने किए हमको तीन बेर, तब हम मांग्या फेर फेर फेर।
धनी कहें घर की ना रेहेसी सुध, भूलसी आप ना रेहेसी ए बुध।। २० ।।

धनी ने हमको तीन बार मना किया, पर हमने फिर भी खेल की मांग की। धनी ने कहा खेल में जाकर घर की सुध भूल जाएगी, अपने आपको भूल जाओगी और यह बुद्धि नहीं रहेगी।

तो मने करत हैं हम, हमको भी भूलोगे तुम।
तब हम फेर धनीसों कह्या, कहा करसी हमको माया।। २१ ।।

इसलिए हम तुम्हें मना करते हैं कि तुम हमको भी भूल जाओगी। हमने फिर धनी से कहा कि हमारा माया क्या करेगी?

तब हम मिलके कियो विचार, कह्या एक दूजी को हूजो हुसियार।
खेल देखन की हम पियासों कही, तब हम दोऊ पर अग्या भई।। २२ ।।

तब हम सखियों ने मिलकर विचार किया और फिर पिया से खेल देखने की मांग की। एक दूसरे को होशियार रहने को कहा। हम दोनों की मांग स्वीकार कर खेल देखने की आज्ञा दी।

Nijanand App

ए कहे दोऊ भिंन भिंन, खेल देखन के दोऊ कारन।
उपज्यो मोह सुरत संचरी, खेल हुआ माया विस्तरी।। २३ ।।

यह खेल देखने के दो भिन्न-भिन्न कारण हमने बताए हैं। अब राजजी की आज्ञा से मोह तत्व बना तथा माया के खेल का विस्तार हुआ। इसमें अक्षर की सुरता ने प्रवेश किया।

इत अछर को विलस्यो मन, पांच तत्व चौदे भवन।
या में महाविष्णु मन मन थें त्रैगुन, ताथें थिर चर सब उतपन।। २४ ।।

इसमें अक्षर का मन जो अव्याकृत है, वह कार्य में सतर्क हुआ और उसने पांच तत्व तथा चौदह लोकों का ब्रह्माण्ड बनाया। उसी में अव्याकृत का मन का स्वरूप महाविष्णु बना। महाविष्णु के मन से तीन गुण ब्रह्मा, विष्णु, महेश बने और उनसे सारा संसार बना।

या बिध उपज्यो सब संसार, देखलावने हमको विस्तार।
जो अग्या भई हम पर, तब हम जान्या गोकुल घर।। २५ ।।

इस तरह से सारे संसार की रचना हमारे दिखाने के वास्ते हुई। बनने के बाद धनी की आज्ञा हुई और हमने फरामोशी में यह देखा कि हम गोकुल में रहने लगे हैं।

ज्यों नींदमें देखिए सुपन, यों उपजे हम बृज वधू जन।
उपजत ही मन आसा घनी, हम कब मिलसी अपने धनी।। २६ ।।

जैसे नींद में सपना आता है, इसी तरह से हम फरामोशी में ब्रज की वधुएं बनीं। हमारे मन में इतनी चाहना हुई कि हम अपने धनी से कब मिलेंगे।

जेती कोई हैं ब्रह्मसृष्ट, प्रेम पूरन धनी पर दृष्ट।
कंसके बंध वसुदेव देवकी, इत आई सुरत चत्रभुज की।। २७ ।।

उनमें जितनी ब्रह्मसृष्टियां हैं उनकी नजर अपने धनी को देखना चाहती है। मन में अति प्रेम भरा है। कंस की जेल में वसुदेव और देवकी बन्द हैं, वहां पर चतुर्भुज स्वरूप भगवान विष्णु आए।

सुरत विष्णुकी चत्रभुज जोए, दियो दरसन वसुदेव को सोए।
पीछे फिरे केहेके हकीकत, अब दोए भुजा की कहूं विगत।। २८ ।।

चतुर्भुज स्वरूप भगवान विष्णु ने वसुदेव को दर्शन देकर और क्या करना है, की हकीकत समझाई। इसके बाद अब दो भुजा वाला स्वरूप प्रकट हुआ। उसकी हकीकत बताती हूं।

मूल सुरत अछर की जेह, जिन चाह्या देखों प्रेम सनेह।
सो सुरत धनी को ले आवेस, नंद घर कियो प्रवेस।। २९ ।।

अक्षर की मूल सुरता (आत्मा) जिसने सखियों के प्रेम देखने की इच्छा की थी, धनी का आवेश लेकर नन्दजी के घर में विष्णु के तन में प्रवेश किया।

दो भुजा सरूप जो स्याम, आतम अछर जोस धनी धाम।
ए खेल देख्या सैयां सबन, हम खेले धनी भेले आनंद घन।। ३० ।।

नन्दजी के घर के दो भुजा वाले स्वरूप में आतम अक्षर की है और धनी का जोश है। इस खेल में हम सब सखियां धनी के साथ मिलकर बड़े आनन्द से खेलीं।

Nijanand App

बाल चरित्र लीला जोबन, कई बिध सनेह किए सैयन।
कई लिए प्रेम विलास जो सुख, सो केते कहूं या मुख।। ३१ ।।

बाल लीला तथा जवानी की लीला के कई प्रकार के सुख सखियों ने लिए। कई तरह के प्रेम और विलास के सुख हमें मिले। इस मुख से कितने कहूं?

ए काल मायामें विलास जो करे, सो पूरी नींद में सब बिसरे।
पूरी नींद को जो सुपन, काल माया नाम धराया तिन।। ३२ ।।

कालमाया (ब्रज लीला) में जो हमने विलास लीला से आनन्द लिया था वह भूल गया। पूरी नींद के सपने को ही कालमाया कहते हैं।

तब धाम धनिऐं कियो विचार, ऐ दोऊ मगन हुए खेलें नर नार।
मूल वचन की नाहीं सुध, ए दोऊ खेलें सुपने की बुध।। ३३ ।।

धाम धनी ने विचार किया कि यह अक्षर और सखियां दोनों खेल में मगन (मग्न) होकर अपनी हकीकत भूल गए हैं। इन्हें अपने परमधाम के वचनों की सुध नहीं है। यह दोनों सपने की बुद्धि में भूल गए हैं।

एह बात धनी चितसों ल्याए, आधी नींद दई उड़ाए।
अग्यारे बरस और बावन दिन, ता पीछे पोहोंचे वृन्दावन।। ३४ ।।

इस बात का धनी ने मन में विचार किया और आधी नींद उड़ा दी, अर्थात् ग्यारह वर्ष और बावन दिन की लीला की और फिर प्रलय कर योगमाया के ब्रह्माण्ड में ले गए।

तहां जाए के बेन बजाई, सखियां सबे लई बुलाई।
तामसियां राजसियां चलीं, स्वांतसियां सरीर छोड़ के मिलीं।। ३५ ।।

वहां जाकर बांसुरी बजाई और सब सखियों को बुला लिया। तामसी और राजसी भागीं और स्वांतसियां (सात्विकी) घर में तन छोड़कर मिलीं।

और कुमारका बृज वधु संग जेह, सुरत सबे अछर की एह।
जो व्रत करके मिली संग स्याम, मूल अंग याके नाहीं धाम।। ३६ ।।

सखियों के साथ जो कुमारिका सखियां थीं वह सब अक्षर की सुरता हैं। वे व्रत करके श्याम को पति रूप में मांगकर योगमाया में पहुंचीं। इनके मूल तन धाम में नहीं हैं।

बेन सुनके चली कुमार, भव सागर यों उतरी पार।
इनकी सुरत मिली सब सखियों मांहें, अंग याके रासमें नांहें।। ३७ ।।

बांसुरी की आवाज सुनकर कुमारिकाएं भी भागकर भवसागर से पार हो गईं। इनकी सुरताएं सखियों के तनों में मिल गईं। एक एक सखी के अन्दर दो-दो कुमारिकाओं की सुरताएं बैठीं। इनके तन रास में अलग नहीं हैं।

या विध मुक्त इनों की भई, कुमारका सखियां जो कही।
ए जो अग्यारे बरस लो लीला करी, काल माया तितही परहरी।। ३८ ।।

इस तरह से यह भी भवसागर से छूट गई। ग्यारह वर्ष तक लीला के बाद कालमाया का प्रलय कर दिया।

Nijanand App

कछू नींद कछू जाग्रत भए, जोग माया के सिनगार जो कहे।
जोगमाया में खेले जो रास, आनन्द मन आनी उलास।। ३९ ।।

योगमाया के तनों में जागृत अवस्था भी है (प्रीतम की पहचान है) और नींद भी है (परमधाम की सुध नहीं है।)। ऐसे योगमाया के ब्रह्माण्ड में बड़े आनन्द और उल्लास के साथ रास रमण किया।

जोग माया में खेल जो खेले, संग जोस धनी के भेले।
जोगमाया में बाढ़्यो आवेस, सुध नहीं दुख सुख लवलेस।। ४० ।।

योगमाया के ब्रह्माण्ड में जो खेल खेले उनमें हमारे धनी का आवेश बांकेबिहारी के अन्दर रहा। यह इतना अधिक बढ़ा कि दुःख और सुख की जरा भी सुध नहीं रही।

फेर मूल सरूपें देख्या तित, ए दोऊ मगन हुए खेलत।
जब जोस लियो खेंच कर, तब चित चौंक भई अछर।। ४१ ।।

श्री राजजी महाराज ने देखा कि यह दोनों (अक्षर और सखियां) फिर खेल में मस्त हो गई हैं। श्री राजजी महाराज ने अपना जोश वापस खींचा। तभी अक्षर की आतम चौंकी।

कौन बन कौन सखियां कौन हम, यों चौंक के फिरी आतम।
रास आया मिने जाग्रत बुध, चुभ रही हिरदे में सुध।। ४२ ।।

अक्षर की आत्मा सोचने लगी कि यह कौन सा वन है? यह सखियां कौन हैं? हम कौन हैं? इस तरह अक्षर की आत्मा चौंकी। उसे होश आया। इस तरह से रास लीला अखण्ड हुई। इसकी सुध उसके हृदय में चुभ गई।

कई सुख रास में खेले रंग, सो हिरदे में भए अभंग।
या बिध रास भयो अखंड, थिरचर जोगमाया को ब्रह्मांड।। ४३ ।।

कई प्रकार के सुख रास की लीला में लिए। वह सुख हृदय में अखण्ड हो गए। इस तरह से योगमाया का पूरा ब्रह्माण्ड अक्षर के हृदय में अखण्ड हो गया।

तब इत भए अंतरध्यान, सब सखियां भई मृतक समान।
जीव न निकसे बांधी आस, करने धनीसों प्रेम विलास।। ४४ ।।

धनी के अन्तर्ध्यान होते ही सखियां मुर्दे के समान (शक्तिहीन) हो गईं। उनका जीव नहीं निकला। धनी से मिलने की आशा लगी है।

विरह सैयोंने कियो अत, धनी दियो आवेस फेर आई सुरत।
तब सैयों को उपज्यो आनंद, सब विरहा को कियो निकंद।। ४५ ।।

सखियों ने बहुत विरह किया। तब श्री राजजी महाराज ने आवेश फिर उसी तन में डाला जिससे फिर सखियों को दर्शन दिये, दिखने लगे। तब सखियों को उनके आने से आनन्द हुआ। विरह का दुःख खत्म हो गया।

आया सरूप कर नए सिंनगार, भजनानंद सुख लिए अपार।
दोऊ आतम खेले मिने खांत, सुख जोस दियो कई भांत।। ४६ ।।

बिछुड़ने के बाद आए हुए नए स्वरूप का बड़ा मोहिनी रूप लगा। सखियों को विरह के बाद यह स्वरूप दुबारा मिला इससे उन्हें अति अधिक सुख हुआ। दोनों ही अक्षर और सखियां खूब प्रेम से खेले और तरह-तरह के सुख श्री राजजी ने दिए।

Nijanand App

कई विरह विलास लिए मिने रात, अंग आनन्द भयो जोलों प्रात।
रास खेल के फिरे सब एह, साथ सकल मन अधिक सनेह।। ४७ ।।

रास रात्रि में प्रातःकाल तक कई तरह से विलास और विरह के आनन्द लिए। रास खेलने के बाद अक्षर अपने धाम में और सखियां परमधाम में लौटीं तो उनके मन आनन्द से भरे हुए थे।

पीछे जोग माया को भयो पतन, तब नींद रही अछर सैयन।
बृज लीलासों बांधी सुरत, अखंड भई चढ़ आई चित।। ४८ ।।

इसके बाद योगमाया के ब्रह्माण्ड को केवल ब्रह्म (बुद्धि) से सबलिक ब्रह्म (चित्त) में लाकर अखण्ड कर दिया। इस अखण्ड होने का पता सखियों और अक्षर को नहीं लगा, इसलिए खेल देखने की चाहना बनी रही। इसके बाद ब्रज लीला (नाटक वाली जो रास में की थी) याद आ गई। वह भी अखण्ड हो गई।

अछर चितमें ऐसो भयो, ताको नाम सदा सिव कह्यो।
बृज रास दोऊ ब्रह्मांड, ए ब्रह्म लीला भई अखंड।। ४९ ।।

अक्षर के चित्त को योगमाया में सदाशिव चेतन (सबलिक ब्रह्म) कहते हैं जहां ब्रज और रास की दोनों लीलाएं जो योगमाया में देखी थीं, अखण्ड हो गई।

बृज रास लीला दोऊ मांहें, दुख तामसियों देख्या नांहें।
प्रेम पियासों ना करे अंतर, तो ए दुख देखें क्यों कर।। ५० ।।

ब्रज और रास की लीला में तामसी सखियों ने दुःख नहीं देखा था, क्योंकि धनी के प्रेम में एकरस थीं, इसलिए दुःख कैसे देखतीं।

कछुक हमको रह्यो अंदेस, सो राखे नहीं धनी लवलेस।
ता कारन ए भयो सुपन, हुए हुकमें चौदे भवन।। ५१ ।।

हम सखियों को खेल देखने की इच्छा बाकी रह गई थी, इसलिए धनी उसे भी क्यों बाकी रहने देते? हमारी इच्छा पूरी करने के लिए धनी के हुक्म से यह नया कालमाया का ब्रह्माण्ड बना।

काल माया को एजो इंड, उपज्यो और जाने सोई ब्रह्मांड।
ए तीसरा इंड नया भया जो अब, अछर की सुरत का सब।। ५२ ।।

यह जो कालमाया का नया ब्रह्माण्ड बना, यहां के रहने वाले यही जानते हैं कि यह वही दुनियां है। यह तीसरा नया इण्ड (ब्रह्माण्ड) अक्षर की सुरता (कालमाया) का है।

याही सुरत की सखियां भई, प्रतिबिंब वेद रुचा जो कही।
जाको कह्यो ऊधो ग्यान जोगारंभ, सोक्यों माने प्रेमलीला प्रतिबिंब।। ५३ ।।

इस ब्रह्माण्ड में जो प्रतिबिम्ब की लीला में सखियां बनीं वह कुमारिका (का आवेश था) थीं, जिनको वेद-ऋचाएं कहते हैं। इन्हें ज्ञान देने के लिए ऊधव गए थे। कुमारिका सखियां जो प्रतिबिम्ब की लीला में थीं, उन्होंने ऊधव के ज्ञान को नहीं माना।

जो ऊधोने दई सिखापन, सो मुख पर मारे फेर वचन।
याही विरह में छोड़ी देह, सो पोहोंची जहां सरूप सनेह।। ५४ ।।

ऊधव ने उनको ज्ञान समझाया तो उन सखियों ने उलटा ऊधव को समझाया (कि हे ऊधव! हमारे प्रीतम हमारे अन्दर हैं, तू अपनी ज्ञान पिटारी ले जा) और ऐसे विरह में ही सौ वर्ष तक तड़प-तड़पकर शरीर त्याग दिया और अपने प्रीतम के साथ अखण्ड हो गई।

Nijanand App

अछर हिरदे रास अखंड कह्यो, ए प्रतिबिंब साथ तहां पोहोंचयो।
ए प्रतिबिंब लीला भई जो इत, सो कारन ब्रह्मसृष्ट के सत।।५५।।

अक्षर के हृदय में (सबलिक ब्रह्म में) रास अखण्ड हुआ है। यह प्रतिबिम्ब के स्वरूप वहीं पहुंचे। प्रतिबिम्ब की लीला जो यहां हुई, वह ब्रह्मसृष्टि की अखण्ड रास लीला (सत) को जाहिर करने के लिए हुई है।

जो प्रगट लीला न होवे दोए, तो असल नकल की सुध क्यों होए।
ता कारन ए भई नकल, सुध करने संसार सकल।।५६।।

यदि रास की दो लीलाएं न होतीं तो असल और नकल की पहचान न होती। इसीलिए यह प्रतिबिम्ब की नकली लीला हुई, जिससे सबको ज्ञान हो जाए कि असल रास कहीं और खेली गई।

सारे अर्थ तब होवें सत, जो प्रगट लीला दोऊ होवें इत।
याही इंडमें श्रीकृष्णजी भए, सो अग्यारे दिन बृज मथुरा रहे।।५७।।

यह सब बातें तभी सत्य होंगी जब दोनों लीलाएं इस कालमाया के ब्रह्माण्ड में जाहिर हों। इसी ब्रह्माण्ड में गोलोक के श्री कृष्णजी ग्यारह दिन तक ब्रज और मथुरा में रहे।

दिन अग्यारे ग्वालो भेस, तिन पर नहीं धनी को आवेस।
सात दिन गोकुल में रहे, चार दिन मथुरा के कहे।।५८।।

ग्यारह दिन तक ग्वाले का भेष रहा, पर इसमें धनी का आवेश नहीं है। सात दिन गोकुल में तथा चार दिन मथुरा में लीला की।

गज मल कंस को कारज कियो, उग्रसेन को टीका दियो।
काला ग्रह में दरसन दिए जिन, आए छुडाय बंध थें तिन।।५९।।

कुबलयापीड़ हाथी का, चाणूर और मुष्टिक पहलवानों का तथा कंस का कल्याण किया। उग्रसेन का राज तिलक किया। वसुदेव और देवकी को बन्धन से मुक्त किया। यह स्वरूप गोलोक धाम का है जो जेल में जन्म के बाद विष्णु भगवान के तन में प्रवेश किया था।

वसुदेव देवकी के लोहे भांन, उतारयो भेख किए अस्नान।
जब राज बागे को कियो सिनगार, तब बल पराक्रम ना रह्यो लगार।।६०।।

वसुदेव और देवकी को बंध से छुड़ाने के बाद यमुना में स्नान किया और ग्वाले का भेष उतारा और नन्द बाबा को सौंप दिया। अब यहां पर नहाने के बाद राजसी पोशाक पहनी तो गोलोक की शक्ति वापस चली गई थी और उस समय केवल विष्णु का पूर्ण रूप था, जो शक्तिहीन था।

आय जरासिंध मथुरा घेरी सही, तब श्रीकृष्णजी को अति चिंता भई।
यों याद करते आया विचार, तब कृष्ण विष्णु मय भए निरधार।।६१।।

जब जरासिंध ने मथुरा आकर चढ़ाई की तब इस कृष्ण को चिन्ता हुई कि अब मैं क्या करूं, तो बैकुण्ठ को याद किया और कृष्ण रूप से विष्णु रूप हो गए।

तब बैकुंठे में विष्णु ना कहे, इत सोलेकला संपूरन भए।
या दिन थें भयो अवतार, ए प्रगट वचन देखो विचार।।६२।।

उस समय विष्णु भगवान बैकुण्ठ में नहीं थे। यहीं सोलह कला सम्पूर्ण हो गए। इस दिन से कृष्ण अवतार की लीला गिनी जाती है। इन वचनों को विचार के देखो।

Nijanand App

सिसुपाल की जोत बैकुंठ गई, समाई श्रीकृष्ण में तित न रही।
आउध अपने मंगाए के लिए, कई बिध जुध असुरों सो किए।। ६३ ।।

शिशुपाल को मारने के बाद उसका जीव बैकुण्ठ गया, परन्तु विष्णु भगवान के नहीं होने से जीव लौटकर आया और श्री कृष्ण के तन में समा गया। बैकुण्ठ से उन्होंने अपने हथियार मंगा लिए और कई तरह से असुरों से युद्ध किया।

मथुरा द्वारका लीला कर, जाए पोंहोचे विष्णु बैकुंठ घर।
अब मूल सखियां धाम की जेह, तिन फेर आए धरी इत देह।। ६४ ।।

मथुरा और द्वारिका की लीला करके विष्णु भगवान अपने बैकुण्ठ चले गए। अब इस ब्रह्माण्ड में मूल घर परमधाम से सखियों ने आकर नए तन धारण किए।

उमेदां तामसियां रही तिन बेर, सो देखन को हम आइयां फेर।
इन ब्रह्मांड को एह कारन, सुनियो आतम के श्रवन।। ६५ ।।

तामसियों की इच्छा खेल देखने की बाकी रह गई थी। उसे देखने के लिए हम सब यहां पर आईं। यह नए ब्रह्माण्ड बनने का कारण है, जिसे ध्यान से सुनना।

रास खेलते उमेदां रहियां तित, सो ब्रह्मसृष्ट सब आइयां इत।
यामे सुरत आई स्यामाजी की सार, मतू मेहेता घर अवतार।। ६६ ।।

रास खेलते समय जो चाहना बाकी रह गई थी, उसके वास्ते सभी ब्रह्मसृष्टियां यहां आईं। इनमें श्यामाजी की आत्मा मत्तू मेहेता के घर देवचन्द्रजी के तन में उतरी।

कुंवरबाई माता को नाम, उतम काइथ उमरकोट गाम।
आए श्री देवचन्दजी नौतनपुरी, सुख सबों को देने देह धरी।। ६७ ।।

देवचन्द्रजी की माता का नाम कुंवरबाई है, जो उमरकोट गांव के रहने वाले उत्तम कायस्थ परिवार में से हैं। श्री देवचन्द्रजी बाद में नौतनपुरी आये और सबको सुख देने के लिए उन्होंने तन धारण किया।

इन इत आए करी बड़ी खोज, चाहे धनी को मूल संजोग।
अंग मूल उपजी ए दृष्ट, सास्त्र सब्द खोजे कई कष्ट।। ६८ ।।

नौतनपुरी में आकर श्यामाजी (देवचन्द्रजी) ने बड़ी खोज की और अपने मूल प्रीतम से मिलने की चाहना की। इनकी इसी चाहना से उन्होंने शास्त्र के शब्दों के भेद को बड़ी मेहनत से खोजा।

चौदे बरसलों नेष्टा बंध, वचन ग्रहे सारी सनंध।
कई जप तप किए व्रत नेम, सेवा सरूप सनेह अति प्रेम।। ६९ ।।

चौदह वर्ष तक नेष्टा बंध (निष्ठावद्ध) होकर उन्होंने बड़े ढंग से शास्त्रों के वचनों को सुना। उन्होंने कई जप, तप, व्रत और नियम बड़े प्रेम से किए। चित्त में वृन्दावन के बांकेबिहारी के स्वरूप का बड़े प्रेम से चितवन करते रहे।

कई कसनी कसी अति अंग, प्रेम सेवामें न कियो भंग।
कई कसौटी करी दुलहिन, सो कारन हम सब सैयन।। ७० ।।

ऐसा करने के लिए बड़े कष्ट सहे, परन्तु प्रेम से सेवा करने में रुकावट नहीं आने दी। श्यामाजी (देवचन्द्रजी) ने कई तरह के दुःख उठाए, वह भी सब हम सुन्दरसाथ के वास्ते।

Nijanand App

पिया किए अति प्रसन, तीन बेर दिए दरसन।
तारतम बात वतन की कही, आप धाम धनी सब सुध दई।।७१ ।।

अपने प्रीतम को सेवा से प्रसन्न किया। प्रीतम ने तीन बार दर्शन दिये (एक बार बारात के पीछे जाते हुए सिपाही के भेष में, दूसरी बार चितवन में अखण्ड ब्रज का ध्यान धरते समय तथा तीसरी बार श्यामजी के मन्दिर में)। तीसरी बार तारतम वाणी से घर की सब बातें बताईं और धाम धनी ने इश्क रब्द की सब सुध दी।

धर्यो नाम बाई सुन्दर, निज वतन देखाया घर।
इत दया करी अति घनी, अंदर आए के बैठे धनी।।७२ ।।

धाम-धनी ने श्यामाजी का नाम इस खेल में सुन्दरबाई रखा और अपना वतन परमधाम दिखाया। बड़ी कृपाकर उनके तन में धनी विराजमान हो गए।

दियो जोस खोले दरबार, देखाया सुन्य के पार के पार।
ब्रह्मसृष्ट मिने सुन्दरबाई, ताको धनीजीएं दई बड़ाई।।७३ ।।

अपना आवेश देकर धाम के दरवाजे खोल दिए और निराकार के पार अक्षर तथा अक्षर के पार वतन (परमधाम) को दिखाया। ब्रह्मसृष्टियों के बीच में सुन्दरबाई (श्यामा महारानीजी) को बड़ा मान दिया।

सब सैयों मिने सिरदार, अंग याही के हम सब नार।
श्री धाम धनी जी की अरधंग, सब मिल एक सरूप एक अंग।।७४ ।।

यह श्यामा महारानी जिनका नाम धनी ने सुन्दरबाई रखा, वह ब्रह्मसृष्टि की सिरदार (प्रमुख) हैं और सब सखियां उन्हीं के अंग हैं। श्यामा महारानी श्री राजजी महाराज की अंगना हैं और हम सुन्दरसाथ तथा श्री राजजी श्यामाजी एक ही स्वरूप हैं।

श्री धाम लीला बैकुंठ अखंड, बृज रास लीला दोऊ ब्रह्मांड।
ए सब हिरदेमें चढ़ आए, ज्यों आतम अनुभव होत सदाए।।७५ ।।

श्री देवचन्द्रजी को अब परमधाम की, अक्षरधाम की, अखण्ड ब्रज रास की, दोनों अखण्ड ब्रह्माण्डों की (ब्रज और रास और अक्षर की) लीला हृदय में याद आ गई और आत्मा को सदा ही अनुभव होने लगा।

अब ऐ केते कहूं प्रकार, निजधाम लीला नित बड़ो विहार।
अछरातीत लीला किसोर, इत सैयां सुख लेवें अति जोर।।७६ ।।

अब इनका कहां तक वर्णन करूं। परमधाम की लीला में नित्य ही बड़ा आनन्द होता है। जहां अक्षरातीत श्री राजजी महाराज किशोर स्वरूप की लीला करते हैं और सब सखियों को अत्यधिक आनन्द मिलता है।

मोहोल मंदिर को नाहीं पार, धाम लीला अति बड़ो विस्तार।
इन लीला की काहूं ना खबर, आज लगे बिना इन घर।।७७ ।।

परमधाम के मोहल तथा मन्दिर बेशुमार हैं। धाम की लीला का विस्तार बहुत भारी है। आज तक इस घर की लीला की खबर किसी को नहीं थी। मात्र श्री राजजी, श्यामाजी और सखियां ही जानती थीं।

ब्रह्मसृष्ट बिना न जाने कोए, ए सृष्ट ब्रह्मथें न्यारी न होए।
सो निध ब्रह्मसृष्ट ल्याईया इत, ना तो ए लीला दुनियां में कित।।७८ ।।

इस परमधाम की लीला को ब्रह्मसृष्टि के बिना कोई नहीं जानता। ब्रह्मसृष्टि कभी ब्रह्म से अलग हो ही नहीं सकती। इसलिए यह न्यामत ब्रह्मसृष्टि ही लाई हैं, नहीं तो दुनियां को इस लीला का पता ही नहीं था।

Nijanand App

ए बानी धनी मुखथें कहे, सो ए दुनियां क्यों कर लहे।
गांगजी भाई मिले इन अवसर, तिन ए वचन लिए चित धर।।७९ ।।

यह वाणी श्री धाम धनी ने अपने मुखारबिन्द से कही है, इसलिए यह दुनियां वाले कैसे ग्रहण कर सकते हैं? गांगजी भाई इस समय मिले और उन्होंने इन वचनों को ध्यान से सुना और ग्रहण किया।

कर विचार पूछे वचन, नीके अर्थ लिए जो इन।
जब समझाई पार की बान, तब धनी की भई पेहेचान।।८० ।।

विचार करके इन वचनों के भेद पूछे और श्री देवचन्द्रजी ने उनके अच्छी तरह से अर्थ समझाए। जब परमधाम का ज्ञान बताया तो गांगजी भाई को श्री देवचन्द्रजी के अन्दर बैठे श्री राजजी महाराज की पहचान हुई।

अपने घरों लिए बुलाए, सेवा करी बोहोत चित ल्याए।
सनेहसों सेवा करी जो धनी, पेहेचान के अपना धाम धनी।।८१ ।।

गांगजी भाई फिर धाम धनी को अपने घर ले गये और बड़े प्रेम से अपने धाम का धनी जानकर अधिक सेवा की।

तब श्रीमुख वचन कहे प्राणनाथ, ढूंढ काढ़नो अपनो साथ।
माया मिने आई सृष्ट ब्रह्म, सो बुलावन आए हैं हम।।८२ ।।

तब श्री प्राणनाथजी (धनी देवचन्द्रजी) ने अपने श्री मुख से यह वचन कहे कि सुन्दरसाथ को ढूंढ़कर निकालना है। ब्रह्मसृष्टियां माया के खेल में आई हैं, जिनको बुलाने के लिए हम आए हैं।

हम आए हैं इतने काम, ब्रह्मसृष्ट लेने घर धाम।
तब गांगजी भाई पायो अचरज मन, कौन मानसी पार के वचन।।८३ ।।

मैं केवल ब्रह्मसृष्टि को घर ले जाने के लिए ही आया हूं। तब गांगजी भाई के मन में बड़ा आश्चर्य हुआ कि पार के वचनों को कौन मानेगा?

कह्या ब्रह्मसृष्ट क्यों मिलसी, चाल तुमारी क्यों चलसी।
मोहजल पूर तीखा अति जोर, नख अंगुरी को ले जाए तोर।।८४ ।।

गांगजी भाई ने कहा कि ब्रह्मसृष्टि कैसे मिलेगी और आप के बताए ज्ञान पर कैसे चलेगी? माया का बहाव बड़ा तेज है। इसके छू जाने से ही उंगली से नाखून कट जाता है।

तरंग बड़े मेर से होए, इत खड़ा ना रेहेने पावे कोए।
लेहेरें पर लेहेरें मारे घेर, मांहें देत भमरियां फेर।।८५ ।।

इस भवसागर में पहाड़ के समान लहरें आती हैं, जहां कोई खड़ा नहीं रह सकता। लहरों पर लहरें आती हैं और भंवरियां (भंवर) भी पड़ती हैं।

आड़े टेढ़े मांहें बेहेवट, विक्राल जीव मांहें विकट।
दुखरूपी सागर निपट, किनार बेट न काहूं निकट।।८६ ।।

यह भवसागर टेढ़ा-मेढ़ा है और उसके अन्दर भयंकर जीव हैं। यह निश्चित ही दुःख का सागर है। जिसमें सहारे के लिए पास में किनारा या कोई टापू दिखाई नहीं पड़ता।

Nijanand App

ऊंचा नीचा गेहेरा गिरदवाए, कठन समया इत पोहोंच्या आए।
हाथ ना सूझे सिर ना पाए, इन अंधेरी से निकस्यो न जाए।। ८७ ।।

यह चारों तरफ से ऊंचा-नीचा और गहरा है। समय भी बड़ा कठिन है। अन्धकार भी इतना है कि कोई किसी को पहचानता नहीं और इस अंधेरे से निकलना मुश्किल है।

चढ़्यो मायाको जोर अमल, भूलियां आप मांहें घर छल।
ना सुध धनी ना मूल अकल, इन मोहजलको ऐसो बल।। ८८ ।।

यहां हर एक को माया का नशा चढ़ा है, इसलिए सब इस छल के संसार में अपने आपको भूल गए हैं। इन्हें न तो अपनी सुध है, न धनी की पहचान है, न मूल की बुद्धि है। ऐसी भवसागर की ताकत है।

वचन बेहद के पार के पार, सो क्यों माने हदको संसार।
त्रैगुन महाविष्णु मोह अहंकार, ए हद सास्त्रों करी पुकार।। ८९ ।।

यह वाणी बेहद के पार अक्षर तथा अक्षर के पार अक्षरातीत धाम की है। उसे इस संसार के लोग कैसे मानेंगे? त्रिगुण, महाविष्णु, नारायण, मोह तत्व, अहंकार—यह सब क्षर के अन्दर मिटने वाले हैं, ऐसा शास्त्रों ने वर्णन किया है।

ब्रह्मसृष्ट भी धरे मोहके आकार, सो इत आवसी कौन प्रकार।
तब श्रीधनीजीएं कहे वचन, बेहेर दृष्ट होसी रोसन।। ९० ।।

ब्रह्मसृष्टियों ने भी मोह के आकार धारण कर रखे हैं। वह आपके चरणों में कैसे आएंगी। तब श्री धनीजी ने कहा कि रहस्यमय आडीका (चमत्कारिक) लीला कुछ समय तक के लिए करूंगा।

ए बंधेज कियो अति जोर, रात मेट के करसी भोर।
प्रतछ प्रमान देसी दरसन, ए लीला चित धरसी जिन।। ९१ ।।

धाम धनी कह रहे हैं कि इस तरह से पूरा इन्तजाम कर लिया है। अज्ञान हटाकर उजाला कर देंगे तथा प्रमाणों में प्रत्यक्ष की लीला करके दिखाऊंगा जिससे वह चित्त में धारण करेंगे।

साथ कारन आवसी धनी, घर घर वस्तां देसी घनी।
साथ मांहें इत आरोगसी, विध विधके सुख उपजावसी।। ९२ ।।

सुन्दरसाथ के वास्ते धाम धनी आएंगे और घर-घर में तरह-तरह की वस्तुएं देंगे। सुन्दरसाथ के बीच बैठकर आरोगेंगे तथा तरह-तरह के सुख देंगे।

अचरा पकर पिउ देखलावसी, एक दूजी को प्रेम सिखलावसी।
ए लीला बढ़सी विस्तार, साथ अंग होसी करार।। ९३ ।।

सुन्दरसाथ धनी के आंचल को पकड़कर दिखलाएंगे और एक-दूसरे से प्रेम करना सिखाएंगे। इस लीला का बड़ा विस्तार होगा। सुन्दरसाथ को बड़ा आराम होगा।

तब बानी को करसी विचार, सब माएने होसी निरवार।
तब आवसी ब्रह्मसृष्ट, जाहेर निसान देखसी दृष्ट।। ९४ ।।

सब सुन्दरसाथ इस वाणी का विचार करेंगे। इसके भेद उनको खुलेंगे। ऐसी जाहिरी लीला देखकर ब्रह्मसृष्टि आएगी।

Nijanand App

ए बंधेज कियो उत्तम, पर धामकी निध सो कही तारतम।
जिनसेती होवे पेहेचान, नजरों आवे सब निसान।। ९५ ।।

ऐसा सुन्दर इन्तजाम तो कर दिया है, पर परमधाम की न्यामत तो तारतम वाणी है, जिससे सब पहचान हो जाएगी और सब निशान जाहिर हो जाएंगे।

तब गांगजी भाई पाए मन उछरंग, किए करतब अति घनें रंग।
सनेहसों सेवा करी जो अत, पेहेचान के धाम धनी हुए गलित।। ९६ ।।

तब गांगजी भाई के मन में बड़ा आनन्द हुआ और अधिक प्रेम भरी युक्तियों से धनी को रिझाने लगे। उन्होंने धाम के धनी को पहचानकर बड़े तन्मय होकर सेवा की।

साथसों हेत कियो अपार, सुफल कियो अपनो अवतार।
मैं श्रीसुन्दरबाई के चरने रहूं, एह दया मुख किन बिध कहूं।। ९७ ।।

सुन्दरसाथ की भी सेवा करके प्यार किया और अपना मनुष्य तन धारण करना सफल किया। गांगजी भाई कहते हैं कि मैं श्री श्यामाजी के चरणों में ही रहूं। धनी की कृपा का बखान मुख से कैसे करूं?

कह्यो ताको इंद्रावती नाम, ब्रह्मसृष्ट मिने घर धाम।
मों पर धनी हुए प्रसन्न, सोंपे धामके मूल वचन।। ९८ ।।

परमधाम की ब्रह्मसृष्टि जो श्री इन्द्रावतीजी हैं, वह कहती हैं कि मेरे ऊपर धाम धनी बहुत प्रसन्न हैं। उन्होंने परमधाम की मूल की सभी बातों का ज्ञान मुझे दे दिया है।

आदके द्वार न खुले आज दिन्ऐसा हुआ न कोई खोले हम बिन।
सो कुंजी दई मेरे हाथ, तूं खोल कारन अपने साथ।। ९९ ।।

परमधाम की पहचान के दरवाजे आज दिन तक बन्द थे, जिसको मेरे बिना आज दिन तक कोई नहीं खोल सका और न कोई खोल सकेगा। उस दरवाजे को खोलने की कुंजी तारतम वाणी मुझे दे दी है और साथ में हुक्म भी दे दिया है कि सुन्दरसाथ के लिए मैं इसे खोल दूं।

मोहे करी सरीखी आप, टालने हम सबों की ताप।
आतम संग भई जाग्रत बुध, सुपनथें जगाए करी मोहे सुध।। १०० ।।

हम सब सुन्दरसाथ का दुःख दूर करने के लिए धनी ने मुझे अपने समान बना लिया है। मेरी आत्मा के साथ जागृत बुद्धि दे दी है। सपने में जगाकर धनी की सुध भी दे दी है।

श्री धनीजी को जोस आतम दुलहिन, नूर हुकम बुध मूल वतन।
ए पांचो मिल भई महामत, वेद कतेबों पोहोंची सरत।। १०१ ।।

धनीजी का जोश, श्यामा महारानी, तारतम, हुक्म और वतन की जागृत बुद्धि—इन पांचों को मुझे देकर मेरा नाम महामति रखा है। वेद कतेब में जो भविष्यवाणी कही थी उसका समय आ गया है।

Nijanand App

या कुरान या पुरान, ए कागद दोऊ प्रवान।
याके मगज माएने हम पास, अन्दर आए खोले प्राणनाथ।। १०२ ।।

कुरान और पुराण हमारी साक्षी देने वाले ग्रन्थ हैं। इनकी सार वस्तु (छिपे भेद) हमारे पास हैं। इन भेदों को मेरे अन्दर बैठकर मेरे प्राणनाथ ने खोल दिया है।

आप भी न खोले दरबार, सो मुझ से खोलाए कियो विस्तार।
मोहे दई तारतम की करनवार, सो काहूं न अटको निरधार।। १०३ ।।

धनी ने स्वयं (श्री देवचन्द्रजी के तन में बैठकर भी श्री राजजी महाराज ने) अपने घर के भेद नहीं खोले। मेरे से दरवाजा खुलवाकर ज्ञान का विस्तार कराया। इस संसार सागर में तारतम की नाव का चप्पू मेरे हाथ में दे दिया। अब यह नाव कहीं भी रुकेगी नहीं। सीधा पार कर घर ले जाएगी।

सब संसे को कियो निरवार, कोई संसा न रह्या वार के पार।
रोसन करूं लेऊं हुकम बजाए, ब्रह्मसृष्ट और दुनियां देऊं जगाए।। १०४ ।।

इस ज्ञान को लेकर श्री राजजी महाराज के हुक्म का पालन करके ब्रह्मसृष्टि और दुनियां को जागृत कर दूंगी तथा सबके हद और बेहद के संशय मिटा दूंगी।

द्वार तोबा के खुले हैं अब, पीछे तो दुनियां मिलसी सब।
जब द्वार तोबा के मूंदयो, रैन गई भोर जो भयो।। १०५ ।।

तोबा के दरवाजे अब खुले हैं जिससे अज्ञान हट गया है और ज्ञान का सवेरा हो गया है। जब तोबा के दरवाजे बन्द हो जाएंगे तो पीछे तो सब दुनियां मिलेगी ही।

या भली या बुरी, जिनहूं जैसी फैल जो करी।
तब आगूं आई सबों की करनी, जिन जैसी करी आप अपनी।। १०६ ।।

तोबा के दरवाजे बन्द होने पर जिनकी जैसी करनी होगी, वह सबके आगे आएगी और भली बुरी के अनुसार वैसा ही फल मिलेगा।

तब कोई नहीं किसी के संग, दुख सुख लेवे अपने अंग।
करूं ब्रह्मसृष्ट को मिलाप, अखंड सूर उदे भयो आप।। १०७ ।।

उस समय कोई किसी का साथ न दे सकेगा। अपनी करनी माफिक दुःख-सुख सभी को भोगने पड़ेंगे। अब सब ब्रह्मसृष्टि को इकट्ठा करती हूं। अखण्ड तारतम वाणी आ गई है। इससे उनको पहचान कराती हूं।

विश्व मिली करने दीदार, पीछे कोई ना रहे मिने संसार।
ब्रह्मसृष्ट को पिया संग सुख, सो कह्यो न जाए या मुख।। १०८ ।।

ब्रह्मसृष्टि को धनी का इतना सुख प्राप्त होगा जो कहने में नहीं आता। उसके बाद सारी दुनियां दर्शन करने दौड़ेगी। संसार में कोई पीछे नहीं रहेगा।

Nijanand App

ब्रह्मसृष्ट को ऐसो नूर, जो दुनियां थी बिना अंकूर।
ताए नए अंकूर जो कर, किए नेहेचल देख नजर।। १०९ ।।

ब्रह्मसृष्टि की ऐसी महिमा होगी कि यह दुनियां जिसका कहीं मूल नहीं था, उनको नए अंकुर (तारतम वाणी से अखण्ड तन) देकर बहिश्त में अखण्ड कर देंगे।

श्री धनीजी को दीदार सब कोई देख, होए गई दुनियां सब एक।
किनहूं कछुए ना कह्यो, क्रोध व्रोध काहूको ना रह्यो।। ११० ।।

श्री प्राणनाथजी का दर्शन करके सारी दुनियां एक हो जाएगी। सभी अपने क्रोध और विरोध को छोड़ देंगे और किसी को कुछ कहने की ताकत न रहेगी।

श्री धनीजी को ऐसो जस, दुनियां आपे भई एक रस।
तेज जोत प्रकास जो ऐसो, काहूं संसे ना रह्यो कैसो।। १११ ।।

श्री धनीजी की ऐसी शोभा है (महिमा है) कि इससे पूरी दुनियां एक रस हो जाएगी। तारतम वाणी का ऐसा तेज प्रकाश है, जिससे किसी के संशय नहीं रहेंगे।

सब जातें मिली एक ठौर, कोई ना कहे धनी मेरा और।
पिया के विरहसों निरमल किए, पीछे अखंड सुख सबोंको दिए।। ११२ ।।

सब जातियां इकट्ठी एक साथ एक स्थान पर मिलेंगी (योगमाया के ब्रह्माण्ड में)। सबको योगमाया का तन और जागृत बुद्धि मिलने से सभी एक धनी की पूजा करेंगे। धनी की पहचान होने पर पश्चाताप से निर्मल होकर सभी को अखण्ड बहिश्तों का सुख मिलेगा।

ए ब्रह्मलीला भई जो इत, सो कबहूं हुई न होसी कित।
ना तो कई उपज गए इंड, भी आगे होसी कई ब्रह्मांड।।। ११३ ।।

यह ब्रह्म लीला जो यहां हुई है, ऐसी कभी यहां हुई नहीं है और न कभी होगी वरन् कई ब्रह्माण्ड पहले हो गए और आगे भी कई बनते रहेंगे।

ए तीन ब्रह्मांड हुए जो अब, ऐसे हुए ना होसी कब।
इन तीनों में ब्रह्मलीला भई, बृज रास और जागनी कही।। ११४ ।।

यह तीन ब्रह्माण्ड ब्रज, रास और जागनी के अब हुए हैं। ऐसे पहले न कभी हुए हैं और न कभी होंगे। इन तीनों में पारब्रह्म की लीला हुई है, जिसको ब्रज रास और जागनी कहा गया है।

ज्यों नींद में देखिए सुपन, यों बृज को सुख लियो सैयन।
सुपन जोगमाया को जोए, आधी नींद में देख्या सोए।। ११५ ।।

जैसे नींद में सपना देखते हैं, उसी तरह से सखियों ने ब्रज के सुख को लिया तथा योगमाया के सपने को आधी नींद में देखा।

Nijanand App

कछुक नींद कछुक सुध, रास को सुख लियो या विध।
जागनी को जागते सुख, ए लीला सुख क्यों कहूं या मुख॥ ११६ ॥

योगमाया में घर की पहचान न होने से नींद थी और धनी की पहचान होने की सुध थी। इस तरह से रास की लीला का आनन्द लिया। जागनी लीला का जागते हुए सुख मिल रहा है। इस लीला के सुख का वर्णन कैसे करूं?

जागनी में लीला धाम जाहेर, निसान हिरदे लिए चित धर।
तब उपज्यो आनन्द सबों करार, ले नजरों लीला नित विहार॥ ११७ ॥

जागनी के ब्रह्माण्ड में परमधाम की पूरी पहचान हो गई और हमारे चित्त में सभी निशान (ब्रज, रास और परमधाम के पच्चीस पक्ष) याद आ गए। हमारी नजरों में आनन्द की लीला आ जाने से बहुत आनन्द और आराम मिला।

इतहीं बैठे घर जागे धाम, पूरन मनोरथ हुए सब काम।
धनी महामत हंस ताली दे, साथ उठा हंसता सुख ले॥ ११८ ॥

अब मूल मिलावे में बैठे-बैठे ही घर में जागे और सब चाहना जो बाकी थी, वह पूरी हो गई। अब धनी के साथ, सब सुन्दरसाथ हंसते हुए ताली देकर मूल मिलावे में उठेंगे।

॥ प्रकरण ॥ ३७ ॥ चौपाई ॥ ११८५ ॥

प्रकरण तथा चौपाइयों की कुल संख्या ॥ प्रकरण ॥ १४८ ॥ चौपाई ॥ ३८९८ ॥

॥प्रकास हिन्दुस्तानी-जंबूर सम्पूर्ण॥

Nijanand App